



Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W3CN15977	ImageGroup:	I3CN15979
LCCN:	n/a	ISBN:	9788187127895

Title:	དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་འཛིགས་པ་མེད་པའི་ གཞུང་འགྲེལ། dpal sangs rgyas thod pa'i rgyud kyi rgyal po chen po'i rgya cher 'grel pa 'jigs pa med pa'i gzhung 'grel/
Author:	འཛིགས་མེད་འབྲུང་གནས་སྤྲམ་པ། 'jigs med 'byung gnas sbas pa/
Descriptor:	copy made available from the library of tibetan works and archives; ltwa acc. no. D31340
Original Publication:	Bibliotheca Indo-Tibetica Series;68
Place:	Sarnath, Varanasi
Publisher:	Central Institute of Higher Tibetan Studies
Date:	2009
Volume:	1
Total Volumes:	1
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at M/S Satluj Infotech Images, E-45, Sector 27 Noida, District Gautam Buddha Nagar, U.P. 201301 via New Delhi, IN for the Tibetan Buddhist Resource Center, 150 17th st., New York, NY 10011, U.S.A 2006. Comments: 18

༢༡། །དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱ་ཆེར་
འབྲེལ་བ་འཛིགས་བ་མེད་པའི་གཞུང་འབྲེལ་
ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།



भोट विद्या संस्थानम्

सम्पादक
डॉ० छोग दोर्जे

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 68

Abhayapaddhati
of
Abhayākaragupta
Commentary on the Buddhakapālamahātantra



Critically Edited by
Dr. Chog Dorje

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2552

C.E. 2009

Chief Editor: *Prof. Geshe Ngawang Samten*

Publication Incharge: *Dr. Pema Tenzin*

First Edition: 550 copies, 2009

Price: Hardback: Rs. 340.00
Paperback: Rs. 235.00

© Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath -221007
Varanasi (U.P.) India 2009. All rights reserved.

Publisher:

Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

ISBN: 978-81-87127-89-5 (HB)

ISBN: 978-81-87127-90-1 (PB)

पण्डित-स्थविर-अभयाकरगुप्तपाद-विरचिता
श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रराजटीका अभयपद्धतिः

ॐ । नमः सदास कृष्णं चैव कुरु ग्री कृष्णं चैव कुरु
मन्त्रेण च मन्त्रेण च मन्त्रेण च मन्त्रेण च मन्त्रेण च
ब्रह्मं च मन्त्रेण च मन्त्रेण च मन्त्रेण च मन्त्रेण च



सम्पादक

डॉ० छोग दोर्जे

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेशे नवङ समतेन

प्रकाशन प्रभारी : डॉ० पेमा तेनजिन

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २००९

मूल्य : सजिल्द : ३४०.००
अजिल्द : २३५.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी - २२१००७, २००९
प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार सुरक्षित ।

प्रकाशक :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

ISBN: 978-81-87127-89-5 (HB).

ISBN: 978-81-87127-90-1 (PB)

मुद्रक : गोप्सन्स पेपर्स लिमिटेड, नोयडा ।

प्रकाशकीय

समस्त प्राणियों की समस्त दुःखों से आत्यन्तिक निवृत्ति महायान का उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बुद्धत्व प्राप्त करना आवश्यक होता है। बुद्धत्व-प्राप्ति के लिए महायान में दो नय प्रचलित हैं, यथा— पारमितानय एवं मन्त्रनय। अन्य विशेषताओं के साथ शीघ्रगामिता मन्त्रनय की प्रमुख विशेषता हैं। इस नय के द्वारा एक ही जन्म में बुद्धत्व-प्राप्ति सम्भाव है, जबकि पारमितानय के अनुसार तीन असंख्य कल्प पर्यन्त पुण्य एवं ज्ञान सम्भारों का अर्जन कर अन्त में बुद्धत्वप्राप्ति शक्य है, किन्तु मन्त्रनय में विशिष्ट और गम्भीर उपायों द्वारा उतने पुण्य और ज्ञान सम्भारों का अर्जन अत्यल्प काल में ही समपन्न हो जाता है तथा इसमें दुष्करचर्या भी अपेक्षित नहीं होती, अपितु सहज उपायों द्वारा लक्ष्य की सिद्धि हो जाती है।

सुविदित है कि बौद्ध तन्त्र सोपानक्रम से चार भागों में विभक्त है, यथा— क्रियातन्त्र, चर्यातन्त्र, योगतन्त्र एवं अनुत्तरयोगतन्त्र। इनमें पूर्व-पूर्व तन्त्र अपर-अपर तन्त्रों में गमन हेतु सीढ़ी की भाँति हेतु हैं तथा अपर-अपर तन्त्र पूर्व-पूर्व तन्त्रों से श्रेष्ठ है। अनुत्तरयोगतन्त्र सर्वश्रेष्ठ है। अनुत्तरयोगतन्त्र भी तीन भागों में विभक्त है, यथा—उपायप्रधान पितृतन्त्र, प्रज्ञाप्रधान मातृतन्त्र तथा उभयप्रधान अद्वयतन्त्र। गुह्यसमाज आदि पितृतन्त्र, हेवज्र, चक्रसंवर आदि मातृतन्त्र एवं कालचक्रतन्त्र अद्वयतन्त्र में संगृहीत हैं। अनुत्तरतन्त्र में दो क्रम होते हैं, यथा— उत्पत्तिक्रम और उत्पन्नक्रम। साधारण आभास उत्पत्तिक्रम का तथा साधारण अभिनिवेश उत्पन्नक्रम के प्रहेय होते हैं।

बुद्धकपालतन्त्र मातृतन्त्र में परिगणित है। यह अनुत्तरतन्त्रों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें चौदह परिच्छेद हैं, जिनमें मातृतन्त्र से सम्बद्ध समस्त विषयों की गम्भीर और विस्तृत विवेचना की गई है। इसके प्रथम दो पटलों पर आचार्य पद्मवज्र की तत्त्वचन्द्रिका नामक टीका है। आचार्य अभयाकर गुप्त ने इस तन्त्र के समस्त परिच्छेदों की सर्वाङ्गीण व्याख्या की है। सामान्यतः इस तन्त्र की सरहपाद और अभयाकर गुप्त प्रवर्तित दो परम्पराएं भोट देश में प्रचलित हैं।

बुद्धकपालतन्त्र की मूल संस्कृत पाण्डुलिपि अब तक अप्राप्त थी। विगत वर्ष ताडपत्रों में इसकी अपूर्ण पाण्डुलिपि तिब्बत से प्राप्त हुई। इसमें केवल चार पटल ही उपलब्ध हैं। संस्थान की शोध पत्रिका 'धीः' के ४३ वें अङ्क में इसका प्रकाशन हुआ है।

पण्डित आचार्य अभयाकर गुप्त बौद्ध जगत् में अत्यन्त प्रामाणिक विद्वान् माने जाते हैं। भोट पण्डित लामा तारानाथ के अनुसार इनका जन्म दक्षिण भारत के जरिखण्ड नामक स्थान में हुआ था। इन्होंने कुमारावस्था में व्याकरण, न्याय, वेदान्त आदि शास्त्रों में पूर्ण वैदुष्य प्राप्त कर लिया था। बाद में बौद्ध भिक्षु होकर इन्होंने सूत्र और तन्त्र दोनों पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त कर लिया और इन विषयों पर २२ ग्रन्थों की रचना की, जो तनग्युर-संग्रह में संकलित हैं।

पण्डित अभयाकर गुप्त की 'अभयपद्धति' टीका की दो अपूर्ण संस्कृत मातृकाएं उपलब्ध हैं। एक मातृका एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता तथा दूसरी राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू में है। नेवारी लिपि में ये मातृकाएं अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण तथा जगह-जगह त्रुटित भी हैं।

संस्थान के दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के शोध-सहायक डॉ० छोग दोर्जे ने भोटानुवाद की सहायता से परिश्रमपूर्वक इसका कुशल सम्पादन कर जिज्ञासु विद्वानों को इसे उपलब्ध कराया है। साथ ही, संस्कृत मातृकाओं के सहयोग से नरथङ्ग आदि चार भोट संस्करणों के आधार पर इसके भोट पाठ का भी सम्पादन किया है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए मैं डॉ० छोग दोर्जे को साधुवाद देता हूँ। प्रकाशन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी भी सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

कार्तिक पूर्णिमा

१३.११.२००८

प्रो० गेशे डेवङ्ग समतेन

निदेशक

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,

सारनाथ, वाराणसी

དཔར་སྐྱོན་པའི་ཆེད་བཟློག།

༡། །མེས་པོ་ཅན་ཐམས་ཅད་སྐྱབས་པ་ལྟ་བུ་ལས་ཡོངས་སུ་གྲོལ་བར་བྱེད་
པ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆེད་དུ་བྱ་བ་ཡིན་ཞིང་། དེ་ནི་དེ་བསྐྱབས་པའི་སྐྱོད་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་
གོ་འཕང་ཐོབ་པ་མེད་དུ་མི་རུང་ལ། གོ་འཕང་དེ་སྐྱབས་པར་བྱེད་པ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་རྒྱ་
པ་རོལ་དུ་བྱིན་པའི་རྩལ་དང་འབྲས་བུ་གསང་སྟགས་ཀྱི་རྩལ་གཉིས་ཡོད་པ་ལས་སྐྱུར་
ལམ་གྱི་སྒྲོ་ནས་ཚོགས་བྱང་མངོན་དུ་བྱེད་པ་ནི་གསང་སྟགས་ཀྱི་བྱང་ཆོས་གཙོ་བོ་ཡིན་
ཞིང་། རྒྱ་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པའི་རྩལ་ལ་བསྐྱལ་ཆེན་བྱངས་མེད་གསུམ་དུ་བསོད་ནམས་དང་
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་བསགས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་མཐར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་ཐོབ་ལ།
གསང་སྟགས་ཀྱི་རྩལ་ལ་དམིགས་བསལ་གྱི་ཟབ་བ་དང་ཐབས་སྒྲ་ཚོགས་པའི་སྒྲོ་ནས་
བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་གཉིས་དུས་ཡུན་གྲིན་དུ་བྱུང་དུར་ཚོགས་རྒྱས་ཤིང་
ལྷན་སྦྲེས་ཀྱི་ཐབས་ལས་བྱུང་འཇུག་གི་གོ་འཕང་སྐྱབས་རྒྱས་པ་ཡིན་ནོ།

ནང་པའི་རྒྱུད་ལ་བྱ་རྒྱུ། སྤྱོད་རྒྱུ། རྣལ་འབྱོར་རྒྱུ་དང་རྣལ་འབྱོར་སྒྲ་མེད་རྒྱུ་
བཅས་ཡོད་པ་ལས་སྒྲ་མ་སྒྲ་མ་བྱི་མ་བྱི་མར་བགྲོད་པའི་ཐེམས་སྐྱས་ལྟར་ཡིན་ཏེ། རྒྱུད་
གོང་མ་གོང་མ་རྣམས་འོག་མ་འོག་མ་ལས་བྱུང་བར་དུ་འཕགས་པ་ཡིན་ཞིང་། སྒྲ་མེད་
རྒྱུ་ནི་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་ནས་ཆེས་མཆོག་དུ་བྱུར་ལ། རྣལ་འབྱོར་སྒྲ་མེད་རྒྱུ་ལ་
ཡང་སྡེ་ཆོན་གསུམ་སྟེ། ཐབས་གཙོ་བོར་སྟོན་པ་མ་རྒྱུ། ཤེས་རབ་གཙོ་བོར་སྟོན་པ་མ་
རྒྱུ། གཉིས་ཀ་གཙོ་བོར་སྟོན་པ་གཉིས་མེད་ཀྱི་རྒྱུ་དོ། །གསང་བ་འདུས་པ་ལ་སོགས་
པ་མ་རྒྱུ། གྱེ་དོར་དང་བདེ་མཆོག་ལ་སོགས་པ་མ་རྒྱུ། དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་གཉིས་མེད་
ཀྱི་རྒྱུ་དུ་བསྐྱུས། སྒྲ་མེད་རྒྱུ་ལ་ཉམས་ལེན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ན། བསྐྱེད་པའི་རིམ་བ་
དང་ཚོགས་པའི་རིམ་པའོ། །ཐ་མལ་པའི་སྤང་བའི་གཉེན་པོར་བསྐྱེད་རིམ་དང་ཐ་མལ་
པའི་ཞེན་པའི་གཉེན་པོར་ཚོགས་པའི་རིམ་བ་བྱང་བ་ཡིན་ནོ།

དཔལ་སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་རྒྱུ་ནི་མ་རྒྱུ་ཀྱི་ཁོངས་སུ་གཏོགས་པའི་སྒྲ་མེད་ཀྱི་
རྒྱུ་གལ་གནད་ཆེ་བ་ཞིག་ཡིན་ལ། ལེའུ་བཙུ་བཞིའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་རྒྱུ་འདིར་མ་རྒྱུ་

དང་འབྲེལ་པའི་བཞེད་བྱའི་གནད་རྣམས་ཟབ་ཅིང་རྒྱས་པར་བསྟན་ཡོད། རྒྱུད་འདིའི་ལེའུ་
དང་པོ་གཉིས་ལ་སྟོབ་དཔོན་བསྐྱོད་ཅེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་འོད་ཅེས་པའི་འབྲེལ་པ་དང་།
སྟོབ་དཔོན་འཛིགས་མེད་སྤྱོད་པས་རྒྱུད་འདིའི་ལེའུ་ཡོངས་ཚོགས་ཀྱི་འབྲེལ་པ་འཛིགས་
པ་མེད་པའི་གཞུང་འབྲེལ་ཞེས་པ་མཛད། སྤྱིར་རྒྱུད་འདིའི་ས་ར་ཉ་བ་དང་འཛིགས་མེད་
སྤྱོད་པའི་བརྒྱུད་པ་གཉིས་བོད་དུ་དར།

སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་འདིའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ཙ་བའི་མ་དཔེ་དེ་སྤྱི་ཉིད་སོན་བྱུང་
མེད་ཀྱང་འདས་པའི་ལོར་ལེགས་སྦྱར་ལག་བྱས་ཤིང་ལོའི་མ་དཔེ་ཞིག་ལག་སོན་བྱུང་བ་
དེར་ལེའུ་བཞི་མ་གཏོགས་མ་བཞུགས། རྒྱ་དཔེ་དེ་ཉིད་འདི་ག་མཐོ་སྟོབ་ཉམས་ཞིབ་དུས་
དེབ་རྒྱུ་འདོན་ཐངས་ཞེ་གསུམ་པའི་ནང་དབར་བསྟན་ཞུས་ཡོད།

སྟོབ་དཔོན་འཛིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྤྱོད་པས་མཛད་པའི་འབྲེལ་པ་ལེགས་སྦྱར་
མ་དཔེ་ལག་བྱས་ཐོར་བྱའི་སྤྱིན་ཤོག་གཉིས་ཐོབ་པ་ལས་གཅིག་ཨེ་ཤི་ཡའི་ཀ་ སོ་སྤྱི་ཉི
ཀོ་ལ་ཀ་ཏ་དང་། གཞན་བལ་ཡུལ་ཀླུ་ཐམ་རྒྱུ་རྒྱལ་སྤྱིའི་ཡིག་རྒྱུ་དཔེ་མཛོད་ཁང་དུ་བཞུགས།
ལུ་ལག་བྱས་མ་དཔེ་དེ་ཉིད་ཉ་ཅང་རྩལ་རྩལ་དང་ལེའུ་གོང་འོག་འབྲེལ་པ་སོགས་མ་
དག་པ་ཇི་སྟེད་ཅིག་མཆིས།

འདི་ག་གཙུག་ལག་སྟོབ་ཁང་གི་དཔེ་རྒྱུན་དཀོན་རིགས་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་
ཚན་གྱི་ཉམས་ཞིབ་ལས་རོགས་ཤོག་ཀྱང་མཆོག་དོ་ཅེས་གཞུང་གཉིས་པོའི་བོད་དཔེ་སྤྱར་
ཐང་སོགས་དབར་མ་བཞི་པོ་མཆུངས་བསྟར་བྱས་པར་གཞི་བཅོལ་དེ་རྒྱ་དཔེ་ཞུ་སྤྱི་ག་
བགྱིས་པ་འདིས་དོན་གཉེར་ཅན་རྣམས་ལ་ཉེ་བར་མཁོ་བའི་རྒྱ་ཆ་བསྟན་ཐུབ་པ་ལ་ཤོག་
ཀྱང་མཆོག་དོ་ཅེས་ལེགས་སོ་བྱ་རྒྱུ་དང་། དེ་མཆུངས་དབར་སྟན་སྡེ་ཚན་གྱི་འགན་འཛིན་
དང་ལས་བྱེད་རྣམས་ལའང་ལེགས་སོ་བྱ་རྒྱུ་བཅས། ལྷན་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་
གཙུག་ལག་སྟོབ་གཉེར་ཁང་གི་ངས་སྟོན་པ་དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་གྱིས།
ཕྱི་ལོ་ ༢༠༠༤ ལྷ་ ༡༡ ཆེས་ ༡༥ ཉིན་སྦྱར་བ་དགེ་ལོ། ॥

बै. ग्रे. ५ वे. म. ६५. १८८५।
Glass No. ५१-२
Acc. No. D3340

विषयसूची

प्रकाशकीय	v-vi
५५२.३३३.६५.५६५।	vii-viii
विषय सूची	ix-x
३३३.३३५।	xi-xviii
भूमिका	xix-xli
सर्वसिद्धिज्ञाननिर्णयं पुस्तकं निश्चरणकपालस्फोटनपटलः प्रथमः	१-१७
क्षारप्रयोगः नानाकर्मनिश्चयो नाम मन्त्रपटलः द्वितीयः	१८-२१
देवतानिष्पत्तिसेचनः पटलः तृतीयः	२२-२७
शालिकाप्रयोगः उदकप्रयोगश्च पटलः चतुर्थः	२८-३९
भद्रौषधिसन्धिव्याख्यानामकः पटलः पञ्चमः	४०-४१
घोरमण्डललेखनं शिष्यसेचनश्च पटलः षष्ठः	४२-४७
मण्डल-हेरुकोत्पत्तिभावनाख्यः पटलः सप्तमः	४८-६२
होमविधिः पटलः अष्टमः	६३-६४
चर्यानामकः पटलः नवमः	६५-६६
विशिष्टमहौषधिः वन्ध्यास्नानविधिश्च पटलः दशमः	६७-६८
विद्याधरयोगोपदेशनिश्चयः पटलः एकादशः	६९-६९
नानामन्त्रप्रयोगः पटलः द्वादशः	७०-७१
चितविशुद्धिर्नाम पटलः त्रयोदशः	७२-८३
मन्त्रजापःप्रज्ञामातुरध्येषणाख्यः सर्वतन्त्रनिदानात्मकः पटलः चतुर्दशः	८४-८६

དཀར་ཆག

ཨང་རིམ།

མཚན་བྱང་།

ཤོག་གྲངས།

- | | | |
|----|--|-----|
| ༡ | དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་དང་ཡེ་ཤེས་གཏན་ལ་དབབ་པ་དང་
ཐོད་པ་ཁ་སྤྲེ་བ་ལས་སྒྲེག་བམ་བྱང་བའི་ལེའུ། | ༡༧ |
| ༢ | ཐལ་བའི་སྒྱུར་བ་དང་ལས་སྒྲེག་གཏན་ལ་དབབ་པ་དང་
སྒྲེག་གི་ལེའུ། | ༡༣༩ |
| ༣ | ལྷ་བསྐྱེད་པ་དང་དབང་བསྐྱེད་བའི་ལེའུ། | ༡༣༠ |
| ༤ | གྲུ་ལི་ཀའི་སྒྱུར་བ་དང་ལྷའི་སྒྱུར་བའི་ལེའུ། | ༡༤༡ |
| ༥ | སྒྲན་བཟང་པོ་དང་དཀོངས་པ་བཞད་པའི་ལེའུ། | ༡༤༥ |
| ༦ | དཀྱིལ་འཁོར་འཛིགས་པ་བྱི་བ་དང་སྒྲོབ་མ་དབང་བསྐྱེད་
བའི་ལེའུ། | ༡༤༧ |
| ༧ | དཀྱིལ་འཁོར་དང་ཉེ་རུ་ཀ་བསྐྱེད་པ་དང་སྒྲོམ་པའི་ལེའུ། | ༡༤༩ |
| ༨ | སྒྲན་སྒྲེག་གི་ཆོ་གའི་ལེའུ། | ༡༥༩ |
| ༩ | སྒྱོད་པའི་ལེའུ། | ༡༦༥ |
| ༡༠ | སྒྲན་ཆེན་པོ་བྱང་པར་ཅན་དང་མོ་ཤམ་གྱི་བྱས་ཀྱི་ཆོ་གའི་ལེའུ། | ༡༦༧ |
| ༡༡ | རིག་པ་འཛིན་པའི་སྒྱུར་བའི་མན་ངག་ངས་པའི་ལེའུ། | ༡༦༩ |
| ༡༢ | སྒྲེག་སྒྲེག་གི་ཆོ་གའི་ལེའུ། | ༡༧༩ |
| ༡༣ | སེམས་རྣམ་པར་དག་པའི་ལེའུ། | ༡༨༥ |
| ༡༤ | སྒྲེག་གི་བསྐྱེད་པ་དང་ཤེས་རབ་མ་ལ་གསོལ་བ་གདབ་པ་དང་
ལྷུང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲེང་གཞིའི་ལེའུ། | ༡༩༠ |

१५५५

༡༡། ཁདག་ཅག་གི་སྒྲིན་པ་རྣམས་འདྲེན་པའི་པ་སྐྱུལ་པའི་དབང་པོས་སེམས་ཅན་གྱི་
ཁམས་དང་བསམ་པ་མོས་པའི་དབང་གིས་ཆོས་ཀྱི་སྤང་པོ་བརྒྱད་ཁྲི་བཞི་སྟོང་གསུངས་
ལ། དེ་ཡང་ལང་ཀར་གསལ་གསལ་པའི་མདོ་ལས།

ཐི་ལྟར་ནད་པ་སོ་སོ་ལ།

སྒྲུབ་པ་སྒྲུབ་ནྟེས་གཏོང་བ་ལྟར།

སངས་རྒྱས་དེ་བཞིན་སེམས་ཅན་ལ།།

སེམས་ཅིམ་དུ་ཡང་རབ་དུ་གསུང་།།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཇི་ལྟར་སྒྲན་པས་ནད་པར་སྒྲན་སྒྲིན་པ་ལ་ནད་པའི་ནད་ལ་
 རགས་ལས་པ་བཞིན་ཐུབ་པའི་དབང་པོས་ཀྱང་སེམས་ཅན་གྱི་དབང་པོ་རབ་འབྱིང་ཐ་
 གསུམ་གྱི་དབང་གིས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་རིམ་པ་གསུམ་བསྐྱོར་ཏེ་ཐེག་པ་གསུམ་དང་གྲུབ་
 མཐའ་བཞི་བསྒྲན་པའི་སྒྲོན་པ་གདུལ་བྱ་རྣམས་རྗེས་སུ་བརྒྱང་བར་མཛད་ལ། དེ་ཡང་ཐེག་
 པའི་དབང་དུ་བྱས་ན་ཉན་ཐོས་དང་། རང་རྒྱལ། བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་ཐེག་པ་དང་
 གསུམ། གྲུབ་མཐའི་དབང་དུ་བྱས་ན་བྱེ་བྲག་སྤྲོ་བ་དང་། མདོ་སྡེ་ལ། སེམས་ཅན་ལ།
 དབྱ་མ་པ་བཅས་བཞི་ཡིན། འདིར་འཆད་པར་བྱ་བའི་གཞུང་ནི་ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་ནད་ནས་
 བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་ཐེག་པ་དང་འབྲེལ་བའི་གཞུང་ཡིན། དེ་ལ་ཡང་རྒྱ་མ་རོལ་དུ་སྒྲིན་
 པའི་ཐེག་པ་དང་། འབྲས་བུ་གསང་སྤགས་ཀྱི་ཐེག་པ་གཉིས་ཡོད། སྤྱིར་རྒྱ་མ་རོལ་དུ་
 སྒྲིན་པའི་ཐེག་པ་དང་འབྲས་བུ་གསང་སྤགས་ཀྱི་ཐེག་པ་གཉིས་ཀའི་དམིགས་ཡུལ་ནི་
 བསྐྱུ་བྱ་མཐར་ཐུག་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་ཡིན་པ་མཚུངས་ཀྱང་། དེ་འཐོབ་བྱེད་ཀྱི་
 ལམ་ལ་ཟབ་རྒྱས་གཉིས་ཀྱི་བྱེད་པར་གྱི་སྒྲོན་པ་བྱེད་པ་ཡིན།

དེ་ཡང་རྩལ་གསུམ་སྒྲོན་མ་ལས།

དོན་གཅིག་ན་ཡང་མི་སྤྲོད་ས་དང་།

ཐབས་མང་དཀའ་བ་མེད་པ་དང་།

དབང་པོ་རྣམ་པའི་དབང་བྱས་པས།

ཐུགས་ཀྱི་བསྐྱེད་བཅས་ཁྱད་པར་འཕགས།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར། འབྲས་བུ་སངས་རྒྱལ་གྱི་གོ་འཕང་སྤྲེལ་སྒྲུ་དང་གཟུགས་སྒྲུ་གཉིས་ཐོབ་པའི་རྒྱུ་དེ་ལ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཡིན་དགོས།

དེ་ཡང་རིན་ཆེན་སྒྲེང་བ་ལས།

སངས་རྒྱལ་ནམས་ཀྱི་གཟུགས་སྒྲུ་ནི།

བསོད་ནམས་ཚོགས་ལས་བྱུང་བ་སྤྱེ།

ཚོས་ཀྱི་སྒྲུ་ནི་མདོར་བསྟུ་ན།

རྒྱལ་པོ་ཡེ་ཤེས་ཚོགས་ལས་འབྱུངས།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཚོས་སྒྲུ་བྱེད་ཀྱི་ཉེར་ལེན་གྱི་རྒྱ་སྒོར་ཉིད་སྒྲོམ་པ་སྤྱེ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་བསགས་པའི་རྩལ་རྒྱུ་པ་རྩལ་ཏུ་བྱིན་པ་ལ་ཡང་ཡོད་མོད། གཟུགས་སྒྲུ་སྒྱུ་བྱེད་ཀྱི་ཉེར་ལེན་གྱི་རྒྱ་པ་རྩལ་ཏུ་བྱིན་པ་ལ་བཤད་མེད། རྒྱ་མཚན་དེར་བརྟེན་རྒྱ་པ་རྩལ་ཏུ་བྱིན་པ་དང་འབྲས་བུ་གསང་ཐུགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ལ་ཐབས་རྒྱལ་གྱི་ཁྱད་པར་གནམ་ས་ལྟ་བུ་ཡོད་པ་སྒྲོས་མི་དགོས། དཔེར་ན་འབྲས་བུ་ཐེག་པའི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་ཀྱིས་ཀྱང་ཐབས་རྒྱལ་གྱི་ཁྱད་པར་གསལ་བར་སྟོན་ནུས་ཏེ། འབྲས་བུའི་ཐེག་པའི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་ལ་མཚོན་ན། འབྲས་བུའི་སྐབས་སུ་ཐོབ་བྱ་གནས་དང་སྒྲུ་དང་ལོངས་སྟོན་དང་འབྲིན་ལས་བཞི་པོ་ལམ་གྱི་གནས་སྐབས་ན་དེའི་ངོ་བོར་གྱུར་ནས་སྒྲོམ་པར་བྱས་པས་ན་འབྲས་བུའི་ཐེག་པ་ཞེས་བརྗོད་པ་དང་། ཐུགས་ཀྱི་ཐེག་པའི་མིང་གི་རྣམ་གྲངས་ལ་མཚོན་ན་འདུས་པའི་རྒྱུད་བྱི་མ་ལས།

དབང་པོ་དང་ནི་ཡུལ་ནམས་ཀྱི།

ཀྱིན་གྱིས་གང་དང་གང་བྱུང་ཡི།

ཡིད་དེ་སྤྲོ་ཞེས་བྱ་བར་བཤད།

དྲ་ནི་སྤྱོད་བར་བྱེད་པའི་དོན།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཡིད་ཐ་མལ་གྱི་སྤང་ཞེན་ཏེ་སྤང་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དག་
པའི་ཞིང་དང་བཅུད་ཀྱི་སེམས་ཅན་ནམས་ལྟ་དང་ལྟ་མོའི་སྤང་བ་དང་། དེ་བཞིན་རང་ཉིད་
ལྟའི་ང་རྒྱལ་བསྐྱེད་དེ་ཐ་མལ་གྱི་སྤང་ཞེན་ལས་ཡིད་སྤྱོད་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་ན་སྤྲུགས་ཀྱི་
ཐེག་པ་ཞེས་བརྗོད་པ་ལྟར་རོ། རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ཞེས་པའི་མིང་གི་ནམ་གངས་ཀྱི་དོན་མཚོན་
ཚུལ་ཡོད་དེ། རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ནི་ཐབས་ཤེས་དབྱེར་མི་བྱེ་བ་སྤྱོད་བའི་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་
ནལ་འབྱོར་དང་ལྟན་པའི་ཐོག་ནས་འབྲས་བུ་མངོན་དུ་འགྱུར་བར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་ཡིན་
པའི་ཕྱིར་རོ། སྤྲུམ་པའི་མེ་ཏོག་ལས། རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མ་ལུས་
པར་བསྐྱས་པ་ནི་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་དུག་ཡིན་ལ། དེ་ནམས་བསྐྱས་པ་ནི་ཐབས་དང་ཤེས་
རབ་ཡིན་ཞིང་། དེ་དག་ཀྱང་བསྐྱས་པ་རོག་ཅིག་པ་དེ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཡིན་ཏེ་དེ་
ཡང་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་ཡིན་ལ། དེ་ཉིད་ནི་རྡོ་རྗེ་ཡིན་ནོ། རྡོ་རྗེ་ཡང་དེ་ཡིན་
ལ་ཐེག་པ་ཡང་ཡིན་པས་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའོ། དེ་ལ་ཐབས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་མིང་གི་
ནམ་གངས་ཀྱི་མཚོན་ཚུལ་ཡོད་དེ། རྒྱ་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པའི་ཐེག་པ་ལྟར་བསྐྱལ་ཆེན་
གངས་མེད་གསུམ་དུ་ཆོགས་བསགས་སྤྱིབ་སྤྱང་ལ་སོགས་པའི་དཀའ་སྤྱད་དུ་མའི་སྤོ་
ནས་བྱང་ཆུབ་སྤྱབ་མི་དགོས་པར་སྤྲུགས་ཀྱི་སྤོར་འཇུག་སྟེ་དབང་ཐོབ་པར་བྱས་ནས་ལྟའི་
བསྟེན་པ་སྤྱོད་པའི་སྤོར་ནས་ཞི་བྱས་དབང་དུག་སོགས་བྱིན་ལས་ནམ་པ་བཞི་དང་རིལ་བུ་
མིག་སྤྲོན་སོགས་ཐུན་མོང་བའི་དངོས་བྱུབ་བརྒྱད་དང་བསྐྱེད་རྫོགས་གཉིས་ཀྱི་ཉམས་
ལེན་སོགས་ཐབས་ཐབ་པ་དང་རྒྱ་ཆེ་བའི་སྤོར་ནས་ཆོ་ག་ཅིག་ལུས་གཅིག་ལ་འཆང་རྒྱ་བའི་
གདམས་ངག་དུ་མ་ཡོད་པས་ན་ཐབས་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་ཞེས་བརྗོད་དོ།

སྤྱིར་དོ་རྩེ་ཐེག་པའི་ལམ་ལ་འདུག་སྟོ་མི་འདྲ་བ་དུ་མ་ཡོད་དེ། གདུལ་བྱ་དམན་པ་
དང་། འབྲིང་དང་མཆོག་དང་། དེ་ལས་ཆེས་མཆོག་དུ་གྱུར་པའི་གདུལ་བྱ་བཞི་རྩེས་སུ་
གཟུང་བའི་ཆེད་དུ་རྒྱད་སྟེ་བཞི་ཡོད་དེ། རོ་རྩེ་གྲར་ལས།

དམན་པ་རྣམས་ལ་བྱ་བའི་རྒྱད།
བྱ་མེད་རྣལ་འབྱོར་དེ་ལྟག་ལཱོ།
སེམས་ཅན་མཆོག་ལ་རྣལ་འབྱོར་མཆོག།
སྤྱ་མེད་རྣལ་འབྱོར་དེ་ལྟག་ལཱོ།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།

གཞན་ཡང་། སྤྲུགས་ཀྱི་ཆེད་དུ་བྱ་བའི་གདུལ་བྱ་གཙོ་བོ་འདོད་ཡོན་ལ་ཆགས་པ་
ལམ་དུ་བྱེད་པའི་སྟོ་ནས་ཆགས་སོགས་ཉོན་མོངས་རྣམས་ཟད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ལ་དེའི་
དབང་གི་རྒྱད་སྟེ་བཞི་བྱང་སྟེ། ཁ་སྤྱོར་ལས།

ཁོད་དང་ལྟ་དང་ལག་བཅངས་དང་།
གཉིས་གཉིས་འབྱུང་དང་རྣམ་པ་བཞི།
སྤིན་བུའི་ཚུལ་གྱིས་རྒྱད་བཞིར་གནས།

ཞེས་གསུངས་པའི་བྱིར།

རྒྱད་ཀྱི་ཉམས་ལེན་ཡང་བྱང་ཚུབ་ལམ་སྤྱོན་ལས།

བྱ་བ་སྤྱོད་སོགས་རྒྱད་གསུངས་པའི།
གལ་ཏེ་གསང་སྤྲུགས་སྤྱོད་འདོད་ན།
དེ་ཆེ་སྟོབ་དཔོན་དབང་བསྐྱར་བྱིར།
བསྟེན་བཀུར་རིན་ཆེན་སོགས་སྤྱིན་དང་།

བཀའ་སྒྲུབ་ལ་སོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས།

སྤྱི་མ་དམ་པ་མཉེས་པར་བྱ།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་སྤྱི་མ་མཉེས་པར་བྱས་ཏེ་སྤྱི་མ་ལས་དབང་ཞུས་ནས་དམ་ཚིག་
མ་ཉམས་པའི་ཐོག་ཉམས་སུ་ལེན་དགོས་པ་ཡིན། དབང་ལ་རྣམ་པ་བཞི་ཡོད་དེ། བྱམ་
དབང་དང་། གསང་དབང་དང་། སྤེས་རབ་ཡེ་སྤེས་ཀྱི་དབང་དང་། དབང་བཞི་པ་ཚིག་
དབང་རིན་པོ་ཆེ་ལོ། རྒྱུད་སྡེ་ལོག་མ་གསུམ་ལ་བྱམ་དབང་གི་ནང་གསེས་ཆུ་དང་། ཅན་
པན། རྩོམ་། རྩལ་བྱ། མིང་དང་སྟོན་དཔོན་གྱི་དབང་བཅས་འགའ་ཞིག་ལས་མཚན་བཅས་
དང་མཚན་མེད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་བསྟོམས་པ་ལས་བསྐྱེད་རིམ་མཚན་ཉིད་པ་སྟེ་འཆི་བར་དོ་
གསུམ་བྱང་བའི་ཐོག་ནས་སྤྱི་མེད་རྒྱུད་ནས་བཤད་པའི་བསྐྱེད་རིམ་སྟོན་པ་སོགས་མེད་
པས་བྱམ་དབང་ཅམ་ལས་བྱམ་དབང་མཚན་ཉིད་པ་མེད་པ་འདོད་དོ། བྱམ་དབང་མཚན་
ཉིད་པ་དང་དབང་གོང་མ་གསུམ་ནི་སྤྱི་མེད་རྒྱུད་ཀྱི་བྱང་ཆས་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།

སྤྱི་མེད་རྒྱུད་ལ་ཡང་པ་རྒྱུད་གསང་བ་འདུས་པ་སོགས་དང་མ་རྒྱུད་ཀྱི་དོར་བདེ་
མཚོག་སོགས་དང་། གཉིས་མེད་རྒྱུད་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བཅས་དབྱེ་བ་གསུམ་དུ་སྟེ། དེ་
ཡང་པ་རྒྱུད་གསང་བ་འདུས་པ་ལྟ་བུ་ལ་མཚོན་ན་བསྐྱེད་རིམ་གསང་འདུས་སྟོན་གསལ་དུ་
གསལ་བ་ལྟར་བསྟན་པ་དང་། བསྟན་སྒྲུབ། རྒྱུབ་པ་དང་རྒྱུབ་པ་ཆེན་པོ་བཞིའི་སྟོན་ནས་དང་།
རྩོགས་རིམ་ལ་ལུས་དབེན་ངག་དབེན་སེམས་དབེན་སྒྲུ་ལུས་འོད་གསལ་དང་ཟུང་འཇུག་
སོགས་རིམ་པ་ལྟའི་སྟོན་ནས་སྟོམ་པར་བྱེད་ལ། དེ་བཞིན་དུ་པ་རྒྱུད་གཤེན་རྩེ་གཤེན་ལྟ་བུ་ལ་
མཚོན་ན་བསྐྱེད་རིམ་རྣལ་འབྱོར་དང་། རྩེ་སྒྲུ་རྣལ་འབྱོར་དང་། མཚོག་གི་རྣལ་འབྱོར་
དང་། རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་བཞིའི་སྟོན་ནས་དང་། མ་རྒྱུད་ཀྱི་དོར་དང་བདེ་མཚོག་སོགས་བསྐྱེད་
རིམ་ཡན་ལག་བཞི་དང་མཛོན་བྱང་ལྟའི་སྟོན་ནས་བསྟོམ་པ་དང་། རྩོགས་རིམ་ལས་ཀྱི་ཕྱག་
ཀྱ། དམ་ཚིག་གི་ཕྱག་ཀྱ། ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་ཀྱ་དང་། ཕྱག་ཀྱ་ཆེན་པོ་བཞིའི་སྟོན་ནས་སྟོམ་པར་
བྱེད་ལ། གཉིས་མེད་རྒྱུད་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐྱེད་རིམ་རྣལ་འབྱོར་བཞི་སྟེ། དཀྱིལ་འཁོར་

རྒྱལ་མཆོག་བསྟེན་པའི་རྣལ་འབྱོར་དང་། ལས་རྒྱལ་མཆོག་ཉི་ལེན་བསྟེན་པའི་རྣལ་འབྱོར་
དང་། ཐིག་ལེ་ཡོངས་སུ་སྐྱབ་པ་ཐིག་ལེའི་རྣལ་འབྱོར་དང་། བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་
སྐྱབ་པ་སྤྱི་བའི་རྣལ་འབྱོར་བཅས་བཞིའི་སློན་ནས་བསྟོམ་པར་བྱེད་དོ། ། རྩོགས་རིམ་ནི་མེར་
སྤྱད། བསམ་གཏན། སྟོག་ཚུལ། འཛིན་པ། རེས་བྲན་དང་ཉིང་རེ་འཛིན་བཅས་སྦྱོར་བ་ཡན་
ལག་བྲལ་གི་སློན་ནས་སྟོམ་པར་བྱེད་ལ་དེ་དག་རྒྱུད་སྡེ་སྦྱིའི་དོན་ཡིན།

སྐབས་སུ་བབ་པ་དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་གཞུང་འདི་གོང་དུ་བཤད་པའི་
རྒྱུད་སྡེ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་སྤྱི་མེད་རྒྱུད་ཀྱི་ནང་གསེས་མ་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱུད་གཞུང་གལ་ཆེ་བ་
ཞིག་ཡིན། རྒྱུད་འདི་ལ་ལེའུ་བཅུ་བཞི་ཡོད་ཅིང་མ་རྒྱུད་དང་འབྲེལ་བའི་བརྗོད་གཞི་ཡོངས་
རྩོགས་ཉ་ཅང་ཟབ་པ་དང་རྒྱ་ཆེ་བའི་སློན་ནས་འབྲེལ་བརྗོད་བྱས་ཡོད། རྒྱུད་འདིའི་ལེའུ་དང་
པོ་གཉིས་ལ་སྟོབ་དཔོན་མཆོག་སྟེ་རྩོམ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ཆུ་བ་ཞེས་པའི་དཀའ་འབྲེལ་
མཛད་ཡོད། རྒྱུད་གཞུང་འདི་ཉིད་དགོངས་པ་ཅན་དང་བརྟུན་ཀྱི་ཐོག་ནས་བཤད་པའི་རྒྱ་
མཆོན་ལ་བརྟེན་ནས་རྟོགས་དཀའ་བར་སྤྱད། སྟོབ་དཔོན་འཛིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྤྱས་
པས་རྒྱུད་གཞུང་འདི་ལ་འབྲེལ་པ་ཆ་ཆང་མཛད་ཡོད་པ་དེ་བཞིན་བོད་སྐད་དུ་དཔང་པོ་རྩ་
བ་སྟོ་གྲོས་བཏན་པས་པབ་བསྐྱུར་མཛད་པ་ཡིན། དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་འདི་
ལ་གྲུབ་ཐོབ་ས་ར་ཉ་པ་དང་སྟོབ་དཔོན་འཛིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྤྱས་པ་ནས་བརྒྱུད་
པའི་བརྒྱུད་པ་གཉིས་བོད་དུ་དར་ཡོད། རྒྱུད་གཞུང་འདི་ལ་གྲུབ་ཐོབ་ས་ར་ཉ་པའི་དཀའ་
འབྲེལ་ཡེ་ཤེས་ལྡན་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། སྟོབ་དཔོན་འཛིགས་མེད་སྤྱས་པའི་དཔལ་སངས་
རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱ་ཆེར་འབྲེལ་པ་འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་
འབྲེལ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། གཞན་ཡང་སྟོབ་དཔོན་མཆོག་སྟེ་རྩོམ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཆུ་བ་ཞེས་
པའི་དཀའ་འབྲེལ་བོད་སྐད་ཐོག་མཇལ་རྒྱ་ཡོད། སྟོབ་དཔོན་འཛིགས་མེད་འབྱུང་གནས་
སྤྱས་པ་ནི་ཆོད་ལྡན་གྱི་པཎ་གྲུབ་ཞིག་ཡིན་ལ། རྩོམ་རྒྱ་ར་རྣམས་ལྡར་ན་ཁོང་རྒྱ་གར་སྟོ་
སྟོགས་ཇའི་ཁར་ཞེས་པའི་གནས་སུ་སྐྱབ་བལྟམས། གཞོན་ནུའི་དུས་ན་སྤྱད་ཆད་མ། རིག་

བྱེད་མཐའ་པ་ལ་སོགས་པའི་གཞུང་དག་ལ་མཁས་པའི་ཡང་ཅེར་སོན། བྱིས་སྤྱ་ནང་པར་
རབ་ཏུ་བྱུང་ནས་མདོ་རྒྱུད་གཉིས་ཀར་མཁས་པའི་དབང་པོར་གྱུར། བསྟན་འགྲུར་ནང་ཁོང་
གིས་མཛད་པའི་གཞུང་གྲངས་ཉེར་གཉིས་བཞུགས་ཡོད།

སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་རྒྱུད་འདིའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་ཙ་པའི་མ་དཔེ་ད་བར་ཉིད་སོན་བྱུང་
མེད་ཀྱང་འདས་ལོར་ཏ་ལའི་ལོ་མའི་ཐོག་རྒྱུད་འདི་ཆ་མ་ཆང་བ་ཞིག་ལེགས་སྦྱར་ལག་
བྱིས་མ་དཔེ་ལག་སོན་བྱུང་ཡོད། དེའི་ནང་ལེའུ་བཞི་མ་གཏོགས་མེད། དེ་བཞིན་འདི་ག་
མཐོ་སྒྲོབ་ཉམས་ཞིབ་དུས་དེབ་རྒྱུ་འདོན་ཐེངས་ཞེ་གསུམ་པའི་ནང་དཔར་བསྟན་ཞུས་ཡོད།

སྒྲོབ་དཔོན་འཇིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྤྱས་པས་མཛད་པའི་འཇིགས་པ་མེད་པའི་
གཞུང་འབྲེལ་ལེགས་སྦྱར་ནང་ཆ་མ་ཆང་བའི་ལག་བྱིས་མ་དཔེ་གཉིས་ཐོབ་གྱི་ཡོད་པ་
ལས་ལག་བྱིས་མ་དཔེ་གཅིག་ཨེ་ཤུའི་ཀ་སོསྒྲུལ་འི་ཀོལ་ཀརྒྱ་དང་། གཞན་དེ་བལ་ཡུལ་
ཀུམ་མཐུ་རྒྱལ་སྤྱིའི་ཡིག་རྒྱུད་དཔེ་མཛོད་ཁང་ནང་ཡོད། ལག་བྱིས་མ་དཔེ་དེ་གཉིས་ཀྱི་
འདྲ་བཤུས་སྒྲིན་ཐོག་འདི་གའི་མཐོ་སྒྲོབ་ཀྱི་ཞི་འཆོད་པེ་མཛོད་ཁང་དུ་ཡོད། ལུ་ལུ་ཡིག་
གཞུགས་ནང་ཡོད་པའི་ལེགས་སྦྱར་ལག་བྱིས་མ་དཔེ་དེ་གཉིས་ཏ་ཅང་ཉལ་ཉལ་ལེའུ་
གོང་འོག་འབྲུགས་པ་དང་མ་དག་པ་ཡོད་པ་དེ་དག་བོད་འབྲུར་ལ་བཞེན་ནས་སྤྱོད་གས་
བསྒྲིགས་ཞུ་དག་དང་། དེ་བཞིན་ལེགས་སྦྱར་མ་དཔེ་ལ་བཞེན་ནས་སྤྱར་ཐང་སོགས་བོད་ཀྱི་
པར་མ་བཞི་དང་མཚུངས་བསྟར་གྱིས་ཞུ་བསྒྲིགས་བྱས་པ་ཡིན།

སྤྱར་དབྱས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སྒྲོབ་གཉེར་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་དག་
བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་ལགས་ནས་རྒྱུད་གཞུང་འདི་ཞུ་སྒྲིགས་སྤྲུལ་ལམ་སྟོན་
མཐུན་འགྲུར་ཐོགས་རམ་གནང་བ་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་དང་། དེ་བཞིན་འདི་ག་མཐོ་སྒྲོབ་
ཉམས་ཞིབ་སྒྲོབ་དཔོན་རྒྱལ་སྤྱིའི་མཚོག་ནས་རྒྱུད་གཞུང་འདིའི་ལེགས་སྦྱར་ཞུ་དག་
ཀྱང་བཞེས་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ། དེ་མཚུངས་སྒྲོབ་དཔོན་སེམས་དཔའ་དོ་རྗེ་
ལགས་དང་ཏོག་ཏུར་དབང་ཐུག་དོ་རྗེ་ལགས་ནས་ལེགས་སྦྱར་མ་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་

མཚུངས་བསྐྱར་སྐབས་རིགས་རམ་གནང་བ་དང་ཆེས་དཀོན་ནང་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་
 ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་གཙོ་འཛིན་སྟོབ་དཔོན་བུ་ལཱ་ཀར་མཆོག་དང་སྡེ་ཚན་གྱི་ལས་རིགས་ཚང་
 མར་ལེགས་སྐྱར་མ་དཔེ་མཚུངས་བསྐྱར་སྐབས་རིགས་རམ་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་བྱ།
 མཐོ་སྟོབ་ཀྱི་ཀུན་ཀྱི་ཚན་གྱི་འབྲིན་ལས་དར་རྒྱས་ལགས་ནས་སྟོན་མཁོད་དང་འབྲེལ་
 པའི་གལ་ཆེའི་རིགས་གནང་བ་དང་། དབར་སྐྱེན་སྡེ་ཚན་གྱི་འགན་འཛིན་ཤོ་ཀེར་བསམ་
 གཏན་ཆོས་འཕེལ་ལགས་དང་ལས་རིགས་ཆོར་དཔར་བསྐྱེན་རིགས་རམ་གནང་བར་
 ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་བྱ་ཡིན།

ཕན་རང་རིག་པའི་གནས་དག་ལ་སྦྱངས་པ་དམན་ཤིང་ཞུ་སྟེག་སྐབས་ནོངས་བ་ཅི་
 མཆིས་གཟུར་གནས་མཁས་དབང་ཀུན་ལ་བཟོད་གསོལ་ཞུ་བ་དང་སྐྱགས་ལེགས་བཅས་
 བཀའ་སྟོབ་གནང་སྟོང་ཡོང་བ་ཞུ་བྱ།

དབལ་སངས་རྒྱལ་མོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་འབྲེལ་པ་འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འབྲེལ་
 ལེགས་སྐྱར་དང་པོད་དཔེ་མཚུངས་བསྐྱར་སྐབས་ཞིབ་བཞུགས་པ་འདི་ཉིད་དབར་བསྐྱེན་ཞུ་
 ཐུབ་པར་དགའ་སྟོ་ཆེན་པོ་བྱུང་བ་དང་། འདིས་སངས་རྒྱལ་ཀྱི་བསྐྱེན་པ་སྟེ་དང་ཁྱད་པར་
 ཏུ་གསང་སྐྱགས་དོ་རྗེ་ཐེག་པའི་བསྐྱེན་པ་རིན་པོ་ཆེ་དྲི་མ་མེད་པ་དར་བའི་རྒྱ་ཏུ་སྟོན།
 ཅེས་ཕྱ་ཆ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སྟོབ་གཉེར་ཁང་གི་དཔེ་རྒྱུན་དཀོན་
 རིགས་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་ཉམས་ཞིབ་པ་མཆོག་དོ་རྗེས། བོད་རྒྱལ་ལོ་ ༡༩༣༥ ལྷ་ ༤
 ཆོས་ ༡༥ ལྷ་ལོ་༢༠༠༤ ལྷ་ ༡༠ ཆོས་ ༡༧ ཉིན་བྲིས་པ་དགོས། ॥

भूमिका

तन्त्रशास्त्र के उद्भव एवं विकास का इतिहास अत्यन्त व्यापक है। इसके यथार्थ स्वरूप का वर्णन करना किसी भी सामान्य अध्येता के लिये सम्भव नहीं है। तथापि भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में पनपी तान्त्रिक धाराएँ-बौद्ध परम्परा और बौद्धेतर परम्परा, इन दो दिशाओं की ओर प्रवाहमान दिखाई पड़ती हैं। विभिन्न इष्ट देवताओं की साधना से सम्बन्धित तन्त्रों का विस्तार बौद्धेतर परम्पराओं में भी कम नहीं है।

तथागत बुद्ध ने सकल जीवों के कल्याण के लिए उनके अध्याशय, रुचि एवं क्षमता के अनुसार सद्धर्म की देशना की है। इसी उद्देश्य से उन्होंने धान्यकटक के श्रीपर्वत पर तन्त्र का उपदेश दिया था। बौद्धतन्त्र का लक्ष्य प्राणिमात्र को दुःख से मुक्ति दिलाना है, जो बोधिचित्त के उत्पाद से ही सम्भव है। बोधिचित्त तन्त्र साधना का आधार है। बोधिचित्त को बौद्धतन्त्र में प्रवेश का द्वार भी कह सकते हैं। अतः व्यक्तिगत मोक्ष के आकांक्षी का तन्त्र में प्रवेश वर्जित है। अतः साधक को तन्त्र में प्रवेश से पूर्व सामान्यतया मार्गशोधन करना होता है। बिना विशुद्ध विरागचित्त के इस भवसागररूपी संसार से पार होकर शान्ति प्राप्ति का कोई उपाय नहीं है। यह विरागचित्त भी विशुद्ध बोधिचित्त के द्वारा परिगृहीत न हो तो वह अनुत्तरबोधि का हेतु नहीं बन सकता। विरागचित्त एवं बोधिचित्त में अभ्यस्त होने पर भी तत्त्व प्रतिपत्ति प्रज्ञा के अभाव में इन मार्गों द्वारा भव के मूल अविद्या का उच्छेद नहीं किया जा सकता है। इसलिए प्रतीत्समुत्पाद का बोध करना होता है।

बोधिचित्त की तरह अभिषेक का भी तन्त्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसे प्राप्त किये बिना तन्त्र की देशना, श्रवण, चिन्तन अथवा मनन वर्जित है और इसके अभाव में प्रवेश लेना या साधना करना निष्फल ही नहीं, अपितु साधक को नरक का भागी बनाता है। इसी ग्रन्थ 'श्रीबुद्धकपालतन्त्र' के पाँचवें पटल देवतोत्पत्ति एवं अभिषेक में उद्धृत किया गया है कि जैसे वीणा के अन्य सभी

तन्तुओं के सम्पन्न होने पर भी यदि बजाने वाला विज्ञ न हो तो आवाज के न निकलने की तरह अभिषेक के अभाव में तन्त्र की साधना की जाये तो सिद्धि की प्राप्ति न होगी। सामान्यतः अभिषेक का अभिप्राय विशेष अधिकार की प्राप्ति से है। अभिषेक तन्त्र साधक को साधना करने में अधिकृत करता है। इसी प्रकार मण्डल, मुद्रा, कुल आदि का भी तन्त्र में अपना महत्त्व है।

तन्त्र शब्द का अर्थ— प्रबन्धं तन्त्रमाख्यातम् (गुह्यसमाज १८.३३) के अनुसार अविच्छिन्न चित्त सन्तति को तन्त्र कहते हैं, जो तीन प्रकार का होता है— वस्तुतन्त्र, मार्गतन्त्र और फलतन्त्र। तन्त्र को गुह्य कहा गया है, क्योंकि अपात्र लोगों से इसे गुह्य रखा जाता है और जिसकी साधना गुह्यरूप से की जाती है। हेतु पारमितायान और फल मन्त्रयान है। हेतु तथा फल अथवा प्रज्ञा एवं उपाय इनकी अभिन्नता को ही वज्र कहते हैं।

साधना पद्धति के आधार पर बौद्ध तन्त्रों के चार आभ्यन्तर भेद माने जाते हैं। जैसे क्रिया, चर्या, योग एवं अनुत्तरयोगतन्त्र। वह साधक जो बाह्य मुद्राओं से काय की सिद्धि, वाक् द्वारा मन्त्रावृत्ति करने से वाक् की सिद्धि और चित्त द्वारा भावना करने से चित्त की सिद्धि प्राप्त करता है और आन्तरिक ध्यान भावना की अपेक्षा, बाह्य शुद्धि आदि आचरणों पर विशेष जोर देता है अथवा जिस तन्त्र में बाह्य क्रिया की देशना अधिक होती है, उसे क्रियातन्त्र कहते हैं।

जो साधक बाह्य काय, वाक्, चर्या की शुद्धि और आभ्यन्तर चित्तयोग पर समान रूप से बल देता है या जिसमें क्रिया और ध्यान भावना को समान महत्त्व दिया गया है, वह चर्यातन्त्र है।

योगतन्त्र में साधक बाह्य से ज्यादा आन्तरिक चित्तयोग पर जोर देता है और विषय शून्यता का साक्षात्कार करने का प्रयास करता है। आन्तरिक योग अत्यधिक मुख्य होने के कारण से भी योगतन्त्र कहा जाता है।

समापत्तियोग में स्थित होकर अद्वय तत्त्व का साक्षात्कार कर बाह्य पेयापेय, गम्यागम्य, शुभाशुभ विकल्प रहित चर्या करने वाला साधक अनुत्तरयोग तन्त्री है। जिस तन्त्र के ऊपर (श्रेष्ठ) अन्य तन्त्र नहीं होता, उसे अनुत्तर तन्त्र

कहा गया है। वज्रपञ्जर में उद्धृत है कि तथागत बुद्ध ने सत्त्वों की बुद्धि के स्तर के अनुरूप अधम को क्रियातन्त्र, मध्यम को चर्यातन्त्र, उत्तम को योगतन्त्र एवं अति-उत्तम को अनुत्तरयोगतन्त्र की देशना की है। इसी प्रकार बौद्धतन्त्र में चार प्रकार के रागों के शोधन के लिए, चारवर्णों के पुद्गलों के लिए, चार प्रकार के त्याज्य क्लेशों के, चार प्रकार की तीक्ष्ण मन्द आदि इन्द्रियों के लिए, चार प्रकार के हेतु अवस्थाओं की वासना एवं सामान्य चार प्रकार की प्रहराभिसन्धियों तथा युगों के आधार पर विभाजन किया गया है।

सम्पुटतन्त्र में बुद्ध ने कहा है—

हासदर्शनपाण्याप्तिः स तु तन्त्रे व्यवस्थितः ।

रागश्चैव विरागश्च चर्वयित्वा घृणः स्थितः ॥

मन्त्रयान एवं सूत्रयान दोनों बुद्धत्व प्राप्ति के साधन होने पर भी चार विशेषताओं से मन्त्रयान विशिष्ट है। क्योंकि मन्त्रयान गम्भीर उपाय एवं प्रज्ञा के विषय में अमूढ है। इसमें देवयोग भावना करना आदि का अधिक उपाय होता है। तीन असंख्य महाकल्प तक के लिए तपस्या की आवश्यकता नहीं होती है और मार्गगामी साधक तीक्ष्णबुद्धि वाले होते हैं। पारमितानय में परिश्रमयुक्त शमथ और विपश्यना की भावना की जाती है, पर मन्त्रनय में विशुद्ध उपाय-कुशलता द्वारा सनिमित एवं अनिमित्त योग द्वारा प्राणायाम से वायु पर नियन्त्रण किया जाता है और वज्रजाप आदि का सरल मार्ग अपनाया जाता है। उसी प्रकार पारमितानय में साधन द्वारा साध्य की प्राप्ति की जाती है, जबकि मन्त्रनय में साधन और साध्य अद्वय तत्त्व हैं। अतः इसे फलयान भी कहा जाता है।

जैसा हेवज्रतन्त्र में कहा है—

न बुद्धो लभ्यतेऽन्यत्र लोकधातुषु कुत्रचित् ।

चित्तमेव ही संबुद्धो न बुद्धोऽन्यत्र दर्शितः ॥ (२.४.७५)

पारमितानय में अनन्त कल्पों तक दुष्करचर्या की साधना करने को कहा जाता है, परन्तु मन्त्रनय में साधक चाहे तो एक ही जीवन में क्या, एक ही आसन पर बोधि प्राप्त कर सकता है। प्राणियों का हित करने के लिए पारमितानय में उपायों की अल्पता है। मन्त्रनय में वृष्टि, रोगशमन, शान्त, रौद्र, पुष्टि, वशीकरण आदि अनेक विधियाँ हैं। फल में समानता होने पर भी वज्रयान पारमितायान से विशेष है। अतः त्रिनयप्रदीप में मन्त्रयान को चार विशेषताओं से विशिष्ट कहा गया है।

यथा—

एकार्थत्वेऽप्यसंमोहाद् बहूपायाददुष्करात् ।

तीक्ष्णेन्द्रियाधिकाराच्च मन्त्रशास्त्रं विशिष्यते ॥

पारमिता का साधक प्राणियों के हित के लिए अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग एवं शरीर तक का दान देता है, परन्तु इससे असंख्य प्राणियों का कल्याण सिद्ध नहीं किया जा सकता। तन्त्र में इस प्रकार का संमोह नहीं है। इसमें खड्ग, अंजन, वृष्टि आदि अनेक उपाय हैं, जिन के द्वारा प्राणियों का उपकार किया जा सकता है।

उसी प्रकार पारमितानय में समय-संवर, तपस्या, उपवास, व्रत आदि अनेक दुष्कर नियम हैं, पर तन्त्र में नाना आशय, रुचि एवं सामर्थ्य के अनुसार शान्त, रौद्र, वीभत्स, भयानक आदि अनेक प्रकार के उपायों का सहारा लिया जा सकता है।

जहाँ पारमितानय में क्लेशों का प्रयासपूर्वक प्रहाण करना पड़ता है, वहीं तन्त्र में इन क्लेशों का प्रहाण न कर उनका बोधिप्राप्ति के लिए मार्गीकरण किया जाता है।

हेवज्र में कहा है—

येन येन हि बध्यन्ते जन्तवो रौद्रकर्मणा ।

सोपायेन तु तैनेव मुच्यन्ते भवबन्धनात् ॥ (२.२.५०)

अद्वय तत्त्व का वही ज्ञान कर सकता है, जिस में वस्तुस्थिति को समझने की तीक्ष्ण बुद्धि हो। यद्यपि तीव्र बुद्धि का अनेक क्षेत्रों में अपना-अपना स्वरूप होता है, परन्तु यहाँ वस्तु की वास्तविकता को समझने की तीव्रता को ही श्रेष्ठ माना गया है। पारमितावादी समग्रता को समझने में असमर्थ होते हैं। अतः उनके मार्ग में प्रज्ञोपाय अद्वय तत्त्व का विवेचन नहीं होता है। जहाँ पारमिता का साधक छः पारमिताओं की एक-एक कर भावना करता है, वहीं तन्त्र साधक के लिए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मण्डल देवता है, अद्वय बोधिचित्त है और वह सब अपने में सन्निहित है, आत्मस्थ है, आत्मदेव है, स्वकाय ही निजमण्डल है। यही तन्त्र की साधना विधि है।

बौद्धतन्त्र का विस्तृत रूप अपरिमित है। ऐसा ज्ञानवज्रसमुच्चय में कहा है। बुद्धवचन में तंत्र की संख्या सूत्र से अधिक है। भोट भाषा में अनूदित काग्युर एवं तनग्युर में लगभग साठ प्रतिशत तन्त्र हैं। भोट पण्डितों द्वारा विरचित ग्रन्थों में भी अधिकतर ग्रन्थ मन्त्र पर ही हैं।

तन्त्र का पात्र बनने के पश्चात् समय एवं संवर की रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है। क्रिया आदि तीन निम्न तन्त्रों में उत्पत्तिक्रम एवं उत्पन्नक्रम का अर्थ, नाम और व्यवहार आदि कुछ भी उपलब्ध नहीं होता है। अर्थतः उत्पत्तिक्रम का प्रतिनिधि सनिमित्तयोग तथा उत्पन्नक्रम के बदले में अनिमित्तयोग होता है। वर्गों के आधार पर अनुत्तरतन्त्र का योगतन्त्र एवं योगिनीतन्त्र दो भेद हैं। संवरोदयतन्त्र के अनुसार योगतन्त्रों की संख्या छह करोड़ और योगिनीतन्त्रों की सोलह करोड़ कहा गया है। अनुत्तरतन्त्र का विषयगतभेद के आधार पर कालचक्रतन्त्र आदि तन्त्रों के प्रज्ञातन्त्र एवं उपायतन्त्र दो भेद बतलाये गए हैं।

अनुत्तरतन्त्र की साधना क्रमद्वय के आधार पर होती है। अनुत्तरयोगतन्त्र को पितृतन्त्र, मातृतन्त्र एवं अद्वयतन्त्र में भी विभक्त कर सकते हैं। जिस तन्त्र में उपाय प्रधान हो वह पितृतन्त्र, प्रज्ञाप्रधान मातृतन्त्र और प्रज्ञोपाय उभय प्रधान अद्वयतन्त्र है। शब्दपर्याय के कारण मातृतन्त्र तथा पितृतन्त्र को क्रमशः योगिनीतन्त्र, योगतन्त्र, डाकिनीतन्त्र, डाकतन्त्र, प्रज्ञातन्त्र एवं उपायतन्त्र आदि भी

कहते हैं। अनुत्तरतन्त्र के पितृतन्त्र, मातृतन्त्र तथा अद्वयतन्त्र के निष्पन्न क्रम की भावना विधियों में यद्यपि समानता नहीं है, तथापि परमपद युगनद्धकाय की प्राप्ति तथा उस के आधार वज्रदेह, नाड़ी, वायु एवं तिलक में समानता है। अनुत्तरतन्त्र में उत्पत्तिक्रम एवं निष्पत्तिक्रम योग के द्वारा परमयुगनद्ध पद की प्राप्ति की जाती है। उत्पत्तिक्रम में फल बुद्ध भूमि की चार सम्पदाओं के सदृश सांक्लेशिक जन्म, मृत्यु और अन्तराभव तीनों के सदृश मार्गीकरण की भावना की जाती है। निष्पत्तिक्रम में मूल एवं सभी अङ्ग वायुओं का अवधूती नाड़ी में प्रवेश, स्थिति और लय साधना के द्वारा चार काय एवं पञ्च ज्ञान से युक्त बुद्धत्व प्राप्त किया जाता है। स्वयं अपने वज्रदेह में स्थित नाड़ी, वायु एवं तिलक को मर्माहत कर चण्डाली या वज्रजाप विधि से महासुख को उत्थापित कर उसके द्वारा महाशून्यता की साक्षात्कार करने की विधि अनुत्तरतन्त्र की ही विशेषता है। अनुत्तरतन्त्र में पितृतन्त्र वज्रजाप पर जोर देकर प्रभास्वर का साक्षात्कार कर युगनद्ध काय की प्राप्ति पर जोर देता है, वहीं मातृतन्त्र प्रधान ग्रन्थ चण्डाली योग द्वारा तिलक का स्रवण कर महासुख ज्ञान द्वारा महाशून्यता का साक्षात्कार करके युगनद्ध काय की प्राप्ति की विधि का वर्णन करते हैं। जहाँ गुह्यसमाज आदि पितृतन्त्र ग्रन्थ हैं, वही श्रीबुद्धकपाल, हेवज्र आदि मातृतन्त्र प्रधान ग्रन्थ हैं। अतः इन में चण्डाली भावना, मुद्रा के सेवन द्वारा क्रमद्वय की भावना विधि का विस्तार से वर्णन किया गया है। कलश आदि चार अभिषेकों का होना अनुत्तरतन्त्र का सामान्यरूप है। क्रमद्वय की भावना ही परमपद, महामुद्रापद एवं युगनद्धपद को प्रदान करती है।

पारमितानय में परमार्थ सत्य और संवृति सत्य परस्पर अविरोधी हैं। संवृति सत्य अपने स्वरूपानुसार परमार्थ सत्य का बोध करता है, क्योंकि संवृति सत्य उच्छेद का निषेध करता है और परमार्थ सत्य शाश्वत का। या परमार्थ सत्य स्वभाव सत्ता का निषेध कर सापेक्षता अर्थात् संवृति सत्य को स्थापित करता है, दूसरी ओर संवृति सत्य के आश्रय से ही परमार्थ सत्य का बोध होता है। अतः दोनों सत्य अग्नि और उसकी उष्णता के सदृश धर्म और धर्मी के

रूप में अवस्थित हैं। पारमितानय में इस सत्यद्वय का जो स्थान है, वही वज्रयान में क्रमद्वय का है।

समाजोत्तरतन्त्र में कहा है—

क्रमद्वयमुपाश्रित्य वज्रिणां तत्र देशना ।

क्रममौत्पत्तिकं चैव क्रममौत्पन्नकं तथा ॥ (१८.८३)

वज्रपञ्जर में क्रमद्वय के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए तथागत ने कहा है कि सामान्य विकल्प के प्रहाण हेतु उत्पत्तिक्रम और शुद्ध विकल्प अथवा प्रणीत देवरूप के प्रति अभिनिवेश के प्रहाण हेतु उत्पन्नक्रम की भावना की जाती है।

हेवज्रतन्त्र में कहा है—

उत्पत्तिक्रमयोगेन प्रपञ्चं भावयेद् व्रती ।

प्रपञ्चं स्वप्नवत् कृत्वा प्रपञ्चैर्निष्प्रपञ्चयेत् ॥ (२.२.२९)

सामान्यतः कल्पना द्वारा आश्रयाश्रित मण्डल की अर्थात् दर्पण में प्रतिबिम्बित रूप के सदृश निःस्वभाव देव-देवियों के मण्डल की भावना करना उत्पत्तिक्रम है। हेवज्र की टीका योगरत्नमाला में भी ऐसा ही अर्थ किया गया है। सत्त्वों की उत्पत्ति के सदृश सूर्य, चन्द्र आदि आसन, आयुध, बीज आदि के द्वारा देवाकार में भी मुख, भुजा आदि की कल्पना कर देवता और मण्डल की भावना करना उत्पत्तिक्रम है और मृत्युकाल में भूतों के संहारक्रमसदृश उत्पत्तिक्रम के देवों के वर्ण, संस्थान आदि को बिन्दु में परिवर्तित कर तथा बिन्दु को भी क्रमशः नाद में तथा नाद को भी निरुद्ध कर निष्प्रपञ्च गगनसदृश अद्वय में स्थित होना ही निष्प्रपञ्चक्रम है।

गुह्यसमाज की टीका प्रदीपोद्योतन में भी उत्पत्तिक्रम और निष्प्रपञ्चक्रम को क्रमशः नेयार्थ तथा नीतार्थ कहकर प्रथम को कल्पित और द्वितीय को निष्प्रपञ्चक्रम का साधन बताया है। कल्पित साधना एवं निष्प्रपञ्चक्रम को स्पष्ट करते हुए आचार्य चोङखापा ने कहा है कि यद्यपि दोनों साधनाएं अपने-अपने

उपायक्रम का आश्रय लेकर देवकाय में निष्पन्न होती है, पर कल्पित साधना का साधक स्वर-व्यञ्जनाक्षर से सूर्य-चन्द्र और आयुध आदि में परिणत होकर कल्पना द्वारा स्वयं में इष्टदेव को निष्पन्न करता है। परन्तु निष्पन्नक्रम में स्वर-व्यञ्जनाक्षर आदि का लक्ष्यार्थ बोधिचित्त और प्राण का अवधूती नाड़ी में प्रवेश तथा आलोक, आलोकाभास, आलोकोपलब्धि ज्ञान आदि के अभिमुख होने पर सूक्ष्म वायु-चित्त से मायाकाय में उत्थापित होता है, जो काल्पनिक न होकर अकृत्रिम देवकाय में निष्पन्न होता है। अतः कल्पित एवं अकल्पित के भेद से सद्भूत देवकाय के भी दो रूप हैं। वज्रयान भूमि-मार्ग व्यवस्था में सेरतोक ने कहा है कि जो साधक भावना बल द्वारा वायु को मध्यमा नाड़ी में प्रवेश नहीं करा पाता तथा स्वकाय में निष्पन्नक्रम की सन्तति को परिपक्व करने के लिए जन्म, मृत्यु और अन्तराभव सदृश, बुद्धि के द्वारा प्रज्ञप्त कर भावना करता है, उसका वह साधनाक्रम उत्पत्तिक्रम है। कृत्रिमयोग, प्रज्ञप्तियोग, प्रथमयोग, परिपाचकयोग आदि इसके नामान्तर हैं। भावना बल से वायु के मध्यमा नाड़ी में प्रवेश के उपरान्त वहीं उसकी स्थिति एवं विलीनता से उद्भूत शैक्षिक सन्तति योग निष्पन्नक्रम है। क्रमद्वय की भावना में साधक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को देवी-देवता के रूप में परिणत कर भावना करते हैं।

जैसे गुह्यसमाज में कहा है—

पृथिवी लोचना ख्याता अब्धातुर्मामकी स्मृता ।

पाण्डुराख्या भवेत्तेजो वायुस्तारा प्रकीर्तिता ॥ (१७.५१)

इस प्रकार सम्पूर्ण स्थावर-जंगम जगत् को देव-देवियों में परिणत कर भावना करने से सामान्य वस्तुओं के प्रति आत्मग्रह या सामान्य विकल्प या साधारण आभास का प्रहाण होता है, जो उत्पत्तिक्रम है। पुनः देव-देवियों के रूप में भी यदि अभिनिवेश बना रहे तो वह भी पूर्ववत् बन्धन ही बन सकता है। अतः इस अभिनिवेश के प्रहाण के लिये निष्पन्नक्रम की भावना करना होता है। निष्पन्नक्रम की भावना विधि को स्पष्ट करते हुए पञ्चक्रम में कहा गया है—

पिण्डग्राहक्रमेणैव तथा चैवानुभेदतः ।
 शिरसः पादतो वापि यावद्धृदयमागतः ॥
 भूतकोटीं विशेद् योगी पिण्डग्राह इति स्मृतः ।
 स्थावरं जंगमं चैव पूर्वं कृत्वा प्रभास्वरम् ।
 पश्चात् कुर्यात् तथात्मानमनुभेदक्रमो ह्ययम् ॥ (२५-२७)

अर्थात् सम्पूर्ण स्थावर-जंगम जगत् को प्रभास्वर में विलीन कर तत्त्व में स्थित होना ही सामान्य निष्पन्नविधि कहलाती है। जैसे संवृति सत्य का आश्रय लिए बिना परमार्थ सत्य का साक्षात्कार नहीं कर सकते या संवृति सत्य ही परमार्थ सत्य का बोध करने का उपाय है, उसी प्रकार निष्पन्नक्रम के बोध के लिए उत्पत्तिक्रम की पूर्वङ्गमता अनिवार्य है।

जैसे पञ्चक्रम में उद्धरित है—

उत्पत्तिक्रमसंस्थानां निष्पन्नक्रमकांक्षिणाम् ।
 उपायश्चैव सम्बुद्धैः सोपानमिव निर्मितः ॥ (१.२)

आर्यदेव ने भी चर्यामेलापकप्रदीप में कहा है कि आदिकर्मिक सत्त्वों को निष्पन्नक्रम में प्रवेश के लिए तथागत बुद्ध ने उपायकौशल के रूप में उत्पत्तिक्रम का सोपान के रूप में प्रतिपादन किया है। प्रथम प्रपञ्चयुक्त योग की भावना कर सामान्य विकल्प का परिशोधन किया जाता है, तदुपरान्त विकल्पित रूप का विश्लेषण कर निर्विकल्प की भावना द्वारा अभिनिवेश का परिहार कर बोध को प्राप्त किया जाता है। अतः बौद्धतन्त्र के अनुसार साधारण आभास और साधारण अभिनिवेश का प्रहाण साधक का प्रमुख लक्ष्य होता है।

सामान्यतया तन्त्रशास्त्र को मात्र ग्रन्थों के शब्दिक अर्थ मात्र से समझा नहीं जा सकता है। क्योंकि एक तो कई जगह सन्ध्या भाषा का प्रयोग होता है और दूसरा तन्त्र शास्त्र तर्कगत न होकर साधनागत होता है। साधना प्रक्रियाओं के आधार पर योगतन्त्रों की संख्या सोलह करोड़ और योगिनीतन्त्रों की संख्या

साठ करोड़ होने की बात कही जाती है। इस समय इन विशाल तन्त्रों का मात्र विवरण ही प्राप्त है। इन तन्त्रों में श्रीबुद्धकपालतन्त्र अपना विशेष स्थान रखता है। श्रीबुद्धकपालतन्त्र उपर्युक्त अनुत्तरयोगतन्त्रों में अत्यन्त महत्त्व रखने वाला तन्त्र है। यह उक्त तीनों तन्त्रों में से योगीनीतन्त्र से सम्बद्ध तन्त्र है। इसमें चौदह परिच्छेद हैं। इनमें मातृतन्त्र-योगिनीतन्त्र के विभिन्न विषयों के तत्त्वों की विवेचना निहित है। सन्ध्या भाषा एवं सांकेतिक भाषा के बाहुल्य के कारण यह तन्त्र सामान्य अध्येताओं के लिये बहुत सुगम नहीं है। सम्भवतया आचार्य पद्मवज्र जैसे तान्त्रिक मर्मज्ञ सिद्ध पुरुष ने भी इस कठिनाई को दृष्टि में रखकर इस तन्त्र के प्रथम दो पटलों की ही टीका लिखी है। उस के बाद आचार्य पण्डित अभयाकर गुप्त ने इस तन्त्र के सम्पूर्ण विषयों की सर्वाङ्गीण व्याख्या की है। मूलतः श्रीबुद्धकपालतन्त्र टीका आचार्य अभयाकर गुप्त द्वारा संस्कृत में लिखी गयी थी, पर बहुत समय से यह ग्रन्थ अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र से प्रायः लुप्त सा रहा। इसके अध्ययन-अध्यापन का एक मात्र स्रोत इस ग्रन्थ का भोट अनुवाद ही रहा। भोट अनुवाद भी दो बार सम्पन्न हुआ। पहला अनुवाद दिङ्ग्री छोसुङ्ग का इस समय अप्राप्त है। इस समय पङ् लोडो तेनपा का अनुवाद मात्र उपलब्ध है।

सामान्यतः श्रीबुद्धकपालतन्त्र की सरहपाद और अभयाकर गुप्त की दो परम्पराएँ भोट देश में प्रवर्तित हुई। श्रीबुद्धकपालतन्त्र पर सरहपाद की पञ्जिका ज्ञानवती, साधनोपायिका एवं अभयाकर गुप्त की टीका अभयपद्धति के अतिरिक्त पद्मवज्र की तत्त्वचन्द्रिका नामक पञ्जिका का भी भोटानुवाद प्राप्त होता है।

ग्रन्थ का सारांश

पण्डित अभयाकर गुप्त रचित अभयपद्धति के प्रारम्भ में प्रथम पटल में ही व्याख्याकर्ता ने अनुबन्धादि चतुष्टय १. अभिधेय, २. सम्बन्ध, ३. प्रयोजन, ४. प्रयोजन निष्ठा को स्पष्ट करते समय कहा है कि इन १४ पटलों से अलंकृत ग्रन्थ के देशनाकर्ता एवं अभिधेय दोनों श्रीबुद्धकपाल ही है। पण्डित अभयाकर ने

टीका की रचना पर कहा है कि वज्रयोगिनियों की अनुज्ञा और स्वप्न में उनसे प्राप्त उपदेशों एवं आशीर्वादों से ही मैंने श्रीबुद्धकपालतन्त्र की टीका लिखी है। जो ग्रन्थ योगिनियों द्वारा अनुगृहीत होकर लिखी जाती है, वह मातृतन्त्र प्रधान ग्रन्थ होता है। इसके उपरान्त 'एवं मया श्रुतं' की व्याख्या की है। श्रीबुद्धकपाल-तन्त्र टीका में भी अन्य मातृतन्त्र ग्रन्थों की भाँति महासुख-मार्गीकरण की विधि का विस्ताररूप से वर्णन है। उसके बोध हेतु वज्र एवं पद्म के योग द्वारा अवधूती में महासुख का स्रवण कैसे किया जाता है, वर्णित है। बोधिचित्त के स्रवण से उत्पन्न महासुख ज्ञान द्वारा परमार्थ का साक्षात्कार होता है। इसका नाम पर्याय चित्रसेना, समन्तभद्री, भग आदि हैं। अर्थात् बोधिचित्त का प्रज्ञा से अभिन्न होना ही परमपद कहा गया है। बोधिचित्त महासुख, महाकरुणा रूपी है, जो हमें अप्रतिष्ठित निर्वाण की ओर ले जाती है, इसके द्वारा विभिन्न प्रकार के गुणों के आविर्भाव हेतु मन्त्र-आवृत्ति के लिये भी प्रेरित किया जाता है, क्योंकि मन्त्र का उत्स भी उसी प्रज्ञा एवं बोधिचित्त का अद्वय स्थल है। अतः उसके स्पर्श से विभिन्न शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। मन्त्र के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि चित्त के स्वरूप को मन कहा जाता है, जो उस मन को विक्षिप्त होने से बचाकर तथ्य की रक्षा करवाता है, वह मन्त्र है। अर्थात् शून्यता एवं करुणा की अभिन्नता ही परमार्थ मन्त्र है।

इसमें तन्त्र के अभिप्राय को समझाते हुए तन्त्र का अर्थ निरन्तरता से लिया है और उसे तीन भागों में विभक्त गया किया है। हेतु, फल और उपाय। आद्यन्त रहित हेरुकात्मक (बोधिचित्त) को ही हेतुतन्त्र कहा है। उसीका आधार लेकर साधक फलहेरुक की प्राप्ति करता है। वह आगन्तुक मल से रहित, अशेष जगत्कल्याणकर्ता रूपी फलहेरुक ही फलतन्त्र है। तत्त्व के विशुद्धीकरण हेतु गरुड़योग आदि उपायतन्त्र हैं। क्रमद्वय के साधनाक्रम को स्पष्ट करते हुए चन्द्रादि की देवभावना उत्पन्न करना उत्पत्तिक्रम है। जैसे विषैले सर्प को गरुड़ ही मार सकता है, उसी प्रकार शून्यता का योग भी तीक्ष्ण इन्द्रिय वाले ही कर सकते हैं,

जिसका आश्रय धर्मधातु होता है। आदिकर्मिक को पहले उत्पत्तिक्रम की भावना करनी चाहिए।

उत्पत्तिक्रम की साधना में दक्षता प्राप्त करने के पश्चात् ही निष्पन्नक्रम की भावना की जाती है। आचार्य अभयाकर के अनुसार क्रमद्वय के योग में स्थित होकर साधक श्रीबुद्धकपालतन्त्र की साधना द्वारा सभी सिद्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। श्रीबुद्धकपालतन्त्र के साधक को रागादि पाँच कामगुणों का त्याग किये बिना साधना करनी चाहिये। कामगुणों में कर्ममुद्रा ही सभी मुद्राओं में श्रेष्ठ है, अतः उसका सेवन कर साधना करने के लिये कहा गया है। आगे कहा गया है कि मुद्रा का सेवन करते हुए चार ज्ञानों द्वारा शून्यता, महासुख आदि चार शून्यताओं का साक्षात्कार करना चाहिए। संपुटतन्त्र और आचार्य नागार्जुन के अनेक वचनों को उद्धृत करते हुये शून्यता का साक्षात्कार किये बिना बोधिकामना नहीं की जा सकती, ऐसा विस्तार से प्रतिपादित किया गया है। इन सब का गुरु के उपदेश का अनुसरण करते हुए श्रीबुद्धकपालतन्त्र की साधना का खुलासा किया गया है, यहाँ पर पहला पटल सम्पन्न होता है।

द्वितीय पटल में उत्पत्तिक्रम की भावनाविधि को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। उत्पत्तिक्रम मन्त्र और मन्त्रात्मक काय स्वरूप है। उत्पत्तिक्रम की सभी प्रक्रियाएँ मन्त्रों के द्वारा ही निष्पन्न एवं सिद्ध की जाती है। मन्त्र का अभिप्राय है मन से देवताओं का आह्वान कर मन्त्रों के द्वारा उन्हें प्रेरित करना। अतः इसी विधि को इस पटल में स्पष्ट करूँगा, ऐसा पण्डित अभयाकर गुप्त कहते हैं। उत्पत्तिक्रम की विधि एक प्रकार से शिशु के जन्म होने सदृश होती है। पूजा अर्चना आदि घर में किसी आगन्तुक की सेवा करने सदृश होती है। सभी सिद्धियाँ बलि, भेंट आदि की पूर्व प्रक्रिया का अनुसरण करती हैं। अतः ॐ महाकपालवज्र का उच्चारण करते समय द्रव्य भेंट करना चाहिये। उसके उपरान्त अनुचरों को बलि भेंट करनी चाहिये। यहाँ बलि का अभिप्राय समयद्रव्य से युक्त पारद सदृश अमृत और सुगन्धादि से परिपूर्ण निर्मित द्रव्य है, उसे अर्पित करना चाहिये। अपने सामने सुगन्धित शालि धान द्वारा निर्मित हेरुक की प्रतिमा बनानी

चाहिये, उसे बोधिचित्त से लेप कर समय एवं ज्ञानदेव के रूप में ध्यान करना चाहिये। उसे अपनी अनामिका से स्पर्श करते हुए 'ॐ महावज्र' इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करना चाहिये और मन्त्र और देवता को अभिन्न मानकर सभी उत्पत्तिक्रम की प्रक्रियाओं को पूर्ण कर सिद्धि का लाभ करना चाहिये। इस पटल में इन्हीं प्रक्रियाओं का विस्तार से वर्णन हुआ है।

तृतीय पटल में निष्पन्नक्रम के सम्बन्ध में व्याख्या की गई है। द्वितीय पटल में मन्त्र से देवकाय में उत्थापित होने की प्रक्रिया को दर्शाया था। यहाँ गुह्य एवं आभ्यन्तर साधना अर्थात् निष्पन्नक्रम की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। जैसा कि निष्पन्न शब्द से ही यह स्पष्ट होता है कि सभी तत्त्व, गुण एवं शक्तियाँ अपने शरीर के अन्दर ही विद्यमान हैं। आगन्तुक, कृत्रिम या नवीन उत्पन्न नहीं हैं। इसी वज्रदेह के अन्दर जो विद्यमान हैं, उन्हें प्रकट करना है। अतः निष्पन्नक्रम का अभिप्राय ही अपने में सम्पन्न, निष्पन्न तत्त्व को जागरित करना है। इसलिये आभ्यन्तर नाभिमध्य को वज्रभूमि कहा गया है, जिसे रं अक्षर में परिवर्तित कर वज्रभूमि में भावित करना होता है। वहीं ॐ और 'एवं' की भावना करने को कहा गया है, जो धर्मधातु स्वभाव है, जो निर्माणचक्र कहलाता है, जिसमें ६४ नाड़ियों का चक्र बना होता है। फिर हृदय में धर्मचक्र, जो आठ नाड़ियों से युक्त है, कण्ठ में १६ नाड़ियों से युक्त संभोगचक्र और उष्णीष में ३२ नाड़ियों से युक्त महासुखचक्र है। उष्णीष से नाभिचक्र तक अवधूती मध्य नाड़ी से गठित इन चक्रों की भावना करनी चाहिये। मध्य में बोधिचित्त बहता है, दायें-बायें ललना और रसना नाड़ियों की भावना की जाती है। इस प्रकार कुल १२० नाड़ियों और चार निर्माणकाय आदि चक्रों का विस्तार से वर्णन कर स्वदेह में निष्पन्न वज्रदेह, वज्र नाड़ी, वायु और तिलक के माध्यम से कैसे महासुख परमपद को प्राप्त किया जाता है, यह इस पटल में वर्णित है।

चौथा पटल गारुडयोग से सम्बन्धित है। जैसे कि प्रथम पटल में कहा गया था कि गरुड विषैले नागों का भक्षण करता है। यह काम गरुडरूपी पक्षिराज ही कर सकता है, अन्य पक्षी नहीं। ठीक उसी प्रकार तन्त्र की साधना भी अतीव

तीव्र इन्द्रिय से युक्त जन ही कर सकता है। इस पटल में विषैले सर्प के विष सदृश अज्ञान की वज्रह से प्रभास्वर चित्त को न समझना ही संसारचक्र एवं दुःख का कारण बताया गया है। जैसे विषपायी व्यक्ति दुःख से कभी छुटकारा नहीं पा सकता, उसी प्रकार आचार्य अभयाकर गुप्त ने विष के चार प्रकार गिनाये हैं— यथा स्थावर, जंगम, कायज और कृत्रिम। अर्थात् रसपान आदि द्वारा पैदा किया गया स्थावर विष है, नागादि द्वारा उत्पन्न जंगम विष है। छूत की चर्मादि बीमारी, जो एक प्राणी से दूसरे प्राणी में लगती है वह कायज और खाद्य पदार्थ जैसे शहद और घृत से मिलकर बनने वाला विष कृत्रिम विष है। इन्हीं विषों के होते प्राणी दुःख से प्रभावित होता है। अतः बौद्धेतर विष्णु, ब्रह्मा, शिवादि के साधक अपने गरुडयोग के द्वारा इन विषों से प्राणियों का उद्धार करने का प्रयास करते हैं। बौद्धों में इस प्रक्रिया को गौण मानकर अज्ञानरूपी विकल्पों का प्रहाण कर अपने प्रभास्वर चित्त का साक्षात्कार करने पर बल दिया है। व्यक्ति के सांसारिक विभिन्न प्रकार के पार्थिव एवं जागतिक विषयों से निवृत्ति की प्रक्रिया का भी इस पटल में विस्तार से वर्णन किया गया है। अर्थात् यह पटल लौकिक एवं अलौकिक दोनों सिद्धियों को प्राप्त करने की विधि बताता है।

पञ्चम पटल रसायन पटल है। पटल के नाम से ही विदित होता है कि साधक दीर्घकाल तक जीवित रह सकता है। यद्यपि इस पटल का प्रयोजन भी सामान्य ललना और रसना में बहने वाले सांसारिक विकल्पों का मध्यमा नाड़ी में प्रवेश, स्थिति एवं उत्थापन करना है, जिससे ऊर्जा अर्थात् शक्ति अर्थात् सूक्ष्म वायु का क्षय नहीं होता है और साधक दीर्घकाल तक जीवित रह सकता है तथा अन्ततोगत्वा बोधि लाभ करता है। यद्यपि सभी बौद्धतन्त्रों का मुख्य उद्देश्य बोधि लाभ करना ही होता है, लेकिन विनेयजनों के आशय, इच्छा के अनुसार भौतिक सिद्धियों को साधना नाम देकर साधकों को तन्त्र की साधना में प्रेरित किया जाता है। अतः यहाँ इस पटल को रसायन पटल कहा है।

छठवाँ पटल अभिषेक पटल है। अभिषेक के बिना तन्त्र की साधना अर्थहीन, सिद्धिहीन मानी जाती है। इतना ही नहीं, अपितु इसके अभाव में यदि व्यक्ति साधना करता है तो वह नरक का भागी बनता है और अनेक अनर्थों को प्राप्त करता है। अतः अभिषेक तन्त्र का अभिन्न एवं अपरिहार्य अंग कहलाता है। गुरु साधक को विभिन्न मण्डलों में प्रवेश कराकर अभिषेक देता है। पण्डित अभयाकर ने भी घण्टापाद को उद्धृत करते हुए रजोमण्डल, पटमण्डल और चित्त मण्डलों में से चित्तमण्डल को ही अकृत्रिम मण्डल एवं परमार्थ मण्डल माना है। उसी में साधक को अभिषिक्त करनेकी बात कही है। इसी बात को ग्रन्थ के पञ्चम पटल के प्रारम्भ में भी कहा है कि चित्तमण्डल ही परमार्थ मण्डल है और उत्पत्तिक्रम की भावना में इष्टदेव को कहीं से आमन्त्रित करना भी नहीं होता। समय और ज्ञान इष्टदेव को आह्वान करने की विधि आदि तो मात्र संवृति में अधम इन्द्रिय वाले जनों को अनुगृहीत करने की व्यवस्था है। अन्यथा स्वचित्त ही देवमण्डल, इष्टदेव और ज्ञानदेव हैं - ऐसा जानना चाहिये। संवृतिः विनयजनों के अनुसार सभी कृत्रिम योगों की व्यवस्था की गयी है। इसी के अन्तर्गत पण्डित अभयाकर गुप्त के अनुसार श्रीबुद्धकपालतन्त्र में चार अभिषेकों की व्यवस्था की है। कलश अभिषेक में जल, पट, वज्र, स्वामी और नाम नामक पाँच अभिषेक; मन्त्र, वज्रव्रत, चर्याव्रत, व्याकरण, अवैवर्तिक तथा विद्याव्रत और गुह्य अभिषेक नामक सात अभिषेक और तृतीय प्रज्ञाज्ञान अभिषेक एवं चतुर्थ अभिषेक नामक कुल १४ अभिषेकों का वर्णन किया गया है। इनमें ११ अभिषेक कलश अभिषेक के अंग हैं और शेष गुह्य अभिषेक, प्रज्ञाज्ञान और चतुर्थ अभिषेक निष्पन्नक्रम की साधना से सम्बन्धित हैं। इन चार अभिषेकों के लिए साधक को कैसे गुरु से निवेदन करना चाहिये तथा गुरु कैसे साधकों को इन अभिषेकों को प्रदान करे इसके विधि-विधान का विस्तार से वर्णन इस पटल में हुआ है।

सप्तम पटल में फलतन्त्र की भावना विधि को स्पष्ट किया गया है। यहाँ फलतन्त्र का अभिप्राय फलशरण के सदृश ही समाझना चाहिये। अर्थात्

फलशरण वह होता है, जिन साधकों ने फल को प्राप्त किया होता है, उनका मार्गदर्शक के रूप में हम शरणगमन करते हैं, जो मात्र सहायकरूपी शरण हैं या वह गौण त्रिशरणगमन कहलाता है। शरण तो हेतुगमन ही प्रमुख होता है अर्थात् जो स्वयं बुद्धस्वरूप है, उसको जानकर उसके साक्षात्कार हेतु साधना करनी होती है। वही सही धर्म है, जो उसका पालन कर रहा है, वह स्वयं संघ आदि है, उसी प्रकार स्वयं श्रीबुद्धकपाल है, हेरुक है—ऐसा जानना तो हेतु से उत्थापन होना है, लेकिन जिसने उस पद को प्राप्त किया हो, उसकी भावना करना फलतन्त्र है। यद्यपि विभिन्न सन्दर्भों में फलतन्त्र की व्याख्या भी भिन्न होती है किन्तु यहाँ इस पटल में फलतन्त्र की भावना की विधि वही है, जिसने पद को प्राप्त कर लिया हो, उसकी भावना करना फलतन्त्र है। तदर्थ देवता का आश्रयस्थान मण्डल, विमान का निर्माण करना पड़ता है। इसके भी अनेक रूप हैं जैसे—रजोमण्डल, पटमण्डल, बोधिचित्तमण्डल, समाधिमण्डल आदि का कैसे विमान मण्डल बनाना चाहिये, आदि का वर्णन किया गया है। निवासस्थान-मण्डल निर्माण विधि के पश्चात् उसमें स्थित आश्रित देवमण्डलों की न्यासविधि का विस्तार से वर्णन हुआ है। देवताओं के बीज मन्त्र से कब किस-किस बीज मन्त्र से कौन से देवता एवं उनके परिवार और अनुचरों की उत्पत्ति की जाती है, यह वर्णित है। उनके आभरणों और आभूषणों का अपना-अपना अर्थ होता है, उसे भी स्पष्ट किया गया है। उन न्यासित देवों की कैसे पूजा-अर्चना करनी चाहिये, उसे भी स्पष्ट किया है तथा ज्ञानदेव का उसमें आवाहन कर फिर चक्र में चण्डाली प्रज्वलित कर महासुख का स्रवण करना तथा जब महासुख प्रवाहित होकर कण्ठचक्र, हृदयचक्रादि में पहुँचे, उस समय चक्रों की स्थिति, योगिनियों को उसकी पूजा करना आदि तथा सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हेरुक के चौबीस पीठ कहाँ-कहाँ स्थित हैं, यह वर्णित है। यथा सिर में पुल्लोर, उष्णीष में जालन्धर, दायें कर्ण में ओडियान, सिर के पिछले भाग में अर्बुद आदि तथा विमान मण्डल के बाहर आठ महाश्मशान और उनमें स्थित स्वामी आदि का वर्णन भी इसमें हुआ है। आश्रय मण्डल और आश्रित मण्डल के न्यास के उपरान्त जप विधि कैसे

हो, इसका विस्तार से वर्णन है तथा श्रीबुद्धकपालतन्त्र की साधना का मूल मन्त्र क्या है, वह भी इसी पटल में स्पष्ट किया गया है।

आठवाँ पटल होम (यज्ञ) का पटल है। इसमें अग्निकुण्ड की निर्माण विधि एवं उसकी लम्बाई, चौड़ाई और आकार आदि कैसा हो, यह वर्णन किया गया है। इसका विस्तार पण्डित अभयाकर ने उनके द्वारा रचित अग्निहोमविधि में देखने के लिये कहा है। बाह्य—पुष्प, क्षीर, आभ्यन्तर—बोधिचित्त, शुक्र और शोणित का कैसे होम किया जाता है, यह बताया गया है। होम भी तन्त्र साधना का एक अंग माना जाता है। यह पुण्यसंचय एवं पाप के प्रायश्चित्त के लिये किया जाता है। साथ में पण्डित अभयाकर गुप्त कहते हैं कि विभिन्न द्रव्यादि को नियत नहीं किया जा सकता।

नवां पटल चर्या पटल कहलाता है। इसमें पण्डित अभयाकर गुप्त कहते हैं कि क्रमद्वय के आविर्भाव के उपरान्त भी यदि चर्या पर विशेष बल नहीं दिया जाये तो महामुद्रा की प्राप्ति नहीं होगी। शाश्वत और उच्छेद की धारणा से रहित होकर हेय और उपादेय से ऊपर उठकर सभी चर्याएँ एक रस समता भाव से प्रेरित होकर करनी चाहिये। आठ लौकिक सिद्धियों की प्राप्ति के उपरान्त भी उसके अभिनिवेश के बिना चर्या करनी चाहिये। अर्थात् सारांश में दर्शन, साधना और चर्या में अभिन्नता रहनी चाहिये, अन्यथा महामुद्रा नामक परमपद की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यह इस पटल का अभिधेय है।

दसवें पटल में परानुग्रह हेतु के सम्बन्ध में विभिन्न उपायों का वर्णन आया है तथा स्वर्ण निर्माण हेतु लौह, प्रवाल, मोती आदि सम्पत्तियों से व्यक्ति धनसम्पन्न हो जाता है। बाह्य स्वर्ण विधि अन्य औषधि (रसायन) तन्त्रों में विस्तार से वर्णित है। अतः वे यहाँ विस्तार से नहीं लिखते हैं। यहाँ साधक शक्ति का सेवन कर दीर्घकाल तक सुख का भोग कर सकता है। उसके लिये नाड़ियों के कैसे विस्तार और संकोचन के द्वारा बोधिचित्तरूपी तिलक को रोककर सुख का अनुभव कर सकता है तथा उस पर पूर्ण दृढ़ता हासिल करने पर कैसे महासुख स्वरूप बुद्ध बन सकता है, यह वर्णित है।

ग्यारहवाँ पटल भी अत्यन्त संक्षिप्त है। उस में विद्याधर योग की विधि के सम्बन्ध में लिखा है कि कैसे-कैसे योगिनियों की भावना कर विद्याधरत्व की प्राप्ति होती है।

बारहवाँ पटल अंजन-सिद्धि पटल है। जैसा कि नाम से विदित है, यह आठ सामान्य सिद्धियों में से एक है, जिसके आँख में लगाने से दूसरा कोई पुरुष देख नहीं पाता है। इसकी विधि में बताया गया है कि कैसे देव की भावना करें, कैसे अग्नि कुण्ड का निर्माण करें और क्या-क्या सामग्री हो, कैसे शुक्र और शोणित का संमिश्रण कर पिण्ड बनायें तथा कैसे मन्त्र का जप हो, मन्त्र जपने की माला कैसे हो आदि वर्णित है। इसके लिये निष्पन्नक्रम की भावना आवश्यक नहीं होती, क्योंकि यह साधन लौकिक है और विकल्प पर आधारित है। निष्पन्नक्रम की साधना तो परमपद की प्राप्ति हेतु होती है। यह सब इस पटल में कहा गया है।

तेरहवें पटल में क्रमद्वय द्वारा सभी आवरणों के विशुद्धिकरण के बारे में बताया गया है। जैसे विदित है कि उत्पत्तिक्रम में देव की भावना है और निष्पन्नक्रम में स्वशरीर में स्थित नाड़ी, तिलक और वायुयोग के द्वारा महासुखकाय प्राप्त करना होता है। यहाँ ललना, रसना नाड़ी में प्रवाहमान वायु और तिलक को मध्यमा नाड़ी में प्रवेश करने की प्रक्रिया को बताया गया है और साथ ही साथ कर्ममुद्रा, समयमुद्रा, धर्ममुद्रा और महामुद्रा का अर्थ और उनके द्वारा कैसे निर्माणकाय, सम्भोगकाय, धर्मकाय और महासुखकाय की प्राप्ति होती है, यह स्पष्ट किया गया है। मुद्राओं का उत्पत्तिक्रम में क्या अभिप्राय होता है तथा निष्पन्नक्रम की भावना में इन मुद्राओं का पुनः क्या अर्थ एवं अभिप्राय निकलता है, यह भी स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार एक शब्द का भी विभिन्न सन्दर्भों में कैसे भिन्न-भिन्न अभिप्राय होता है, इसे भी इस पटल में जाना जा सकता है। पण्डित अभयाकर गुप्त ने वहीं प्रत्यहार, समाधि आदि योग के षडंगों का भी इसमें जिक्र किया है और इसकी भावना विधि पर भी प्रकाश डाला है तथा आचार्य नागार्जुन, शान्तिदेव आदि को उद्धृत करते हुए तत्त्व का

प्रतिपादन भी किया है। कहा है कि यह जगत् सूक्ष्म चित्त का ही विस्तार रूप है और उसके अतिरिक्त स्वतः सिद्ध कोई द्रव्य नहीं है। अतः निर्विकल्प होकर प्रभास्वर चित्त को समझने के लिये ही विभिन्न क्रियाओं का आविर्भाव हुआ है। आचार्य नागार्जुन को उद्धृत करते हुए कहा है कि यही महायान परम मार्ग है और यही महामुद्रा है।

चौदहवाँ एवं अन्तिम परम पद से सम्बन्धित पटल है। जैसे हीनयानी निर्वाण को परमपद मानते हैं। महायानी त्रिकायात्मक अप्रतिष्ठित निर्वाण को परमपद की संज्ञा देते हैं। तन्त्र में महासुखकाय को परमपद की संज्ञा दी है। यहाँ भी सम्पत्तिद्वय स्वार्थ और परार्थ सम्पत्ति से सम्पन्न महासुखात्मक स्वरूप को परमपद कहा है। उसे ही वज्रधर अर्थात् शून्यता और करुणा का अभिन्न रूप माना है। इसमें कैसे तथागत बुद्ध अपने परित्याज्यों (हेय आवरणों) का परित्याग कर परार्थ सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं, इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। कैसे हेतु समयदेव की भावना कर अभिषेकों से अभिषिक्त होकर कर्ममुद्रा का सेवन कर महामुद्रा की प्राप्ति की जाती है, संक्षेप में कहा गया है। जैसे अरूपी मार्ग चित्त की तथा उसके स्वरूप की व्याख्या करना कठिन है, उसी प्रकार फल वज्रधर का स्वरूप भी अगोचर, अनिर्वचनीय है, ऐसा कहा गया है। अर्थात् सभी क्लेशों का वासना सहित जिसने परित्याग कर परमपद महासुख स्वरूप वज्रधर पद को प्राप्त किया है, उसको प्रणाम करते हुए पण्डित अभयाकर गुप्त ने अपनी श्रीबुद्धकपालतन्त्रटीका अभयपद्धति की व्याख्या को समाप्त किया है। अन्त में उन्होंने टीका की रचना से अर्जित जो पुण्य हैं, उनसे सभी प्राणी परमपद को प्राप्त करें, ऐसी परिणामना की है।

महापण्डित अभयाकर गुप्त की संक्षिप्त जीवनी

तारानाथ के मतानुसार पण्डित अभयाकर गुप्त का जन्म दक्षिण में ओड़िशा के निकट जरिखण्ड नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता क्षत्रिय और माता ब्राह्मणी थी। इन्होंने कुमारवस्था में ही वेदान्त, व्याकरण तथा न्यायशास्त्र

में पूर्ण विद्वत्ता प्राप्त कर ली थी। एक समय जब वे एकान्त वन में मन्त्रोच्चारण करने में लीन थे तो एक युवति ने उनके सम्मुख प्रकट होकर कहा— मैं क्षुद्र जाति में पैदा हुई हूँ तथा तुमसे संभोग का आचरण करना चाहती हूँ। उनके इन्कार करने पर भी वह हठ करने लगी तो उन्होंने अपने सहयोगी बौद्ध योगी से उस लड़की के बारे में पूछा। उसने कहा— वह वज्रयोगिनी थी, अतः तुमने उससे सहभोगाचरण न कर गलत किया। तुम बौद्धगोत्रीय प्रतीत होते हो, अतः यह उचित होगा कि बंगाल में जाओ, जहाँ बौद्ध सूत्र और तन्त्र के अनेक सुविज्ञ हैं, उनसे अध्ययन कर साधना करो। तदनुसार वे बंगाल में जाकर भिक्षु बन कर तन्त्र की साधना करने लगे। एक बार विहार की छत पर बैठे साधना कर रहे थे तो एक योगिनी ने गीला मांस, जिससे अभी-अभी खून टपक रहा था, लाकर उनको दिया तो उन्होंने कहा मैं बौद्ध भिक्षु हूँ, इस प्रकार का मांस कैसे खा सकता हूँ, उनके इन्कार कर देने पर वह तत्क्षण अन्तर्धान हो गयी। वह योगिनी थी, ऐसा जानकर वे दुःखी हुए। इसके बाद वे नालन्दा गये और सौरिपाद से, जिनसे इन्होंने पहले भिक्षु की दीक्षा ली थी, तन्त्र का अभिषेक लिया और अध्ययन भी किया। एक दिन पुनः गुरु की सेविका ने, जो एक उपासिका थी, उनके साथ सहभोग करना चाहा, परन्तु उन्होंने ऐसा करना उचित नहीं समझा, यद्यपि वह भी साक्षात् वज्रयोगिनी थी। तब सौरिपाद ने उनसे कहा— तीन वज्रयोगीनियों द्वारा सिद्धि देने पर भी तुमने उसे स्वीकार नहीं किया। अतः तुम इस जीवन में सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकते हो— लेकिन अन्तराभव में सिद्धि प्राप्त करोगे। इसके लिये तुम्हें साधना की अपेक्षा, शास्त्रों की रचना और देशना करनी चाहिये। गुरु की आज्ञानुसार इन्होंने नालन्दा, विक्रमशिला आदि में जाकर अध्यापन का कार्य किया और वहाँ के उपाध्याय नियुक्त हुए। बाद में राजा रामपाल की रानी ने एड़ापूर नामक विहार बनाकर उन्हें भेंट किया। वहाँ भी वे काफी समय तक साधना करते रहे। इनके शिष्यों में शुभाकर गुप्त प्रमुख थे।

पण्डित अभयाकर गुप्त के नाम से तनग्युर में २२ ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं—

१. अभिषेकप्रकरण (तो० १४९९)
२. स्वाधिष्ठानक्रमोपदेश (तो० १५००)
३. श्रीबुद्धकपालतन्त्रराजटीका अभयपद्धति (तो० १६५४)
४. वज्रयानापत्ति-मञ्जरीनाम (तो० २४८४)
५. गणचक्रविधिनाम (तो० २४९१)
६. वज्रावलीनाम मण्डलविधि (तो० ३१४०)
७. ज्योतिर्मञ्जरीनाम होमविधि (तो० ३१४२)
८. उच्छुष्मजम्भलसाधन (तो० ३२६६)
९. उच्छुष्मजम्भलसाधननाम (तो० ३७४३)
१०. श्रीचक्रसंवराभिसमय (तो० १४९८)
११. श्रीकालचक्र (उद्दान) (तो० १३८०)
१२. श्रीसम्पुटतन्त्रराजटीकाम्नायमंजरीनाम (तो० ११९८)
१३. कालचक्रावतारनाम (तो० १३८३)
१४. ज्ञानडाकसाधन (तो० १६१८)
१५. पंचक्रमतिटिकाचन्द्रप्रभानाम (तो० १८३१)
१६. रक्तयामान्तकनिष्पन्नयोगनाम (तो० २०३७)
१७. निष्पन्नयोगावलीनाम (तो० ३१४१)
१८. उच्छुष्मजम्भलसाधन (तो० ३६१३)
१९. बोधिपद्धतिनाम (तो० ३७६६)
२०. आर्य-अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितावृत्ति मर्मकौमुदीनाम (तो० ३८०५)
२१. मुनिमतालंकार (तो० ३९०३)
२२. बोधिसत्त्वसंवरग्रहणविधि (तो० ३९७०)।

उपसंहार

श्रीबुद्धकपालतन्त्र मूल ग्रन्थ की प्रति अब तक अप्राप्त थी, परन्तु विगत वर्ष इसकी अपूर्ण ताड़पत्रों की पाण्डुलिपि तिब्बत से प्राप्त हुई है। इस अपूर्ण मातृका में पूर्व के तीन पटल पूर्ण तथा चौथे पटल की अन्तिम दो पंक्तियाँ रहित लगभग पूर्ण है। इस तन्त्र ग्रन्थ का उल्लेख 'धीः' शोध-पत्रिका, दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी के ४३वें अंक में प्रकाशित है।

इस तन्त्र ग्रन्थ की एक मात्र संस्कृत में पाण्डुलिपि पण्डित अभयाकर गुप्त द्वारा रचित अभयपद्धति टीका उपलब्ध है। इसका भोट भाषा में अनुवाद भोट विद्वान् पङ लोचावा भिक्षु लोडो तेन्पा ने किया था।

श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रराजटीका अभयपद्धति टीका की दो अपूर्ण मातृकाएँ उपलब्ध हैं। एक मातृका 'क' एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, बंगाल (सं० १४२/३ एम ८४८६ जी ३८२७) तथा दूसरी 'ख' राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू, नेपाल (सं० १०७/८ एम ८५६७ ए ४८/२) में है। ये दोनों मातृकाओं की प्रतिलिपि शान्तरक्षित ग्रन्थालय, तिब्बती संस्थान, सारनाथ में उपलब्ध है। यह टीका प्राचीन नेवारी भुजिमोल लिपि में है। इसे पढ़ना तो कठिन था ही, इस के साथ-साथ ताड़पत्रों के पृष्ठों का स्थान-स्थान पर टूटना तथा स्याही फैलने से पढ़ना और भी असाध्य हो गया था। इतना ही नहीं, ताड़पत्रों के हाशिये खण्डित होने एवं पत्रांक ठीक से न होने के कारण एक पटल का अंश दूसरे पटलों में चला गया है। ऐसी त्रुटियाँ लगभग सभी पटलों में हुई हैं और प्रत्येक पटलों के पृष्ठ भी अस्त-व्यस्त हैं। यह महत्त्वपूर्ण तन्त्र ग्रन्थ प्रायः लुप्त होने की स्थिति में है। इस का पुनरुद्धार एवं संपादन भोटानुवाद की सहायता के बिना असम्भव था। अतः भोटानुवाद के आधार पर 'क' और 'ख' दोनों मातृकाओं की सहायता से इस अमूल्य तन्त्र ग्रन्थ को अपने स्वरूप में लाने का प्रयास किया गया है। भोटपाठ का संपादन भी नरथङ् आदि चार भोट संस्करण

तथा दो संस्कृत मातृकाओं के सहयोग से संपादित किया गया है। भोटानुवाद में भी कहीं-कहीं पर कुछ त्रुटियाँ थीं, जो उपर्युक्त दो मातृकाओं के माध्यम से शुद्ध की गई हैं।

कृतज्ञता-प्रकाश

सर्वप्रथम मैं केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ के माननीय निदेशक प्रो० गेशे डेवङ्ग समतेन जी का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस ग्रन्थ के सम्पादन में बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं संस्थान से इसे प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

संस्थान के शोध आचार्य बौद्ध-धर्म दर्शन के प्रामाणिक विद्वान् प्रो० रामशंकर त्रिपाठी जी का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के संशोधन एवं सम्पादन-कार्य में अपना अमूल्य समय देकर मुझे कृतार्थ किया।

गुरुवर प्रो० सेम्पा दोर्जे नेगी जी एवं डॉ० वङ्छुग दोर्जे नेगी जी द्वारा भोट एवं संस्कृत पाठों में मिलान के सहयोग के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने अनुभाग (दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग) के प्रमुख प्रो० एस० एस० बहुलकर जी एवं समस्त सहयोगियों का पाण्डुलिपियों के मिलान में पूर्ण सहयोग के लिए हृदय से आभारी हूँ।

संस्थान के कम्प्यूटर विभाग के श्री ठिन्ले दर्गे ने महत्त्वपूर्ण तकनीकी सहायता की, इसके लिए उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

प्रकाशन विभाग के प्रभारी डॉ० समतेन छोस्फेल तथा उनके सहयोगियों को ग्रन्थ के सुचारु रूप से प्रकाशन के लिए धन्यवाद देता हूँ।

आशा है मेरे अल्प ज्ञान के कारण हुई त्रुटियों के लिए विद्वद्-गण क्षमा करेंगे और अपना सुझाव देंगे, जिससे अगले संस्करण में सुधार कर सकूंगा।

भवतु सर्वमङ्गलम्।

एकार्थत्वेऽप्यसंमोहाद् बहूपायाददुष्करात् ।
तीक्ष्णोन्द्रियाधिकाराच्च मन्त्रशास्त्रं विशिष्यते ॥
(त्रिनयप्रदीप)

श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रराजटीका अभयपद्धतिर्नाम^१

सर्वसिद्धिज्ञाननिर्णयं पुस्तकं

निश्चरणकपालस्फोटनपटलः प्रथमः^२

नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ।

कल्पान्तोद्दामधामस्फुरदमितजगन्मातृलीलायितश्री-
रुन्मीलच्चित्रसेनाबहलितपरमानन्दमूर्तिर्भवारिः ।
भाव्यः सम्बोधिलक्ष्मीसहजसुखरसोल्लासितस्वान्तवृत्त्या
सद्वृत्तैरित्यगूढं द्रढयति पदवीमित्थमस्याभयोऽसौ ॥ १ ॥

करोति वज्रदेवीनामादेशात् स्वप्नसंश्रुतात् ।
टीकां बुद्धकपालेऽस्मिंस्तदधिष्ठानतोऽभयः ॥ २ ॥

नूनं तेनाद्य नाथेनाधिष्ठितो वज्रिणाऽप्यहम् ।
यतस्तदुक्तयः स्वार्थं कथयन्तीव कर्णयोः ॥ ३ ॥

मुदं भजत सज्जनाः शुचमुदञ्चतां साधव-
स्तमस्त्रिभववर्ति रेऽपसर दूरमर्वाद्दशः ।
उदेत्यभयपद्धतेः किमपि धाम धर्मास्पदं
स्पृशत्यसमसम्पदं विमृशतश्च मध्यस्थितेः ॥ ४ ॥

चतुर्दशपटलात्मकस्यास्य बुद्धकपालतन्त्रस्य बुद्धकपालो भगवान् देशकोऽ-
भिधेयश्च एवं च देश्यदेशिकसम्बन्धोऽभिधानाभिधेयसम्बन्धश्चोक्तः । विनेयानां च
बुद्धकपालार्थप्रतिपत्तिः प्रयोजनम् । वज्रोपममहासुखैकरसा सकलजगदुपकारिणी

१. इदं ग्रन्थनाम अस्माभिः प्राप्तयोर्द्वयोरपि हस्तलेखयोरनं प्राप्यते । भोटानुवादात् पटलानां च
पुष्पिकाभ्यो गृहीतम् ।

२. पटलानां च नाम श्रीबुद्धकपालतन्त्रमूलस्य भोटानुवादाद् गृहीतम् ।

महामुद्रासिद्धिः प्रयोजनप्रयोजनम्। तत्रैवं मयेत्यादि अभूवन्नित्यन्तमादौ निदानम्। अस्मिन् सति हि देशनाप्रवृत्तेः। कालदेशदेशकपर्षत्सामग्री हि देशनाया निदानम्। एनां विना देशनानुपपत्तेः। तत्र, एवं मयेति मम धर्मः सङ्गातव्यः तथानुपूर्वमप्रति-पद्यत इति भगवता धर्मसङ्गीतिसूत्रे^१। अतः सङ्गीतिकारस्तथैव संगायति स्म। कोऽत्र सङ्गीतिकारः किमनेन नाम निर्णयेन? भगवदादेशेनैव तेन वचनाद् भगवत एवेदं वचनं यदस्ति पुनरत्र समर्पिततन्त्रत्वाद् वज्रपाणिरिति। तत्र संग्राह्यमान-मविपरीतं सकलं तन्त्रार्थमेवमित्ययं निपातो द्योतयति। अतोऽयमेवंकारः सकल-तन्त्रार्थे संपद्यते। तन्त्रार्थस्य च प्रज्ञोपायमयतयाऽक्षरद्वयावयवस्वभावेनावस्थित इत्युपदिशन्ति। मयेति मया सङ्गीतिः कृता। श्रुतमिति श्रोत्रविज्ञानेन व्यञ्जनतो मनोविज्ञानेनार्थतोऽवगतम्। न हीदं मया साक्षात्कृतं भगवत एवास्मिन् धर्मे सर्वाकारमधिगमादिति धर्मे गौरवमुपदर्शयति। एवं सामान्येनोपक्षिप्य विशेषतः सनिदानं क्रमशो दर्शयति एकस्मिन् समय इत्यादि। एकः कश्चिदसाधनानेकपुण्य-ज्ञानसम्भारो येनतस्तिथिनक्षत्रादिभिरपरिच्छेद्योऽचिन्त्यः कालविशेषः। स पुनरत्र चतुर्थक्षणरूपः समय इत्याख्यायते। तस्मिन्नेकस्मिन् समये भगवान् स्थितोऽ-भूवन्निति वचनविपरिणामेन स्थितोऽभूदिति सम्बन्धः। भगोऽस्यास्तीति भगवान्। स पुनरैश्वर्यादयो गुणाः। तदुक्तम्।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य रूपस्य यशसः श्रियः ।

ज्ञानस्यार्थप्रयत्नस्य षण्णां भग इति श्रुतिरिति ।।

चतुरो मारान् भगवानिति वा भगवान्। अथवा। सर्वधर्मनैर्वैधिकी क्लेश-मारादिनिषूदनी प्रज्ञा भगः सोऽत्र तादात्म्येनास्तीति भगवान्।

तदुक्तं वज्रशेखरतन्त्रे^१।

प्रज्ञावध्याश्च ते क्लेशास्तस्मात्प्रज्ञा भगोच्यते इति ।

१. भोटपाठे उक्तम् इत्यधिकम्।

२. तो० ४८०, १४२-२७४।

सर्वे च ते तथागताश्च सर्वतथागता अक्षोभ्यादयस्तेषां कायवाक्चित्तानि वज्रं शून्यता तद्रूपं महत्स्वपरार्थसम्पत्तावलम्बस्ति। निरुत्तरं कारकं क्रिया व्यापारो यस्य स महालंकारः। वज्रगर्भः प्रज्ञापारमितात्मिकः तन्मण्डः सारं बोधिचित्तं लाति गृह्णातीति मण्डलं तु धर्मोदयः। सर्वतथागतकायवाक्चित्तानि तद्वज्रमहालंकार-मण्डलं च सर्वतथागतकायवाक्चित्तरूपत्वं तदेकरसत्वात्। अत एव च त्रिकोणः तस्य मध्ये। इह कूटागारस्यानुक्तत्वेऽपि धर्मोदयमध्यस्थकूटिकं च इत्यर्थेन बोद्धव्यम्। तद्यथा नगरे धनाढ्यवास इति नगरस्थप्रासाद इत्यर्थो भवति। तथा तु नोक्तं महासुखभूमेः प्राधान्योपदर्शनार्थम्। कूटागारमपि हि तदैकरसमेव। अथवा वज्रं शून्यता धर्मोदयः तस्मिन् महालङ्कारमण्डलं कूटागारम् तन्मध्ये। एवं भूतदेशे भगवतः स्थित्युपदर्शनेन शून्यताकरुणाभिन्नसहजकायो विस्फुटः अवगन्तव्यः। तेनैव च कायेन तन्त्रदेशनापि तदेकरसा दर्शिता। एवं कालदेशदेशकसंपदुक्ता। पर्षत्संपदमाह। सर्वेत्यादि। अक्षोभ्यादिभिस्तथागतैश्चित्रसेनादिभिर्योगिनीभिरार्यामनन्दादिभिश्चाधिष्ठिते। वीतरागोपादानं श्रावकयानिकानामुपलक्षणत्वात्पारमितायानिकानामपि वज्रयानमेव महासुखमयसम्बोधिसिद्धिरिति ज्ञापनार्थम्। लोकेश्वरादयश्च तत्र स्थिताऽभूवन्। एतच्च निदानवाक्यं यथासम्भवमस्माभिः सविस्तरं श्रीसम्पुट-टीकायां निर्देशितम् सुधीभिरवसायम्। निदानानुरूपां भगवतो देशनां संगीति-कृत्येत्यादिना प्रस्तौति। वज्रं शून्यतास्वरूपाणि पञ्चज्ञानानि धरतीति शून्यता-करुणाद्वयः सहजमहासुखस्वभावो वज्रधरः। महामुद्रा महासुखैकरसा जगदुप-कारिणी शून्यता सैव वज्रम्। सर्वावरणभेदनात्। पदं च प्रतिष्ठा स्वपरार्थसम्पदः। तदेव सर्वतन्त्रैर्मन्त्रैश्च प्रमाणोपपन्नत्वात्परमोपादेयत्वेन सुष्ठु देशितम्। तेन सर्वतथागतानां वैरोचनादीनां स्वामिनेति स्वामी। स्वामित्वेन निरुत्तरोऽसौ शास्तेति सूचयति। वज्रमात्मनः पद्मं चित्रसेनायास्तयोः समायोगेन। योषिच्चित्रसेना। तस्या भगो धर्मोदया। अध्यात्मं तु वज्रं बोधिचित्तं पद्मोष्णीषादीनि, तान्येव योषितोऽ-वधूत्या भगानि। परिनिर्वृतो बोधिचित्तरूपो द्रवीभूत इत्यर्थः। परमार्थस्तु योषित् प्रज्ञा। चित्रसेना समन्तभद्राऽन्यनामिका। तस्या भगः शून्यता। बहुवचनं सर्वयोषित्संहाररूपत्वाच्चित्रसेनायाः। भगवांस्तत्र महामुद्रावज्रपदेन। प्रज्ञया न भवे

स्थाने कृपयाऽशमस्थितिरित्यप्रतिष्ठितनिर्वाणेन परिनिर्वृतः। तदात्मको भूत्वैक-
लोलीस्वभावेन समस्तभेदापरामर्षादासंसारमपरिमित-तथागत-बोधिसत्त्वयोगिनी
वीतराग-मुद्रामण्डलमन्त्राशीतिकोटिभिः सार्द्धमविकल्पकोऽपि सन् पूर्वावेधवशात्
सर्वसत्त्वेषु किं करवाणि न्यायेनावस्थित इत्यर्थः। तथापि परमगम्भीरोऽयं
मयाधिगतो धर्मः सत्त्वानामपि प्रायोऽल्पपुण्या दुष्प्रज्ञा हीनयानाधिमुक्तिकास्ततः क
एनमधिमोक्षयिष्यत्यपीत्यधिमात्रविनेयानामादरेण त्वरेणार्थनिवृतोऽधिगमधर्मं देशयितुं
निर्व्यापारोऽनुत्साह इति यावत्। तमिति भवशमानवस्थानमनुत्साहं च। परम-
कृपाप्रज्ञायोगः किं करवाणि न्यायेनावस्थितः कथमनुत्साह इत्युद्भुतप्राप्तः।
चित्रसेनामिति। चित्रं विचित्रमद्भुतं च सेना महासुखं यस्यास्ताम् योगिनीमिति।

प्रज्ञोपायसमापत्तिर्योग इत्यभिधीयते।

साऽत्यन्तसम्भाग्या अतएव प्रश्नविसर्जनसमर्थेति पृच्छति। अस्ति
कश्चिदुपायो येन सत्त्वाः सामर्थ्यं स्वपरहितनिष्पादनशक्तिं लभन्ते। तन्त्रादिषु
मन्त्रोपायदेशना प्रयोजनम्। इयमाशङ्केत्याह। मुष्टीत्यादि। अत्र पिण्डार्थः। यानि
तन्त्रादीन्युक्तानि मुनीन्द्रैस्तेषु मन्त्रेण विना सामर्थ्यत्र दृश्यते मन्त्रे तु बह्व्यः शंका
उत्पद्यन्ते। तथा हि मृदुमध्याधिमात्रपुण्यानां सत्त्वानां यथाक्रमं कोटिलक्षाद्युतजापैः
सिद्धिमुक्तवान्महावज्री। अहं च कथं किं मृद्वादिमास्वन्तर्गतो न वेति। संदेहवान्
मन्दचित्तेन कथं मन्त्रं जपेत्। रागाद्युपहतानां मिथ्याज्ञानिनां ततो रागावेशात् कथं
मन्त्रजापः। रागाविष्टाः सत्त्वा इति पाठे। तेषामित्यध्याहार्यम्। अज्ञानां तन्त्रमन्त्रजापे
लेखागणनासम्भवेऽपि कथं क्लिष्टचित्तेन। सम्यग्ज्ञानिनोऽप्यत्यन्तमतिक्रान्तभावा-
भावान्तं चित्तं निध्यप्तं निरूपितं येन निष्ठान्तस्य क्वचित् परनिपातः। तस्य मन्त्रः
कथं मन्त्रोऽतः मन्त्रिणा यो जप्यः मन्त्रोऽतः मन्त्रक्रियाजप्यः। ततश्चित्तं निध्यप्तः।
मननं मनस्त्राणं त्रः शून्यताकरुणाभिन्नं ज्ञानं पारमार्थिको मन्त्रस्तत एव स्वपरार्थ-
सामर्थ्यसिद्धेः। किं मन्त्रजापेनेति भावः। सर्वत्र कथमिति प्रश्ने। एवमित्युक्तक्रमेण
प्रेक्षावान्न जपेत्। तत्रापि सत्यपि जापे सिद्धिरन्यथा न सिद्धिः। ताराकल्पकोटिरिति
तृतीयार्थे प्रथमा। आकाशेऽपरिमिततारावदपरिमितकल्पकोट्या। तथेति यथा-

शङ्कायां जापो न सम्भवति तथाऽर्थसंशयादिना कदाचित्सत्यपि जापे सिद्धिरिति । भगवन्तेति भगवतः । महादेवी अग्रमहिषी, अतएव भगवानिव सर्वतन्त्राधिपा सर्वतन्त्रदेशनायोग्यतया । तथा ह्ययं वज्रवाराहीरूपा लक्षाभिधानवज्रडाकतन्त्रयो-
 देशिकेत्युक्तम् । भगवाननेनायमिति हि भावः । ईश्वरी सर्वत्राप्रतिहताचिन्त्यशक्ति-
 योगात् । सेति तथा । अवलोक्तिमात्रेणेत्यवलोकनमात्रेण । भगवतेति भगवतः ।
 कपाल इति कपालात् । कं सुखं पालयतीति कपालं बोधिचित्तबीजमनाहतम् ।
 तस्मात् मन्त्रो निश्चरति । इदमत्र तं भूमध्ये ज्ञानबीजं बिन्द्वाकारं भावयेदिति
 वचनात् । भूमध्ये बिन्द्वाकारं चित्तं भावनया स्थिरीकृत्य ततो मन्त्रं स्फारयेदिति ।
 अथवा भगवतः सम्बन्धिनः । कपालाच्चित्रसेनाधर्मोदयातः, यद्वक्ष्यति तस्याः
 कपालमण्डलं मन्त्रतन्त्रसुव्यवस्थितमिति । अयमत्राम्नायः । भगवतो महासुखचक्र-
 स्थानाहतादवधूत्याऽधोमार्गेण निसृत्य भगवत्यां धर्मोदयायां प्रविश्यावधूत्यधोमुख-
 भूमध्यान्मन्त्रनिःसरणमनुलोमेन प्रतिलोमेन च प्रवेश इति । अयमेवार्थ एवमित्यादि-
 कपाले प्रविष्ट इत्यन्तेन स्पष्टीकृतः । विध्वंसतेतिविधूत्य । चित्रसेनेति भगवत्याश्चित्र-
 सेनाया अवधूतीनाडी, तस्या मुखे भूमध्ये प्रविष्टो बोधिचित्तेन सह द्रवीभूयाधः
 कपालस्य धर्मोदयाया उदरे च प्रविष्टः । ततः निःसृत्य भगवतो वज्रमार्गेणोद्ध्वं
 अनाहते विलोमेन प्रविष्टः । एष इत्येतस्या नागानामिति नागाः सर्वे नागा महर्द्धिका
 इति सम्बन्धः । वासुकिकर्कोटया अन्येपि ये केचिद् विषसंभवा दृष्टिद्रंष्ट्रालाला-
 स्पर्शज्वालोत्सृष्टविषाणि सम्भवन्ति येभ्यः । आज्ञप्ता वयं देवि । ब्रुवन् ब्रुवन्तः ।
 आह चित्रसेना । एवमिति बुद्धेत्यादि श्रवणानन्तरमेव । भगवतः कपालं
 व्याख्यातम् । स्फुटित्वा विकास्य भूमध्यस्थबिन्दोरालिकालिस्वभावत्वात्पुस्तकं
 सर्वधर्मसमुच्चयस्वभावं लिपिसमुच्चयपत्रात्मकं मन्त्र इव निष्क्रामति । अथवा पु इति
 पुल्लिरमलये स्तेति पुष्टिकरम् । कं सुखमिति पुस्तकं बोधिचित्तम् । तदेव लिपि-
 पत्रात्मकं पुस्तकं भवतीत्यर्थः । आकाशे इत्यावृत्तिव्याख्यानात् । आकाशे धर्मोदये
 वज्रपद्मसंयोगसमये ध्वनिर्नादो भवति यदा तदा पुस्तकं निःसरति । तदेव
 देवैराकाशे ध्वनिः क्रियमाणो भवति । तन्त्रमिति तन्त्रं प्रबन्धस्तत्पुनस्त्रिविधम् ।
 हेतुफलोपायभेदात् । तत्रानादिनिधना हेरुकात्मकता हेतुतन्त्रम् । तमेव हेतूकृत्य

फलहेरुकस्योदुत्पादात्। आगन्तुकमलापगमात्रिशेषजगदर्थकारी फलहेरुकः फल-
तन्त्रम्। तस्यैव विशुद्ध्युपाय उपायतन्त्रम्। गारुडयोगादय उपायाङ्गत्वे नोपायाः।
साक्षादुपायस्तु महामुद्रासिद्धिसमये मुद्रायोगतो यथोक्तमनुष्ठानम्। तस्याप्युत्पन्नक्रमः
साक्षादुपायः तस्योत्पत्तिक्रमः। महाराजमिति महत्याः स्वपरार्थसम्पदः सम्पादनेन
सत्त्वरञ्जनात्। अस्य विशदो निर्देशः सर्वसत्त्वोपकारकमिति। प्रतिनिर्देशः
सर्वसत्त्वसुखावहमिति। सर्वसिद्धीति यतः सर्वाः सिद्धयोऽस्मात्। योगिनीयानमिति
योगिनीतन्त्रम्। यान्ति तदिति यान्त्यनेनेति च फलहेतूपायस्वभावं निरुत्तरमिति
निर्दिशति। शीघ्रफलप्रदायकमिति। तत्र साक्षादुपायतयोत्पन्नक्रमं तावदुद्दिशति।
स्तोभेत्यादि स्तोभं। उद्यतमानं वज्रम्। अध्यात्मे तु बोधिचित्तम्। स्तम्भे
आश्रयत्वात्पद्मम्। तज्जातं सहजं सर्वधर्मस्कन्धतया महाज्ञानम्। निरावरण-
महासुखतया निरुत्तरम्। पदेति पदं प्रतिष्ठा स्वपरार्थसम्पत्तेः। नाडीसंचारवर्जितं वा
पदम्। दुर्लभं कौशीद्याद्युपहतानाम्। रहस्यमप्रकाश्यं श्रावकादिभ्यः। अतएव
परममुत्कृष्टं तीक्ष्णप्रज्ञानामुपचितपुण्यानामेव विषयत्वात्। रम्यमानन्दादियुक्तम्।
सर्वदेहे व्यवस्थितमिति। सर्वत्रानुपरतमनुभवान्महासुखस्य परिस्फुटतामाह। देहस्यैव
तदेकरसस्योदयात् तरङ्गस्येव जलात्। एवं सर्ववस्तुव्यापकत्वेन मण्डलेयसहित
एव मण्डलेशो देशितः। उपायाङ्गमुद्दिशति। गारुडमित्यादि मारणं यावद् द्वादश-
कर्माणि। उत्पत्तिक्रममुद्दिशति। नानामन्त्रमिति हूँकारेत्युत्पत्त्यादिबीजम्। यथान्यायं
वक्ष्यमाणपटलोक्तेन विधिना। योगिनीनां तु चित्रसेनेत्यादीनाम्। यथोदयं यथा-
योगमुत्पत्तिः हेरुकं चेति। हेरुकस्य च महावीरस्य। उत्पत्तिकारणं चन्द्रादि।
स्थितिकारणं धर्मोदयादि। अयमुत्पत्तिक्रमः प्रथमं भाव्यः। इह हि मन्त्रमहायाने
आदिकार्मिकसत्त्वानां प्रथममवताराय देवतामूर्तिभावनैव कथ्यते। यदाह—

आदिकार्मिकसत्त्वानां देवतामूर्तिभावनः ।

निर्दिष्टा प्रथमं तन्त्रे सर्वकर्मप्रसिद्धय इति ।।

उत्पत्तिक्रमस्य साक्षादुपेय उत्पन्नक्रम इति यादृश उत्पत्तिक्रम उपाय इति प्रतिपादयितुमुत्पत्तिक्रममुद्देशमनन्तरं क्रमद्वयविशेषणमाह । भावेत्यादि भावाभाव-योऽध्यारोपितयोः सकलापरारोपव्यापकयोरभावाद् भावाभावनिष्प्रपञ्चः । आवरण-द्वयनेयाभावान्निर्णया न तर्हि परार्थकृत्यं श्रावकनिर्वाणवदित्याह । भवचारकमिति । निरावरणस्यापि परार्थं महाकरुणया, निरवधिकालं संसारोपादानात् ।

उक्तं परमाद्यतन्त्रे

यावत्संसारवासस्था भवन्ति वरशूरयः ।

तावत्सत्त्वार्थमतुलं शक्ताः कर्तुमनिर्वृताः ॥ इति ।

पुनरुपायाङ्गमुद्दिशति । संध्याभाषमित्यादि । प्रतिमस्येत्यादिखड्गान्तानि द्वादशकर्माणि पूर्वापरकर्मकथनेनोत्पत्तिक्रमस्थस्योत्पन्नक्रमस्थस्य च बुद्धकपाल-योगेन सर्वकर्म सिध्यतीति सूचयति । अतएव मारणरसयोरुपलक्षणत्वेनोभयतो-पादानम् । अन्तर्ध्यानमित्यात्मनः अश्रेष्ठ अवरेति ।

दुष्करैर्नियमैस्तीव्रैर्मूतिः शुष्यति दुःखिता ।

दुःखाद्विक्षिप्यते चित्तं विक्षेपात् सिद्धिरन्यथेत्याह ॥ इति आह^१ ।

पञ्चकामाः सेव्यमानेति ।

सर्वमायासु च मायानां स्त्रीमायैव विशिष्यते ।

ज्ञानत्रयप्रभेदोऽयं स्फुटमत्रैव लक्ष्यते ॥ इति ।

न्यायेन पञ्चसु कामेषूपभुज्यमानेषु प्रधानं स्त्रीसेवा, उपायकौशलेन महामुद्रा-सिद्धिहेतुः । तस्मात्तदर्थवाजीकरणं निर्देष्टुमाह । घोरमदीति घोराणां विकल्पानां सहजोदयकालेऽस्तङ्गमनान्मर्दनयोग्यम् । महायुद्धं रतिवैचित्र्यं क्रियमाणमेकेन पुंसा तत्र स्त्रीलक्षं जीयत इति भूयते वाजीकरणेन । किमेवं दृश्यत इत्याह । एकपुंसा

१. आर्यमञ्जुश्रीनामसङ्गीतिः, डॉ० बनारसीलाल, पृ० १२६, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, १९९४ ।

इति। एकः पुमान्महाकामी दृश्य आर्यधर्मोद्भूतादि-अष्टषष्टिस्त्रीसहस्राणमुपलक्षण-
त्वात् स्त्रीलक्षमभिभवन्निति शेषः। तस्मात् कामयेत्। एकेनेत्येकः। सर्वानिति
सर्वाः। अत्र चोपायो वाजीकरणमिति बोधित्तस्य द्रावणं धारणं वृद्धिश्च। एतत्त्रयं
यथा भवति तद्वक्ष्यामः। अत इत्यादिना गारुडं^१ निर्दिशति। यथा नाममिति। यथा
प्रसिद्धं भवति तथा वक्ष्यामि। शालिकिकरणं विद्याधरकरणञ्च प्रतिनिर्देश्यते। द्यूतं
पाशकं ततः खेलनं विषं शमयति। पटहवादनं। दष्टस्य स्त्रियो हरणम्। करवीर-
काष्ठिकयो शिरःप्रभृतिपादान्तं यावत् हनम्। पाशेति, पाशाकारया रज्ज्वा
गलेबद्ध्वाकर्षणम्। कोकिलशब्दोच्चारणं। पद्मोस्थालमिति। अध्यात्मपद्मेषु यथोप-
देशं वायोरुन्मूलिताश्रयो निरोधः। अन्यश्च संभोगचक्रनाडीद्वययन्त्रणमाह। व्याघ्री-
करणं व्याघ्र्या इवाक्रमणाभिनयेनाक्रमणम्। उदकं प्रतिनिर्दिशयति। शंखमिति
शंखध्वनिः। खटिकाहरणमिति। खटिकया अस्य नाम लिखनाद्विषहरणम्।
उत्तारणमिति वमनम्। कर्पटेनाच्छादनम्। चर्पटमिति चपेटेन हननम्। त्र्यक्षरमिति
टक्करेण हननम्। ह हो हीरिति त्र्यक्षरेण विषनाशनमिति कश्चित्। ध्यानदृष्टिकथेति
शुक्लाकारादिभावनादृष्ट्या कथा कर्तव्या। इत्येभिरष्टादशप्रयोगैर्विषस्याकृष्टिः भवति।
उत्पन्नक्रममुद्दिष्टं निर्दिशतीति। अत इत्यादि। दिवि सुखावत्यां पद्मे भवं दिव्यम्।
ज्ञानं सहजानन्दः यथैकानेकस्वभावरहितत्वेन निःस्वभावतया तथा संवृत्तिसत्यम्।
भगं पद्मं, तस्य मध्ये आश्रये व्यवस्थितं विकल्पानवधूय स्थितं भवनिर्वाणा-
प्रतिष्ठतया।

तदुक्तं हेवज्रे^२

विहरेऽहं सुखावत्यां सद्ब्रजयोषितो भगे ।

एकाराकृतिरूपे तु बुद्धरत्नकरण्डके ॥ इति ।

तथा

१. गारुडयोग- भो०।

२. हेवज्रतन्त्रम्, प्रो० रामशंकर त्रिपाठी, डॉ० ठाकुरसेन नेगी, २.२.३८, केन्द्रीय उच्च
तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, २००१।

योषिद्भगे सुखावत्यां शुक्रनाम्ना व्यवस्थितः ।
विना तेन न सौख्यं स्यात् सुखं हित्वा भवेन्न स ॥ इति ।

तथा

सहजानन्दस्वभावोऽहं परमान्तविरमादिकमिति ।

अत्र शुक्रनाम्नेति बोधिचित्ताकारस्यैव चेतसस्तथा प्रकाशनात् । परमान्त-
विरमादिकमिति । परमस्यान्तो विरम आदिर्यस्य परमानन्तरविरमानन्दं तदनन्तरं
सहजमित्यर्थः । मतान्तरे तु विरमस्यादि । परमविरमयोन्तराल इत्यर्थः । एतच्च
मतमसङ्गतम् । विरमादौ लक्षयेत् आनन्दत्रयवर्जितमिति वचनात् । अनेन हि
विरमश्चासावादिश्चेति विरमकाल एवासन्नोदयं सहजमादित एव लक्षयेदिति
प्रतिपादितम् । सहजोदये तु सर्वविकल्पानामस्तमयात् । कुतो लक्षणम् ।

अत एवार्यपादैः

ज्ञानत्रयप्रभेदोऽयं स्फुटमत्रैव लक्ष्यते ।
इत्यनेनानन्दत्रयस्य लक्षणमलक्षणं चतुर्थस्योक्तम् ॥

भगवता च-

विलक्षणं त्रिभ्योऽन्यदित्यनेन ।

अतः कथं सहजानन्तरं विरमोपपत्तिः । अशक्तलक्षणत्वात् । विरमान्तर-
मनुस्मरणस्यैव लक्षणत्वे अनुभवोपायो देशितः स्यात् । सहजोदयस्थाने त्वविप्रति-
पत्तिर्वा । नन्वादावपि कुतो लक्षणमननुभूतत्वादेव । न उषःकाल इव सन्ध्यायाः ।
ननु तथापि तद्रूपमनुपलक्षितमेव सत्यम् अनुभवोपायस्त्वेवमुपदिश्यते । नन्वेवमु-
पायोऽपि भवितुं नार्हति । ततः प्रभृति तदुपलक्षणाभिनिवेशतोऽस्य तदसम्भवात्
सत्यम् । यद्येवं स्यात् । तत्र तु तथोदीयमाने यथा कर्तव्यं तथा गुरवो वक्ष्यन्ति
एवमुभयत्रापि मते उपलक्षणक्रमः सूचितः । विरमस्य सहजानन्तरत्वे तन्त्रान्तराणि
षोडशाद्भार्द्धबिन्दुधृक् मुद्रासिद्धिश्च विघटते । सहजानुभवोपायश्च न सम्भवति ।
सहजस्वरूपमेव केवलं न विघटत इति पूर्वकमेव मतमाग्रायविदो वदन्तीत्यलमिति

प्रसङ्गेन । तद् दिव्यज्ञानं दृष्टान्तत्वेन लौकिकसहजमेव महासुखस्य साध्यस्य साधनं द्रष्टव्यमित्याह ।

महासुखप्रदायकमिति ।

तदुपायभूतं सहजं यथोपदेशमभ्यस्यमानमक्षरं महासुखं निरावरणं निरतिशयमुपेयमुपजनयति । ज्ञानयोः^१ उपायोपेयसुखयोस्तत्त्वं नैःस्वाभाव्यलक्षणां शून्यतैव । ये तु सुखमेव तत्त्वं प्रतीत्य स्थितास्तेषां भ्रमनिरासार्थमुक्तं भगवाताह—

तस्मात्सौख्यं न तत्त्वाख्यं महाभूतं यतः सुखमिति ।

सहजमपि सर्वदा सर्वत्र न भवति । तथाहि सहजं वस्तुस्वरूपं तत्पारमार्थिकं शून्यतैव, सांवृतं बोधः सुखं तु यदि नाम बोधस्तथापि न सर्वदा सर्वत्र सहजं दुःखोपेक्षानुभवकाले चतुर्थे ध्याने आरूप्यधातौ च बोधवदननुभूयमानत्वात् ।

यदुक्तं नामसङ्गीत्याम्^२

चतुर्थध्यानकोटिधृगिति ॥

तत्र चतुर्थध्यानस्य सहजानन्दस्य कोटौ सर्वकल्पनामलरहिते प्रकर्षपर्यन्ते तादात्म्येनावस्थितत्वात्तत्स्वरूपधारीऽत्यर्थः । महासुखमया निरवधिधातुत्रयी प्रतिभासे सति ध्यानादिकमपि महासुखमयं भगवत एव नान्यस्येत्येवमुक्तमावृत्तिः व्याख्यानार्थम् । कथं तर्हि सुखं सहजमुच्यते यथानालम्बना महाकृपाऽदृष्टतत्त्वस्याविद्यमानाऽधिमोक्षेण भाव्यमानाऽधिगततत्त्वस्य बोधात्मकत्वात्सांवृतं स्वरूपं सहजमुच्यते । तथा सुखं कदाचिदनुभवावस्थायामननुभवावस्थायां चादृष्टतत्त्वेनाविद्यमोक्षेण महाकृपाऽभिन्नस्वभावं शून्यतात्मकं सर्वाकारवरयुतं भाव्यमानतत्त्वा-

१. 'ज्ञानयोः' नास्ति- भो० ।

२. आर्यमञ्जुश्रीनामसङ्गीतिः, (१०.३), पृ० ९०, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, १९९४ ।

धिगमावस्थायां लोकोत्तरं सांवृतं सहजमुच्यते । तत्त्वानाधिगमावस्थायां त्वनुभूयमानं
लौकिकं सांवृतं सहजम् । सहजच्छायानुकारित्वात् ।

तथा चोक्तम्—

सहजाभ्यां यदुत्पन्नं सहजं तन्निगद्यते ।

स्वभावं सहजमित्युक्तं सर्वाकारैकसंवरम् ॥

कृपोयायो भवेद्योगी मुद्रा हेतुवियोगतः ।

शून्यताकरुणाभिन्नं बोधिचित्तमिति स्मृतम् ॥ इति ॥

अत्र संव्रियन्ते अस्मिन्निति संवरः । सर्वेषामाकाराणां नीलपीतादीनामेकोऽ-
द्वितीयः संवरः । सहजस्यैव तथा तथा प्रतिभासनात् । सहजैः पुनर्याभ्यामुत्पन्नं
सहजमुच्यते । तौ कृपामुद्रे । अतः कृपानालम्बना महाकरुणा महासुखमयी सा
उपायो यस्य स एवंभूतो योगी भवेत् । एतदुक्तम् । उपायतत्त्वमिदं सुखं न तु
प्रज्ञातत्त्वम् । मुद्रा शून्यता सैव सर्वधर्माणामनुत्पादलक्षणा परमा प्रज्ञा हेतुवियोगतो
हेतोरभावात् । आद्यनुत्पन्नत्वात् सर्वधर्माणाम् । एतौ च स्वभावौ सहजावेव स्वतः
सिद्धत्वात् । आभ्यामुत्पन्नं तत्त्वं बोधिचित्तं शून्यताकरुणाभिन्नम् । तत्किमिदं
प्रज्ञाज्ञानादन्यदेव । नान्यत् तस्यैवेदं विपक्षव्युदासेन स्वरूपं प्रकाशितम् । एवंविधं
तदिति । इदमेव सहजाभ्यां प्रज्ञाज्ञानस्वरूपाभ्यामभ्यासादुत्पन्नं बोधिचित्तं चतुर्थो
महामुद्राभिषेकः । सर्वविकल्पमलानां साक्षादनेन क्षालनात् । तदुक्तम् चतुर्थस्तत्
पुनस्तथेति । सहजरूपतामेव विश्वस्य दर्शयन्नाह । तत्रैवेत्यादि । तत्रैव दिव्यज्ञाने
भावाभावादिसमस्तारोपशून्यतैकरसे स्थितास्तादात्म्येन । सर्वं बालेति बालाः
पृथग्जनाः । ननु कथमात्मस्वरूपमपि न जानन्ति । यतो मोहिताः भावाभावादि-
ग्राहविपर्यासोऽज्ञानं च मोहः संजातः एषाम् । तदेव ज्ञानं रसो महासुखं रसायनं
बलवैशारद्यादिगुणपुष्टिहेतुत्वात् । त्रिविधेषु बाह्यरसादिभ्यो विशिष्टमित्यर्थः । तथैवा-
भ्यस्यमानं महासुखप्रदायकं यथा विचित्राकारस्य भावाभावादिरहितस्य वस्तुनो
यथाभूतस्य बोधाद् बुद्ध्या वैमल्यपरिशुद्ध्याबलवैशारद्यादिज्ञानमया अवस्थिताः ।

अनेन चित्तवज्रस्वरूपो धर्मकायः कथितः। मण्डलमिति नीलपीतादिविचित्राकारं शून्यताकरुणाभिन्नं समापन्नदेवतारूपमानन्दादिभेदभिन्नं जन्ममरणोत्पादनिरोधरूप-स्फरणसंहरणकारि वज्रसत्त्वरूपं मण्डलचक्रं महासुखमयमेव दिव्यमुत्पन्नरूपम्।

चतुर्थार्थ एव भाव्यमानः सिद्धः संश्चतुर्थोऽभिषेको भवतीत्याह।

तत्रैव सुशिष्यसेचनमिति ।

यत्तु भगमध्ये सेचनमुत्पत्तिक्रमेण तद्वक्ष्यति। हेरुकमिति हेरुको भगवान् संभोगकायात्मा। पारमितानये दशभूमीश्वरबोधिसत्त्वानां गम्भीरोदारधर्मदेशनया धर्मसंभोगाङ्गत्वेन द्वात्रिंशलक्षणशीत्यनुव्यञ्जनात्मकः काय एव सम्भोगकायः। इह त्वसौ धर्मकायवशेन विनेयानुरोधतो हेरुकादिरूपेण तथा तथा निर्मितेन निर्माण-काय उच्यते। यस्तु निर्मितबुद्धो निर्माणकायः पारमितानये कथ्यते। सोऽत्रापि तद्वदेव निर्मितवच्च। सत्यपि धर्मकायनिर्मितत्वे संभोगकायस्य पारमितानये पृथक्त्वं धर्मसंभोगादेव। इह तु वाग्रूपः तथापि सम्भोगत्वञ्च रससम्भोगतोपि निर्मूलितसकलविपक्षत्वाद्गीरः। अध्यात्ममण्डले च देवीनां वक्ष्यमाणानां चतुर्विंशतेः महासुखरसपानाद् धर्मञ्च धर्मवाचा पालनाच्चाधिपः। निरवधिविविधकायस्फरणेन परार्थं प्रति, प्रभविष्णुत्वात्प्रभुः। गारुडं विषशमनोपायः परमः शून्यतैव। यद्वक्ष्यति सर्वधर्मेषु शून्येषु सर्पविषं कथम्? तत इति शून्यतानधिमुक्तानां भयहेतुत्वाद् घोरं दैत्यसाधनमिति। न हि तदस्ति यन्न तथा ज्ञानयोगिनो वशी भवति। श्मशान-मित्युत्पत्तिक्रमे सतीति शववसतिरिति नैरुक्तेन विधिना नैरात्म्यलक्षणं धर्मधातु-द्योतकं शवानामावासाः श्मशानमष्टसंख्यावच्छिन्नं वक्ष्यामः। इह तु धर्मधातुरूपं शरीरमेवाष्टाङ्गं श्मशानम्। पारमितानये त्रिकल्पासंख्येयबुद्धोत्पत्तिरुक्ता इह त्वनियतकालेनेत्याह। झटित्युत्पत्तिकारणमिति त्रिसाहस्रेषु महाद्धिका इति। त्रिसाहस्रादिलोकधातुषु महति अपरिमितविचित्रनिर्माणरूपा महाऋद्धिर्येषां ते तथा। अनेन निर्माणकायः कायवज्र उक्तः। भाजनलोकेऽपि तत्स्वभाव इत्याह। लोक-धात्विति लोकधातवः। सैवेति महामुद्रा। परमरतिस्थानत्वाद्देवि। सर्वबुद्धानां जननी हेत्ववस्थास्वभावा। बोधिसत्त्वानां महालक्ष्मीः पुण्यज्ञानसंभारस्वभावा फलावस्थायां

तु प्रज्ञापारपरायणी प्रज्ञापारे प्रकर्षपर्यन्ते, परायणी साकल्येन गता प्रज्ञापारमितेत्यर्थः । नरकद्वारमिति ।

तत्प्रतिक्षेप्तृणां यथोक्तं राजरत्नावल्याम्—

अपरोऽप्यस्य दुर्ज्ञानान्मूर्खः पण्डितमानिकः ।

प्रतिक्षेपविनष्टात्मा यात्यवीचीमधोमुखः ॥ इति ।

स एव सैव । सर्वावरणविगमो मोक्षः । शून्यतैकरसानालम्बनमहाकरुणा-
स्वभाव महासुखमयोऽशेषजगदर्थकारी चतुर्थः कायो महामुद्रा । अपरकायत्रयस्यै-
तन्मयत्वात् महायशाः । अतएव सर्वसत्त्वहितकामिनी । महाकरुणास्वभावत्वात् ।
महासुखाकारेण विश्वस्य जननाज्जननी । संवृतिपरमार्थसत्यविभागभावनयोत्पन्न-
त्वाद् भागिनेयी । संवृतिपरमार्थसत्ययोर्विभागकथनाद् भगिनी । बलवैशारद्यादि-
निरुत्तरगुणस्याकाशधेनोर्दूहनादुत्पादनाद् दुहिता । निरुत्तरसुखेनानुरागणात् स्त्रियेति
स्त्री । प्रज्ञापारमितया प्रकाशयानुशयं विज्ञाय यथायोगमनुष्ठानात् सर्वसत्त्वा
अनुरागिता भवन्तीति प्रज्ञैव स्त्रीति कथ्यते । सुपुंश्चलेति । सुष्ठु पुंसु चञ्चल
परमकृपास्रवनिरुत्तरानवधि महासुखार्थप्रतिसत्त्वमात्मसमर्पणात् । आदिकर्मिक-
सत्त्वानां स्थिरीकर्तुमशक्यत्वाद् वा । प्रज्ञानिष्प्रपञ्चावबोधः । प्रज्ञापारमिता महा-
मुद्रेति यावत् । एता निरुत्तरा मुद्रा अपराश्च वक्ष्यन्ते त्रयोदश । अनुपचितपुण्या-
नामविदिततत्स्वरूपाणां श्रावकादिगोत्राणां भयहेतुत्वाद् भयानकी ।

तदुक्तमार्यराहुलभद्रेण

बालानां भीमदर्शनेति ।

विपर्यस्तस्योच्छेदसमारोपेण पश्यतः । स्वर्गापवर्गमार्गबहिर्मुखस्य निरय-
हेतुत्वाद् घोरा ।

तदुक्तम्-

त्वामेव बध्यतेऽपश्यन्निति ।

क्वचिद् घोरषड्गतीति पाठस्तदा घोरः संसारः । अत एकैव प्रज्ञैषामन्येषाञ्च संसारे निर्वाणे च ।

तदुक्तमार्यनागार्जुनपादैः

भवस्यैव परिज्ञानं निर्वाणमिति कथ्यते । इति ।

श्रीसंपुटतन्त्रे च ।^१

अनल्पसंकल्पतमोऽभिभूतं प्रभञ्जनोन्मत्ततडिच्चलं च ।

रागादिदुर्वारमलावलिप्तं चित्तं हि संसारमुवाच वज्री ॥

प्रभास्वरं कल्पनया विमुक्तं प्रहीणरागादिमलप्रलेपम् ।

ग्राह्यं न च ग्राहकमग्रसत्त्वास्तदेव निवारणवरं जगाद ॥

अतश्च नातः परमस्ति किञ्चित् निमित्तभूतं बहुदुःखराशेः ।

अनन्तसौख्योदयहेतुभूतं मुमुक्षवो नास्ति ततः परश्चेति ॥

अनन्तसुखसमृद्ध्या महर्द्धिकं संसारं निर्दिशति । विकल्पेत्यादि संख्यान्तम् । भावाभावशश्वतोच्छेदग्राह्यग्राहकादिविविधकल्पना विकल्पः । स एवं संतत्या प्रवर्तमानः संकल्पः । उदयास्तमनमुत्पादनरोधौ । तस्या अधिगमोपायं दर्शयति । अविकल्पेति अविकल्पानि । कानीत्याह-हीनेत्यादि हीनं सूक्ष्मपदार्थं चित्तचैत्तरूपम् । उत्कृष्टमाबालं भावव्यवहारविषयत्वात् । स्थूलरूपो भावो देहोव । मध्यमं द्वाभ्यामन्यत् आली काली तदेवं कायवाक्चित्तानि यथायोगं हीनमध्योत्कृष्ट-पदैराख्यातानि । अन्यानि षडिन्द्रियाणि । यानि तानीत्यनेन स्थिराः पृथिव्यादयश्चला अन्ये प्राणिन उच्यन्ते ।

१. हस्तलेख० सं० ३.२२३, (बो.दि.प्र. प्रकरणम्), राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू, नेपाल ।

तदुक्तं हेवज्रतन्त्रे—

हीनं सूक्ष्म पदार्थन्तु उत्कृष्टं भावमुच्यते ।
मध्यमं वर्जितं द्वाभ्यामन्यानीति षडिन्द्रियम्
स्थिरचलं यानि तानीति^१ ॥

एतानि हीनादीन्यविकल्पानीति निर्विकल्पे सहजमयानि भाव्यमानानि स्फुटीभवन्ति न तु पादप्रसारिकयेत्यविकल्पशब्देन भावना सूचिता । नन्वविकल्प-
भावेनेतिकोऽर्थः महासुखेनोपायेन सर्वधर्माचिन्तनमेव भावनेत्यर्थः । तत् किं महा-
सुखमनसिकारो न दुष्टः नादुष्टः । तस्यापि सर्वं जगदव्यतिरिक्तत्वेन जगच्छून्यतया
शून्यत्वात् । न च चिन्तयितुं शक्तमिति । तस्या मनसिकारो दुष्टः । अचिन्तनानु-
कूलत्वात् उपदिश्यते ।

यथोक्तम्—

भ्रान्त्याप्युपकाराय भ्रान्त्यन्तरनिराकृतेरिति ।

अतो निर्विकल्पसर्वधर्मपरिज्ञानमेव पारमार्थिकी प्रबन्धवृत्तौ भावनेति
प्रज्ञप्यते । तत्र यदा यदैव चेतसः स्थैर्यम् भवति तदा तदैव समाहितयोगः ।
अन्यदा त्वसमाहितयोग एव अत एवोत्पन्नक्रमे मुद्रायोगमन्तरेणापि समाहितयोग
उपदिश्यते । महासुखेनोपायेन सर्वधर्माविकल्पनेनावस्थानात् । सिद्धिस्तु मुद्रा-
योगादेव । एवमगमेका स्वार्थसम्पत्त्या महाभागा परार्थसम्पत्त्यै सर्वसत्त्वसुखा-
वहेत्युपसंहारः । एवमिति क्रमद्वयम् । हृष्ट उत्पत्तिक्रमश्रवणात् । उत्फुल्ललोचना
उत्पन्नक्रमश्रुतेरतिहर्षेण । स चेतसेति सचेतसः । क्रमद्वये निपुणनिशितबुद्ध्यः ।
प्रणिपत्तीति प्रणिपत्यः । यदर्थमिति योऽर्थोऽधेयः । संगृह्येति संगृहीतवान् ।
अथेत्यादि । अत्र पिण्डार्थः । यत्र भगवतः कपालाच्चित्रसेना-हृदयमाविश्रम्ये निःसृतं
प्रागुक्तं तत्पुस्तकं प्रतिभासमात्रत्वादिदानीं वज्रपाणेः हस्ताद् भ्रुवा प्रविश्य संग्रहाय

१. हेवज्रतन्त्रम्, ८.३८, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, २००१ ।

द्रवीभूतं हृदयम् इति। अतएव पश्चात्संगीतिरुपपद्यते। जपे इति पूर्ववत्सेव्यमाने। विविधैरिति देशकालादिभिः। स्तोभस्तम्भनादिकं यदुक्तम्। तत्रानुष्ठेयं कालक्रियासु च निश्चयः कथं भवतीति प्रश्नं स्फुटयति। कतमे इत्यादि। कं सुखं पालयतीति कपालमेव कापालं पद्मम्। त्रिभिः कोणैः सम्भवतीति त्रिकोणः सम्भवति यो भगवद्भगवतीवज्रपद्मयोर्योगः। आभ्यन्तरं तु वज्रं बोधिचित्तं भगवान्। गुह्यचक्रेण सम्भूतः^१। शुक्राकारो भवेद् भगवानिति वचनात्।

कापालं रजःकपाले भवत्वात्। अतएव हि त्रिकोणात् गुह्यव्रकात् सम्भवति। तयोर्यथोपदेशं रत्नगर्भे कर्मचण्डाल्यादिना योगः। परमार्थतस्तु बुद्धकापालयोः शून्यताकरुणयोर्योगः। तस्य त्रिधातुयोगस्य गुह्येऽध्यात्मनि स्थिता अवधूतीनाडी चित्रसेना मुख्यतः। तत्स्फुरणात् तु द्वासप्ततिनाडीसहस्रमपि चित्रसेना। अवयवार्थमाह। चित्रमिति आश्चर्यश्च बलवैशारद्यादिगुणस्य निरावरणस्य कारकं सर्वाकारवरोपेता शून्यता तदेव सेना समूहः स्थिरचलात्म-त्रैधातुकस्य महासुखज्ञानस्वभावत्वात् एतेन भगवान् यथा शून्यताकरुणाभिन्नत्वेन बुद्धकपाल उच्यते। तथा भगवती चित्रसेनत्यपि सूचितम्। तदेव महतां यान्ति येन यद्वेति यानं हेतुफलात्मकं महायानं चक्रतः उत्पद्यते इत्याह। योगिनीति त्रिविध-योगातिशयत्वात्। योगिन्यो योगिनीस्वभावा च नाडी अवधूती। तस्याः सम्भवति। उक्तयोगेन तदेव दिव्यज्ञानं यद् प्रागुक्तम् तदद्भुतं भावनयोष्मादिक्रमेण महादिव्यं फलं वज्रधरज्ञानम्। सर्वसत्त्वसुखावहमिति सुगमः। केचित्सर्वबुद्धसुखावहमिति पाठस्तदा सर्वेषां बुद्धस्वभावानां स्कन्धादीनां सुखावहम्। कथमेवमित्याह। चित्रेत्यादि। महादिव्यमेव कपालधर्मोदयायाम्।

मन्त्रतन्त्रव्यवस्थितमिति ॐ बुद्धेत्यादिर्मन्त्रः।

तन्त्रञ्च प्रागुक्तम्। ताभ्यां सह विगतमलमवस्थितम्। अथवा मन्त्रः शून्यतैकरसः महासुखम्। स तन्त्रेण प्रबन्धेन विकल्पान् अवधूय स्थितं

१. 'गुह्यचक्रेण सम्भूतः' नास्ति- संस्कृतमातृकासु, गृहीतस्तु भोटानुसारी।

यस्मिंस्तत्तथा। तस्य कपालस्यैव त्रिकोणमिति त्रिकोणकार्यत्वादनन्योपायज्ञापनार्थं मुपचारः। तत्रेति यत्र तद्विव्यज्ञानं प्रज्ञाज्ञानरूपमुत्पद्यते। यदाश्रयेण च तदेवाभ्यासाच्चतुर्थाभिषेके भवति। तत्र स्थानं सप्तपञ्चेति चतुर्दशाभिषेकाः। बुद्धाभिधायका इति अक्षोभ्यादिविशुद्धा तान्वक्ष्यामः। नानाप्रयोगाः शान्तिकादयो वक्ष्यमाणाः। आयुर्वर्द्धनमिति। तदेव ज्ञानमायुर्वशितया अथवा निर्माणचक्रग्रन्थौ पञ्चरश्मियुक्तः शुक्लसूक्ष्मबिन्दुः पञ्चाभिषेकस्वभावः। सप्तबुद्धाभिधायका इति। स बिन्दुः सप्तेरेखाभिः वेष्टितव्यः। ताश्च सूक्ष्मा ज्वलन्त्यो वायोर्निगमनैर्गच्छन्ति प्रवेशे प्रविशन्ति चित्तेन सह विन्दौ। एवं भावनया जातं सहजज्ञानं सप्ताभिषेका इत्यर्थः। आयुर्वर्द्धनमिति प्रवेशनिर्गमयोः प्रज्ञोपायस्वभावजपेन निरोधादित्युपदेशः। सर्वमेतद् दुरवबोधं विना गुरुपदेशेनेत्याह। उपदेश मार्गमिति। उपदेशो मार्गः प्रत्युपायो यस्य तत्तथा। उपदेशश्चास्माभिर्विवृतो विवरिष्यते चेति।

पण्डिताभयकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

प्रथमपटलः॥ १॥

*

क्षारप्रयोगः नानाकर्मनिश्चयो नाम

मन्त्रपटलः द्वितीयः

उत्पत्तिक्रमं निर्देष्टुं मन्त्रपटलमाह। अर्थेत्यादि मन्त्र मन्त्रमूर्तिमयत्वादुत्पत्तिक्रमस्य कर्मप्रसरस्य चोत्पत्तिक्रमाङ्गस्य मन्त्रसाधितत्वात् मन्त्रः मन्त्रणं आमन्त्रणं तत्त्वचोदनं तूदितम्। तद्योतकं पटलं संप्रवक्ष्यामि यथागतं भगवतो वज्रधरस्य^१ द्वादश साहस्रिकबुद्धकपालमूलतन्त्रे। वज्रेति समयद्रव्यं तन्निवेदनमन्त्रः। बलिपूर्वकत्वात् सर्वसिद्धीनामाह। ॐ महाकपालवज्र इत्यादि। इन्द्रादयः सपरिवाराः सर्वभूता भगवतो^२ऽस्येति सार्वभौतिकः। बलिरुपचारविशेषः। तदधिष्ठायको मन्त्रः। सार्वभौतिक बलिमन्त्रः। इह दशसु दिक्षु बुद्धबोधिसत्त्वादीनिन्द्रादीन् सपरिवारापरिवानप्रमितप्राणिनश्च सप्रज्ञानाधिमात्रप्रज्ञाधिकारा झटिति भगवद्-भगवतीरूपाण्यवलोकयन्बलिञ्च वक्ष्यमाणभावनया झटिति वा पारदसदृशममृतमयं सधूपादिकं तेभ्यो दद्यादित्याम्नायः। तण्डुलं शालिमिति। रक्षशालितण्डुलमखण्डं शुक्लगोक्षीरेणैव प्रक्षालयेत्। कुमारी अविकलाङ्गा अक्षता। अत्यन्तसूक्ष्मस्येति अत्यन्तसूक्ष्मम्। तेन तण्डुलेन तथा पिष्टेन पुत्तलकं हेरुकप्रतिकृतिं कारयेत्। कुर्यात् स्वयं। प्राज्ञ इत्यक्षतप्रज्ञायुक्तः। वज्रवृतेनेति वज्रवृत्तमक्षतकुमार्याः प्रथमपुष्पसमये वज्रपद्मजमुभयबोधिचित्तं तत् स्वयंभूकुसुममिश्रम्। तेन सह मर्दितेन तत्समभागः चिताङ्गारचूर्णेन तत्पुत्तलकं लेपयेत्। बुद्धकपालयोगिभिः। स्वयं हेरूकात्मा सर्वप्रयोगेषु। हेरूकाकारयोगेनेति पुत्तलकं समयसत्त्वं ज्ञानसत्त्वेन सहाभिन्नं साक्षाद् हेरुकं भावयेदेवं पुत्तलकस्य हेरूकाऽकारयोगेन। तत्पुत्तलकं हस्तेन स्पृष्ट्वा ॐ महावज्रे इत्यादिकं मन्त्रमष्टोत्तरं शतं जपेत्। उदकमिति वज्रोदकम्। तदनु स्नापितपुत्तलकं पूजयित्वाऽभिमताशयेन। तेन स्नानोदकेनात्मनो

१. 'वज्रधरस्य' नास्ति- भो०।

२. देवस्य- भो०।

मुखप्रक्षालनाददृश्यो भवति साधकः क्षारप्रयोगम्बुक्तुमाह तस्येत्यादि। बब्बोलकाष्टेन विद्धेति शेषः। अग्निनेति श्मशानाग्निना तस्येति पुत्तलकस्य। ब्रह्मव्रजेति। ब्रह्मव्रजं वैरोचनं तस्येति पुत्तलस्य क्षारमिति भस्म। अनेनेति ॐ बुद्धेत्यादिना। ॐ बुद्धेत्यादि अधिष्ठय ह्रीः ह्रीमित्यन्त एको मन्त्रः पञ्चपदिकः। मन्त्रस्येति मन्त्रः। अयमत्र साम्रायः समुदायार्थः। श्मशाने बब्बोलकाष्टस्य शुष्कत्वचं शुष्कवैरोचनं वैकत्र श्मशानाग्निना प्रज्वाल्य तत्राग्नौ हृदि निक्षिप्तबब्बोलकाष्टं तत्पुत्तलकं स्थापयित्वा तस्य पुत्तलस्य हृदये ब्रह्मव्रजं ॐ बुद्धेत्यादि पञ्चपदिकमन्त्रेणाष्टोत्तरशतं जुहुयात्। तच्च पुत्तलं दग्ध्वा क्षारं कुर्यात्। तदन्वपक्व शरावे पद्मभाजने च मध्ये चतुर्दलं पद्मं लिखेत् तत् काष्ठिकायां पञ्चपदिकमन्त्रस्य चित्रसेनापदं दलेष्वन्यपदानि।

सर्वांश्च मन्त्रान्।

देवो वै मन्त्ररूपेण सर्वसिद्धिप्रसाधकः।^१

इति सिद्धैकवीरतन्त्रवचनात्। मन्त्रदेवतयोरभेदेन स्वस्वदेवतास्वभावान् भावयेत्। ततस्तत्क्षारमपक्वशरावे निधायैकविंशतिदिनानि प्रत्यहं त्रिकालमष्टोत्तरशतं ॐ बुद्धेत्यादि मन्त्रेणाभिमन्त्रयेत् तदनु कपालेप्येवमिति क्षारं साधितं भवतीति। तेनेत्येवं साधितेन वज्रचूडमर्दितेन। स एवेति शत्रुः। द्वितीयं प्रयोगमाह। तेनैवेति साधितेन। दिव्यतैलमवलम्बितपुरुषतैलं तेन सह मर्दितेन। तानिति निधीन् तर्जयतीति शेषः। सर्वे निधयः। तृतीयं प्रयोगमाह। तत्क्षारणेत्यादि। साधितेन प्रक्षयित्वा तर्जन्या तर्जयन्तं अङ्गुष्ठं भ्रामयित्वाधोमुखं पातयेत्। चतुर्थप्रयोगमाह। तेनैवेति साधितेन। तत्क्षारं रचितं शोधितं बङ्गचूर्णं वज्रचूडञ्च समभागम्। किञ्चिदिति बङ्गचूर्णं बाह्यं मानम्। सर्वमेतत् मिश्रीकृत्य। वज्रतुण्डेति कृष्णशूकरस्य रसो रक्तं वज्रदण्डेति पाठे तु वज्रदण्डरसो नृमूत्रम्। तेन रक्तेन मूत्रेण वा भावयित्वा। पश्चात् पलमाने कण्टकबेधयोग्ये ताम्रभाजने निक्षिप्य। वज्रतुण्डरसेन

१. सिद्धैकवीरमहातन्त्रम्, १.२, के० उ० ति० शि० सं०, सारनाथ, वाराणसी, १९९८।

नृमूत्रेण वा पूरयित्वा सप्त दिनानि भावयेत्। तदनु महापित्तेन मनुष्यपित्तेन सह सप्तदिनानि मर्दयेत्तत्रैव भाजने। तत इति भाजनात् लोहभाजनेऽयस्कान्तलोहभाजने पलमाने कण्टकवेधयोग्ये वज्रतुण्डरसादिना भावनादिकं कृत्वा स्थापयेदित्यर्थः। स इति ताम्रभाजनं लोहभाजनं वाग्रौ निक्षिप्येत् स्थापयेत्। कश्चिदाह निरन्तराग्नि-ज्वालनस्थानभूतले निक्षिपेत् प्राप्य स्थापयेत् सप्तदिनानि अन्यस्त्वाह निक्षिपेदा-वर्तयेत्। ततस्तत्ताम्रभाजनं हेमभाजनं लोह भाजनं तारं भवति। अपरे त्वाहुः। तत उद्धृत्येति यत्र क्वचिद् भाजने प्रथमं वज्रतुण्डरसेन भावयित्वा तत उद्धृत्य ताम्रभाजने लोहभाजने भावनं मर्दनं स्थापनानि कृत्वा तेन ताम्रभाजनेन लोहभाजनेन वा सहाग्निमध्ये निक्षिपेदिति पूर्ववत्। किंत्वावर्तनयस्थे वङ्गचूर्णं कान्तचूर्णञ्च क्षयन्नयेदिति। सहस्रेत्यादिश्च सुगमम्। पञ्चमप्रयोगमाह। तेनैवेति साधितेन। शुभदिने प्रत्यूषे तच्छारं कुमार्याः शिरसि निक्षिप्यतां वज्रचूडेन स्नापयेत्। पञ्च धूपेन पञ्च प्रदीपेन धूपेन पञ्चपदिकमन्त्रं पठन् धूपयेत्। षष्ठं प्रयोगमाह। सिद्धान्तफलं^१ श्वेतसर्षपं कुमारीकपाले रोपयित्वा तज्जं फलमनेन-मन्त्रेण। पूर्वसेवायां कृतलक्षजापेन सप्ताभिमन्त्रितम्। तेन ज्योतिषविधिना सर्वबुद्धा-धिष्ठितः कुमार्याः साधक दद्यादन्यस्या वा मुखं मन्त्रं पठंस्ताडयेत्। ततः सा कन्या हसति। एकमिति सप्त^२खड्गानां कुमारीमुखनिर्गतानामेकं खड्गं झटिति गृहीत्वा खड्गसिद्धो भवति। भद्रक इति भद्रिका प्रकृतिस्था। सप्तमं प्रयोगमाह। तस्य इत्यादि। क्षारस्य गुटिकां हेमतारण्डैश्च क्रमेण वेष्टयित्वाऽनन्तरं रौक्षमन्त्रेण कृतलक्षजापेन सप्ताभिमन्त्रिताम् उष्मधूमज्वलनानन्तरं मुखे प्रक्षिपेत्। अत्र सुवर्णमानं सार्द्धसप्तभिरक्तिकाधिकमासकत्रयम्। तारस्य सार्द्धद्विरक्तिकाधिक-मासकचतुष्टयम्। शुल्बस्य पंचरक्तिकाधिकमासकत्रयम्।

तदुक्तम्

१. 'सिद्धान्तफलं' नास्ति- भो०

२. 'सप्त' नास्ति- भो०

सार्द्धसप्तत्रयोमासाः सार्द्धं द्वयं^१ चतुष्टयम् ।

पञ्चगुञ्जास्त्रयो मासा गुटिबन्धे सुनिश्चिता ॥ इति ।

त्रैलोक्यसाधनमन्त्र इति पुरक्षोभमन्त्रः । कर्मानुसारेण भगवद्भगवत्यो-
वर्णभेदो अष्टमे वक्ष्यते ।

इति पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

*

१. अष्ट- भो०

२. त्रयं- भो०

देवतानिष्पत्तिसेचनः

पटलः तृतीयः

मन्त्रमाख्याय मन्त्रमयीमूर्तिमुत्पन्नरूपञ्च वक्ष्यमाणमाह। अथेत्यादि। देवता-
पटलमिति मन्त्रजातानामुत्पन्नरूपाणां देवतानां पटलम्। रंकारेणेत्यादि। मण्डल-
चक्रभावनामेकत्र स्फुटं वक्ष्यामः। अध्यात्मं तु वज्रभूमीत्यादि। वज्रभूमिर्नाभि-
स्तन्मध्ये। उत्पत्तिक्रमे एकारं महात्मानं धर्मधातुस्वभावम्। एकारपरिणतं त्रिकोणं
धर्मोदयं निर्माणचक्रं त्रिधात्वात्मकं चिन्तयेत्। तस्य त्रिकोणस्य मध्ये बीजं एकारो
लङ्कारो वा। तत्परिणतं पृथ्वीमण्डलम्। हृदि वँकार ॐ कारो, वा धर्मश्चित्तं
तदात्मा तदुद्भवं चक्रं धर्मचक्रम्। सर्वनाडीस्वरूपकमिति अष्टनाडीस्वभावम्।
चतुश्चक्रनाडीनामपि महासुखचित्ताव्यतिरेकात्तत्स्वभावम्। शिरसि योगिनी-
व्यवस्थितमिति। योगिन्यो द्वात्रिंशन्नाड्यः विशिष्टा महासुखस्थानात् स्रवन्त्यो
बोधिचित्तमावहन्त्योऽवस्थिता यस्मिन् दिव्यं महासुखचक्रं तत्स्वभावम्। आसां
सर्वनाडीस्वभावद्वात्रिंशद्नाडीनां बोधिचित्तावहनं सामान्यं कर्म विशेषं कर्म नाम च
तन्त्रान्तरानुसारेण च वक्तव्यम्। तत्रावधूतिः बोधिचित्तमेवावहति। ललना
नाभिमूलमवलम्बमानाऽसितपीतेभ्यो जठरानलपाचितेभ्यो रसमावहति। ततोऽसौ
रसोऽपरापरनाडीसञ्चारेण देहमभिव्याप्नोति। रसना रसाद्रक्तमावहति। ततस्तदपि
तथैव देहमभिव्याप्नोति।

सर्वासञ्चार्यं संग्रहः ।

नखदन्तावहाऽभेद्या स्यात् सूक्ष्मा केशरोमगा ।

त्वङ्मलावाहिनी दिव्या वामा तु पिशितावहा ॥

वसावहा वामिनी स्यात् कूर्मजास्थिवहा मता ।

वृक्कावहा भावकी स्यात् सेका स्याद् हृदयावहा ॥

अक्षिवहा मता दोषा विष्टा पित्तावहा स्मृता ।

मातरा फुफ्फुसावहा शर्वरी त्वंत्रवाहिनी ॥

शीता तु पार्श्वतन्त्रे स्यादूष्मा स्यादुदरावहा ।
अक्षोभ्यवहा ललना अवधूती चन्द्रवाहिनी ॥

रसना रक्तवहा ख्याता विष्टायां प्रवणा मता ।
सीमन्ते कृष्णवदना सामान्या पूयवाहिनी ॥

हेतुदा श्लेष्मणि प्रोक्ता वियोगा स्वेदवाहिनी ।
मेदसि प्रेमणि प्रोक्ता सिद्धा शोकाश्रुवाहिनी ॥

पावकी तु मता खेटे सुमना सिंघाणवाहिनी ।
त्रिवृत्ता तु मता रूपे स्मृता शब्दे तु कामिनी ॥

गन्धावहा तु गेहा स्यात् चण्डिका रसदायिका ।
स्पर्शे तु योगिनी ज्ञेया स्याद्धर्मे मारदारिका ॥ इति ।

अत्र ललनारसनावधूत्यश्चित्रसेना । तदपरास्तु क्रमशो द्वे द्वे सुमालिनी कापालिनी भीमा दुर्जया । तदपरास्तु शुभमेखलादिविंशतिः योगिनीस्वरूपा ज्ञेयाः । मारदारिका तु अवधूतिसंसृष्टैव रसनाग्रं यावन्नाभिरुत्थिता कालनाडी निरोधलक्षणं धर्मयोगिनीनामावहति । सा योगिनी संग्रहेण प्रविशति । अविद्यारूपत्वात्तस्याः कथं तद्युक्तं द्विकल्पे द्वात्रिंशद् बोधिचित्तावहा इति । विरोधित्वेनावहनात् कालनाड्या न दोषः । योगिनीस्वरूपनाडीनिर्देशप्रस्तावे तु तन्निर्देशः परिहारार्थः । तद्वशादेव ह्ययं लोक उत्पन्नमपि महासुखमयमेतन्मण्डलं नावलोकयति । तद्वशादेव च म्रियते ।

अत एवोक्तं

सर्वशेषां त्यजेद्यत्नादिति ।

भगवांस्तु बोधिचित्तवज्रः सर्वासामुपायः । एतच्च परमार्थतो बीजाद्युत्पत्तिं विनैव शून्यताकरुणाऽभिन्नं बोधिचित्तरूपमुत्पन्नमण्डलमुक्तम् । कलाषोडश-भूषितमिति । कण्ठे कलात्र नाड्यः षोडशनाडीयुक्तं सम्भोगचक्रम् । निर्माणं निर्माणपद्मं चतुःषष्टिर्दलानि नाड्यो यत्र तत् । एवमिति चतुर्षु चक्रेषु नाडी

विंशत्यैकशतं नाडीनां विंशत्युत्तरं शतं भवति। एवञ्चिन्तयेदिति एवमुत्पन्नमण्डलं चिन्तयेत्। भावयेत् जपेत्। तत्र ललनायां रसनायाञ्च प्राणवायोरर्द्धार्द्धप्रहराधिपत्यादहोरात्रेण षोडशसंक्रान्तयः कण्ठे। तत्रैव चतुर्मण्डलभेदेन चतुर्दण्डाधिपत्याच्चतुःषष्टिर्दण्डा भवन्ति निर्माणचक्रे।

यथोक्तं भगवता संपुटादितन्त्रे आर्यनागार्जुनपादैश्च-

आग्नेये चैव वायव्ये माहेन्द्रे वारुणे तथा ।

मण्डले तस्य सञ्चार ऊर्ध्वपार्श्वज्वधोगतिः ॥

तत्रैव प्रत्येकं प्रज्ञोपायरूपमण्डलद्वयभोगतो नाडीचक्रसंचाराद् द्वात्रिंशन्नाडयो महासुखचक्रे। दिवारात्रिविभागेन प्रज्ञोपायभेदाच्चाष्टौ प्रहरा हृदि। तन्त्रान्तरेषु षष्टिदण्डात्मकं यदहोरात्रमुक्तं तत् षष्ट्युत्तरशतत्रयश्वासैर्दण्डव्यवस्थानेन। इह तु चतुर्मण्डलव्यवस्थया सार्द्धसप्तत्रिंशदुत्तरशतत्रयश्वासैर्दण्डव्यवस्था। उभयत्रापि तु अहोरात्रेण षट्शताधिकैकविंशतिश्वाससहस्राणि भवन्तीत्यविशेषः। एवमुत्पन्न-क्रमापेक्षया जापोऽप्युत्पन्नः सूचितः।

तदुक्तम्-

अयुते द्वे सहस्रं च षड्शतानि तथैव च ।

अहोरात्रेण योगीन्द्रो जपसंख्यां करोति चेति ॥

जप्तविद्यस्य चेतसः स्थैर्ये महासुखमयमुत्पन्नमण्डलमामुखीभवति। प्राज्ञ इत्यधिमात्र प्रज्ञोत्पन्नमण्डलभावनानिपुणः वज्रदेहे शून्यतैकरसमहासुखमयदेहे अतएव स्वपरयोर्महामुद्रासिद्धियोग्यत्वात् महात्मा। तत्रेति धर्मचक्रे। उत्पत्तिक्रमे वै जनितां वरुणमण्डलम्। सर्वनाडीमण्डलं वरुणमण्डलं लीयत इति। हृदयनाडीनामेव-स्फरणमन्यन्नाडीचक्रमतः सर्वनाडीमण्डलं वरुणमण्डलं श्लिष्यति। पुनरित्यादि निर्माणचक्रस्य अधोरक्तं मकारजं रंकारजं वा त्रिकोणमग्रिमण्डलं ज्वलद् श्लिष्यत् निर्माणनाडीचक्रे अग्नेरधो याकारजं यँकारजं वा वायुमण्डलम्। सर्वनाडीचलन-रूपमिति। तद्वायुमण्डलमग्निं प्रज्वालयत्सर्वनाडीस्थितं बोधिचित्तं चालयेदिति

लीयमानचक्रविदिति लीयमानस्य चक्रे वित् वेदनम्। तच्चालित-बोधिचित्तं लीयते वायुचक्रे तदा सहजसुखवेदनं भवति। सर्वे ते लीयमानाः स योगी तत्र मध्ये स्थित इति। तत्र सहजसुखं वित्तौ सर्वस्कन्धादयो लीयमानाः। योगी चित्तं तदपि तस्यां तादात्म्येन स्थितम्। चन्द्रमिति बोधिचित्तं महासुखचक्रे उष्णीषं यावत्। भास्करं रजो निर्माणचक्रस्याधः^१ हूँ आः इति च क्वचित् हूँ अँ इति पाठः। हूँकारं नीलं धर्मचक्रे। आः कारं अंकारं वा रक्तं निर्माणचक्रे संभोगचक्रे रक्तं ॐ कारं तन्त्रान्तरोक्तेः। ककारहकारभूषितमिति। ककारश्चासौ हकारश्च भूषितश्च। कं महासुखं तत् स्वभावो महासुखचक्रे हकारो मस्तकशून्योऽनाहतोर्द्धचन्द्रबिन्दुभूषितः शुभ्रस्तं चिन्तयेत्। ककारं तु हकारे लीयमानमिति। महासुखमनाहते मिश्रीभूतमभिन्नमिति यावत्। ह हूँ अभिन्नकमिति यादृशः स्वभावोऽनाहतस्य तादृशो हूँ कारस्य उभयमुभयस्वभावमित्यर्थः। यथाहि तत् सुखं कामिनी स्मृतमिति वचनात्। कै प्रज्ञा ह उपायं तयोरभेदस्तथा सुखात्महकारः प्रज्ञा ॐ कारयोगात् ह हूँ इत्यक्षरद्वयमिश्रितं तँ हूँ कार चित्तमुपाय इति प्रज्ञोपाययोरभेदः। हूँकारं रश्मय इति। वायुना तेजश्चण्डाली रश्मिचोदिता निर्गता महासुखचक्रं तत्र शशिना संचोदितेन शशिना विकल्पसंतापशमता हिमोपमैते ककारमहासुखेन सूर्येण च रजसा हं च ॐ ये आर्द्रस्य सहज हूँ कारे विश्राम्यन्ति। ततो हूँ कारोऽपि द्रवीभूय निर्माणबीजे विश्राम्यति। तच्च चन्द्रसूर्यमण्डलद्वये^२ मण्डलद्वयञ्च मिश्रीभूय, सूर्येति रजोमण्डलमेव उद्भूतं बिन्दुरूपं दृश्यते। शुक्रं त्वनुद्भूतम्। पुनः हूँ कार रश्मय इति। हूँ कार द्रवबिन्दो रश्मिरेखा सर्वनाडीचक्रं स्पृशति। बीजमिति महासुखोत्पत्तेर्बिन्दुरूपीति विन्दुयोग उक्तः। उत्पन्नमण्डलभावनायां तु बीजाद्युत्पत्तिं विना रजोरूपचण्डाल्यपि निसर्गतोऽपि प्रज्वलति। शशी च तदुद्दीपितः सुतरां स्रवति तदा ध्यायिता च चण्डाली। सुतरां ज्वलति शशी च तदुत्तापितो नितरां स्रवति एवमभ्यन्तरचन्द्रसूर्यसमागमोऽनुच्छिन्नो महासुखमयः स्कन्धधात्वादि-

१. 'चक्र' नास्ति- भो०।

२. 'द्वये' नास्ति- भो०।

समारोपमभिभवन् प्रभवति। ये त्वेवमनधिमुक्तास्ते यथोक्तजपेन। प्राणायामाधिपत्ये प्राप्त्याऽपानवायुमाकृष्य नाभिमण्डले महामुद्रामवलम्ब्य वायुं निवारयन्तश्चण्डालीं ज्वलयन्ति। ततस्तथैव महासुखमाविर्भवति। एवमसमर्थस्तु तथैव नाभिमण्डले वायुनिरुद्धमधिमुक्त्याऽवस्थित उच्छवासोद्गमे ऋजुरेखाञ्चण्डालीरूपेण भगवतीं ज्वलन्तीमधिमुच्य महासुखस्थानमनुप्राप्तिनिःश्वासप्रवेशे हं कार शशी स्रवद् बिन्दुरूपेण तामवलम्बमानो महासुखमयो नाभिमण्डलमागम्यानालम्बनो भवेत्। एवं यावत् प्राणनिरोधमवस्थितं तथैव श्वासोद्गमप्रवेशयोः पुनः पुनरनुतिष्ठेत्। यः पुनः प्राणोद्गमप्रवेशनिरूपणमशक्तः सोऽधिमुक्तिमात्रेणैव संपादयति।

उत्पत्तिक्रमभावकस्तु तत्पूर्वकमेव सकलमिदं यथा बलमवलम्बेत्। विस्तररुचिस्तु सकलयोगिनीचक्रस्वरूपमहामुद्रात्मकचित्रसेनया भगवत्या चण्डालीरूपेण ज्वलन्त्या दशदिग्विसर्पिण्या महारागानलप्रभया संचोदितान् महारागानुरक्तान् सर्वतथागतान्महासुखचक्रप्रविष्टान्दृष्ट्वा तथैव सर्वमनुतिष्ठेत्। एवमस्य बुद्धाधिष्ठानं च सम्पद्यत इति चण्डालीप्रभेदोपदेशः। सर्वज्वेदं सद्गुरु समाम्नातं व्याख्यातम्। तेनैवेति सार्धेण नृतन्तुनेति शेषः। एवं पारमितेति प्रज्ञापारमितास्वभावा भगवांस्तु महाकरुणास्वभावः। तस्याङ्गजरश्मय इति तस्य भगवतो देहजाः चण्डालीरश्मयः। तेन स्रवेणेति धर्मचक्रबीजस्य स्नापनसमये धर्मचक्रस्याष्टनाडीस्वभावा योगिन्यो वहिः स्फुरित्वेत्यर्थः। पञ्चसुगन्धेति पञ्चामृतानि। पुष्पं स्त्रीरजः। धूपो रागः वज्रिणी रागेण ज्वलितचण्डाली दीपस्य निष्पत्तिः वीरामिति वीररस्य निष्पत्तिं दृष्ट्वा। स्रवति प्राग्वत्। साहारपल्लवः सहकारपल्लवः। प्रार्थन इति प्रार्थयन्ते। सेकेनेति सेको निर्मलीकरणम्। विदुर्विदुष्यो विदितोत्तारणोपायाः। अपुत्रस्येत्यादि यथा पुत्रे मृते गृहे पुत्रेण शून्यता तथा सेकरहिते पुंसि सर्वज्ञज्ञानेन रहितता।

यथा सर्वसंयोगेऽपि-

तन्त्रीं विना वीणा न वाद्यते ।
 ततो न ध्वनिः सिध्यति ॥
 यावद् बुद्धैर्न हीयते ।
 न त्याज्यतै नरकम् ॥

एतेन सर्वेषामभिषेकाणामवश्यग्राह्यतामाह। हेरुकभूते इति। हेरुकरूपेण भावनया निष्पन्नेन किं प्रयोजनं सेकं विना बुद्धत्वस्याभावात्। पुण्यमात्रं तु स्यादित्यर्थः। स इति तस्य बाह्यगुह्येत्युपलक्षणात् प्रज्ञाचतुर्थाभिषेकौ च विज्ञेयाविति।

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां
तृतीयः पटलः ॥ ३॥

*

शालिकाप्रयोगः उदकप्रयोगश्च

पटलः चतुर्थः

गारुडं वक्तुमाह। अथेत्यादि। अस्माकं वयं रश्मिना प्रथमपटले स्फुरित-
मन्त्रः रश्मिना। हृदयरश्मय इति चित्रसेनाया हृद्रश्मयो नागानामाप्यायनं
कृत्वाऽऽगत्य चित्रसेनाया हृदि प्रविष्टाः। आज्ञप्ता इति वयं देवीति देवी आहेति।
चित्रसेना नागानधिष्ठाय तन्मुखेन विषतत्त्वं निर्देशार्थं पञ्च प्रश्नान् तीर्थिकादि-
गारुडमित्यादौ हरिहरादीनां भगवतो वज्रधरस्य च गारुडं मंत्रौषधिः समाधिविशेषः।
कीदृशं मतम्। ज्ञानञ्च तत्सम्भवतीति सम्भवञ्च। ज्ञानसम्भवं कीदृशम्। नपुंसकत्वं
विशेषणपरभावार्थत्वात्। विषस्येति विषं कथमिति प्रभेदप्रश्नः। आहुरिति नागाः।
हरीत्यादि, तीर्थिकपक्षे पञ्चमप्रश्नविसर्जनम्। हरिहरादयो विपर्यस्तबुद्धयो वस्तु-
तत्त्वानभिज्ञतैषां मते। दंष्ट्रादंष्ट्रो विषं मरणञ्च पारमार्थिकमस्ति। अतः
सत्त्वस्यतत्त्वाज्ञानादि विषदोषै बाध्यन्ते म्रियन्ते गारुडेनापि जीवयितुं शक्यन्ते एवं
कालदष्टस्य वदन्तीति।

बाणपक्षर्तुवह्न्यश्वयुगचन्द्रादिभिर्दिवा ।

षड्वेदभुजसप्तीषु गुणलक्ष्मीनगैर्निशी ॥

इत्यादि वारेषु यथाक्रममर्द्धप्रहराः कालस्तत्र दंष्ट्रमप्रतिक्रियं वदन्तीति
तृतीयप्रश्नविसर्जनम्। प्रथमप्रश्नं विसृजन्ति। सर्पस्येत्यादि। कालदष्टत्वेऽभावे
हरतीति हरं गारुडं^१ हरिहरादिकृतं सर्पविषाभिभवनोपायोऽस्ति। तथा सति दंष्ट्रस्य
सर्पविषत्रास्ति। कालदष्टस्य गारुडाभावे सर्पैरित्याद्युपसंहारः। महर्द्धिका गारुड-
करणात्। भगवत्पक्षे द्वितीयप्रश्नमुत्तरन्ति। भगवानित्यादि। हेयोपादेयशासना-
च्छास्ता। हरिहरादिरपि शास्ता तद्भक्तै रूप्यत इत्याह। शून्यतावादीति।
परोक्षोपेयतद्धेतोस्तदाख्यानं हि दुष्करमिति न्यायादधिगतसमस्तवस्तुतत्त्वः कृपा-

१. 'गारुडं' नास्ति- भो०।

पारतन्त्र्याद्विनेयानां शून्यतात्मत्वं वदति। निश्चयं निश्चितत्वं क्रियाविशेषणम्। शङ्करादयः स्वयमनिश्चिततत्त्वाः परेषामपि निश्चयं न वदन्तीति भावः। तद्वर्शितं शून्यतासमाधिरेव निरुत्तरं विषयमनीति प्रथमप्रश्नविसर्जम्। शून्येष्वेति एकानेक-स्वभावविरहान्निःस्वभावेषु। यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यता सैव ते मतेति सर्वधर्मेषु स्कन्धधात्वायतनेषु सर्पो दंष्ट्राविषञ्च कथं नास्त्येवैवं शून्यताया विषयत्वस्य निश्चये न विषयवश्यं विनश्यतीत्यर्थः। अतएव तृतीयप्रश्ने विसर्जनं कथमित्यादि। सर्वत्र किमुच्छेपे पञ्चमप्रश्ने उत्तरं दष्ट्रेनेत्यादि। शून्यताया अनिश्चयान् म्रियन्ते। अतस्तेषां शून्यताया वादेन देशनया निश्चयं वदति भगवान्। इदानीं येषामान्तरं विषयनास्ति तेषां सर्पादिविषयमीति वक्तुमाह रागेत्यादि। रागः सास्त्रवे वस्तुन्या-सङ्गः। मोहोऽविद्या भावाभावाद्यभिनिवेशः। महायशे इति चित्रसेनासम्बोधनम्। प्राकृतविषया इति प्रकृतिरत्राविद्या तयाध्यारोपिताः प्राकृताः। प्रकृतिविषय-सुनिर्मलमिति प्रकृतिरिह शून्यता तया रूपादिपञ्चविषयाश्चित्ते विठपिताः सुष्ठु सवासनम्। निर्मूलिता मला रागादयः शून्यतास्वभावाश्च येषां ते तथा। बहुत्वे एकवचनमार्षत्वात् नैर्मल्यञ्चैषां चित्तनैर्मल्यात्। चितञ्च प्रकृतिनिर्मलम्।

तदुक्तं प्रमाणवार्तिके-^१

प्रभास्वरमिदं चित्तं प्रकृत्याऽऽगन्तवो मलाः। इति।

प्रकृते योजयति मलेत्यादि अयमर्थः। रागादिरेवान्तरं विषम्। तदुक्तं भगवता। रागो द्वेषश्च मोहश्च एते लोके त्रयो विषा इति। ते च चित्तस्यैवाऽ-गन्तुस्वभावाः। ततश्चित्तमेव मूढरक्तद्विष्टं वान्तरं विषं पुण्यज्ञानसम्भारजीवित-विघातात् तच्चित्तवशाद्विषयस्वरूपमपि विषम्। यदा तु चित्तं शून्यताकरुणा-भिन्नस्वभावं नैर्मल्यान्निर्विषयनिश्चितं तदा विषयस्वरूपमपि मलरहितं कथं नैव विषम्। एवं न्यायेन स्थावरविषादिभक्षणादौ तत्त्वाधिमोक्षान्न बाधेति सूचितम्।

तदुक्तं हेवज्रतन्त्रे दृष्टान्तत्वेनः-^२

१. प्रमाणवार्तिकम्, स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्धभारती प्रकाशन, वाराणसी, १९८४।

२. हेवज्रतन्त्रम्, २.५.३१, के० उ० ति० शि० सं० सारनाथ, वाराणसी, २००१।

घस्मइ गरलह भक्खाणहि जो निच्चेडय ण लोअ ।

मोहवैवर्जिता ततुमण तत्त्व पर तुटुअ सोअ ॥ इति ।

अत्र मोहविवर्जितो विषतत्त्वपरिज्ञानात् । तत्त मण्ड विष तत्त्वाधिमोक्षमनाः । शो अशोकः । आन्तरविषनाशनञ्च तत्र दार्ष्टान्तिकत्वेनोक्तम् । तथा निर्वृत्युपायज्ञाः । हेवज्जे सुकृतश्रमाः । अविद्याद्यैर्त्र बाध्यन्ते न च मोहादिबन्धनैरिति । अत्र हेवज्जे इति शून्यतामहासुखानालम्बनमहाकरुणाभिन्नज्ञाने । अविद्याद्यैः द्वादशभिरङ्गैर्मोहादिभिः क्लेशैश्च । एवमान्तरविषरहितस्य बाह्यविषमपि न बाधत इत्याह । सर्पोपीति चतुर्थप्रश्नं विसृजन्ति । प्राकृतविषं सर्पविषं दोषमेव चेति । प्रकृतिरविद्या तदारोपादुत्पन्नं प्राकृतं विषम् । सर्पस्येदं सर्पम् अण् वृद्ध्यभावात् । विषयं विषञ्चेति द्वयमपि किङ्करिष्यतीति सम्बन्धः । तीर्थिकपक्षे द्वितीयप्रश्नविसर्जनम् । देवा विषयाऽवृता इति । शङ्करादयो विषयेषु तिरस्कृततत्त्वज्ञानाः क्लेशज्ञेयावरणैः । अतस्तेषामान्तरम्बाह्यञ्च विषमस्ति । किन्तु महाद्विकत्वेन गारुडं^१ कुर्वन्ति कालदंष्ट्रत्वं साध्यं वदन्ति । अतएव वक्ष्यति । निर्बुद्धिमहर्द्धिकम् इति । भगवांस्तु बुद्धकपालो निर्मूलितसवासनः सर्वावरणः कामान् भुङ्क्ते न च बाध्यते इति प्रतिपादयति । विषयेत्यादि । तथा घटमाना अपि बुद्धकपालयोगिनः सर्वविषयान् भुञ्जते न च लिप्यन्ते बुद्धकपालयोगादित्याह । बुद्धेत्यादि ।

सर्वोपलक्षणतयोपसंहरन्ति । कालदंष्ट्रं तत इति बुद्धकपालयोगात् । एवं पारमार्थिकङ्गारुडमुक्त्वा सांवृतमाहुः । शालिकीत्यादि यताः संयता भवन्त्यत्र शालिकीकरणे । तीर्थिकाः कालदंष्ट्रमसाध्यम्वदन्ति न भगवानिति भावः । एवमुक्त्वा नागाश्चित्रसेनां प्रणिपत्य स्वस्वस्थानेषु गता इत्याह । सङ्गीतिकारः ईदृशमित्यादि । उत्प्रेक्षेति स्वरूपनिरूपणम् । ॐ इति कायवाक्चित्तम् । शून्यता नैःस्वभाव्यम् ज्ञानं महाकरुणा तत्रयमभेद्यत्वाद् वज्रस्वभावमात्मा स्वभावो यस्य सोहं । यथैवमहं

१. 'तिरस्कृत' नास्ति- भो० ।

२. विषशमनोपायः भो० ।

तथा सकलमित्याह सुत्रासुत्रमिति । शून्यं स्वरूपविरहात् । अशून्यं तथाप्यनभिलप्यत्वात् । द्वयविरहितेन च रूपेणावस्थानात् ।

पञ्चवितस्तीति षष्ठ्यङ्गुलं मूलसूत्राभ्यन्तरं चतुरस्रं मण्डलम् । वृत्तं त्रिंशदङ्गुलम् । तत्रैव नीलकुलिशावलीवलयिताष्टदलकमलं त्रिंशदङ्गुलम्^१ । तन्त्रान्तरेषु भुवः खननादिना शल्योद्धरणादिशोधनमुक्तमिह त्वधिमात्रतन्त्रत्वात् । हस्तेन स्पृष्टत्वाऽष्टोत्तरशतमन्त्रजापान्मण्डलभूमिं वक्ष्यमाणहोमकुण्डभूमिञ्च शोधयेदित्याह ।

भूमीत्यादि । अत्र गारुडाधिकारमण्डले देवता वेदि पट्टी न कर्तव्येत्याह । वेदिकेत्यादि । रक्तरजेनेति चतुर्दिक्षु सर्वं मण्डलस्थानं रक्तवर्णेनैव रजसा पूरयेत् । यथा समाजादौ वैरौचनादिदिग्भेदेन भूमेर्वर्णभेदस्तथा नेत्याह । अत्रेत्यादि । अन्यत्पञ्चरेखादिकं पञ्चवर्णरजोभिर्यथायोगं कुर्यात् । बलिदानं भूशोधनं सूत्रमन्त्राणं सूत्रेण रजःपातादिकं हेरुकयोगवता गुरुणा कर्तव्यम् । कलशा इति । अकाल-मूलालम्बोदरौष्ठा उच्चग्रीवाः कोणे ऐशानाग्रेयादौ । चतुर्षु कलशेषु यथासंख्यं चत्वारि चिह्नानि । विजयकलशास्तु पञ्चमो नायकस्यात्रानुक्तोऽपि तन्त्रान्तरन्यायात्पूर्वद्वारे किञ्चिद्दक्षिणे प्रतिपत्तव्यः । स एवात्र सार्वकर्मिकः । तत्र चिह्नं धर्मोदयमध्ये डमरूः । डमरूः परिवज्रं पद्मञ्च । आचार्यो बुद्धकपालयोगवान्भवेत् । कथमित्याह । पद्मेत्यादि । विश्वपद्मवरटके । पश्चादित्यादि । आचार्यः स्वयमष्टदेवीपरिवृतः हेरुकात्मा ज्ञानसत्त्वप्रवेशानन्तरमात्मानमभिषेचयेत् । हेरुकाङ्गजरश्मीति । हृदय-नाडीभ्यः स्फुरितसरश्मिकाष्टदेवीभिस्तथागतान् स्पर्शयेदाचार्यः । ता देव्य आगत-स्तथागतसरश्मिविनिःसृतदेव्यश्च हेरुकमष्टयोगिनीशं स्नापयन्ति । मुकुटिनीमिति मुकुटी हेरुको योगिनीभिः सह ता अपि मुकुटिन्य इत्यर्थः । मण्डलनिष्पत्तिमिति । एवं स्वयं हेरुकात्मा निष्पन्ने रजोमण्डले रगिति समयसत्त्वं ज्ञानसत्त्वमभिषेकं मुद्रणञ्च विभाव्य मण्डलसाधनात् । बलिमिति नागेभ्यः दीपमिति । मधुघृतमत्स्य-

तैलसुगन्धितैलदीपाश्चतुरो मण्डलसमीपे दापयेत्। आम्रनारिकेलकदलीकपित्थ फलानि चत्वारि। शाटकत्रयं परिधानप्रावरणशिरोवेष्टनानि।

योगिनी स्वयं ढौकितं गुरुप्रज्ञाम्। वीरं गुरुं चक्रं गणमेलकम्। समय-
सारैकचित्तेनेति। समयसारो भगवान्। आत्मशंका निवारणमिति। शंकया विषं
प्रभवति निःशङ्कस्य नेत्यर्थः। स्थावरं शृङ्गीविषादिकम्। जङ्गमं सर्पादीनाम्। अङ्गजं
विचोडिकादिकम्। कृत्रिमं सममधुघृतादिकम्। चतुर्विधं विषं निर्विषं करोमि।
काष्ठमिति दन्तकाष्ठम्। शिष्यं हेरुकमूर्तिं भावयेत्। कण्ठे इति आचार्यस्य
शिष्यस्य च। हस्ते च वामे। चन्द्रे इति कण्ठस्थे हस्तस्थे च। भावना शक्येति
हेरुकरूपचन्द्रादिकं भावयंस्तथा भावितं हस्तं शिष्यशिरसं दत्त्वा मंत्रं पठेत्। कुम्भ-
मिति कुम्भमानम्। दुःसहेति दुःखम्। गारुडेत्यादि यदा त्वयं सत्त्वो गारुडं
प्रतिपत्स्यते तदास्माकं न क्वचित् परित्राणायाश्रयत्वेन गतिर्भविष्यति। अनन्त-
रेणेति। अधिवासनानन्तरम्। अनुदत्त इति कर्त्तरि वर्त्तमानोक्त आर्षत्वात्।
अनुक्रमेण दद्यादित्यर्थः। शंखेत्यादि एकस्यां यन्त्रिकायां शंखम्। द्वितीयायां
ताम्रभाजनम्। कलशं विजयकलशं अपरचतुःकलशांश्च। अष्टयोगिनीं द्रवीभूयेति।
भगवता सह मण्डले स्थितदेवताभिः सह तादात्म्येन स्थिताः। समयज्ञान-
सत्त्वयोश्चैकरसीभाव एव मण्डलप्रतिष्ठापनम्। कलशो विजयकलशे भगवन्तमष्ट-
देवीश्चद्रविताः प्रविष्टाः। अन्यकलशेषु यथायोगं देवीश्चिन्तयेत्। उदकमिति विजय-
कलशाद्युदकं कतिपयं ताम्रभाजने शंखे च स्थापयेत्। उदकेनेति ताम्रोदकेन तदनु
शंखोदकेन तौ केन उच्चारयेत् पाठयेदाचार्यः शिष्यं पूजयेद् गुरुः शिष्यम्। शिष्ये
इति स्फटितान्धपटे। पुनरिति सेचनार्थग्रहणापेक्षया। सवज्रहस्तद्वयेन पिबापयेत्।
हेरुकमन्त्रं पठन् वारत्रयं ताम्रभाजनं जलमिश्रं शंखजलम्। जलपानस्यानुशङ्खं
वक्ष्यति। अयमत्र क्रमः। आचार्यो यथावदभिषिक्तो गुरुभिरनुज्ञास्यते त्रिसमाधि-
कुशलो हेरुकात्मा जप्तविद्यान्निरन्तरसुपरीक्षितान् प्रार्थयमानान् शिष्यान्भिषेक्तु-
कामः। प्रथमं राजचौरादिसर्वोपद्रवरहिते मण्डलगृहादौ यथाविधिर्वर्त्तिते रजोमण्डले
पटादिमण्डले वा यथोक्तदीपे फलादिपञ्चोपचारपूजिते नागार्थं ढौकतक्षीरे,
कलशानधिवासयेत्। तत्र विजयकलशं धर्मोदयमध्यस्थितडमरूवज्रपद्मांकितगन्धो-

दकपरिपूर्णः सुवर्णराजवर्त्तमुक्ताप्रवालैः पञ्चरत्नैर्यवगोधूमतिलमाषधान्यैः पञ्चब्रीहिभिर्वृहतीकण्टकारीश्वेतापराजितासितदण्डोत्पलं सह देवीभिः पञ्चौषधीभिर्युक्तं मध्य-सहकारपल्लवालंकृतमुखं रक्तवस्त्रवेष्टितग्रीवं स्रग्विणं स्रग्वद्वज्रमूर्द्धानमुपरिस्थित-क्षीरपूर्णभाजनमन्तर्झटित्युत्पन्नसमयसत्त्वयुक्तं कृत्वा। सूर्यवज्रमुष्टिस्थं हूँ बीज-मरीचिकनिष्ठाद् भगवन्तमष्टयोगिनीभिः परिवृतमानीय हृदयमन्त्रणार्थं सप्तशः परिजप्य ॐ हेरुक वज्रार्घं प्रतीच्छ हूँ इत्यनेन दत्त्वा तन्मध्ये प्रवेश्य समयसत्त्वेन सहैकीभूय महासुखमयबोधिचित्तरूपेण तज्जलं विचिन्त्य वाममुष्टिना च वज्रेण कुसुमसृजं गृहीत्वा हृदयमन्त्रेणाष्टोत्तरशतेनाभिमन्त्रयेत्। अपरमण्डलीयकलशान् गन्धोदकपरिपूर्णान् सहकारपल्लवैश्च युक्तरक्तवस्त्रवेष्टितग्रीवं स्रग्विणं यथासंख्यं कपाल-खट्वाङ्ग-कर्त्ति-डमरू-चिन्हाङ्कितानान्तरः समयदेव्यभिन्नज्ञानदेवीद्रवजल-युक्तान् प्रत्येकं देवीबीजमन्त्रेणाष्टोत्तरशताभिमन्त्रितान् कुर्यात्। तत्र कपालाङ्किते शौण्डिनी चित्रसेना। खट्वाङ्गाङ्के भूतिनी सौभद्रे कर्त्यङ्के चतुर्भुजपातालवासिन्यौ डमरू-अंके-आकाशवासि-कामिन्यौ। हूँ ॐ हूँ स्वः हूँ खं हूँ हूँ। बीजानि यथाक्रम-मासाम्। तदनु समुदायेन पुष्पधूपादिभिः सम्पूज्य बलिञ्च दत्त्वा कमलकुलिशे-त्यादिना स्तुतिपुरःसरं घण्टं वादयित्वा प्रणमेदिति। कलशाधिवासनाविधेरनन्तर-माचार्यः शिष्यदत्तत्रिपटादिभूषणः सप्रज्ञःकृतकेलिमालिको मण्डलस्थानाद्बहिरासने निषण्णः। शिष्यकृतत्रिमण्डलं गृहीतपुष्पस्रजं पृथिव्यामारोपितजानुं कृताञ्जलिं गारुडादिभवं बुद्ध्या स्वशरीरे प्रवेश्य वज्रनिर्गतं प्रज्ञापद्मे स्थितं हृद्बीजरश्मि-समानीताऽवधूतीप्रविष्टस्तथागतद्रवैरभिषिक्तं हेरुकरूपं मण्डलपूर्वद्वारे निषद्य।

हे भगवन् गुरुः शास्ता सत्त्वार्थैकतत्परः ।

इच्छामि गारुडं दिव्यं शालिकाकृतयोगजम् ॥

करोमि सत्त्वार्थं दिव्यं कालदष्टा निगरणम् ।

तन्मे ब्रूहि महाशास्ता बुद्धकपालयोगिनः ॥

इत्यनेन प्रवेशं याचयित्वा

रत्नत्रयं मे शरणं सर्वं प्रतिदिशाम्यघम् ।

अनुमोदे जगत्पुण्यं बुद्धबोधौ दधे मनः^१ ॥

इति त्रिः पाठयित्वा हृदयमन्त्रेणारक्ष्य तस्य हृदि कृष्णवज्रवरटके हूँ। कण्ठे रक्तपद्मे आः। शिरसि शुभ्रचक्रे ॐ इत्यक्षराणि कृष्णरक्तसितानि चिन्तयेत्। तत उत्थाय गन्धोदकवज्रयुक्तया दक्षिणमुष्ट्या हूँ आः ॐ इति पठन् हृत्कण्ठं च शिरांसि संस्पृश्य शिरसि पुष्पमग्रे धूपं दीपञ्च हृदि गन्धं दद्यात्। तदन्वश्वत्थादि दन्तकाष्ठमखण्डिताग्रमवक्रादिकं द्वादशांगुलप्रमाणं पुष्पमालावेष्टिताग्रं सुगन्धजल-क्षालितं दन्तकाष्ठमात्रेण सप्ताभिमन्त्रितं दद्यादुदङ्मुखः^२। शिष्यश्च गोचर्ममात्रलिप्त-भूमावग्रेण खादित्वा पूर्वमुख उदङ्मुखो वा। ऊर्ध्वं पश्यन्निरपेक्षं क्षिपेत्। पश्चादाचमनार्थं गन्धाम्बुचुलकत्रयपानम्। ॐ ह्रीः विशुद्धधर्म^३ सर्वपापानि चास्य विशोधय सर्वविकल्पानपनय हूँ। इत्यनेन मन्त्रेण कारयेत्।

तदन्वाचार्यः स्वस्य गन्धोपलिप्ते पुष्पवेष्टिते वामहस्ते कण्ठे च चन्द्रमण्डलं तद्रश्मिभिर्दशदिग्बुद्धानानीय महारागेण द्रवीभूय चन्द्रद्वये प्रविष्टाश्चिन्तयेत्। ततस्तं हस्तं शिष्यशिरसि दत्त्वाधिवासना मंत्रं सप्तवारान्पठेत्। ततस्ते कण्ठस्था हस्तस्थाश्च बुद्धाः सहचन्द्रेण शिष्यकाये प्रविश्याधिष्ठानं कुर्वन्तीति विचिन्त्यां रक्ष शिष्याम्। तस्य हृदयमन्त्राभिमन्त्रितकुशानास्तीर्य शयनार्थञ्च दद्यात्। आचार्यस्तु मण्डलगृहं प्रविश्य भावनां जपञ्च कुर्यादिति शिष्योऽधिवासनविधानं कृत्वा प्रभाते बलिं दत्त्वा मण्डलगृहान्निष्क्रम्य शिष्यं स्वप्नं पृष्ट्वा हृदयमन्त्रेणारक्षयेत् मण्डलगृहे यथावैभवं पूजां कृत्वा देवताचक्रं साक्षात्तत्रस्थितमधिमुच्यमानमेकं स्वबुद्ध्या गुरुकृत्य वक्ष्यमाणशिष्यः प्रवेशविधिना स्वयमादौ मण्डले प्रविश्याभिषेकपर्यन्तमात्मनः कुलाधिपेन निष्पाद्य तत एव सर्वाचार्यकर्मणे अनुमतिं प्राप्य सत्याधिष्ठानं कुर्यात्।

१. अद्वयवज्रसंग्रह, गायकवाड़ ओरियण्टल सोरीज XLI, बडौदा, १९२७।

२. पूर्वाभिमुख- भो०।

३. सर्वधर्म- भो०।

येन सत्येन सद्ज्ञानं प्रज्ञोपायात्ममण्डलम् ।
तेन सत्येन येनार्थकामांस्त्वं परिपूरये ॥

प्रतिविम्बसमा धर्मा अच्छाः शुद्धा अनाविलाः ।
अग्राह्यानभिलाष्यांश्च हेतुकर्मसमुद्भवाः ॥

तथता तत्त्वनिर्याता इति सत्येन मण्डलम् ।
प्रतिविम्बं स्फुटं शिष्याः सर्वं पश्यन्त्वकल्मषाः ॥ इति ।

तदनु शिष्यं स्नापयित्वा सुगन्धादिना पवित्रभूतमारक्तवस्त्रं परिधानोत्तरीय-
मारक्तबद्धस्वपटं श्रीहेरुकरूपेणालम्बितम् आः खँ वीर हूँ इति मन्त्रेण गृहीतपुष्पं
काण्डपटाद्वहिर्दत्तदक्षिणं सर्वकर्मिककलशजलादुक्षितं हूँ कारणेण मण्डलपूर्वद्वारे
व्यवस्थापितं मण्डलप्रवेशार्थं पृच्छेत्। कस्त्वं सारिति^१। तेन वक्तव्यं। जिनपुत्रोऽ-
हमिति ततोऽत्र ॐ सर्वयोगचित्तमुत्पादयामीत्यनेन बोधिचित्तमुत्पाद्य सपुष्पं वज्रं
हृदि ॐ^२ सुरते समयस्त्वे होः सिद्ध्यथ वज्रं यथा सुखमिति पठन् प्रतिष्ठापयेत्।
ततः शिरसि वज्रं संस्थापयेत् ब्रूयात्। अयं ते समयो वज्रं मूर्द्धनं स्फालयेद् यदि
त्वमेवेमं कस्यचिद् ब्रूयाः। ततो हृदये वज्रं स्थापयित्वेवं च वदेत्।

ॐ वज्रसत्त्वः स्वयं तेद्य हृदये समवस्थितः ।

निर्भिद्य तत्क्षणं यायाद्यदि ब्रूया इमं नयम् ॥

इत्यनेन शपथं कारयित्वा पद्मभाजनगतं त्र्यक्षराधिष्ठितपञ्चामृतमिश्रितं
कलशोपरिस्थितं क्षीरम् । ॐ पञ्चामृतोदकं ठः हूँ इत्यनेन सप्त जप्तम्।

इदन्ते नारकं^१ वारि समयातिक्रमेद्दहेत् ।

समयसरक्षा सिद्धिः पिव वज्रामृतोदकमिति पठन् पाययेत्।

१. 'सार' नास्ति- भो०।

२. हूँ- भो०।

न च त्वयाहमवमन्तव्यो मा ते समयो व्यभ्रंशेत्ररकादिगतिश्च स्यादित्युक्त्वा
भगवति कृताञ्जलिः ।

इत्ययं मण्डले सम्यक् मया शिष्यः प्रवेशितः ।

यथा पुण्यं तथास्यास्तु देवतानां कुलक्रमः ॥

यादृक् सिद्धिर्भवेदस्य गोत्रे यस्मिंश्च भाजनम् ।

यादृक् पुण्यानुभावश्च तादृगस्यास्तु मण्डलम्(ले) ॥ इति ।

सत्याधिष्ठानं कृत्वा पञ्चाक्षरेण पूर्वगृहीतपुष्पं त्रिं काराधिष्ठितं हूँ कारेण
मण्डलमध्ये क्षेपयन् ॐ^१ हेरुक वज्र पुष्पं प्रतीच्छ हूँ इति पाठयेत् । तत्क्षिप्तं पुष्पं
शिष्यशिरसि बन्धन् प्रतिगृह्णत्वमिमं महाबलेति पठेत् । तदनु शिष्यस्य
हृद्चन्द्रेऽधिपतिं ललाटे रकारं नेत्रद्वये ॐकारद्वयं विभाव्य ॐ वज्रसत्त्वः स्वयं
तेद्य चक्षूद्घाटनतत्परः । उद्घाटयति सर्वाक्षवज्रचक्षुरनुत्तरमिति । पठन्मुखपट-
मपनीय मण्डलन्नवात्मकम् । ॐ हेरुक वज्र पुष्पं प्रतीच्छ हूँ इत्यादि मन्त्रैर्धूपादि-
भिश्च संपूज्य हे वज्र पश्येत्युच्चार्य मण्डलं देवतानानामकथनपूर्वकन्दर्शयेदिति ।
मण्डलप्रवेशविधानानन्तरं शिष्यः पञ्चभिरङ्गैरभिवंद्य पृथिव्यामारोपिततदक्षिणजानुः
कपोतांजलिना ।

संसारपङ्कमग्नोऽहं त्राता भव हि परायण ।

अहमन्योत्सुको मन्दभाग्य बुद्धधर्मे विवर्जितः ॥

कृपां कुरुष्व त्वन्नाथ हे हे नाथ शास्ता महागुरो इति पाठेनाभ्यर्चयेत् । तत
आचार्यः स्वनाभौ ज्वलितचण्डाल्या द्रावितामृतेन हृद्वीजस्नानसमये निःसृत-
हृदष्टनाडीस्वभावदेव्याः हृद्वीजकिरणाकृष्टदशदिक्कथागतविद्यादेवीभिः सहिताः
सेचय तु इमं कृपावती, कृताञ्जलिर्याचयामि प्रणिपत्तिः मुहुर्मुहुरित्यभ्यर्चिताश्छत्र-

ध्वजपताकावस्त्रवाद्याद्यन्विताः शुभज्ञानाम्बुपूर्णकलशहस्ता मङ्गलङ्गायन्त्यः शिष्यं हेरुकरूपमभिषिञ्चन्ति यदा तदैवयन्त्रिकाद्वये स्थित ताम्रभाजनं शंखञ्च विजय-कलशादिजलेनापूर्य प्रथमं सवज्रकरद्वयगृहीतेन ताम्रभाजनेनाल्पजलेन तदनुशंखेन ।

अभिषेकम्महावज्रं त्रैधातुकनमस्कृतं ।

ददामि सर्वबुद्धानां त्रिगुह्यालयसम्भवम् ॥

ॐ हेरुकवीर त्वामभिषिञ्चामीति पठन्नभिषिञ्चन् शिष्यं मुकुटाधिष्ठानं कारयेत् । तदेवमुदकमुकुटाभिषेकाभ्यामभिषिक्तं शिष्यं तथागृहीतेन शंखेन ताम्र-भाजनस्थशेषसलिलमिश्रितं शेषजलम् । ॐ बुद्धेत्यादि मन्त्रं प्रथमपटलोक्तं पठन्वारत्रयं पाययेदिति । प्रयोगा इति कृत्रिमाः । अन्ये विचेडिकान्यङ्गजविषाणि । उपविषं लाङ्गलीप्रभृति । काण्डविषं विषोदकमित्यर्थः । लेपनेति खाद्यादिषु लेपनानि कृत्वा भक्षणाद्यर्थम् । ये इति यानि विषाणि । ते इति तानि सर्वाणि । तत्रैवेति यैर्दंष्ट्रं दत्तं वात्रैष्वेव च । शालिकाकरणेनेति शालिकाकरणमात्रं यदीच्छसि तदा तदैव ज्ञाप्यसेऽथवा गारुडं सर्वलौकिकं पारमार्थिकं चेत्यर्थः । सहस्रेत्यादि सहस्रशतमध्ये विशुद्धाशयस्योपदेशं वक्ष्यमाणं मन्त्रे दद्यात् । सर्पेत्यादि सर्पद्रंष्ट्रस्य तथेति निरुद्यमः । अयमर्थः । दंष्ट्रे यावदन्यगारुडीमन्त्रप्रयोगादि कर्म करोति करिष्यति तावद् बुद्ध-कपालयोगिनौत्सुक्यं न कर्तव्यम् । कालदंष्ट्रोऽयं मृत इत्यन्यगारुडिभिस्त्यक्ते दंष्ट्रे कर्मारब्धव्यम् । रश्मय इत्यादि । हेरुकरूपस्यात्मनो हृद्वीजरश्मिर्वासुकिप्रभृति नाग-भुवनं प्रेषितो नागहृदयं शोषयन् किं कुर्म इति कुर्वतो नागानाह । पूर्वमिति प्रथम-पटलेऽत्रापि बुद्धकपालभाषिणीति स्मारयति यूयं मन्त्ररश्म्यभिभूता भगवती-म्विज्ञाप्य तदाज्ञामङ्गीकृतवन्त इति भावः । ततोभूदिति नैव सुचितानुष्ठानमिति भावः । आहेत्याहुर्नागाः । गच्छ रश्मि यस्मात्र कालदंष्ट्रेन दंष्ट्रो दंशः । न दंष्ट्रकः कालदंष्ट्रादन्यः ।

शंकेन शंकाविषेण न म्रियन्ते शंकाऽपगमात्। रश्मि रश्मिः। अपतित-
 गोमयं कपिलाया गोः। तेन शालिकं पक्षिणं शालिकीञ्च कुर्यात्। शुक्लमष्टिकां
 पिष्टशुक्लतण्डुलकृतां तस्यां तत् पक्षिद्वयं स्थापयेत्। तस्यां शंखादिशुक्लभण्डिकां
 गोलितचिताङ्गारमसीं स्थापयेत्। तया श्वेतकरवीरलेखन्या शालिकहृदयमन्त्रं
 लिखेत्। स्त्रीपुरुषमिति स्त्रीशालिकी, तस्याः पुरुषः शालिकः। तु विशेषे अतस्त-
 ल्लिखितमन्त्रं भूर्जादिपत्रद्वयं शालिकहृदये शालिकीहृदये च प्रक्षिपेदिति सूचितम्।
 मसीन्दापयेदित्यादि। तया मस्या शालिकद्वयम्। चित्रयित्वाऽत्मनश्चक्षुषोरभिमूर्खं
 स्थापयित्वा सत्यशालिकद्वयवत्पश्यन् श्वेतकरवीरपल्लवेन मन्त्रं पठन् सप्तवाराना-
 वाहितदिव्यशालिकद्वयेनाऽभिन्नं भावयेत्। ॐ इत्यादि स्वाहान्त एको मन्त्रः।
 प्रविष्टेति तच्छालिकद्वयं गत्वा प्रविष्टं नागभुवने। येनेत्यादि दंष्ट्रा नागः शालिक-
 महासामर्थ्यं दृष्ट्वा यदि न म्रियते। अन्धः पुनर्भविष्यति। शालिकान् शालिकद्वयं।
 उवाच उरः वाचं चित्रसेनाज्ञाङ्गीकारवाचं नान्यथा कुर्मः क्वचित् माकुरुष्वेति
 पाठस्तदा जीमूतवाहने नागानुपद्रवार्थं कारितवाचा गरुडाधिराजेन सर्वमहाबल-
 पक्षिणो वाचं कारिता अतस्ताम्वाचन्नान्यथा कुरुष्वेत्यर्थः। एवमित्यादि शालिका-
 शालिकीभ्यां मुखपुच्छे गृहीत्वा दंष्ट्रस्याग्रेत्यानीताऽर्थं सर्प-आवाहनमन्त्राभिमन्त्रिते
 सर्पविवरमृत्तिकयाऽऽवाहनमन्त्रपाठपुरःसरं ताडनाद् चक्षुर्दंष्ट्रस्य चरणाच्छिरः
 पर्यन्तं गच्छति शिरसश्चरणान्तं वारत्रयम्। तत् उच्छिति दंष्ट्रे शालिकद्वयं सर्पं
 स्वस्थानं नीत्वाऽऽगतं स्वस्थाने सदा स्थापयेदिति समुदायार्थः। अवयवार्थस्तु
 गृहीतस्येति गृहीताः। सर्पेण सर्पः। मृतोऽपयाति तस्येति। मृतं पतितम्। गतिः
 शिरःपर्यन्तम्। गमनं चरणपर्यन्तम्। शालिकाकरणं सांवृतं गारुडमुक्तपारमार्थिक-
 माह शून्यताज्ञानमिति तदेव निर्दिशति। सून्नेत्यादिशून्यं निःस्वभावं सर्वविकल्प-

लेपरहितम् सकलं बाह्याध्यात्मिकं वस्त्विति। भावारोपन्निराकृत्याभावारोपं प्रतिक्षिपति। धम्म हो धर्मो वस्तूनां शून्यता नास्ति निष्प्रपञ्चत्वात् त्वस्य। तावदित्यादि एकविंशति दिनानि यावत् किं बहुना यावद् यन्त्रं मुखादिकं दंष्ट्रस्य न विघटते न व्यादाय तिष्ठति तावत्कर्म कुर्यात्। उपसंहरति। एवमित्यादि एवं शङ्खचोदकपानपर्यन्तेनानुगृह्य शालिकीकरणं परमार्थिकञ्च गारुडं व्याकुर्यात्। बुद्धकपालयोगेन ॐ बुद्धकपालिनी आः हूं इत्यनेनैकविंशति अभिमन्त्रितं विषं भक्षयेत्। बाह्यभूमाविति मण्डलस्थानात् मण्डलं विसृज्य। अनेनेत्युक्तेन रजो-मण्डलेन नवात्मकं पूजयेदिति पूर्वत्। अथवा दृढचित्तः साधको हेरुकात्माऽ-नेनोक्तपूजामन्त्रेण यथाक्रमं पूजयेदिति सम्बन्धः। मण्डलकं चन्दनादिनेत्यर्थः। शुभ्रदेहिन इति शुभ्रगुणोपचययुक्तम्। अनाहतं निर्मस्तकं शर्माश्रयान्तरित्युपदेशः। भाण्डमुखं कुम्भमुखम्। चन्द्रमिति चन्द्रो द्रवीभूतः। उत्थति उत्तिष्ठतीति।

पण्डितभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

*

भद्रौषधिसन्धिव्याख्यानामकः

पटलः पञ्चमः

रसायनं निर्दिष्टमाह। अथेत्यादि। षड्मासं त्विति नस्यं कुर्यादिति शेषः। काकिनी प्रज्ञा यस्याः काकिन्येव रूपं वर्णः कृष्णं शरीरस्य। हंसिनी प्रज्ञा यस्या हंसविशेषस्यैव रूपं गौरम्। जरदी प्रज्ञा यस्या जररूपं कृष्णगौरमिश्रम्। काचिन्नीलवर्णा जररूपमिति सर्वदास्यां तप्तमङ्गजरमित्याह। इति त्रिविधा प्रज्ञा। तत्र काकिन्याः कृष्णपक्षे संभूतं रजो ग्रहीतव्यम्। हंसिन्याः शुक्लपक्षसंभूतम्। जरद्याः पक्षद्वयसंभूतम्। कुमार्यादीनां लक्षणमाह। श्यामेत्यादि श्यामा काकिनी नीलचक्षुषा विशिष्टा। तस्या अष्टादशवर्षाया द्रव्यं चक्षुर्मलं संपुटयोगमिति उपायसंपुटयोगजमुभयबोधिचित्तं तस्या रजश्चेति। त्रयं कुमारिकोच्यते। तासु तिसृषु प्रज्ञासु भवतीति तद्भवम्। तास्वपि कस्य तदित्याह। नाडीनामवधूत्यादीनाम्। पद्मजं धर्मोदयायां जातं द्रव्यं बोधिचित्तं। तस्यामपि क्व व्यवस्थितमित्याह। केशरे नाडीसमूहे। किंविशिष्टे गूढगोचरे गूढो गोचरो द्रव्यस्थिति विषयो येन वरटकान्निसृत्य केशस्थमित्यर्थः। अयमर्थः तिसृणां प्रज्ञानामन्यतमस्या द्वादशवर्षायाः संपुटयोगजमुभयबोधिचित्तन्तस्याः प्रथमरजश्चेति द्वयं सारिका। कुसुमवतीत्यादि। काकिन्याः षोडशवर्षायाः रजस्वलायाः संपुटजमुभयबोधिचित्तं सिद्धा। अभिन्नोपचारेति। सदृशचरित्रा नारी प्रज्ञात्रयान्यतमा। अपुंश्चला अनन्यपुरुषगा अक्षतयोनिरित्यर्थः। तत्प्रथमोद्भवमिति तस्या विंशतिवर्षाया रजस्वलायाः प्रथमदिने उद्भूतं रजस्तदैव तत्संपुटजबोधिचित्तञ्चेति द्वयम्बालिनी। सहजेत्यादि। पञ्चविंशतिवर्षायाः प्रज्ञात्रयान्यतमायाः संपुटजमुभयशुक्रं मृतनारी कपालनाडीसम्भूततैलञ्चेति द्वयं कपालिनी। एताः पञ्चोषधयः शुद्धरसरक्तिकया सह यथाक्रमं षट्त्र्येकसाङ्गैकैकमासानविच्छिन्नं प्रातः प्रयोक्तव्याः। तत्र काकीभेषजं वामेन नासापुटेन वायुनिष्क्रमकाले नस्यं कुर्यात्। हंसिनीभेषजं दक्षिणेन। जरद्या उभाभ्यामित्याह। चन्द्रेत्यादि। चन्द्रो ललना वायुः। सूर्यो रसना वायुः। चन्द्रमिति शुक्रम्। सूर्यमिति रजः। यदि तत्र भेषजे शुक्रमुद्भूतं तदा वामपुटेन। अथ रज उद्भूतं तदा दक्षिणेन। अथातः इत्यादि

सुबोधम्। योगिनीवरा इति पञ्चामृतानि योगिन्यः। योगवराः पञ्च प्रदीपा उपायाः। शक्यते भक्षितुमिति शेषः। विकल्पो विकल्पाः। तथागतैर्न बुध्यत इत्यादिरति-
शयोक्तिरादरोत्पादनार्थः। के तर्हि बुध्यन्त इत्याह। गुरुभक्ता इत्यादि। अतिक्रान्त-
शाश्वताद्यन्ताः शून्यताभावनया रागादिरहिताः। अतएव सर्वक्लेशविवर्जिता अभि-
भूता एभिः। खानादिष्वनासक्ताः। प्रज्ञोपायादिभिरिति स्पर्शादिपञ्चकामैः। पक्षमेके-
नेति पक्षैकेन। निरुत्तरप्रज्ञोपाययोरेकरूपेण तत्त्वं समाहितासमाहितावस्थायां
भावयन्तः। सिध्यन्तीत्यर्थः। तत्त्वभावनायामेव तात्पर्यार्थं विषयासक्तिन्निवारयितु-
माह। हालो इत्यादि। मालं विरुद्धं। किं यदिन्द्रियैर्बाध्यन्ते विषयेष्वासज्यन्ते। इदं
सत्त्वाभिनिवेशिनो जनाः। हा हेति शोचति। दण्वामालम्, तत्त्वभावनाऽतोऽन्यत्र
खानपानादौ चित्तस्य विक्षेपः। छायाप्रतिबिम्बम् नियापइ इति। निजपतय
आदर्शादिपञ्चज्ञानस्वभावा वैरोचनादिपञ्चतथागताः सिध्यन्ते तन्मये योगी
भवतीत्यर्थ इति।

पण्डिताभ्याकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

पञ्चमः पटलः।। ५।।

*

घोरमण्डललेखनं शिष्यसेचनश्च

पटलः षष्ठः

सिक्त्वा तत्त्वं प्रकाशयेत्। सेकस्तु मण्डलपूर्वकोऽतोधिमात्रन्द्रियोधि-
मात्रेन्द्रियं शिष्यं मनोमये मण्डलेभिषिज्वेदिति प्रतिपादयितुमाह अथेत्यादि।
बर्हिमण्डलाभिनिवेशिनामुत्त्रासकरत्वात् घोरं। अधिमात्रेन्द्रियस्य रतिस्थानत्वाद्विव्यं
मनोमयम्। लोकोत्तरफलावाहकत्वादुत्तमम्। येनेति मण्डलेन। प्रज्ञोपायविधानेन
त्विति प्रज्ञोपाययोर्विधानमनुष्ठानं तेन। कोटिः खगमुखाग्रं तथा योज्यते। सम्बध्यत
इति कोटियोजनम्। बाह्यमण्डलं रजोमण्डलम्। देवताभग्नमात्रेणेति। प्रमादाद्
विसर्जितदेवतस्य रजसो भङ्गनेति गम्यते। अन्यथा पूर्वापरेण तन्त्रान्तरैश्च विरोधात्।
अतएव देवताभङ्गसम्भवादेव रजो देवतायां ग्राह्यग्राहकाः। च-ग्रहेण नास्ति शुद्धिर-
द्वयज्ञानात्मिका। मनोमयमण्डले त्वस्तीत्यभिसन्धिः। देवताभङ्गवत् तच्चिह्नभङ्गेऽपि
पापमित्याह। वज्रेत्यादि। अक्षोभ्यादिकुलाधिपतीनां चिन्हानि। चकाराद्वीजान्य-
न्यासाञ्च देवतानामिति मन्तव्यम्। गत्वेति गच्छति। परमार्थतः पुनर्बुद्धा इत्यादि
केन न केनचित्। आनयनादिकं तु मृदुसत्त्वाशयवशेनोक्तम्। कुत्रचिदिति न
क्वचित् परमार्थतः। तदुक्तमार्थप्रज्ञापारमितायाम्।

न हि कुलपुत्र तथागताः कुतश्चिदागच्छन्ति गच्छन्ति वा। अचलिता हि
तथता या च तथता स तथागत इति। निर्मलम् इति निर्मला रागादिरहितत्वात्।
ज्ञेयावरणरहितत्वाच्छुद्धधर्मकाययुक्ताः। अन्ये इति। गमनादिप्रपञ्चमुक्तनिरावरण-
तथागतेभ्योन्ये तथागताः सन्ति येषां परमार्थत आनयनादिसम्भवे रजोमण्डले-
न्यासमिति रुचिन्न कुर्यात्। किमत्र प्रमाणमित्याह अत्रेत्यादि। कीदृशी प्रज्ञा
यत्कमले मण्डलमित्याह। द्वादशाब्दकामित्यादि। चन्द्रभागा समुपचितबोधिचिन्ता।
अपुंश्चलेत्यचञ्चला पुरुषान्तरागामिनीति यावत्। ईदृशीं प्रज्ञां ढौकयेर्गुरवे शिष्यः।
ते तु एत एवेति वक्ष्यमाणगुणयुक्ताः। तत्त्वं चतुर्थम्। पञ्चेति जल-मौलि-वज्रा-
धिपत्ये नामानि। मन्त्रवज्रव्रतचर्या व्रतव्याकरणाविवर्तगुह्यानि विद्याव्रतेन सह
सप्तमम्। द्वयं प्रज्ञा ज्ञानं चतुर्थञ्च। एकमेलापक इति। एषामेकत्र मेलने

चतुर्दशाभिषेका भवन्ति। तत्र जलाद्यविवर्त्तान्त आचार्याभिषेक उच्यते। स एव विद्याव्रतेन सह बाह्यः। गुह्यं गुह्याभिषेकः। गुह्यतत्त्वं प्रज्ञाभिषेकः। तत्त्वं चतर्थाभिषेकः। तथा च विद्याव्रतमाचार्याभिषेके प्रज्ञाभिषेके वा तदङ्गत्वेनान्तर्भाव्योक्तम्। आचार्य गुह्य प्रज्ञा च चतुर्थान्तं पुनः तथेति निर्यातयेदिति शिष्यो गुरवे सुवर्णादिकम्। गुरुमिति गुरुः। तूष्णीं समाधिमामुख्यना सर्वमिदं सूचितमेव न तु स्फुटं संपूर्णमिति संगीतिकृदाह अयमित्यादि। अयमत्रोपदेशः। इहाचार्यश्चतुर्विंशतिदेवीपरिवृतश्रीहेरुकात्मा शिष्यञ्च तथा श्रीहेरुकात्मानं विभाव्यालिङ्गितचित्रसेनारूपकर्ममुद्रा यथाविधि शोधितकमलभूमिमध्ये स्वहृद्बीजमरीचिसञ्चयाकृष्टं पञ्चविंशत्यात्मकं भगवन्तमवधूत्यूध्वद्वारेण प्रविश्य द्रवीभूतबोधिचित्तं रजोवज्रमार्गेण पातयेत्। तेन झटिति स कूटागारं पञ्चविंशतिदेवतात्मकं मनोमयं त्रिपुटं मण्डलं वर्त्तयित्वा शिष्यकृतपञ्चमण्डलम्। प्रवेशयस्व मां नाथ महामोक्ष पुरम्बरमिति त्रियाचितवन्तः। स्वशरीरे बुद्ध्या प्रवेशय वज्रमार्गे निर्गतं मण्डलपूर्वद्वारे निषद्य स्वभावशुद्धबुद्ध्यात्मदेहं प्रकृतिनिर्मलम्। मण्डलं पुत्र पश्य त्वं वीरवीरेश्वरी-पुरमिति पठन् मण्डलं दर्शयेत्। ततः संसारपङ्कमग्नोऽहमित्यादिनाध्येषितवन्तं चण्डालीद्रावितामृते^१नाप्लाव्यमान हृद्बीजकिरणाकृष्टतथागतविद्यादेवीनामूर्ध्वद्वारेण प्रविश्य द्रवीभूय वज्रमार्गनिःसृतानामक्षोभ्यस्वभावबोधिचित्तजलेन। अभिषेकं महावज्रं त्रैधातुकनमस्कृतम्। ददामि सर्वबुद्धानां त्रिगुह्यालयसम्भवमिति पठन् ॐ^२ त्रिचक्रवीर त्वामभिषिञ्चामीति मन्त्रेणाभिषिञ्चेदित्युदकाभिषेकः। ततः तज्जलं रत्नसम्भवात्ममुकुटं भावयत्वाऽभिषिञ्चन्तु मां सर्वयोगिन्योमुकुटेत्राधि तिष्ठन्तु आगच्छन्तु हूं स्वाहेति पाठयेदिति मुकुटम्। अमिताभात्मवज्रं सव्यकरेण हृदि। अद्याभिषिक्तं त्वमसि वीरैःश्रीहेरुकादिभिः। इदं तत्सर्वबुद्धत्वं गृह्य वज्रं सुसिद्धये इति पठन् ग्राहयेदिति वज्रम्। अमोघसिद्धिस्वभावां घण्टां वामकरेण हृदि ग्राहयेत्। इयं सा सर्वबुद्धानां घण्टाघोषानुगा स्मृता त्वयापि हि सदा धार्याः बोधिश्रेष्ठ

१. बोधिचित्तामृत- भो०।

२. ॐ श्रीचक्र- भो०।

जिनैर्मतेति पठन्नालिङ्गनाभिनयं कारयेदित्याधिपत्यम्। ततः शिष्यशिरसि वज्रं घञ्टाञ्च सन्धारयन् ॐ त्रिचक्राधिपति श्रीहेरुकवीर त्वामभिषिञ्चामि अमुकवज्र-स्त्वमिति पठेदिति नाम। ॐ बुद्धकपालिनि आः ही है हूँ फडिति हृदयं पाठयेन् मन्त्रः। इदं तत्सर्वबुद्धत्वं श्रीहेरुकपदे स्थितम्। त्वयापि हि सदा धार्यं श्रीहेरुक-दृढव्रतमिति पठन् वज्रं दद्यात्। सोऽपि ॐ सर्वतथागतसिध्दिवज्रसमये तिष्ठैष त्वान्धारयामि ॐ ह ह ह ह हीः इति पठन् गृह्णीयादिति वज्रव्रतम्। गृह्ण दत्तमतो वीर खट्वाङ्गडमरूपपात्रकम्। श्रीहेरुकमुद्रेयं बहिरध्यात्मका स्थितेति पठन् खट्वाङ्गडमरूपकपालिनि दद्यादिति चर्याव्रतम्। वामकरेण चीवरकर्णिकामादाय सव्याभयकरः। एषोऽहं त्वां त्रिचक्रेशः सर्वबुद्धमयः स्वयं श्रीहेरुकीति नाम्ना वैयाकरोमि तथागतः। श्रीहेरुकेतिनाम ताथागती सिद्धिः समयस्त्वं भूर्भूवः स्वरिति पठेत् व्याकरणम्। ततो अवैवर्तम्महासेकं महावीर ददस्व मे। निर्निमित्तं जगत् कृत्य कर्ता येनास्मि साम्प्रतमित्यध्येषणान्तरं स्वहृद्रश्मिसमाहूतानन्तदिग्वर्त्ति-वीरदेवीभिः प्रागवत् प्रविश्य वज्राग्निःसृत्य ज्ञानांबुपूर्णकलशहस्ताभिर्मङ्गलगीतिपूजा-सत्कारविस्तरैः सेचयन्। अभिषेकम्महावज्रं त्रैधातुकनमस्कृतं ददामि सर्वबुद्धानां त्रिगुह्यालयसम्भवम्। ॐ सर्वतथागत समयश्रिये हूँ इति पठेत्। ततोक्षोभ्यमौलिनं विचिन्त्यान्यवीरदेवीः तत्रैव ज्ञानसत्त्वरूपेण प्रवेश्य ॐ सुप्रतिष्ठितवज्रे स्वाहेति मन्त्रमुच्चरेत्। तदन्यज्ञापयेतन्नास्ति किञ्चिद् कर्त्तव्यं योगिनां तत्त्ववेदिनां। ज्ञात्वा तत्त्वं ततो वीर भुञ्ज त्वं कामपञ्चकम्। प्रतिविम्बमयाः सत्त्वाः प्रतीत्योत्पाद-धर्मिणः। एवं त्रिधातुकं ज्ञात्वा सत्त्वार्थं त्वमलंकुर्वित्यविवर्ततः।

तदनु—

संसारपङ्कमग्नोऽहं इत्यादिना गुरोः।

संसारपङ्कमग्नोहं त्राता भव हि सुन्दरीच्छिन्ना वासना, युक्तोऽहं विकल्पेन

बहुलेन च । तामुपशामयतु देवी महायशा कृपावतीति प्रज्ञायाश्चाध्येषणां कृतवन्तः
 स्वहृदबीजरश्म्यानीतदशदिग्वर्तिवीरदेवीनां प्राग्वत् प्रविश्य द्रवीभूय निःसृतानां
 बोधिचित्तं हृदयमन्त्रं पठन्मण्डलस्थितः बुद्ध्या बहिःस्थितं शिष्यं ज्येष्ठानामिकाभ्यां
 प्रगृह्य वज्रं पद्मादुद्धृत्य साक्षात् पाययेत् । शिष्यस्तु अहो सुखमिति वदन् पिबेत् ।
 प्रज्ञाप्युत्थापय स्वनीरजान्तरालावशिष्ट बोधिचित्तमकरन्दविन्दुस्तदानन्तराले
 निरम्बरैव निवेशयेदिति प्रज्ञोपाययोर्गुह्येनाभिषेक इति गुह्यम् । ततः प्राग्वद् गुरुं प्रज्ञां
 बाह्येषितवन्तं सा प्रज्ञाऽन्या वाऽज्ञापयति ।

किं त्वमुत्सहसे वीर बोधिचित्तस्य भक्षणम् ।
 पञ्चवर्णसमुद्भूतां विद्यां संपूज्य भक्तिः ॥
 विट्मूत्रबलरक्तादिभक्षणं प्रति सांप्रतम् ।
 अन्यञ्च समयन्दिव्यं ब्रूहि वत्स यथेप्सितमिति ॥

सोऽपि किमहं नोत्सहे देवी यथोक्तं समयादिकम् ।
 किन्न भक्तिः सदाकार्यस्त्रीणां पद्मार्चनम् न किमिति स्वीकुर्यात् ॥

ततः सा पद्मं विकास्य भज मोक्ष होः इति वदेत् । सोऽपि गुरोरुपदेशाद-
 वगतानन्दादिप्रभेदो रमेत् । कमलाकाशे मणिवरटकयोः पीडनस्थाने ।

वज्रपर्यङ्कं तच्चित्तं मण्यन्तस्ततमीक्षयन् ।
 तदुत्पद्यते ज्ञानं तद्रूपमित्यलम् ॥
 न रागो न विरागश्च मध्यमानोपलभ्यते ।
 त्रयाणां वर्जनादेव सहजः संबोधिरुच्यते ॥
 इन्दियत्थ विलीन गडमञ्चवि अप्य सहावसो हले ।
 सहजाणन्द गड फुडपुच्छह गुरुपावेत्या कलप्य ॥
 यावत्र कुरुते योगी बोधिचित्तविसर्जनम् ।
 तावत् प्राप्नोत्यविच्छिन्नं किमप्यानन्दजं सुखम् ॥

पतिते बोधिचित्ते तु सर्वसिद्धिनिधानके ।
मूर्च्छिते स्कन्धविज्ञाने कुतः सिद्धिरनिन्दितेति ॥

यथाशक्ति सन्धार्य शनैरुसृज्य रसनयाऽम्भोरुहात्तत्त्वदृष्ट्या गृहणीयात्
बोधिचित्तं समयरूपम् । तदनु सा शिरसि वामं प्रदत्वाऽनुज्ञां दद्यात् ।

अद्य प्रभृति पुत्र त्वं यावदाबोधिमण्डतः ।
स्वप्नवत्सर्वसत्त्वानामर्थं सर्वात्मना कुर्विति प्रज्ञाज्ञानम् ॥

ततो गुरुः ।

नान्योपायेन बुद्धत्वं हित्वा विद्यामिमामिति ।
चर विद्याव्रतं वत्स व्रतानामुत्तरोत्तरमिति वदेद्विद्याव्रतम् ॥

तदनु गृहीतप्रज्ञाज्ञानस्यैव शिष्यस्य प्रज्ञाज्ञानमेवाभ्यासाद्वज्रधररूपचतुर्थमिति
वाचैव चतुर्थाऽभिषेकं गुरुपदेशतो बोद्धव्यविशेषं दद्यात् ।
तदुक्तं श्रीसंपुटे ।^१

दत्त्वाऽभिषेकं विधिभिर्यथोक्तैः
शिष्याऽधिमुक्तिं मनसा समीक्ष्य ।
उदारगंभीरनयाधिमुक्तेर्वाचैव दद्यादऽ-
भिषेकरत्नमिति चतुर्थाभिषेक इति ॥

यस्तु मध्येन्द्रियः शिष्यस्तम्बाह्ये भावितप्रज्ञास्वभावे धर्मोदयाकमलोदरे
कोटियोजनमानं मनोमयं त्रिपुटमण्डलं विभाव्य यथायोगमुक्तविधिनाऽभिषिञ्चेत् ।
यत् पुण्यसञ्चितम् इदं मण्डलद्वयमुत्पन्नसामर्थ्येन गुरुणा निर्मितं स्फुटं पश्यति
सोऽधिमात्राधिमात्रेन्द्रियः शिष्यस्तमप्येवमभिषिञ्चेत् मृद्विन्द्रियन्तु रजोमण्डले
पटमण्डले वा । इत्युपदेशो विभज्य विवृत-आम्नायभ्रंशभयात् । उत्पत्तिक्रमपक्षे

मण्डलमुक्तवोत्पन्नमण्डलमभिधातुमाह । कहिंइत्यादि । कहिं इति परमार्थत आधारे-
निषेधः । क इति देवतारूपोऽधेयनिषेधः । यदि नाम मण्डलवर्तनादिः पुण्या-
साधनत्वान्महाबोधेः मार्गस्तथापि दूरः शून्यश्चाभिज्ञादिगुणैरित्याह । पान्तरेति ।
मिथ्य इति मृषारूपे विकल्पारोपिते । आलमालेति । विविधविक्षपे शीघ्रसंबोधि-
सिद्धिमुक्तपरिपन्थिनि पतितं जगदिति करुणायते । सूत्रेत्यादि । स अलेति । स्कन्धा-
त्वादिकं तम् तादृशमुत्पन्नम् कथमित्याह । कमलेत्यादि महासुखादि पद्ममध्ये स्थितं
योगिनीवृन्दं नाडीस्वभावं हेरुको बोधिचित्तम् । स एव महासुखात्मा शुन्यतैकरसः
स्वप्नप्रतिबिम्बमायादिस्वभावः स्कन्धादिरूपेणोत्पत्तिरस्येत्याह । स अल उ
अत्तीति । तदिदमुपादेयमुत्पन्नमण्डलं विभाव्य दृश्येत ।

तदुक्तं घण्टापादैः-

चित्रस्थकर्मसूत्ररजःपातक्रमोदितम् ।

जगन्मण्डलमेवेदं प्रकृत्या सिद्धमद्वयम् ॥

कृत्रिमद्वयरूपं यत्तद् विनेयवशान्तम् ।

तन्न साध्यं मुमुक्षूणां मुक्तिर्भूतार्थदर्शनादिति ॥

यद्येवंविधमुत्पन्नं तर्हि सर्वदास्त्येव किं जगन्नावगच्छति किं वा भावनये-
त्याह । बाहिअ । बाधितं विपर्यस्तं स्वप्नस्वभावस्कन्धादौ मोहेन । तस्माद्देख
निरोपयते उपादेयः । हेयञ्च मोहं दहन्ति द्रुतम् । यावदियमविश्वस्ताक्षणसम्पद-
स्तीति भावनायां नियोजयतीति ।

पण्डिताभयाकरकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

*

मण्डल-हेरुकोत्पत्तिभावनाख्यः

पटलः सप्तमः

इदानीं फलतन्त्रस्य भगवतो भावनामभिधातुं विनेयजनानुरोधाद्बहिर्मण्डलं तावदाह। अथेत्यादि। गिरित्यादि यथारुतार्थम्। वर्तुलमित्यादि। अत्रायं क्रमः। यथाविधि परिकर्मितायां हस्तेन स्पृष्ट्वाष्टोत्तरशत^१भूशोधनमन्त्रजपाद्वा विशोधितायां मण्डलभूमावस्मत्कृतकालचक्रावतारोक्तन्यायेन शङ्कुच्छायामत्स्याभ्यां दिग्विदिग-
ग्निश्चयं कृत्वा देवतामूर्तिर्दत्तबलिराचार्यः प्रथमं पूर्वाभिमुखो भूत्वा भावितप्रत्येक-
पञ्चज्ञानात्मपञ्चतथागतस्वरूपपञ्च विंशत्या सूत्रैर्वर्त्तितेनाचार्यः यवस्थौल्येन नवेन मण्डलद्विगुणदीर्घेण वितस्त्यधिकेन सूत्रेण वामवज्रमुष्ट्या नाभौ धृतेन देवमूर्ति-
शिष्यादिना सह ज्ञानसूत्राख्यब्रह्मसूत्रद्वयमाकाशे निपात्या अधस्तनभूमौ ब्रह्मसूत्रमेकं प्रगुणं पातयेत्। ततो मण्डलचतुरस्रत्वसिद्धये मत्स्यमुखपुच्छयोरुपरि द्वितीयं ब्रह्मसूत्रमुत्तराभिमुखं पातयेत्। ततो हस्तादिप्रमाणमण्डलस्य मूलसूत्रचतुष्टयम्। ततः कोणसूत्रद्वयं यथाविधि पातयेत्। ततो ब्रह्मसूत्राद्वहिः पूर्वादिदिशं व्रजन् रजोभूमि-
मानेन सूत्रगतमेकं त्यक्त्वा सूत्रचतुष्टयम्। पुनः सूत्रमेकं त्यक्त्वा सूत्रद्वयम्। ततः सूत्रमेकम्। तदनु सूत्रद्वयं त्यक्त्वा देवतापट्टिकासूत्रमेकम्। एवं ब्रह्मसूत्रमारभ्य मूलसूत्रेण सह दशसूत्राणि भवन्त्येकपाश्वर्षे। पार्श्वान्तरेष्वप्येवं क्रमः। ततो मूलसूत्राद्वहिश्चक्राष्टसंभागिकद्वारचतुर्थभागमानेन रजोभूमिसूत्रमेकम्। ततो द्वारार्द्ध-
प्रमाणं देवतावेद्याः सूत्रमेकम्। ततो रजोभूमिमानेन रत्नपट्टिकासूत्रमेकम्। ततो वेदीप्रमाणं हारार्द्धहारपट्टिकासूत्रमेकम्। ततो रजोभूमिमानेन वकुलापट्टिकायाः। कस्यचिन्मते पुना रत्नपट्टिकायां सूत्रमेकम्। ततोऽन्धकारपट्टिकासूत्रमेकं खर्वितं तत्रैव क्रमशीर्षाणि^२। ततो लोपप्रयासभयात् खर्वितसूत्रेण दीर्घेणैव वा द्वारात् त्रिगुणस्य तोरणस्य सूत्रचतुष्टयम्। ततः सूत्रद्वयं त्यक्त्वा तोरणसम्बद्धसूत्रमेकम्।

१. संस्कृतमातृकासु 'शत' नास्ति, गृहीतस्तु भोटानुसरी।

२. खोडकशीर्षाणि- भो०।

ततः सूत्रत्रयं त्यक्त्वा सघंटामारुतीभूतपताकाध्वजच्छत्रकल्पवृक्षादिस्थानसूत्र-
मेकम्। पुनः सूत्रमेकं त्यक्त्वा सूत्रमेकम्। ततः पद्मदलावलीसूत्रमेकम्। अतएव
पद्मवरटकान्तस्थविश्ववज्रवेदीस्थितकूटागारे स्थानम्। तद्वेदीबहिः पद्मवरटके तु
विश्ववज्रारतोरणादिकं लिख्यते। ततो वज्रावलीसूत्रमेकम्। ततः सूत्रद्वयं त्यक्त्वा
प्रभावलीसूत्रमेकम्। पद्मदलावली नास्तीति कश्चित्। कोङ्कणस्तु वज्रपद्मचक्र-
प्रभावलीसूत्राणि चत्वार्याह। एवं रजोभूमिसूत्रमारभ्य षोडशसूत्राण्येकपाश्वर्ये। एवं
पाश्वर्यान्तरेष्वपीति षड्विंशतिसूत्रे द्विपुटमण्डलटिप्पनविधिः। अनयैव दिशा
त्रिपुटादिमण्डलसूत्रणविधिरुन्नेयः। एवमेकदा सूत्रणेनैव नवत्रयोदशपञ्चदशोन-
विंशतिपञ्चविंशति^१द्वात्रिंशत्सप्तत्रिंशद्यावत्छतसहस्रादिसंग्रहमण्डलविधिर्ज्ञापः। अत्र
तोरणादिष्ववान्तरसूत्राणां विशेषो भूशोधनादिकं लोपरजःपातादिकञ्च सविस्तरं
मुक्तमस्माभिर्मण्डलोपायिकायां। त्रिवज्रपरिवेष्टितमिति। तिसृभिनीर्लरक्तशुक्ल-
वज्रावलीभिर्बलयितम्। झटितेति हूकारादेव कस्मात्पञ्चविंशतेर्योगिनीनां भगवत-
श्चोत्पत्तेः। तत्र निःसृता इति भगवदुत्पत्तिसमये हूकारात्। पञ्चवर्णविभूषित-
मित्याधारमण्डलं हूकारात्मिकेति हूकारादुत्पन्न आत्मा यस्याः सा तथा। कृष्णागौराः
श्यामाश्चेति। मध्यद्वितीयतृतीयपुटस्था यथाक्रमम्। द्वारपालिन्यस्तु कृष्णा मध्यस्था
इव। अक्षोभ्यकृतमौलिनमिति। मध्यस्थिताक्षोभ्यस्य प्रधानत्वेनोक्तम्। उक्तं हि
पञ्चबुद्धमउत^२मण्डितमिति। सर्वयोगिन्य इति पञ्चविंशतिः। तादृगरूपाः इति यथा
भगवान् शिरसि मुद्रितस्तथा ता अपि मुद्रिताः। किंतु तासां शिरसि स्थितस्तथागतो
नायकः पृथक् पृथगित्याह। परं हीत्यादि कामयेत् कामयन्ति। योगिन्यः
सुमालिन्यादयश्चतस्रः। द्वारपाल्य इत्येके गुरुवः। विसायगड। विषादङ्गतोसि परार्थं
प्रति शून्यतैकनिष्ठत्वात्। व अणेति। जगदुद्धरणप्रतिज्ञाम्। सम्भलसि स्मरसि। मां
इ सकलस्य स्वामिनः कञ्जेति स्वार्थमात्रं कृत्वा। पूर्वअइ इत्यादि। पूर्वस्य ते यथा
प्रतिज्ञातस्मरन् विसाउ विषादं संसारदुःखोपद्रुतं स्यात्। मिच्छं मिथ्यापरिकल्पिते

१. 'पञ्चविंशति' नास्ति- भो०।

२. मुकुट- भो०।

भवान्तेऽभावान्ते माणेत्यभिमानम्। भवति ग्रहम्। एवं तर्हि भावग्रहः स्यादित्याह। फट्टु इत्यादि। योगिनीवृन्दकमनेन शून्यतैकरसमहासुखोदयाद् भावाभावादि-परामर्शक्षयो भवतीत्यर्थः।

पूर्ववक्त्र^१ चिह्नादाविति हेतुवज्रधरवत्। वर्णस्तु नीलः फलवज्रधरस्य हेतु-वज्रधरस्य तु शुक्ल इति तन्त्रान्तरे। इह तु नील एव। कश्चिद् पूर्ववद्वर्णचिह्नादाविति पाठः। तदा हेतुवज्रधरोऽपि नील इति स्फुटम्। उच्छ्रित इति चित्रसेनासहितः। नन्वाददर्शज्ञानादिस्वभावचन्द्रसूर्यादिपरिणतो हेतुवज्रधर आम्नातस्तथा किमयमपि न। तद्द्रवप्रभूतं हूँ ज स वज्र हूँकारादुत्पत्तेः। तत्किं फलवज्रधरो न पञ्चज्ञान-मयः। नैवं सुविशुद्धानामेषां तद्रूपेणोत्पत्तेः। तथाहि यस्मिन् सर्वज्जगद् दर्पण इव प्रतिबिम्बितं प्रतिभाति तदादर्शनज्ञानम्। समताज्ञानं येन तथा प्रतिबिम्बितस्य जगतः समता प्रतिपद्यते। प्रत्यवेक्षणाज्ञानं येन तथा समाहित एव सर्वसत्त्वानां चित्त-चरितानि प्रत्यवेक्ष्यते। कृत्यानुष्ठानज्ञानं येन तथा प्रत्यवेक्षितस्य जगतः कृत्यमनुतिष्ठति। सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानं यत्सवासनावरणद्वयमुक्तमहासुखमयकृपा-प्रज्ञाऽद्वयं धर्मधात्वधिगमनिष्पत्तिरतः फलवज्रधृगपि पञ्चज्ञानस्वभावम्। एतानि तु ज्ञानान्यादिकर्मकोऽधिमोक्षेण भावयति। चन्द्ररूपमेव मनोऽतिस्वच्छमादर्शः सर्वस्य जगतः। चन्द्रसूर्यसमागमे महासुखमयस्य मनसः सर्वधर्माणां प्रतिबिम्बोपमत्वेनापि भेदावीक्षणात्।

जगदर्थनिरूपणापरमपरमिति निर्माणैस्तदर्थकारि तथाविर्भूतमित्यभि-सन्धिभिः। निष्पन्नस्तदर्थनिरूपणतोऽभ्यस्य नात्यलम्बहुना। अयमत्र यथाग्नायं भावनाक्रमः। इह भावनापि कृतो मंत्री चतुर्देवीसंगीतसंचोदनाविबुद्धः प्रातरुत्थाय हूँ फटिति ॐ आः हूँ इति वा स्थानात्मयोगरक्षां कृत्वा श्मशानादौ मनोऽनुकूलस्थाने सुखासने वज्रपर्यङ्केण निषण्णः सप्रज्ञो निष्प्रज्ञो वा नग्नो मुक्तकेशो दक्षिणाभिमुखः सर्वकर्मसु। शान्तिकादिभेदेन तु यथा स्वदिगभिमुखः। समयद्रव्यसेवापूर्वकंवक्ष्य-

माणक्रमेणामृतं प्रसाध्य बलिन्दत्वा स्वहृदि मार्तण्डमण्डले कुलिशमुष्टिनिविष्टं^१ हूँकारकिरणनिकरैरकनिष्ठनिष्ठं भगवन्तं हेरुकं निजप्रेयसीचित्रसेनासमालिङ्गितं सुमालिनीप्रभृतिचतुर्विंशतिवज्रविलासिनीपरिवारितमात्माभिमुखं वक्ष्यमाणवर्णादिक-मानीयं पुरतोऽम्बरे । हूँकारतद्रश्मिप्रवेशनानन्तरं हूँकाराद्युपनिर्गताभिः वज्रदेवीभिः पूजयेत् ।

तत्र भगवतः पूर्वस्यां दिशि वज्रदाढी कमलाभिनयकरद्वयधृतकपालेन रजःपाययति प्रभुम् । ऐशान्यां वज्रदूती हस्ताभ्यां डमरुं वादयति । आग्नेय्यां वज्रघोणा कमलाभिनयधृतकपालेन वैरोचनं भोजयति । नैऋत्यां वज्रिणी तथा धृतार्धपात्रं वज्राम्बुपूर्णमपर्यति । दक्षिणस्यां वज्रविकटा पटहं हस्ताभ्यां वादयति । वायव्यां वज्रनाभिस्तथा धृतकपालेन मृगलाच्छनं निवेदयति । वारुण्यां वज्रघोरा तथा धृतकपालेन लूबेति प्रसिद्धजम्बूकवलं कवलयति । उत्तरस्यां रागवज्रणी चित्रसेनया सह तदात्मीभूय समालिङ्ग्य महारागेणानुरागयति । नृत्यगीतादिभिश्च संपूज्याभिवन्द्य पापदेशनादिकमिति कुर्यात् । देशयाम्यहमात्मनः सर्वपापं, न पुनः करिष्ये । अनुमोदे सर्वपुण्यानि सर्वबुद्धबोधिसत्त्वार्यपृथग्जनानाम् । परिणामयाम्यात्मनः सर्वकुशलमनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ । आबोधेस्त्रीणि रत्नानि शरणं गच्छामि यदुत बुद्धरत्नं प्रज्ञापारमिताधर्मरत्नं अवैर्वर्तिकबोधिसत्त्वार्यसंघरत्नञ्च । अहोवताहमनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसम्बुध्येयं तन्मार्गानुष्ठानेन सर्वसत्त्वानामर्थाय हिताय सुखाय यावदेव तेषामत्यन्तनिष्ठानिर्वाणे निरुत्तरं च ताथागते ज्ञाने प्रतिष्ठापनाय । तदन्वधःसमीरणप्रेरितप्रेरणज्वलितचण्डालीसमालिङ्गतः हृदयहूँकाररश्मिभिर्निखिलकलेवरङ्कबलयन् । ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहमित्यस्यान्तर्जल्पपूर्वकमर्थमामुख्यन्सर्वधर्मशून्यतायां प्रविशेत् । तदनु प्राचीनप्रणिधानावधानात् रँ बीजजनितरविविम्बे हूँकारपरिणतविश्ववज्रे तन्मध्यासीनहूँकारयोः प्रेखन्मयूख-शाखाभिर्वज्रप्राकारपञ्जरशरजालवितानसीमाबन्धान्विधायाधः कुलिशवसुधायास्तद्विश्ववज्रनिर्मिताया उद्ध्वम् अकारजशुभ्रत्रयस्रधर्मोदयान्तः सरोजवरटकस्थ

१. 'कुलिशमुष्टिनिविष्टं' नास्ति- भो० ।

विश्ववज्रवरटकंयं यं जातद्विपताकधनुर्निभनीलानिलमण्डलोपरि रँकारपरिणतं रक्तं
 त्र्यस्रं निर्यसितसप्तज्वालमनलमण्डलम्। तत्सन्धानि वँ भवकलशलाञ्छितवर्तुल-
 धवलसलिलमण्डलनिलीनं लंकृतिविकृतिं कलितदम्भोलिचतुष्कोणङ्कमनीयकनक-
 मेदिनीमण्डलम्। एवं स्वस्वबीजाधिष्ठितभूतचतुष्टयघटितं कूटागारमन्तर्वर्तुलत्रिपुटं
 बहिश्चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुस्तोरणभूषितं हाराद्यैरप्सरोभिश्च भास्वद्वेदीचतुष्टयम्।
 सर्वरत्नमयस्तम्भः किङ्किणीभिश्च मण्डितम्। तस्य मध्ये विश्वाष्टदलकमलस्य
 कर्णिकायान्धर्मधातुस्वभावं मृतकम्। तदुपपरि हृदि मार्तण्डमण्डले^१ द्विगुणालि-
 परिणतं द्वात्रिंशलक्षणकारणं शीतद्युतिविम्बमादर्शज्ञानस्वभावं द्विगुणित य-र-ल-व-
 ड-दा^२ सहितव्यञ्जनपरिणतमशीत्यनुव्यञ्जननिबन्धनमुष्णांशुः समताज्ञानस्वरूपः।
 तन्मध्ये हूँकारजपञ्चारवज्रगर्भस्थहूँकारः प्रज्ञोपायात्मकः प्रत्यवेक्षणाज्ञानस्वभावः।
 स एव निर्यत्पञ्चाकाररश्मिस्फुरितदेवताभिरभितो जगदर्थकारी कृत्यानुष्ठानज्ञान-
 स्वभावः। एतच्चन्द्रादिपरिणतः सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानस्वभावो भगवान् बुद्धकपाल-
 हेतुः वज्रधरोऽभिनवोन्निरद्रकदलीकुसुमकांतिः तन्त्रान्तरन्यायेन कुन्दावदातद्युतिदेहो
 वा वक्ष्यमाणफलवज्रधरवत्भुजादिको रक्तचित्रसेनालिङ्गितो हूँकारभगवन्निष्पत्तिकार
 एव निष्पन्नाभिः सुमालिनीप्रभृतिश्चतुर्विंशतिदेवीभिः परिकरितो भाव्यः। केचिद-
 स्मद्गुरवोऽत्रापि प्रस्तावे भगवांश्चतुर्विंशतिदेवीद्वौकितिकपालस्थपञ्चामृतं पिबती-
 त्याहुः। तदनु चित्रसेनायाः शिरसि कण्ठे हृदि गुह्ये उर्वोश्च यथाक्रमं ॐ आः हूँ
 स्वाहा। इत्येतान्विभाव्य तैरन्योन्यदपि स्फुरद्भिः शरीरमभिव्याप्य ह्रीः
 कारजरक्तपद्मवरटके रक्तं आःकारम्। भगवद्वज्रं कृष्णहूँकारजं शुक्ल ओंकारा-
 धिष्ठिताग्रं विभाव्य चतुर्विंशतिदेव्यश्चित्रसेनया सहाभिन्नास्तथाविधवज्राब्जसंयोगाद्
 भगवन्तं कामयन्ति। भगवांश्च ॐ सर्वतथागतानुरागणवज्रस्वभावात्मकोऽहमिति
 मन्त्रेण रतिमारभमाणो महारागेण भगवत्या सह द्रवीभूतः सूर्योपरीत्ययमादियोगो
 नाम प्रथमः समाधिः। तत्र द्रवात् पूर्वप्रणिधिविशेषापेक्षया स्फुरिताश्चतस्रो देव्यः

१. 'मण्डले' नास्ति- भो०।

२. 'दा' नास्ति- भो०।

प्रभुमपश्यन्त्यः सोत्कण्ठ गीतिकाभिरुत्थापयन्ति नाथम् । तत्र सुमालिनी महामैत्री-
स्वभावा ।

किच्ये णिच्चअ विसाअगउ लोअ णिमन्तिअ काई ।
तह वत्ता ण जइ सम्भरसि उट्ठहिं सअल विसाई ॥

इत्यनयो गीतिकयो । कापालिनी महाकरुणात्मिका ।
कज्ज अप्पाण वि करिअ पिअ मा करसु विण्णवि चित्त ।।

भवभअ पडिआ सअल जणु उट्ठहि जोइनिमित्त ।
भीमा महामुदिता स्वभावा ॥

पूव्वपइ जह सम्भलसि सा कर काज्ज विसाह ।
तइ अथमित्रं सअल जणु पमिउज्ज गअवसाउ ॥

इत्यनया दुज्जया उपेक्षात्मिका ।
मिछं माण वि मा करहि पिउच्छत्त हि सुण्णहाभाव ।
कामहि जोइणि विन्द तुहु फिट्ठउ अहवा भावेत्यनया ।।

एवं सञ्चोदनान्तरं तत्प्रवप्रसूत हूँ जनित सवज्र हूँ परिणतो भगवान् हेरूको
नीलवर्ण एकवक्त्रश्चतुर्भुजः सव्येन भुजद्वयेन डमरू-कर्त्री-विभ्राणो वामेन
खट्वाङ्गकपाले । विश्वसरसीरुहश्यालुशवोरःस्थलीमितमार्त्तण्डमण्डलीनिबद्धार्द्ध-
पर्यंकेण शृङ्गारादिनवनाट्यरसैर्नृत्यकुला^१वलम्बिसार्द्धपञ्चाशन्नरशिरःश्रेणिः ।
कृतमार्द्र-अन्त्रयज्ञोपवीतः । परिद्रवद्वीपिचर्म पश्चात्भागे पुरोभागे तु नग्नश्चक्री
कुण्डलकण्ठी केयूररुचकस्खलत्मेखलानूपुरघूर्धूसरवविराजितः पञ्चबुद्धमुकुटो

१. बौद्धकापालिक साधना और साहित्य, डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, पृ० २७१, स्मृति
प्रकाशन, इलाहाबाद, १९८३ ।

२. कण्ठ- भो० ।

विश्वकुलिशार्द्धशशाङ्काङ्कितजटाविट्यां ललाटकोटिपरिणद्धपञ्चकपालमालश्चित्ति-
 भस्मभूषितः कृत्रिमक्रोधमहारौद्रमूर्तिरुदच्चचण्डमरीचिमण्डलप्रभवनेत्रत्रयी हूँकार-
 गर्जतर्जितविचूर्णितदृष्यन्मारचमूचरितः परमप्रेमोरुमहाकरुणया संसारसागर-
 दरीमग्नमूर्तिस्तनूभूतः समुद्धरन्नन्तर्निबद्धश्वासेन योगिना भावनीयः। अस्य च
 प्रभोः प्रेयसी चित्रसेना भगवता सहैव हूँकाराज्जाता निर्वसननिरंशु^१भूषणा परिहृत-
 नरशिरःश्रेणिरूर्ध्वपिङ्गलज्वलितमुक्तकुन्तलकपालबन्धुकुसुमकन्तिः खेलल्लावण्य-
 लहरीकशरीरा किञ्चित्करालदंष्ट्रा कुरैकवक्त्रत्रिनेत्रा सलीलालिङ्गितभर्तृकन्धरा
 वामकरक्रोडितकपालगलितनिजसरोजविवरविनिःसृतकुसुमधारां प्रभुं पापयन्तीति
 त्रिभवसम्वासिश्रेयःपथपरिपन्थिवरूथनीहननाभिनयेनोपरि प्रगुणसकर्त्तिदक्षिणभुज-
 मञ्जरीकोपरि सशीतकधरसुधाविधानादिभिशचतुरतिकलाकेलिभिः स्रवच्छुक्राः।
 निर्भरम्भर्तुर्मनो मञ्जु रञ्जयन्ती। अनयोर्दम्पत्योस्तपत्तिक्रमसमये सुमालिनीप्रभृति-
 कुलिशविलासिन्य उत्पन्नाः। तत्र भगवदासनात्प्राचीदले सुमालिनी। उदीचीने
 कापालिनी। पश्चिमे भीमा, दक्षिणे दुर्जया। ऐशान्यादिविदिक्पत्रेषु दक्षिणावर्त्तेन
 शुक्ररजःपञ्चामृतपञ्चप्रदीपपूर्णानि कपालानि। इदमाद्यं पुटमष्टदलकमलं
 नीलकुलिशावलीवलयितम्। ततो द्वितीयं पूटं रक्ताष्टारस्थाष्टपद्ममभिनवधूसृणारुण-
 दम्भोलिमालावलयितं बहिः परितः। तस्य पूर्वारे शुभमेखला। उत्तरे रूपिणी।
 पश्चिमे विजया। दक्षिणे कारिणी। ऐशाने कालिनी। आग्नेये महोदधिः। नैऋत्ये
 कारिणी। वायव्ये मारिणी। ततस्तृतीयं पुटं शुक्लाष्टारस्थाष्टपद्मं शुक्लवज्रावली-
 वेष्टितम्। तस्य पूर्वारे तारिणी^२। उत्तरे भीमदर्शना। पश्चिमे सुदर्शना। दक्षिणे
 अजया। ऐशान्ये शुभा। आग्नेये ओस्तारकी। नैऋत्ये कालरात्री। वायव्ये महा-
 यशाः। ततः पूर्वद्वारे पद्मसुन्दरी। उत्तरस्मिन्पद्मे वसुन्धरा। पश्चिमे पद्मे सुभगा।
 दक्षिणे पद्मे प्रियदर्शना। सर्वा इमाः कवलितकर्त्तिकपालसव्येतरपाणिपल्लावा
 भर्तृभावस्फुरदधरेषदन्तुरदन्तैकवक्त्रा दिगम्बरनिरंशुभूषणा मुण्डमालारहिताः

१. अस्थि- भो०।

२. वज्रतारिणी- भो०।

पिङ्गलोर्ध्वज्वलन्मुक्तकचसञ्चयाः। अतिरागाच्छुक्रं स्रवन्त्योऽभिनवोन्निद्रमन्दार-
सुन्दररविबिम्बमर्द्धपर्यङ्गेण नृत्यवत्यः। द्वारपालास्तु चतस्रः^१ प्रत्यालीढपदेन। सर्वा
व्याघ्रचर्मपरीदधाना ज्वलितगभस्तयो वक्त्रे रक्तधाराः स्रवन्त्यस्त्रिनयनाः शृङ्गार-
दिरसराशयोऽभिनवोद्भिन्नेन्द्रनीलशिलाशुक्लवर्णवपुष्मत्यः अथवा सुमालिन्यादय-
श्चतस्रः कृष्णाः द्वितीयपुटिन्यो गौराः। तृतीयपुटवर्त्तिन्यः श्यामाः द्वारदेव्यश्चतस्रः^२
कृष्णाः। अन्ये त्वस्मद्गुरवः सुमालिनी शुक्ला। कापालिनी पीता। भीमा शुभ्रा।
दुर्जया कृष्णा। द्वितीयपुटिन्यो रक्ताः। तृतीयपुटस्थाः शुक्लाः। सुन्दरी शुक्ल।
वसुन्धरा पीता। सुभगा पीता^३। प्रियदर्शना कृष्णा इति विस्तरेण तन्त्रोक्त-
त्वादित्याहुः। यथारुचि भावनीयाः। पक्षद्वयस्य लघुतन्त्रोक्तत्वात्। ततो भगवतो
हृदि ओं। ललाटे होँ। कण्ठे हैं। शिखायां हैं। स्कन्धद्वये हों। चक्षुर्द्वये हों। गुह्ये हँ।
सर्वशरीरे हः। इति कवचः। तदनु हृदि कृष्णा हूँ ज वज्रवरटके हूँ। कण्ठे रक्त
आः परिणतपद्मे आः। महासुखचक्रे शुभ्र ॐ जातचक्रे ॐ। इति चित्तवाक्-
कायानधिष्ठाय ह सूर्य वज्रस्थ हूँ कार किरणैर्ज्ञानचक्रमाकृष्य हूँकारेण च
विघ्नानुत्सार्यार्घ्यं दत्त्वा चतसृभिर्द्वारपालीभिर्यथाक्रमं जः हूँ वँ हो रित्याकृष्य प्रवेश्य
बद्ध्वा वशीकृत्य ॐ बुद्धकापालिनी आः खँ क्रों द्रुँ स्रूँ आँ आँ आँ हूँ हूँ हूँ फट्
फट् इति सगर्वं पठंस्तेन सहैकलोलीभूतं समयमण्डलं पश्येत्। ततो नाभौ
ज्वलितचण्डाल्याः क्रमाद् द्रवितेन महासुखचक्रस्थामृतेन धर्मचक्रबीजस्य स्नापन-
समये धर्मचक्रस्याष्टनाडीस्वभावा महासुखमय्यः पूजाकाले क्रोष्टडाकिन्यो नाना-
वस्त्राद्यलंकारनिरतिशयरूपलावण्यविश्रामभूमयो द्वादशचर्याः ससहकारमञ्जरी-
बोधिचित्तभृतकलशोपरि चितपाणिपल्लवाः शान्ता हसिताः सरश्मिकाः स्फुरित्वा

१. चन्द्रस्य- भो०।

२. 'चतस्रः' नास्ति- भो०

३. रक्ता- भो०।

४. हूँ- भो०।

५. अँ अँ अँ- भो०।

बर्हिर्निगच्छन्ति । तदैव हृद्वीजकिरणाकृष्टदशदिग्गतागतदेवीभिः सहितास्ताः सेचयन्तु मे कृपावती कृताञ्जलिर्याचयामि प्रणिपत्य मुहुर्मुहुः । अभिषिञ्चन्तु^१ मां सर्वयोगिन्यो मुकुटेऽत्राधिष्ठन्तु आगच्छन्तु हूँ स्वाहेत्यनेनाभ्यर्चितच्छत्रध्वजपताका वस्त्रवाद्यादिसर्वाधिकरुणान्विताः शुभ्रज्ञाता स्वपूर्णकलशहस्ता जय जय कारादि-नाभिषिञ्चन्ति बाह्यगुह्यप्रज्ञाचतुर्थाभिषेकैः । सेकसमये च ज्यो ज्योकारमण्डल^३-दुन्दुभिध्वनिः चन्दनकुङ्कुमकुसुमादिवृष्टिः नभस्तलाद् भवति । तदनु तास्तासु नाडीषु लीयन्ते । ततो भगवान् देव्यश्च स्वस्वकुलनायकैर्मुद्रणीयाः । तत्र भगवन्तं वज्रसत्त्वं पञ्चबुद्धमउत^४ मण्डितमिति वचनात्पञ्चबुद्धैरक्षोभ्यादिभिः चित्रसेना महावैरोचन-वज्रसत्त्वापरनाम्ना । सुमालिन्यादीश्चतस्रो रत्नसम्भवेन । द्वितीयपुटस्था अमिताभेन । तृतीयपुटस्था वैरोचनेन । द्वारपालिनीरमोघसिद्धिना मुद्रयेत् । ततस्तद-टाडीभ्यो निःसृत्याष्टयोगिन्यः प्रभुं पूर्ववत् पूजयित्वा ।

कमलकुलिशमीलत्स्फीतपीयूषशर्म-

क्रमपरिणतमूर्तिर्नाटयन् सत्त्वकृत्ये ।

कलय कुलिशकन्या^५ केलिमुह्यस्मयाभू-

जगति जगदमन्दानन्ददं त्वां नतिर्नाः ॥

इति स्तुत्वा चैवममृतमास्वादयेत् । भगवद्भगवतीरतिध्वनिसंचोदिताः । पञ्च तथागता आगत्य वैरोचनद्वारेण प्रविश्य विलीय कमलोदरे पतेयुः । तदाऽध्यात्मिकं पञ्चज्ञानामृतं जिह्वाग्रललितेन स्वयं गृह्णीयात्माण्डल्यदेवताश्च प्रीणयेत् । बाह्यान्तु यँकारज यँगर्भ चलत्पताकाद्वयाङ्गनीलमारुतमण्डले रँ परिणत रँ गर्भसप्तज्वालरक्तानलमण्डलम् । तदुपरि त्र्यक्षरजातत्रिमुण्डनिविष्टामाःकारजं पद्म-

१. ॐ अभिषिञ्चन्तु- भो० ।

२. मंगल- भो० ।

३. मुकुट- भो० ।

४. देवी- भो० ।

भाजनं तन्मध्ये सार्द्धचन्द्रानुस्वार वि र शु म मु गो कु द ह न परिणतानि
 पञ्चामृतपञ्चमांसानि ॐ हूँ खँ स्वः हूँ सहितानि ततो वातप्रेरिततापेन तप्यमान-
 कपालस्थरसद्रव्यं शोध्यवाष्पस्पर्शादुपरि वितस्त्यन्तरान्तरीक्षस्थ हूँ ज हूँ गर्भनील-
 दम्भोर्लेविलीय प्रवेशात्सर्वैकरसपाकोपरि वितस्त्यन्तरस्य ॐ जौकाराधिष्ठित-
 सुधांशुमण्डलस्य ॐ काररश्मिसमाकृष्टैर्दशदिग्वर्तिभिस्तथागतादयो हि बोधिचिन्ता-
 मृतैर्मणिमन्त्रौषाधिशक्तिविशेषैश्च सह प्रवेशे तत् सर्वान्पारदवर्णस्तुषार-राशिरिव
 शीतलममृतं त्रिस्त्रितत्वेनाधिष्ठाय तेन^१ शुभ्र हूँज स रश्मिनालिकैकशूकं वज्ररसन-
 मात्मानं मण्डलदेवताश्च सन्तर्पयेदिति मण्डलराजश्रीनाम द्वितीयः समाधिः। ततो
 भगवत्प्रेरिताः सर्वडाकिन्याः भगवांश्च कायमेघस्फुरणैः सत्त्वानामर्थं कृत्वा
 महावज्रपदप्राप्तिं चोत्पाद्य स्वकाय मेघान्मूलकाये संहरेयुरिति कर्मराजाग्रीनाम
 तृतीयः समाधिः। तदन्वध्यात्ममुत्पन्नमण्डलमामुखयेत्। तत्र पूछीरमलये शिरसि
 सुमालिनी। जालन्धरे शिखायां कापालिनी। उड्डियाणे दक्षिणकर्णे भीमा। अर्बुदे
 मस्तकपृष्ठे दुर्जया। पीठं प्रमुदिता भूमिः। गोदावयां वामे कर्णे सुन्दरी। रामेश्वर्यां
 भूमध्ये वसुन्धरी। देवीकोट्ये चक्षुषोः सुभगा। मालवस्कन्धद्वये प्रियदर्शना। उपपीठं
 विमला भूमिः। एता अष्टौ चित्तचक्रे खेचर्यः। कामरूपे कक्षयोः शुभमेखला।
 उद्रस्तनद्वये रूपिणी। क्षेत्रं प्रभाकरी भूः। त्रिशक्तौ नाभ्यां विजया। कोशले
 नासिकाग्रे कारिणी। उपक्षेत्रमर्चिष्मती भूः। त्रिशक्तौ नाभ्यां विजयी। कौशलनासाग्रे
 कारिणी। उपक्षेत्रमर्चिष्मती भूमिः। कलिङ्गमुखे कालिनी। लंपाके कण्ठे महौदधिः।
 छन्दोहः सुदुर्जया भूः। काञ्च्यां हृदि कारिणी। हिमालये मेढ्रे मारिणी।
 उपछन्दोहोऽभिमुखी भूमिः। वाक्चक्रे भूचर्यः। प्रेतपुर्यां लिङ्गे तारिणी। गृहदेवतायां
 गुदे तु भीमदर्शना। मेलापकं दुरङ्गमा भूः। सौराष्ट्रे ऊरुद्वये सुदर्शना। सुवर्णद्वीपे
 जंघायामजया। उपमेलापकमचला भूः। नगरे गुलीष्टां शुभम्। सिन्धौ पादपृष्ठयो-
 स्तारकी। श्मशानं साधुमति भूमिः। मरावङ्गुष्ठयोः कालरात्री। कुलतायां जानौ

१. तेन जिह्वा- भो०।

२. महावज्रधर- भो०।

महायशा। उपशमशानं धर्ममेघा भूः। कायचक्रे पातालवासिन्यः। बोधिचित्तादि-
चतुष्टयं महासुखादिचक्रचतुष्टये। भगवच्चित्रसेनयोः कर्णिकाद्वयस्थानम्^१। इह
भगवान् सांवृतबोधिचित्तात्मा। चित्रसेना रजःस्वभावा। बोधिचित्तादिचतुष्टयमन्यच्च
सर्वमनयोः स्फुरणम्। स्वस्वस्थानस्था नाडीस्वभावाश्चतुर्विंशतिदेवीर्भगवांश्च
स्फुरणेन समालिङ्गति। यथोपदेशं यथातत्त्वं यथापि मोक्षं चण्डाली प्रभेदभावनया।
सर्वं च तत्परमार्थतः। शून्यतामहासुखमयकरुणाभिन्नस्वरूपचित्रसेनाबुद्धकपाल-
स्वभावमेव विभावनीयं जगच्चेति। यदि पुनर्योगी चित्तस्थिरीकर्तुमिच्छति
सर्वसिद्धीनामाशु निष्पत्तये तदा समासतः समाधित्रयं विभाव्य चतुःषष्टिदल-
कमलनिर्माणचक्रस्योर्ध्वमुखस्य ग्रन्थिशुषिरे नीलं आँ अष्टारधर्मचक्रस्याऽधो-
मुखस्य नीलं हूँ। षोडशारसंभोगचक्रस्योर्ध्वमुखस्य रक्तं ॐ। द्वात्रिंशदारमहा-
सुखस्याऽधोमुखस्य शुक्लं हँ। गुह्यचक्रस्थवायुवह्निसंचोदितचण्डीस्वभावस्य
अँकारज्वलितरश्मिना द्रावितेन हूँकाराद्यक्षरत्रयेण सहाभिन्नम् अँकारं सहजानन्द-
मयविन्दुभूतं वीरं भावयन्भावनापरिपाकमधिमुच्य तस्मादेव सूक्ष्मरश्मिरेखां
ज्वलितैकज्वालावदवस्थितां पश्येत्। तस्याः प्रभावेण स्रवदमृतपूरप्लावितौ वीरः सा
च रश्मिरेखा शीतीभवेत्। ततो वीरे नियमितं चित्तं तावत् पश्येद्यावद् चेतसः
स्थैर्यलाभं निमित्तरूपलक्षयेत्। उपलक्षिते तु स्थैर्यं तस्या रश्मिरेखायाः स्फुटमा-
लोकम्विश्रमवभासयन्तं विचिन्त्य सर्वङ्करतलामलक्रवत्पश्येत्। सर्वसमाधीश्चाशु
निष्पादयेदिति विन्दुयोगः। यथोपदेशं यथाऽधिमोक्षं चण्डालीप्रभेदञ्च भावयेत्।
जप्तविद्यस्य सिद्धिरिति जाप उच्यते। तत्र भावनाखेदान्मूलमंत्रोऽयं जप्यः। ॐ ह्रीः
बुद्ध हूँ कापालिनि आः। अस्य जापक्रमः। नासापुटवायोर्नाभिस्थानान्तरोक्तबिन्दौ
प्रवेशे ॐ। नासापुटनिष्क्रमे ह्रीः। बिन्दौ स्थिते बुद्धसुखे हूँ। अस्तमने
कापालिनी। बिन्दोरुत्थाने आः। इति षडङ्गजापाद् वज्रजापः सूक्ष्मयोगश्चात्रैवंविधो
बोद्धव्यः। ॐ बुद्धकापालिनी आः ह्री है हूँ फट् हृदयम्। ॐ बुद्धकापालिनी

१. पद्मनाभद्वयस्थानम्- भो०।

२. 'षड' नास्ति- भो०।

वज्रिणी हौ दुर्जये दुर्लक्षे हूँ फट् उपहृदयम्। एषामन्यतः स मन्त्रं यथारुचि जप्त्वोत्थानकाले सार्वभौतिकबलिम्। ॐ बुद्धकापालवज्रे चित्तेषु चत्रे अलम्बले प्रीणय सर्वभूतान् मारय सर्वमारान् कीलय सर्वदुष्टानुच्चाटय सर्वविघ्नान् वित्रापय भो भगवति यक्षराक्षसपिशाचान् शोषय ताडय सप्तपातालगतान्। सर सर प्रसर प्रसर हूँ हूँ हूँ फट् फट् फट्। इति मन्त्रेण दत्त्वा सर्वमिदं कुशलमनुत्तरायै सम्यक्सम्बोधयेभिमतसिद्धये च परिणमय्य पूर्ववत् पुजां कृत्वा चतुर्विंशति-माण्डलेभ्योध्यात्मनि पीठादिचतुर्विंशतिस्थानस्थेषु नाडीषु यथोपदेशमन्तर्भाव्याः। बोधिचित्तकपालम्। महासुखचक्रे। रजःकपालं निर्माणे^१। पञ्चामृतकपालं हृदि। पञ्चप्रदीपकपालङ्गकुलो^२ एवमन्तर्भाव्य भगवतीसमालिङ्गितभगवन्मूर्तिना शून्यतै-करसमहासुखस्वभावं मायामयमात्मानं निरवधि त्रैधातुकञ्चाधिमुञ्चता यथारुचि विहर्तव्यम्।

मध्याह्नसायमर्द्धरात्रसन्ध्यासुगमितिस्फारितसर्वान्तःपुरचक्रेण कवचादिकम-खिलमनुष्ठेयम्। शयनसमये तु प्राग्वत् द्रवीभूतशून्यतास्वस्वभावसहजानन्दमय-मात्मानं निद्रां च तत्स्वभावामधिमुच्य सुप्तव्यम्। उत्थातुकामतायां पूर्ववच्चतु-र्देवीसंचोदनात् झटित्युत्थाय तथैव सकलमविकलमाकलयितव्यम्। एवं प्रत्यहं याववत्सिद्धिनिमित्तानि लभ्यन्ते स्नातव्यमभिषेकविधिना सर्वभक्षणममृतास्वाद-विधिनेति। यदा पुनरयमेव भगवान्निष्प्रज्ञो भाव्यते तदा हेतुवज्रधर इत्यादि भगवान् हेरुक इत्यन्तं ग्रन्थः। अस्य च प्रभोः प्रेयसीत्यादि लघुतन्त्रोक्तत्वादित्यन्तम्। चतसृभिरित्यादि वशीकृत्येत्यन्तं तदित्यादि मुद्रयेदित्यन्तम्। भगवद्भगवतीत्यादि प्रीणयेदित्यन्तम्। तदन्वध्यात्ममित्यादि प्रभेदभावनयेत्यन्तम्। चित्रसेनेति चतुर्विंश-तीत्यादिसमालिङ्गित्येत्यन्तम्। प्राग्वद् द्रुतीभूतमिति। पूर्ववत् चतुर्देवीसंचोदनादिति वाचं विहाय सर्वमन्यदुक्तं वक्तव्यं ज्ञातव्यं। विशेषस्त्वमुष्य भगवतः प्रागुदक्-

१. 'हूँ' नास्ति- भो०।

२. निर्माणचक्रे- भो०।

३. कण्ठ- भो०।

प्रत्यग्वाक्कमलदलेषु यथासंख्यम्। ॐ हूं खं स्वः इति बीजजनिताश्चित्रसेना-
 कामिनी-पातालवासिनी-सौभद्रा नीलवर्णाः प्रत्यालीढपदा व्याघ्राजिननिवासनाः
 सव्यभुजद्वयेन कर्त्तिकपाले। वामकरद्वयेन खट्वाङ्ग डमरुके विभ्राणाः। ऐशानाग्नेय-
 नैऋत्यवायव्यदलेषु यथाक्रमम् हूं हूं हूं हूं परिणताः शौण्डिनीभूतिनीचतुर्भुजाकाश-
 वासिन्यः पीतवर्णाः स्फुरत्पीतरश्मिशरीरा आलीढचरणा^१ दक्षिणपाणिपल्लवाभ्यां
 कर्त्तिडमरूके वामभुजे मञ्जरीभ्यां खट्वाङ्गपद्मभाजने दधानाः। अष्टावयमभूत्रि-
 रतिशय शृङ्गारादिरसोद्गारगर्भः। अभिनवमार्त्तण्डमण्डलेषु ताण्डविन्य ईषत्दंष्ट्रा-
 करालवक्त्रकमला ज्वलत्पिङ्गलोर्ध्वमूर्द्धजा मूर्द्ध्वपञ्चकपालमालिन्यो नरस्थिमय-
 चक्रीकुण्डलकण्ठीरुचकमेखलाघुर्धुरा केयुरनूपुराभरणा गलावलम्बिसार्द्रपञ्चाशन्नर-
 शिरःश्रेणयः कल्पान्तज्वलनप्रतिमावजृम्भमाणकिरणकवलितमारमण्डला अट्टाट्ट-
 हासमहाघोरा एकवक्त्रा वक्त्रे रक्तं स्रवन्त्यः त्रिनयनाः चतुर्भुजा भुजङ्गमानति-
 शयमुत्त्रासयन्त्यः प्रभुमभिमुखं निरीक्षमाणा निरूपणीयाः। इह भगवन्तं वज्रसत्त्वं
 पञ्चबुद्धमुकुटमण्डितमिति वचनादक्षोभ्यादिपञ्चबुद्धैर्मुद्रयेत्। चित्रसेनादींस्तु यथा-
 क्रममक्षोभ्यवैरोचनरत्नसंभवामिताभैः शौण्डिन्यादीरप्येवम्। आध्यात्मिकामृत-
 प्रीणनं चण्डालीप्रभेदभावनयैव। एवमष्टकुलिशविलासिनीवलियितो भगवान् हेरुको-
 पमेवादृश्यीकरणच्छारप्रयोगेषु गारुडप्रयोगेषु च भाव्यः। वन्ध्यास्नानविधौ तु
 सप्रज्ञः। विद्याधरकरणे पुर्नभगवान् दिग्देव्यश्च शुक्ला विदिग्देव्यो रक्ताः। वन्ध्याया
 मृतपुत्रायाश्च स्नानविधौ तु सप्रज्ञोऽयं भगवान्। तदा निष्प्रज्ञत्वे त्यक्तो ग्रंथो
 यथायोगमुपादेयः। सर्वञ्चेतत् कूटागारमष्टश्मशानपरिवारितं विचिन्तयेत्। तस्य हि
 प्राच्यां दिशि चण्डोग्रनाम श्मशानं साधकानुग्रहापरनाम शिरीषो वृक्षः पाटलिर्वा।
 गजमुखो महिषास्यो वा महर्द्धिको दिक्पाल इन्द्र उपेन्द्रश्च। शुक्लवासुकिनागो।
 गर्जितोनाम मेघः। आग्नेय्यामट्टहासं महाप्रलयापरनाम श्मशानं। करञ्जउदुम्बरो
 वाच्छागाननः श्वास्यो वा महर्द्धिकोऽग्निः श्वेतमहापद्मो घनो मेघः। दक्षिणस्यां

१. आलीढचरणा अष्टनागालङ्कृता- भो०।

२. अग्निदेव- भो०।

कङ्केलि भीषणं घोरान्धकारापरनाम श्मशानमाम्नः शिरीषो वा महिषमुखो
 व्याघ्रवदनो वा महर्द्धिको यमः शुभ्रपद्म आवर्तो मेघः। नैऋत्यां किलकिलानादं
 श्मशानं^१ महामेलापकयोगबहुलापरनाम। पर्कटी वटो वा शवास्यो गृध्रवक्त्रो वा
 महर्द्धिको राक्षसो नीलानन्तः प्रपूरणो मेघः। पश्चिमायां ज्वलाकुलं श्मशानं
 क्रोधानलापरनाम कङ्कल्लि चूतो वा मकरमुखं उल्लूकवक्त्रो वा महर्द्धिको वरुणो
 हरितकर्कोटको घोरो मेघः। वायव्ये घोरान्धकारं श्मशानं सिंहनादमहाफूत्कारा-
 परनामार्जुनोऽश्वत्थो वा मृगमुखः शूकरास्यो वा महर्द्धिको वायुः कर्बुरकुलिको
 रक्षसिको वर्षणो मेघः। उत्तरस्यां गङ्गरं^२ श्मशानं अद्वैतकरापरनामाश्वत्थः
 कङ्कल्लिवा मनुष्यास्यो मार्जारमुखो वा महर्द्धिकः कुबेरविनायकौ रक्ततक्षको घूर्णितो
 मेघः। ऐशान्यां लक्ष्मीवनं श्मशानं सरोजवीरापरनाम वटो नागकेशरो वा गवाननः
 पिशाचास्यो वा महर्द्धिक ईशानः पीतशंखपालः चण्डको मेघः। सर्वत्र चैत्यं
 द्रष्टव्यम्।

तत्र

सितै रावणमारुढो वज्री पीतः सहस्रदृक् ।
 कृष्णचक्रगदाशंखकौस्तुभी गरुडासनः ॥
 रक्तो च भ्रूजटाजूटश्मश्रुज्वालाकुलोत्तलः ।
 पीनश्छागासनोऽभयाक्षकमण्डलुदण्डभृत् ॥
 प्रत्यालीढपदः कालः कालश्च महिषासनः ।
 ज्वलदूर्ध्ववक्त्रः क्रुद्धो दण्डतर्जनभृक्करः ॥
 तद्वच्छवासनो नग्नो नैऋति नृस्थिभूषणः ।
 दंष्ट्राकरालवदनो धत्ते कर्त्तिकरोटकौ ॥

१. 'श्मशानं' नास्ति- भो०।

२. कङ्कल्लम्- भो०।

मकरे वरुणः सप्तफणः श्वेतोऽहि पाशभृत् ।
 पीतैण्यगतो वातोऽहरितो वातकर्पटी ॥
 पीतः पीनो नरे यक्षे नकुली बीजपूरभृत् ।
 गजास्यो मूषके मूलदण्डमोदकभृत्सितः ॥
 ईशानो वृषभारूढो जटाकूटास्थिभृत् सितः ।
 त्रिशूलाङ्कितखट्वाङ्गडमरूव्यग्रपाणिकः ॥
 फणिनोष्ठौ मनुष्यास्याः सुभूषा येऽविशेषिताः ।
 शक्राद्याः षोडशैते च वामक्रोडितवल्लभाः ॥
 ज्ञेयास्तरुसमीपेषु सलीलेतरपाणयः ।
 रक्षो यमाग्रयः सूर्ये चन्द्रे चन्द्रप्रभाः परे ॥
 हित्वेशयमरक्षांसि रत्नप्रभास्वरमौलयः ।
 ईशो रत्नकिरीटीति कश्चिदष्टौ महर्द्धिकाः ।
 दर्शितप्राक्क्षरीरार्द्धाः कपालाञ्चितपाणयः ग्रहणाभिनयव्यग्राः
 सव्यैर्धत्ते बलौ परैः मेघास्तु विश्ववर्णाः ॥

एतानि चाष्टौ च परैरपि विविधतरुवरैर्विराजितानि । काकोल्लुकगृध्राश्वशिवा-
 सिंहशूकरव्याघ्रादिभिर्घोराणि गोनासादिभिः । सर्पैरतिभयङ्कराणि कङ्कालशूलभिन्ना
 बलं चितार्द्धदग्धशिरःकपालजानुका बन्धास्थिमुण्डखण्डादिभिर्भीषणानि विविध-
 सिद्धा विद्याधराः समयचरियोगियोगिनीगणैः किलिकिलायमानं यक्षवेताडराक्षसा-
 दिभिरितस्ततो धावञ्चलस्थितिनिषण्णशय्या बहिरत्याश्चर्यकारीणि महाश्मशाना-
 नीति ।

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

होमविधिः

पटलः अष्टमः

उपायाङ्गं निर्दिशति। अथेत्यादि। काष्ठेनेति तन्त्रान्तरोक्तेन। पुष्पेणेत्युदेशं निर्दिशति। पञ्चपुष्पमिति वक्ष्यमाणपद्मादिपुष्पाणि पञ्च। क्षीरेणेत्युपलक्षणत्वाद् घृतादिभिः। अध्यात्महोमे तु पञ्चप्रज्ञानां रजांसि पञ्चपुष्पाणि क्षीरं पुरुषस्य च बोधिचित्तं, समापत्तौ तद्रजोमिश्रं ज्ञेयमित्यन्यत्रोक्तमिह न यत् प्रस्तुतम्। शान्तिक इत्यादि इह चतुरस्रं कुण्डं तिर्यगधश्च द्वादशाङ्गुलम्। तन्मुखस्योपरि चतुरङ्गुलान्तरं त्यजेत्। तत्र चतुर्दिक्षु शुक्लविकरालपञ्चसूचिक वज्रम्। तद्वहिस्तिर्यगुच्छ्रयाभ्यां चतुरङ्गुला कुण्डसंस्थाना मनागवनतमुखी^१ समन्ततो वेदी कोणेषु त्रिशूकवज्राङ्किता बर्हिर्नीलत्रिसूचिवज्रावलीवेष्टिता। कुण्डमध्ये धर्मोदया मध्यस्थकूटागारेऽष्टाङ्गुलं पद्मं नीलरक्तशूक्लत्रिवज्रावलीपरिवेष्टितम्। पद्मोपरि प्राक्शिरः पञ्चसूचिक-चतुरङ्गुल-प्रमाणमेकाङ्गुलोच्छ्रयं वज्रं तदुपरि पद्मं तन्मध्ये सूर्यः। तदुपरि हीः कूटागारकोणेषु पीतनवशूकवज्राणि सर्वमिदं विकरालवज्रादिकं रजसंलिखेदपीति समुदायार्थः। अवयवार्थ उच्यते। हूँकारात्मजं हूँ^२ ज स्वरूपमधिमुञ्चेत् हूँकारगर्भमिति वा। चक्रं कूटागारम्। त्रिकोणधर्मोदया। एवं मयेति चतुरक्षरजनितपृथिव्यादिभूतचतुष्टय-परिणतमधिमुञ्चेच्चक्रम्। किंजल्केन^३ किंजल्कोपलक्षितपद्मेन विशिष्टम्। गुणं द्विषोडशोत्तरशतद्वयम्। खलु केनेति कुकुमविशेषेण। तले पद्ममिति। वज्रस्य तले पद्ममष्टदलम्। अङ्गुलद्वादशेति आचार्याङ्गुलेन। तत्रेति कुण्डे। एकैकस्येति आम्ना-दीनाम्। रक्तवज्रकपालधृतमिति रक्तं वज्रं कपालं च चिह्नम्। रक्तेन पूर्णं शून्य-तेति। कुण्डमध्ये किञ्चिन्न लिखेत्। पञ्चमांसेन गोकुदहनमांसेन। अग्नीत्यग्निः प्रोक्तः। एषां शान्तिकादीनाम्। अपरविशेषोऽस्मत्कृतहोमोपयिकायां ज्योतिर्मञ्जर्यामिहोक्त-

१. ०रक्तमुखी- भो०।

२. 'हूँ' नास्ति- भो०।

३. नाभि- भो०।

विशेषविपरीतं परित्यज्य ग्राह्यः। सर्वज्ञैतत्संवृत्या। परमार्थतस्तु कोज्वलइ
इत्यादीति।

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

अष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

*

चर्यानामकः

पटलः नवमः

उभयक्रमामुखीभावं विनान्तरेण चर्या महामुद्रासिद्धिरिति चर्यापटलमाह । अथेत्यादि । कायमनसां^१ विशिष्टो व्यापारश्चर्या । अतिक्रान्तशाश्वतोच्छेदाद्यन्तत्वेन चर्यान्तरोत्कृष्टत्वादत्यन्तवरा । लोकातिक्रान्तत्वेन गता । कचिदत्यन्तवराङ्गनामिति पाठस्तदा तामादायेति शेषः । न चेयमौध्दत्यात्सहसैव कर्तव्येत्याह । अष्टसिद्धी-त्यादिः पातालाञ्जनपादलेपगुडिकान्तर्द्धानखड्गरसरसायनसिद्धयः । अष्टैश्वर्यगुणा वा । अनेन लब्ध^२सामर्थ्यस्य सत्यामिच्छायां चर्यानुज्ञाता । यतोयं योगरुचिरप्रमत्तो भवति । प्रत्यर्थिकाः केचिन्न प्रसहन्ते । ग्रहानुग्रहसमर्थश्चैषो भवति । शीतातपादिभिश्च नाभिभूयते । अष्टलोकधर्मादिभिरबाधितत्वात्सर्वरणविनिर्मुक्तः । यस्मादाकाशतुल्यतां गतः । सर्वधर्मसमतैकरसः । शून्यताभावमिति^३ । भिक्षाप्राथर्थासमये दातृभिर्नेति प्रतिषेधे सर्वधर्मपरमार्थशून्यताभावनां कुर्यात् । भावनेति । उपायभावना । अनुत्तरं प्रज्ञोपायाभिन्नम् । धर्मे परायणं तस्मिन्नद्वयधर्मे निरन्तराभियुक्तः । द्रव्येत्यादि यथामिलिताहारपरितुष्ट्या । यथारुचि देशकालावस्थाविशेषेष्वभ्यासं विशेषतो योगस्य निरन्तरप्रवाहितया प्रदीपकलिकयाचिरसञ्चितगुहातिमिरमिव चिररात्रसञ्चितमपि महान्तं विकल्पदोषसंघातमपहत्य महामुद्रां साक्षात् कुर्यादिति समुदायार्थः । चर्यायोगयुक्तस्येति प्रथमार्थे षष्ठी । तन्त्रे द्वादशसाहस्रिके बुद्धकपालतन्त्रे । स्वभावशुद्धेति । यदि स्वरूपेण शुद्धं जगत्तदा सर्व एवायत्नतो महामुद्रां प्राप्नुयुः किं योगाभ्यासेन ?

ननूक्तं विप(म)प्पणासिअ इति अतएवोक्तं ज्ञानपादैः ।

-
१. 'पटल' नास्ति- भो० ।
 २. काय वाक् मनसां- भो० ।
 ३. कपाल- भो० ।
 ४. 'भावमिति' नास्ति- भो० ।

प्राकृतविकल्पवृत्तेरपरं न हि किञ्चिदस्ति भवदुःखम् ।
तस्य विरुद्धं चैतत् साक्षादेव गम्यते चेत् इति ॥

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां
नवमः पटलः ॥ ९ ॥

*

विशिष्टमहौषधिः वन्ध्यास्नानविधिश्च

पटलः दशमः

परानुग्रहपरस्य तदुपायं वक्तुमाह। अथेत्यादि सत्त्वार्थैकसुनिश्चयमिति। सत्त्वानामर्थ एकः सुष्ठु निश्चीयते यस्मिन्। हेम कायति प्रकाशयतीति हेमकम्। प्रवालस्य प्रवालम्। येनेति हेम्ना मुक्तादिभिर्धनवन्तो यान्ति भवन्ति। न ते तस्य हेम्नो न वाह्या ओषध्यस्तन्त्रान्तरोक्ता इत्युद्देशं निर्दिशति। न चापीत्यादि। अपरलोहस्येत्यपरलोहम्। किन्तु सिद्धौषधिरन्तरिति रजस्य रजः। के ते का सा तदेवोत्कृष्टमहौषधयः। पाठेति सिद्धेति। पठितोऽन्तर्जल्पेन सिद्धो मन्त्रो यस्याः सा तथा। स चेति सा च सिध्यति। भाजने प्रज्ञापद्मे। दिव्यमौषधम्। रसमिति बोधिचित्तम्। मध्ये पद्मस्य। रसन्नयत्यूर्ध्वस्थानादध इति रसना अवधूतिः। तस्याः तिष्ठति। तारुण्येति। तरुणां षोडशवर्षा। स चेति सा च तथागतो बुद्धकपालयोगिनः। निर्घृणस्य निर्घृणाः। घृणासम्भवस्तु रजोयोगात्। न सिध्यतीति प्रज्ञोपायशुक्रयोः समसमये च्युतिः सिद्धिनिबन्धनमिति भावः। बुद्धान्नायकपदमिति सम्बन्धः। कतिपयक्षणधारणेन समच्युत्यापि महौषधी हेम साधयति निरवधि धृता तु महासुखमयं बुद्धत्वमिति तात्पर्यार्थः। धीरश्चोदयेत्। ततः सा महौषधी कार्यं कार्या। चन्द्रं शुक्रम्। आलेपितं रक्तेनापि। तत्र चन्द्रे। मेरुः सुंकारः। कार्यसमापत्तिम्। निक्षेपयेत् निक्षेपं कुर्यात्। वस्तु बोधिचित्तम्। वामदक्षिणं नाडीद्वयमाकुञ्चितं क्रियाविशेषणम्। आकुञ्चनञ्च शीघ्रच्युतिधारणोपाय उक्तः। किंतूपदेशतः स्फुटं ज्ञातव्यः। तथाहि नाभावाकुञ्च्य प्राणापानौ यथोपदेशं चित्तस्थैर्याद् वशीकृतचित्तवृत्तेः बोधिचित्तस्य स्वस्थानच्युतिः बहिरक्षरतावृद्धयः क्रमशो भवन्ति। तदेवेहाजीकरणम्। हेमादिरुचेस्तु क्षरति। अत एवाह। सहेति। युगपत्प्रज्ञोपायाश्च निक्षेपयेत्। सहताम्रपलं वस्त्विति कश्चित्। पाशे प्रज्ञाया वामपार्श्वे। पद्मान्तरिति कश्चित्। निर्दिशति पश्चात् कर्मेति समापत्तिम्। सुमेर्विरत्यादि प्रथमार्थे षष्ठी। बीजराजे ह्रीः कारः। गुडा ताम्रगुडकम्। प्राज्ञो देवतायोगवान् हृदयादिमंत्रै रक्षां कुर्यात्। अयमर्थः स्वयम्भगवद्रूपा भगवतीरूपं युवती समालिङ्गिता स्वहृदये

बोधिचित्तञ्चन्द्रमण्डलाकारं निखिलसिद्धरसेन रक्तेन च मिश्रितं तदुपरि सुं बीजं तदुपरि ह्रीः कारं विचिन्त्येदं त्रयं महारागेण द्रवितसमरतोत्पन्नबोधिचित्तेन सह द्रुतं मिश्रीभूय पद्मे पतितं प्रज्ञा बोधिचित्तरजोभ्यां मिश्रितम्। तेनोष्णेन ताम्रं लोहं वा शीघ्रं लेपयित्वाग्नौ निक्षिपेदिति। न च बुद्धोऽप्रमाणं तस्मादिदमित्यादि। यद्यद् वस्त्विति। उक्तं वक्ष्यमाणञ्च। अप्रमाणमप्रमाणाध्यारोपं। न हीयन्ते न त्याज्यन्ते नरकात्। चतुरित्यादि^१। चतुरशीतेर्द्धर्मस्कन्धसहस्राणां रहस्यत्रिरुत्तरमिदं योगिनी-तन्त्रम्। हेमतारोऽपीति। ताम्रं हेम भवति कान्तलोहं तारम्। इदमेवोष्णं शुद्धरस-रक्तिकया सह प्रत्यहं षण्मासत्रयं कुर्यात्। अस्यानुशंसो जीवतीत्यादि। संयोगे वज्रपद्मयोः। चत्वार इति। विजयकलशस्य प्राधान्येनानुक्तसिद्धत्वात्। अत्र कलशाधिवासनेन यथोक्तं चतुर्थपटले। विशेषमाह। आत्मन इति। आत्मानामिका-रक्तेन वन्ध्यायाः प्रधानधातुमिश्रेण। कृष्णरक्तमहाघोरमिति। कृष्णश्च वर्णं रक्तश्च ताभ्यां महाघोरः। कृष्णो भगवान्। रक्तचित्रसेनालिङ्गित इहाष्टदेवीपरिवारित इत्यर्थः। केचिद् गुरवस्त्वाहुः। कृष्णश्चेष्टद्रक्तश्चेति निष्प्रज्ञ एवेति। अयमर्थः। इहाचार्यः सपरिकरहेरुकात्मा यथाविधि वर्तितमण्डलस्य पटमण्डलस्य वा पञ्चोप-चारपूजितस्य प्राग्द्वारे दत्तदशदिग्बलिः पञ्चकलशान् रक्तप्रधानधातुमुक्षितान्तरमुखा-नधिवास्य वन्ध्याः मण्डलाभिमुखी रजोऽनन्तरमृतस्नानकाले स्वयमुत्थाय प्रथमं विजयकलशेन हृदयमन्त्रं हूँकारसाटोपं पठन् स्नापयेत्। तदैव हृद्बीजकिरणाकृष्टा-परिमितवीरवीरण्यः करकिशलयावर्जितबोधिचित्तपूर्णकलशैः स्नापयन्ति तदैव च चतुर्भिश्चण्डपुरुषैर्निष्प्रज्ञैकात्महेरुकरूपैः खड्गधरैर्युगपदाकाशं खड्गेन हन्यन्ते ग्रहादिमाराणां मारणाशयेन। एवं क्रमेणापरकलशैः स्नापयेत्। तदनु कामयेत्। ततः सा सुतगर्भवती भवेदेवं मृतपुत्रा जीवत्पुत्रेति।

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

दशमः पटलः॥ १०॥

विद्याधरयोगोपदेशनिश्चयः

पटलः एकादशः

विद्याधरकरणं निर्देष्टुमाह। अथेत्यादि। चतुर्थपटले शालिकाकरणविधेः पूर्वं सर्वमत्र बोद्धव्यम्। विशेषमाह। अनेनैवेति। वक्ष्यमाणेन। दंष्टकेत्यादि। कालेन दंष्टको भूतः सर्वगारुडिभिरशक्त्या कालदंष्ट इति त्यक्तो यदा तदा कर्मारभेत। शुक्लदेहत्विति। भगवान्दिग्देव्यश्च शुक्ला विदिग्देव्यो रक्ताः। विधिवदिति। समाधि-त्रयनिष्पादनेन। खड्गं पिष्टशालीमयम्। तस्य विद्याधरद्वयस्य लिखेत् क्षिपेत्। पत्रे भूर्जादौ पल्लवेन श्वेतकरवीरस्य। एकस्मिन्नित्येको विद्याधरः। पतति दष्टोपरि। तदैव दष्ट उत्तिष्ठति। एवं शालिकीकरणमुदककरणं विद्याधरकरणञ्च निर्दिष्टमपरपञ्च-दशकरणानि द्वादशसाहस्रिके बुद्धकपालतन्त्रे निर्दिष्टानि ज्ञेयानीति॥

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

एकादशः पटलः॥ ११॥

*

नानामन्त्रप्रयोगः

पटलः द्वादशः

अञ्जनसिद्धिमुद्दिष्टामाह। अथेत्यादि। प्रधानभूता चतुर्विंशतियोगिनीनाम्। दृष्टादृष्टानि। ये इति येषु। न भाषितं तन्त्रान्तरेषु महाभागाः। प्रशस्या निरावरण-बलवैशारद्यादिमहागुणभजनात्। सत्त्वार्थतात्पर्यात्परार्थसंपदुक्ता। हेत्ववस्थास्वरूप-त्वात्सर्वबुद्धजननी। फलरूपत्वान्महामुद्रा। योगी योगिनः। सर्वे सर्वैश्वर्यप्राप्तम्। हासस्य शक्तिनिश्चयं प्राप्येति शेषः। ध्वजं ध्वजमिव मनुष्यम्। कुण्डं त्रिकोणम्। तत्रैव कुण्डे। शिरसा शिरसि कपाले। तस्य मांसस्य। अपरोऽपरस्मिन् कपाले। विघ्नस्येति विघ्नाः। कज्जलमिति निःशेषम्। पिबयेदिति स्वयम्। पिबायेदिति प्रज्ञाम्। इह बुद्धकपालयोगी श्मशानेवलम्बितमानुषस्य कट्यस्थिकृतत्रिकोण-कुण्डोपरि तत्कपाले तत्कटिमांसतैलपूरिते श्मशानकर्पटवर्ती श्मशानवह्निं ज्वलितां संस्थाप्योपर्यपरावलम्बितनृकपाले कज्जलं मन्त्रं जपन् पातयेत्। तत्कज्जलम-स्पृष्टभूमिकं प्रथमं करद्वयेनादाय तदनु वामकरे संस्थाप्य पीतकेलिमालिनीं कन्यामक्षतयोनिं रजःप्रवाहवतीमधिमुक्तचित्रसेनारूपां शनैः कामयित्वा रजोमिश्र-बोधिचित्तस्य किञ्चिदुभाभ्यामास्वाद्य भूयसाऽपरांशेन सह मर्दयेद् दक्षिणानामाङ्गुष्ठा-भ्याम्। ततस्तस्या एव रजसाष्टोत्तरशतानि वटिकाः कृत्वा प्रतिवटिकामष्टोत्तर-शतेनाभिमन्त्र्य मन्त्रं पठंस्तेनाक्षिणी अञ्जयेदिति समुदायार्थः। अनेनैवेत्यस्या-र्जितेत्यादिना सम्बन्धः। महाबाहो वज्रपाणे निखिलसत्त्वसन्तर्पणप्रवणभुजत्वात्। योगिनी परं योगिनीतन्त्रेऽत्र परं सुलभम्। अनामाङ्गुष्ठेनेति दक्षिणेन। एवमुत्तर-त्राञ्जने दक्षिणव्यापारः। भद्र इति चक्षुर्मलनादनञ्जितनेत्रावस्थ इव भवेत्। सप्ततालप्रमाणो भवत्यतिवृष्टिनिवारणार्थः। महात्मन इति प्रभावादिति शेषः। स्वरूपपरिवर्तनस्येति प्रथमार्थे षष्ठी। प्रयोगेति प्रयोगा विद्याधरत्वादिति निष्पत्तये लघुतन्त्रे नोक्ता विस्तरे तूक्ता ज्ञातव्या गुरुवक्त्रात्। मन्त्रजापविशेषक्षमसूत्रविशेषं वक्ष्यमाणमाह अथेत्यादि। हस्त्यस्थिकेन हस्त्यस्थ्याभिचारार्थञ्जयेत्। महास्थि नरास्थि। शकुनास्थि गृध्रास्थि। लोहकेन लोहाक्षसूत्रेण। सर्वोयमुत्पत्तिक्रमपक्षेऽपि

प्रपञ्चस्तथा तथा विनेयजनानुरोधादुक्तः। उत्पन्नक्रमे तु किमनेनत्याह। चित्तैक-
मित्यादि। चित्तमेवैकं निर्मलादर्शः त्रैधातुकस्य तेन हि यच्चिन्त्यते तत् प्रतिबिम्ब-
मिवाभाति। सर्वं चेदं चित्तसमारोपितम्। तच्च चित्तं परमार्थतः स्वप्नरूपं
सर्वप्रपञ्चवर्जितं ये न जानन्ति मूढास्ते सत्त्वा विकलविकल्पमहिमानो येषि च
श्रुतादिना जानन्ति तथापि त एवंविधविकल्पेन गृह्यन्त इति निष्प्रपञ्चतत्त्व-
भावनायामुद्योजनाकूतेन करुणायितमिति॥

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

द्वादशः पटलः॥ १२॥

*

चितविशुद्धिर्नाम

पटलः त्रयोदशः

क्रमद्वयेऽपि तत्त्वमेव सर्वावरणमलविशुद्धिरित्याह। अथेत्यादि विशुद्धिः पटलमिति। विशुद्धं तत्त्वं विशुद्धिः। न तु तत्त्वमात्रं विशुद्धिः। तत्त्वस्य सर्वत्र सर्वदा च भावात्। सर्वेषां सर्वदा च विशुद्धिप्रसंगात्। तत्पुनरसुकरमुपायतत्त्व-मन्तरेण साक्षात्कर्तुमिति यथा तदुपायोपेतं वज्रयानाश्रयेण साक्षात्कर्तव्यं तद्वर्शयितुं महाप्रज्ञा^१माह। भगिनीत्यादि। यथारुतमधिमात्रस्य। अथवा भगिनी वज्रयान-समारूढा। तत्तनया भगिनेयी। अभिषेकदायिका जननी। दुहिता वत्सला स्थानाच्यवा। प्राज्ञो विशुद्धिज्ञानात्। महामुद्रामिति साक्षात्कर्तुम्। अनेनोपेय-तत्त्वमुक्तम्। डोम्बिनी ध्यानप्रिया। नर्तकी पटुप्रचारा। धोब्बिणी शुक्लधर्मरता। चण्डालिनी निहतमानत्वात् क्षमाशीला। त्रिवज्रशरीरशुभसंस्काररता चर्मकारिणी। आध्यात्मन्तु प्रज्ञा भगिनी ललना। भगिनेयी रसना। जननी अवधूती। पूर्वयोरुत्तर-योगुरूपदेशात्संयोगो दुहिता। तासामेव प्रज्ञोपायाद्वयस्वभावानां तिसृणां नाडीनां संयोगादुत्पद्यमानं महासुखं भार्या। तदुक्तम् तत्सुखं कामिनिस्मृतमिति। शब्दविज्ञानं डोम्बिनी। रसविज्ञाननर्तकी। स्पर्शविज्ञानं धोब्बिणी। घ्राणविज्ञानं चण्डालिनी। चक्षुर्विज्ञानं चर्मकारिणी। नीतार्थस्तु निरुत्तरप्रज्ञाभगिन्यादिका प्रथमपटले व्याख्याता। पुण्यज्ञानसम्भाराभ्यां ध्रियत इति भार्या। शून्यतैकरसत्त्वादागंतुभिः सर्वप्रपञ्चैरस्पृश्यत्वेन डोम्बिनी। भवनिर्वाणाप्रतिष्ठितत्वेन कुत्रचिदप्रतिष्ठिततया चञ्चलत्वाद्^२ विचित्रमायारूपनिर्माणैर्विनेयेषु नर्तनाञ्च नर्तकी। मृदुमृद्वाद्यधिग-मक्रमेणाधिमात्राधिमात्रादिसवासनावरणमलघातनाद् धोब्बिणी। चण्डा प्रज्ञा उत्पन्न-स्वरूपनिरूपणम्। आलिर्महाकरुणा। ते निरतिशयपदत्रयतीति चण्डालिनी। द्वादश-भवाङ्गानुगताविद्याचर्मपाटनाञ्चर्मकारिणीति निरुत्तरा प्रज्ञा बाह्यानामाध्यात्मिकानाञ्च

१. 'महाप्रज्ञा' नास्ति- भो०।

२. 'कुत्रचुदप्रतिष्ठत तथा चञ्चलत्वा' नास्ति- भो०।

प्रज्ञानामेतेषामेव निरुत्तरप्रज्ञागुणानामनुकरणात् प्रज्ञात्वमवगन्तव्यम्। अत एव वक्ष्यति अशुद्धचित्तशोधनादिति। एतेनोत्पन्नक्रमे बाह्यप्रज्ञा कर्ममुद्रा। अध्यात्मप्रज्ञा धर्ममुद्रा निरुत्तरप्रज्ञा महामुद्रा। अनयैव शुद्धिनिष्ठाधिष्ठितत्वाद्धर्ममुद्रा। धर्मकायो महासुखचित्तस्वभावत्वात्तस्य कर्ममुद्रा संपुटितं तु लक्षणव्यजनविराजितं वपुः संभोगकायः। निरवधि विचित्रानन्तमण्डलचक्राद्याकारनिर्माणं भव्यविनेयजनानुग्रह-बेलानतिक्रमणात् समयमुद्रा निर्माणकायश्च। महामुद्रा तु व्यापिनी स्वाभाविकः कायश्चतुर्थः। अथवा महामुद्रा लक्षणव्यञ्जनोज्ज्वलभुजमुखचिह्नयुक्तो रूपः संभोग-कायः। समयमुद्रा चित्तस्वभावः प्रत्यात्मवेद्यो धर्मकायः, समयो हि संबोधिः इति कृत्वा। धर्ममुद्रा धर्मसंभोगकायाधिष्ठानान्नानाकारा धर्मतत्त्वप्रकाशनवागात्मिका। कर्ममुद्रा कृत्यानुष्ठानरूपत्वान्नानानिर्माणैः कृत्यसंपादनान्निर्माणकायः। उत्पत्तिक्रमे तु बाह्यप्रज्ञैव भाविताभिमतदेवीरूपा कर्ममुद्रा। स्वाभाङ्गना ज्ञानमुद्रेत्यपरनामा। शरीरे भावितहूकासदिश्च धर्ममुद्रा। समयमुद्रा तु बीजादिनिष्पन्नमण्डलचक्रमिति देवताः स्फुरणसंग्रहणदिकारिण्यः चिन्हमपि स्वयं नायकदेवतामूर्तिः महामुद्रेति सूचितम्। आध्यात्मिकप्रज्ञामेवेन्द्रियक्लेशविषयरूपां वक्तुमाह अथेत्यादि। रसमिति रसना। मनमिति मनसोपलक्षितमिह कायेन्द्रियम्। भगिनी कथं भवेद् रूपमित्यादि-वक्ष्यमाणवचनाञ्चक्षुरादीनामुपलक्षणत्वेन रूपादिविषया अपि भगिन्यादिरूपा ज्ञेयाः। येनेति यद्रुपं तन्मोहेहेतुत्वान्मोहो रूपे सम्बन्धाद् द्वेषादिरपि। रागं रागोऽपि। मानम्मानोऽपि। ईर्ष्यापि। रूपादयो विषया मोहादिजनकत्वान्मोहादिव्यपदेश्या न तु तत्त्वतः इत्यर्थः। चित्तस्येति चित्तस्यैवामी अवस्थाविशेषाश्चक्षुर्मोहरूपादयः। चित्तञ्चाशुद्धमेव मोहादिमलैः। ततश्चक्षुरादयोप्यशुद्धा इत्यभिप्रायः। कथं तच्छेषं भगिन्यादिप्रज्ञात्वमुक्तमित्याह। तस्मादिति। ये मोहे ते विशुद्धा एव प्रज्ञाश्चित्त-विशुद्धिरेवैषां विशुद्धिस्तस्माच्चित्तं विशोधयेत्। क इत्याह महाप्रज्ञा इति महती प्रज्ञा महामुद्रा तद्भावकः। तयैव निखिलमलक्षालनात्।

अत एवाहात्यन्तयोगचेतस इति।

अतिक्रान्तभावाभावाद्यन्तप्रज्ञोपायाद्वयैकरसः। यद्येवं न भावयेत्तदा सिद्धिर्महामुद्रा-

सिद्धिर्न भवेत्। यदात्वादरेण निरंतरभावनया स्वसंविदितमहासुखमयी शुद्धिरेव भवेत् सिद्धिरिहैव मनुष्यजन्मनि।

क्षणमप्यन्यचेताः सत्र तिष्ठेत् सिद्धिकांक्षक इति।

भगवद्वचनादादरेण निरंतरभावनामयपुण्यज्ञानसंभारपरिपूरी त्वेकस्मिन्। एवंविधभावावैधुर्ये पुनर्भवान्तरे अनियतसंख्यजन्माष्टाक्षणविनिर्मुक्तमभ्यासानुकूलं लभते। ततोऽभ्यासाद् विशुध्यति पारमितानये तु क्रियामयपुण्यसंभारादुपाय-विशेषाभावाच्च त्रिभिः कल्पासंख्ययैर्विशुद्धिरुक्तेति न विरोधः। नन्विह न किञ्चिद् भाव्यमुपदिष्टमुत्पन्नरूपाणामेव मुद्रणान्निर्देशात्। योगिनाञ्च तद्द्वारेणैव तथा सूचनात्। सत्यं तत्त्वतो भाव्यभावकभावनानामनुपपत्तेरादिशान्तत्वात्सर्वधर्माणां तद्दर्शयति। अभाव इत्यादि अभावः भावाभावाध्यारोपनिषेधेऽनुत्पादे परमार्थसत्ये कथमेव भावो भावना आदिशुद्धत्वात्। नन्वनुत्पादस्तत्त्वमस्ति भाव्यमित्याह। कीदृशमभाव इति नास्त्यनुत्पादः। परमार्थाधिगमानुकूलत्वात् परमार्थस्तत्त्वमुच्यते। योऽपि संवृत्तिसत्यात्माभावः सोऽप्यभावो न भाव्यः सत्त्वत्वात्। सत्यद्वयादैधी-कारदर्शनमात्रेण मोक्षात्। भाव्यं भावको भावनेत्यभिनिवेशो युगनद्धक्रमाधिगतानां नास्तीति भावः।

तदुक्तं श्रीसमाजे^१।

अभावे भावनाभावो भावना नैव भावना ।

इति भावो न भावः स्याद् भावना नोपलभ्यत इति॥

अत एवोपसंहरति, कथं भवेदिति भावना अतो नोपलभ्यत इति भावः। तत् किमुत्पन्नक्रमे भावनाया उच्छेद एव? नोच्छेदः। तर्हि कीदृशी सा वक्ष्यते यादृशी सा। एवं परमार्थतो भाव्याद्यभिनिवेशं निराकृत्य रूपाद्यभिनिवेशं निराचिकीर्षुमाह

१. गुह्यसमाजतन्त्रम्, विनयतोष भट्टाचार्य, २.३ पृ०११, ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बडौदा, १९६७।

भगिनीत्यादि। कथं यतो गौरादिभेदभिन्नं रूपं संयुक्तमिन्द्रियेण परस्परपकार्योप-
कारकभावात्सम्बद्धं द्रक्ष्यत्यशुद्धचित्तः। न तु शुद्धचित्तः। परमार्थत इन्द्रियविषय-
तज्ज्ञानानां नैःस्वाभाव्यात् एवमुत्तरत्र। त्रिविधमिति। मनोज्ञमनोज्ञोदासीनभेदात्।
ईदृशयोगयुक्तस्येति। महामुद्रायोगयुक्तः। घ्रायत इति घ्राणङ्गन्धः। अदृश्यमानेत्य-
दृश्यमानमज्ञायमानम्। अत एव रागोद्वेषादिरपि न जायते गन्धादिभ्यः। स्वादरूप-
स्येति स्वादस्वरूपं नास्ति रसनारसयोरभावात्। मनेन मनसोपलक्षितेन कायेन्द्रियेण
सुखं स्पर्शविषयजम् उपलक्षणाद् दुःखमुपेक्षाञ्च भुङ्क्ते। तदपि कीदृशम्। मनइन्द्रियं
मानसं सुखमुपलक्षणत्वाद् दुःखम् हर्षम् विषादमुपेक्षाञ्च भुङ्क्ते। तदपि कीदृशमिति
सम्बन्धः। ननु कथं रूपादयः पञ्च विषयास्तद्विषयाणि पञ्च चक्षुरादीन्द्रियाणि
तद्विज्ञानानि च पञ्चप्रज्ञास्वरूपाणि व्यवस्थापितानि षष्ठाविषयेन्द्रियज्ञानानि। उच्यते।
मनइन्द्रियं चक्षुरादीन्द्रियवत्पृथङ्नास्ति। अनन्तरातीतमेव तु विज्ञानमुत्तरं यद्विज्ञानं
विशेषोत्पत्त्याधिपत्यान्मनइन्द्रियमुच्यते। तस्य विशेषश्चित्तचैतास्तद्विषयञ्च मनो-
विज्ञानम्। तत्राविकल्पकौ मनइन्द्रियतद्विषयौ पञ्चेन्द्रियज्ञानस्वभावौ। चैताश्च
चित्तेभ्यो नान्ये। तदुक्तं चित्तेभ्यश्चैतसा नान्य इति। विकल्पकौ तु मनोविज्ञान-
स्वभावौ। मनोविज्ञानन्तुच्छेदसन्धानवैराग्यहानिमृत्युत्पत्तयः। मनोविज्ञान एवेष्टा
इति। न्यायात् प्रधानत्वादुपभोक्तेति नोपकरणोपभोग्यम् प्रज्ञारूपं व्यवस्थापितम्।
निरुत्तरप्रज्ञात्वं तु प्राग्व्यस्थापितं मनोविज्ञानस्यास्त्येव। यदुक्तं मन इति। तदिह
निःशेषभावग्रामविचारप्रक्रमार्थम्। तथा ह्यनेन प्रवन्धेनाष्टादशधातव उक्ताः। त एव
समासाद् द्वादशायतनानि। अतिसंक्षेपात्पञ्चस्कन्धाः त्रैधातुकञ्च तत्र एव।

तच्च चित्तमात्रम्। तदुक्तं लङ्कावतारे^१:-

चित्तमात्रं भो जिनपुत्रा यदुत त्रैधातुकमिति ।

आर्यनागार्जुनपादैश्चोक्तं बोधिचित्तविवरणे^२:-

-
१. इदमुद्धरणं लङ्कावतारसूत्रे नोपलभ्यते, परं विज्ञप्तिमात्रतासिद्धौ (पृ० २) उपलभ्यते।
 २. बोधिचित्तविवरण, जलछेन नामडोल, पृ० १९, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, १९९१।

आत्मग्रहनिवृत्यर्थं स्कन्धधात्वादिदेशना ।

सापि ध्वस्ता महाभागैश्चित्तमात्रव्यवस्थयेति ॥ (श्लोक २५)

तच्च चित्तं सांवृतं तदुक्तं तत्रैव चित्तमात्रमिदं सर्वमिति या देशना मुनेः ।
उत्त्रास सपरिहारार्थं बालानां सा न तत्त्वत इति । कथमतात्त्विकं चित्तमित्याह ।
उभयविचारणादिति । भावाभावस्वरूपनिरूपणात् । तर्हि विचारकं चित्तं
पारमार्थिकमस्तीत्याह । विचारमिति । विचारयतीत्यत्र विचारं विचारकं विज्ञानं
तत्रोभयविचारणे सति न विद्यते ।

तदुक्तमर्थं शन्तिदेवपादैः :-

विचारिते विचार्ये तु विचारस्यास्ति नाश्रयः ।

निराश्रयत्वाद्बोदेति तच्च निर्वाणमुच्यते ॥

तथा

यदा न भावो नाभावो मतेः संतिष्ठते पुरः ।

तदान्यगत्यभावेन निरालम्बा प्रशाम्यतीति ॥

राजरत्नावल्याञ्चोक्तं^१ :-

विज्ञानाग्नेर्जगद्धर्माः सर्व एवेन्धनम्मताः ।

तान्यथावत् प्रविचयज्जलैर्दग्धोपशाम्यतीति ॥

कथमुभयं विचारणमित्याह । भाव इत्यादि । भावाभावयोः परस्परतादात्म्य-
नास्ति विरोधात् । भेदोऽस्तीत्याह । भावाभावोभयशून्यमिति । भावाभावस्वभावौ
शून्यौ चित्तस्यैकानेकस्वभावरहितत्वेन निःस्वभावत्वात् । तथा हि न तदेकम् ।
एकत्वे हि नीलपीतरूपतया चित्रावभासिनी संवित्तिर्न स्यात् । सकलस्य

१. बोधिचर्यावतार, प्रो० रामशंकर त्रिपाठी, ९.१११, ९.३५ के० बौ० वि० सं०, लेह-लदाख,
१९८९ ।

२. रत्नावली, परि० २.२० (मध्यमकमशास्त्रम्), मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा, १९८७ ।

पीतानीलान्तर्गतत्वेन प्रतीतिप्रसङ्गात्। नीलस्यापि पूर्वापरमध्यभेदेन स्थूलाव-
भासितया च प्रतीतिर्न स्यात्। दिग्भागभेदो यस्यास्ति तस्यैकत्वत्र युज्यत इति
न्यायात्। परमाणुमात्र एव प्रतिभासः स्यात्। नाप्यनेकं ज्ञानानेकत्वे हि चित्तस्य
परमाणुशो भेदात्। तदन्यसंवेदनाभावे च प्रतिपरमाणु स्वसंविज्ञाततया स एव
प्रतिपरमाणु प्रतिभासप्रसङ्गः। उभयरूपा न युज्यते तथाविधसंवेदनाभावात्। सर्वत्र
ह्यस्माकं दर्शनं प्रमाणम्। न चानुगतव्यावृत्तिरूपां सह पृथग्वा प्रत्यक्षां संवित्तिमुप-
लभामहे। अनुमानात्मिकां वा तस्यास्तत्पूर्वकत्वात्। अनुपलम्भमानाश्च कथम-
प्रमाणामनुगतव्यावृत्तिरूपतां परिकल्पयामः। अथ चित्रतया स्थूलाकारा स्वसंविद्रूपा
संवित्तिरितीयमुपपत्तिस्तावदस्ति। सा चानुगतव्यावृत्तिरूपतां विना न स्यादिति सा
तद्भावान्यथानुपपत्त्या परिकल्प्यते। तन्नास्त्यनुभयरूपयैव निष्प्रपञ्चतया स्फुटतर-
मुपपत्तेरर्थार्पितिक्षयात्। अत एवोत्पादोऽपि न युज्यते। कार्यकारणभावे प्रमाणा-
भावात्। पौर्वापर्येण हि प्रमाणप्रवृत्तौ कार्यकारणभावव्यवस्था। न वाकारद्वय-
विविक्तमद्वयसंवेदनं पौर्वापर्यप्रवृत्तिमत् न तदपरमपि संवेदनमस्ति प्रमाणा-
भावादिति प्रतिपादितम्। यदा चैवं कार्यकारणभावे प्रमाणाभावादुत्पाद एव नास्ति
तदा कुतः स्वतः परत उभयतोऽहेतुतो वेति। तदेवमुत्पादाभावाच्चित्तस्य भाव-
रूपताऽपि नास्ति। भवतीति हि भावोऽसत्तापूर्वके प्रादुर्भावे एव व्यवस्थाप्यते।
अत एव तत् प्रच्युतिरूपाभावरूपताऽपि नास्ति। भावाभावस्वभावाभावाच्च
सर्वप्रपञ्चाभावः। तेषां भावाभावाधिष्ठानतया ताभ्यां व्याप्तत्वात्। व्यापकाभावे च
व्याप्यस्याप्यभावात्। ततोऽनेन विचारेण निष्प्रपञ्चता शून्यभावा गम्यते। इदमेवं च
तत्त्वदर्शनम्। यत् प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयतः सम्यग्ज्ञानालोके सति सर्वधर्माणाम-
दर्शनमिति। यथोक्तं भगवत्यां। कतमद् बुद्धानां भगवतां ज्ञानचक्षुर्येन न किञ्चित्
पश्यन्ति। तथा कतमत् परमार्थदर्शनं यत्सर्वधर्माणां अदर्शनमिति। ततस्तत्त्व-
योगिनोऽपि सर्वे चर्यापथव्यवस्थिताः सर्वधर्माधर्मान्पश्यन्तोऽपि न पश्यन्ति।
ईदृगेवाददर्शनमभिप्रेतम्। न तु सुप्तनिमीलितलोचनयोरिव यदमनसिकारतः। एवं हि
वासनाया अप्राहणादसंज्ञिसमापत्त्यादिव्युत्थितस्येव पुनरपि रूपाद्यभिनिवेशमूलानां
रागादीनामुत्पत्तेरमुक्त एव योगी भवेत्। न चानादिकालिको रूपाद्यभिनिवेशो

मनसिकारपरिवर्जनमात्रात् प्रहीयते। असंज्ञिसमापन्नादेरपि प्रहाणप्रसंगात्। न वा रूपादिविषयसंशयप्रहाणं विना तन्मनसिकारपरिवर्जनमपि शक्यम्। दहनापरिवर्जने दाहापरिवर्जनवत्। तस्मात्संशयबीजापगमादेव रूपाद्यभिनिवेशोपनेतव्यो न तु कण्टकवदुत्कील्येति निश्चयः। तदेवं भावाभावस्वभावपरभावादिमनस्कारतिर-
स्कारेण सर्वतो मनः संहृत्य न किञ्चिदपि चिन्तयेत्। तस्यैवमचिन्तयतः पूर्वमेव चिरकालपर्युपासितगुरोर्योगिनो या गुरुप्रसादाधिगतैव भगवती प्रज्ञोत्पद्यते। समुपरतप्रमाणप्रमेयफलविभागतया स्वप्रकाशस्वभावा निष्प्रपञ्चता च प्रपञ्चात्मक-
संसारस्वभावदुःखौघविगमात् परमानन्दस्वरूपतामदर्शनयोगेन साक्षादवेत्य तत् प्रभावादहोवत मोहस्य सामर्थ्यं येनैते सत्त्वा निर्वाणस्वभावमप्यात्मानन्नावबुध्यन्ते कथं नामैतान् च बोधयेयमिति विचिन्त्य तदात्मकमेव सकलं जगदालम्ब्य
नालम्बनस्वरूपमहाकरुणोत्पद्यते। तदात्मकमेवोत्पन्नमण्डलरूपमात्मानं सर्वभाव-
स्वभावं महाकरुणात्मकं भगवत्या प्रज्ञया महामुद्रापरनामिकया तदात्मकत्वादभिन्न-
स्वभावं पश्येत। तदा शून्यताकरुणयोस्तादात्म्यं स च निर्विकल्पो योगः।

स एव।

प्रत्याहारस्तथा ध्यानं प्राणायामश्च धारणा ।

अनुस्मृतिः समाधिश्च षडङ्गयोग इष्यत इति ॥^१

समाजोत्तरोक्तः षडङ्गो योगः। तथा हि कुमार्याः प्रतिसेनादर्शनमिवेन्द्रियाणां शून्यतैकरसस्वविषयग्रहणं प्रत्याहारः। ततो ध्यानम्। तत्त्ववितर्कोऽभावनिरूपणं विचारो भावस्य शून्यतास्वरूपत्वविचारणं एवं विचारयतस्तत्त्वप्रवेशाभिमुखेन यत्सौमनस्यं सा प्रीतिः। ततः कायप्रस्रब्ध्यादिमहासुखम्। एवमभ्यस्य सर्वधर्म-
शून्यतैकनिष्ठा प्रज्ञात्मिका चित्तैकाग्रतेति पञ्चविधम्। ततो ललनारसनयोर्निरुद्ध-
स्यावधूतीमार्गेणैव प्रवेशस्थितिर्व्युत्थानात्मिका प्राणवायोः प्रवृत्तिः प्राणायामः।

१. गुह्यसमाजतन्त्रम्, विनयतोष भट्टाचार्य, १८.१४०, ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बडौदा, १९६७।

ततोऽवधूत्या बहिरनिर्गमो बोधिचित्तविन्दौ चित्तवाहनप्राणवायोन्निवेशनं शून्यतैकरसं धारणा। तदा च चण्डाली निसर्गतो ज्वलति शशी च तदुद्दीपितः सुतरां स्रवति। तदा वज्रमण्यन्तर्गतमच्युतं बोधिचित्तं क्रमेण निष्यन्दादिसुखपूर्णवैमल्यं यावदेष्यति, ततो धारणाप्रविष्टे चित्ते निमित्तप्रतिभासपूर्वकमुत्पन्नमण्डलदेवतादर्शनं प्रतिबिम्बाकारं निर्विकल्पकं ततोऽनेकरश्मिस्फरणं ततस्त्रैधातुकस्फुरणमित्यनुस्मृतिः। ततः स एव निर्विकल्पो योगाक्षरमहासुखमययुगनद्धात्मकज्ञानदेहमहावज्रधरस्वभावः समाधिरिति। एवञ्च योगी यद् निष्प्रपञ्चप्रज्ञोपाययोगात्मा तदा सर्वपुण्यमयः सर्वज्ञानमयः समस्तमाण्डलेयदेवतात्मकः सकलपारमितानयश्च नाथैर्व्यवस्थाप्यते।

तदुक्तं ।

अयं स परमो योगः सर्वसंकल्पवर्जितः ।

योगी यत्र स्थितः साक्षात्सर्वज्ञो भगवान्भवेत् ॥

इदं तत्परमं तत्त्वं प्रज्ञोपायमयं शिवम् ।

इदमेवाद्वयं ज्ञानं बोधिचित्तमिदं परमिति ॥

उक्तमार्यनागार्जुनपादैः^१ ।

यः पुमान् क्षणमप्येकं बोधिचित्तं प्रभावयेत् ।

अशक्या गणितुं तस्य पुण्यराशिरियानिति ॥

चित्तरत्नवराक्लेशमणिमात्रकमुच्यते ।

असंहार्यमनाहार्यं क्लेशमारादितस्करैरिति ॥

सर्वमेतदभिप्रेत्याह एते चित्तस्य शुद्धतेति। एते एषा। अत एव महासुखरूपाया वज्रधरभूमेरत्रैव प्रतिपादनात्पारमितानयादस्य विशेषः। ननु साऽद्वयज्ञानरूपैव तत्कोऽस्य विशेषः। अस्ति विशेषस्ताद्रूप्यप्रतिपादनमेव। यथा

१. बोधिचित्तविवरण, पृ० ६८, के० उ० ति० शि० सं०, सारनाथ, वाराणसी, १९९१।

वस्तुतः शून्यतैकरसानां बलवैशारद्यादीनां श्रावकनये प्रतिपादितानामपि शून्यतया अप्रति-पादनात्। पारमितानये च प्रतिपादनात् महान् विशेषो गीयते। ननु च प्रथम-ध्यानलाभिनोपि चक्रवर्तिन इव सुखमुपदिश्यते किं पुनरुभयनैरात्म्यप्रतिवेधे। तथाहि प्रमोदोद्रेकादेव प्रथमा भूमिः प्रमुदितोच्यते। सत्यत्र त्वेतत् सहजं सुखम्। अत एव न महासुखम्। न चोपायकृतमादिकर्मिकावस्थायाम्। न हि सूचिच्छिद्रं-छिद्रमित्येवाकाशेनापि साम्यमनुभवति। ननूक्तं प्रज्ञापारमितायांयञ्चानुत्तरं सम्यक्सं-बोधिसुखमिति। उक्तमेतत्। न त्वस्योपायोदर्शितः। उपायभूतसहजमहा-सुखानुप-देशात्। तस्मात्तदप्यनेनैव क्रमेण बोद्धव्यम्। तत् किं पारमितानये न बोधिः। नैव प्रज्ञापारमितया विना कुतोऽनुत्तरायाः सम्यक्संबोधगन्धोऽपि। परं चतुःपर्यन्तेप्य-वश्यमेतदुपायमपेक्षत इत्युच्यते। इत्यलमिति विस्तरेण विदितोपदे-शैरेवैष विशेषः परिस्फुटं विज्ञास्यते। महासुखसाधनत्वेन प्रधानं स्पर्शविषयं तदिन्द्रियं तज्ज्ञानञ्च करुणादिरूपं पञ्चप्रज्ञारूपञ्च प्रतिपादयितुमाह। अत इत्यादि। बाह्यप्रज्ञायाः कायस्य विषयस्य तद्योगादाध्यात्मिकायज्ञानयोश्च शोधनात्। यद् भवति तद्वक्ष्यामि। दृष्टियुक्तमिति दृष्टा वराङ्गना करुणा दुःखवियोगः, आलिङ्गिता मैत्रीसुखसंयोगः। द्वीन्द्रियसंघर्षणान्मुदिता सुखावियोगः बोधिचित्तकारणादुपेक्षा सर्व-विकल्पविरहः। एवमाध्यात्मिकायज्ञाने करुणादिरूपे। एवं भावयोगयुक्तस्येति। करुणादिरूप-महामुद्रायुक्तो न रागादिभिर्बध्यते। विना तु महामुद्रायोगं बाध्यते जगदित्याह। दर्शनादित्यादि। किञ्चिदधिकं तत् फलम्। सर्वशेषतः करणात्। एवं हर्षविषाद-फलमुक्तमुत्पन्नं त्रैधातुकं शून्यतया विना करुणादयोऽपि न मुक्तिहेतव इति भावः। उपसंहरति। संशुद्धेत्यादि। त्रयं वस्त्विति विषयेन्द्रियविज्ञानैः।

एवमभ्यासपरस्य यथामिलिताऽहारसंस्कारमाह- यदीत्यादि ।

विट्मूत्रादिपञ्चामृतप्रदीपमयममृतं परिकल्पयेत्, न केवलं तद्रतिब्रीडादिकं च, महामुद्रापि महामुद्रारूपं द्रष्टव्यम्। ईदृग्भावनायुक्तः सिध्यते। कथमित्याह। पंचेति भगिन्यादियोगिन्यः। लक्ष्मीर्महामुद्रा प्रदायकीति स्वपरार्थसम्पल्लक्षणा लक्ष्मीर्महामुद्रैव तां प्रददति पूजिताः। अत आह पूजयेदिति। कथमित्याह-कामते।

नन्वासां परमपूजा कामनमेव, स च दोषः? न दोषः। यतो न लिप्यते । ननु कामनमेव लेपः न, यस्माल्लेप उच्यते ईर्ष्यादिभिर्योगस्तस्य योगिनः। तैश्चेर्ष्यादिदोषै-
रसौ न बाध्यते। ननु कथमीदृशी पूजा श्रेयोऽनुबन्धिनी। समारोपविशेषात्। द्विविधो
हि समारोपस्तत्त्वरूपोऽतत्त्वरूपश्च। तत्र तत्त्वरूपात्मसमारोपस्य मात्रादिसमा-
रोपवत्पारम्पर्येण बोधिसाधनत्वाददोषः। ननु केषाञ्चिदनुभवस्यापि निषिद्धत्वाद्विरोधः
स्यात्? न, द्विविधं हि कर्म समुत्थाप्योत्थापकभेदेन। तत्र सर्वकायवाक्कर्म
समुत्थाप्यम्। मानसं तु समुत्थापकम्। तच्च द्विविधम्। अलोभादिरूपं तदितरच्च।
तत्र लोभादिसमुत्थितं सर्वकायवाक्कर्माकुशलम्। तच्च प्रतिषिद्धम्। अलोभादि-
समुत्थितं तु सर्वं कुशलमेव। महामुद्राद्वययोगयुक्तश्च योगी सकलमलोभाद्यात्मिकं
जगदवलोकयति। ततोऽसौ सर्वचर्यापथसंयुतोप्यकुशलानुपलम्भरूपत्वात् कुशला-
त्मैवेत्याह। स योगीत्यादि। तत्त्वं महामुद्रास्वभावः। अतः संसारदौर्षेर्न लिप्यते।
तस्मात्प्रज्ञोपायस्वभावाद्वयबोधिचित्तभावनैव सर्वपापविशोधनी सर्वश्रेयस्करी च ।

तदुक्तम् आर्यनागार्जुनपादैः-

महायानमिदं श्रेष्ठं बोधिचित्तमिदं परम् ।

उत्पादयन्तु यत्नेन बोधिचित्तं समाहिताः ॥

नान्योपायोऽस्ति संसारे स्वपरार्थप्रसिद्धये ।

बोधिचित्तादृते बुद्धैर्दृष्टपूर्वः कदाचनेति ॥

एवञ्च विज्ञातव्यम्।

अयं स परमो योगस्तस्माद्वन्द्यस्तथागतैः ।

ततः प्रसूतिर्योगानामनन्तानां प्रकीर्तिता ॥

तस्मादेव समाधीनामनन्तानां समुद्भवः ।

मुद्रामण्डलमन्त्राणां ततो योगद्विशुद्धता ॥

शांतिकं पौष्टिकं कर्म यदन्यदपि मन्त्रजम् ।
जाह्नवीबालुकासंख्या यावत्यः क्षुद्रसिद्धयः ॥

मुद्रासिद्धय एवान्या यावत्यो भूमि(वि) विश्रुताः ।
कथितश्चित्तवज्रेण एतद्योगसमुत्थिताः ॥

यच्च निर्वेधभागीयं चतुर्द्धा भूमयो दश ।
फलावस्था च सर्वं तद्योगादस्मात्समुत्थितम् ॥

भूता ये च भविष्यन्ति भवन्ति जिनसूनवः ।
लोकेशाद्या महासत्त्वास्तेऽप्यत्रैव व्यवस्थिताः ॥

अतीतानागता बुद्धा वर्तमाना मताश्च ये ।
खड्गश्रावकसंघाश्च ते यस्मात् प्रभविष्णवः(विस्तरः) ॥

योगचर्याक्रियाभेदाद्यावन्निवारणसम्भवः ।
भावन्तं सर्व एतस्माद्योगादेव विनिर्गताः ॥

परिकल्पितरूपाश्च वासनाबलभाविनः ।
यावन्तः स्थिरबलाभावास्तावन्तस्तत्समाश्रयाः ॥ इति ।

पञ्चकामान्विना नीरसैव शून्यता स्यादित्याह । यावत्यादि । यावन्न विषय-
रसैः परिपाल्यते बोधिचित्ताङ्कुरस्तावन्न बुद्धकाय^१कल्पतरुः प्रादुर्भवति । जलसेक-
रहिताङ्कुरात्तरुसम्पत्तिरिव ।

तदुक्तं सरहपादै :-

तदनुतरचित्ताङ्कुरुको विषयरसैर्यदि न सिच्यते शुद्धैः ।

गगनव्यापी फलदः कल्पतरुत्वं कथं लभत ॥ इति ॥

पण्डिताभयकरगुप्तकृत्यामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

*

मन्त्रजापःप्रज्ञामातुरध्येषणाख्यः सर्वतन्त्रनिदानात्मकः

पटलः चतुर्दशः

अभिमतनिरुत्तरार्थदेशनया संजातप्रसादातिशया यथा स्तुवन्ति तद्दर्शयितुमाह अथेत्यादि महासुखविक्रीडनाद् देवी। जननी मार्गरूपा। लक्ष्मीरधिगमप्रहाण-संपत्फलरूपा। अगोत्रकाणां उत्त्रासस्थानत्वात् घोरा। महायशा विश्रुतकीर्तिः। मैत्रीमयत्वाद्वत्सला। मण्डलचक्राद्यनन्तर्द्विविकुर्वणा देवी। महाकृपामहाप्रज्ञा-भ्यामभिन्नत्वात् महामुद्रा स्वार्थसम्पत्। महार्थफलदेशिका, महार्थो वज्रधरत्वं तदेव परमं फलं मार्गाभ्यासस्य तद्विनेयेभ्यो देशयतीति परार्थसम्पत्त्या स्तुवन्ति। देशनाविशेषद्वारेणैव स्तुवन्ति। बुद्धेत्यादि बुद्धैर्वैरोचनादिभिः। येषामिति या सिद्धिः बोधिसत्त्वानाञ्च अगोचरः। देवीति देव्या। एकरुतेनेति न तु प्रथमं दुर्बोधमभिधाय वचनान्तरैः प्रकटिता। महाभाजना महतीनां लौकिकलोकोत्तरसिद्धीनां भाजनम्। सर्वेति चतुर्विंशतियोगिनीस्वरूपा। ये ते या सा सिद्धिः। आह चित्रसेना अयमित्यस्या बुद्धगुणा बलवैशारद्यादयस्तेऽपि मां क्षाम्यन्तु यतस्तेषां हेतुफला-त्मको जिनवरैर्विनेयेषु गोपितः। सुदूर्लभोऽर्थः, सुगूढगोचरोऽस्मिंस्तन्त्रे मया प्रकटी-कृतः। सर्वमपि जिनवरैः प्रकटीकृतः। अतः सम्मुखेन तैरेव कृता देशनेयमिति भावः। ममापि च विपरीतदेशनापराधाध्यारोपाद क्षमा न कर्तव्येत्याह। क्षमा तु क्षाम्यन्तु जिनवरा इति विभक्तिविपरिणामः। सर्वतन्त्रमुक्त्वाऽभिषिक्तानामे-वात्राधिकार इति दर्शयितुं पर्यन्तेऽभिषेकविधिमाह। अथेत्यादि। अध्येते। गुह्यप्रज्ञा-ज्ञानाभिषेकार्थम्। महादेवीति महादेवी। छिन्नेति त्वया। छिन्नेति पाठे व्यापिका-मपि। तस्येति। तस्याः किमेवं प्रज्ञातोषणे यत्न इत्याह। सर्वबुद्धैः पूजिता। हेतुफलावस्थायाः^१ कर्ममुद्रायोगेनैव हि महामुद्रासिद्धिरित्याम्नायः। कथमेवमित्याह। अत्रैव प्रज्ञायां स्थिता ब्रह्मादयः^२। ते हि महासुखस्वभावास्तदाश्रयश्च प्रज्ञा। तस्या

१. स्थयोः- ख०।

२. बुद्धादयः- भो०।

यथाविधि प्रज्ञाज्ञानाभिषेकं गृहणीयात् । अत एव प्रज्ञाज्ञानस्य स्वरूपं प्रतिपादयति ।
इन्द्रित्यादि । इन्द्रियमुपलक्षणा-द्विषयादिश्च । अप्ये आत्मा चित्तम् । चित्तमात्मेति
कल्पितमिति वचनात् । अथवाऽत्मप्रज्ञप्तिविषयाः पञ्चोपादानस्कन्धा आत्मा ।
सर्वमिदमस्वभावं यत्र नोपलभ्यते । सा परमानन्दा । परमानन्दोऽत्र सहजानन्द एव
प्रज्ञा ज्ञानापरनामा । इन्द्रियाद्यध्यारोपविगमात् ।

तदुक्तं द्विकल्पे तन्त्रे-

परमानन्दे तु संप्राप्ते नानात्ववर्जिते क्षणे ।।^१ इति ।

उदयक्रमेणैवास्य संप्राप्तिः प्रतिपत्तव्या । स च प्रथमपटले निरूपितः ।
परमानन्दमेव हेतुत्वेन नमस्यति । तस्यामित्यादि । यदुदयेन यस्य सहजानन्दस्यो-
दयेन । फलतया नमति । यश्चाभ्यासाद् निर्वेधभागीयाद्यधिगमक्रमेणाभिनन्दा
समन्ततोऽभिज्ञा बलवैशारद्यादिनिरतिशयगुणरत्नैः समृद्धा जिनानान्निखिलक्लेश-
कलङ्कापगमात् सुन्दरी समन्तभद्रा परमप्रीतिः वसति मूर्तिश्चतुर्थः कायो वज्रधरः ।
पण्डितानां सम्यक्संबुद्धानां हृदि तादात्म्येन सकलविकल्पविक्षेपप्रतिक्षेपाभिभूतं
कोप्यवाग्बुद्धिगोचरः । अतएवैनमधिगम्य चित्रसेनादीनां तूष्णीभावेन व्यवस्थानं
वक्ष्यति । एकोऽद्वयः परमानन्दः सर्वावरणवासनावशेषनिद्राविरहात् जागर्ति । तस्मै
नमः । तदनेन श्लोकेन तदेव प्रज्ञाज्ञानं रूपविशेषेण जलमिव तरङ्गरूपेणोत्पन्नं
चतुर्थोभिषेक इत्युक्तम् । स पुनरयं महासुखमयो वज्रधरः सर्वतन्त्रनिदानमिति ।

पण्डिताभयाकरगुप्तकृतायामभयपद्धत्यां श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीकायां

चतुर्दशः पटलः समाप्तः ।। १४ ।।

*

श्रीमद्धेरुकवीरवर्त्म विवृतेरुच्चैरुदञ्चच्छुभा-
 च्छित्वा संसृतिनिर्वृतिभ्रममसौ तन्मण्डले मीलतु ।
 लोकोऽहं तु मुनेरमुष्य बिभृयां मूर्तीरनन्ताः प्रति-
 प्राणिप्रह्वमदभ्रशर्म विदधद्ध्वस्तप्रपञ्चश्चिरम् ॥

सूरिर्विक्रमशीलस्याभयो मर्मस्पृशं गिराम् ।
 राज्याब्दे रामपालस्य पञ्चविंशोऽकरोदिमाम् ॥

त्रिभवविजयलक्ष्मीक्षमाभिरक्षीणमूर्त्या
 जगदतनुहितायाद्वैतधर्मोजितस्य ।
 मगधपतिसुतश्रीयक्षपालस्य धाम्नां
 धृतिपरिणतये तत्प्रार्थनाद् ग्रन्थितेयम् ॥

जीयादानन्दकन्दाद्वयपरमरसोल्लासविश्रामभूमि-
 विक्रीडद्वज्रकन्याकलिलमुनिघनव्यूहसोपानपंक्तिम् ।
 प्रज्ञाश्रीर्यद्विहार्यामीयमकृतकृतार्थार्थिसङ्कल्पवल्या-
 मस्याश्चास्माकवृत्त्यास्त्वसमशुभसुधापूरयार्थेय तृप्तिम् ॥

इति श्रीबुद्धकपालमहातन्त्रटीका अभयपद्धतिः समाप्ता ।
 कृतिः पण्डितस्थविराभयाकरगुप्तपादानामिति ॥

सपादषोडशश्लोकशतीसंपिण्डिता प्रमा ।
 पण्डितैर्मण्डनायास्याः प्रमेव हृदि वास्तवी ॥ इति ।

༡༡། །དཔལ་སངས་ཀུས་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་
རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་
ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

མེའུ་མེའུ་མེའུ་

དོན་གཅིག་ན་ཡང་མ་ཚོངས་དང་།

ཐབས་མང་དཀའ་བ་མེད་པ་དང་།

དབང་པོ་རྣམ་པོའི་དབང་བྱས་པས།

སྤགས་ཀྱི་བསྐྱོན་བཅོས་ཁྱད་པར་འཕགས།

(ཚུལ་གསུམ་རྒྱུན་མ།)

དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་དང་ཡེ་ཤེས་གཏན་ལ་དབབ་པ་དང་ ཐོད་པ་ཁ་ཐུ་བ་ལས་སྒྲེག་བམ་བྱུང་བའི་ལེའུ།

༡༡༡། །ཀྱ་གར་སྐད་དུ། སྤྱུ་རྒྱུ་¹ཀུལ་མདུ་ཏུ་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟ་ལ་པད་ཏིན་མ།
 ཐོད་སྐད་དུ། དཔལ་སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་
 འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་ཞེས་བྱ་བ།²

དཔལ་དོ་རྩེ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཆོལ་ལོ།

བསྐྱལ་པའི་མཐར་ཐུག་མཆོག་ཏུ་དུལ་བ་ཆེན་པོར་འཕྲོ་བ་དཔག་མེད་
 འགྲོ་བའི་ཡུམ་དང་རོལ་དཔལ་³ཅན། །
 ལྷ་ཆོགས་སྡེ་མ་དང་འདུས་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བའི་མཆོག་ཏུ་དགའ་བའི་སྐྱ་ཅན་
 སྤྱིད་པའི་དགྲ་པོ་⁴ནི། །
 རྩོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཕུན་ཆོགས་ལྷན་ཅིག་སྦྱེས་པའི་བདེ་བའི་རོལ་
 རོལ་པ་སྤྱིང་ལ་འདུག་པ་ཡིས། །
 སྤྱིད་པ་དམ་པས་བསྐྱོམ་བྱ་དེ་ཕྱིར་འཛིགས་པ་མེད་པ་འདི་ཡི་⁵ལྟར་
 གསང་མེད་འདི་བརྟན་⁶པར་བྱེད། །

དོ་རྩེ་ལྷ་མོས་གནང་བ་ནམས། །

མི་ལམ་དུ་ནི་ཐོས་ལས་དང་⁷། །

1 བུ་རྒྱུ་ རྩེ། ཞོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

2 དཔལ་སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་དགའ་འགྲེལ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས། བེ། ལྷ།

3 པ་ རྩེ། ཞོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

4 འགྲོ་བ་ རྩེ། ཞོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

5 འདི་འདིའི་ལམ་འདི་ བེ། ལྷ།

6 བརྟན་ རྩེ། ཞོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

7 ལའང་ རྩེ། ཞོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

དེས་བྱིན་བརྒྱབས་ལས་འཛིགས་མེད་ནི།

སངས་རྒྱལ་ཐོད་འདིར་འགྲེལ་པ་བྱེད།

ངེས་པར་བདག་ནི་དོ་རྩེ་ཅན།

དང་པོའི་མགོན་པོ་དེས་བྱིན་བརྒྱབས།

གང་ཕྱིར་དེས་གསུངས་ཆོག་རྣམས་ནི།

རང་དོན་རྣ་བར་སྒྲུབ་པ་བཞིན།

དགའ་བ་བརྟེན་པའི་སྐྱེ་པོ་དམ་པ་ལེགས་པ་རྣམས་ནི་གཙང་དང་དགའ་བ་སྟེ།

དེ་ཡིད་རྒྱ་རོལ་མཐོང་བ་ངན་པར་འགྲོ་ཞིང་དོན་རིང་སྲིད་པར་འཇུག་པ་རྣམས།

འཛིཌ་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་ལས་ནི་ཆོས་ཀྱི་¹གནས་མཆོག་ཅི་ཡང་འཆར་བྱེད་ཅིང་།

བཟོད་པར་བྱེད་ཅིང་དབུ་མར་གནས་ལས་མཉམ་མེད་ཕུན་ཆོགས་རེག་པར་བྱེད།

སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ལེའུ་བརྒྱ་བཞིའི་བདག་ནི་དེ་ཅན་འདིའི་སྟོན་པ་པོ་
དང་བརྗོད་བྱ་ནི་བཅོམ་ཅན་འདས་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའོ། །དེ་ལྟར་ཡང་བརྟེན་པར་
བྱ་བ་དང་སྟོན་པ་པོའི་འབྲེལ་²བ་དང་། རྗོད་པར་བྱེད་པ་དང་བརྗོད་པར་བྱ་བའི་
འབྲེལ་པ་བརྗོད་དོ། །གདུལ་བྱ་རྣམས་ཀྱིས་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་དོན་རྟོགས་པ་ནི་
དགོས་པའོ། །དོ་རྩེ་ལྟ་བུ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་དང་རོ་གཅིག་པ་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་ལ་ཕན་
པར་བྱེད་པ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ནི་དགོས་པའི་དགོས་པའོ། །དེ་ལ་འདི་སྐད་
བདག་གིས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ནས་གྱུར་ཉོ་ཞེས་པའི་མཐར་ཐུག་པའི་དང་པོར་སྐྱེང་
གཞི་སྟེ། འདི་ཡིད་པ་ན་སྟོན་³པ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དུས་དང་ཡུལ་དང་སྟོན་པ་པོ་
དང་འཁོར་རྣམས་ཆོགས་པ་ནི་སྟོན་པའི་སྐྱེང་གཞི་སྟེ། འདི་མེད་ན་སྟོན་པ་མི་འཐད་

1 ཀྱི་ པེ། སྤྱི་ དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

2 འབྲེལ་ པེ།

3 སྟོང་ སྟེ། ཐོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཞེད་ཡིད།

པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་འདི་སྐད་བདག་གིས་ཞེས་པས་འདི་འོ་ཆོས་བསྐྱབ་པར་བྱ་ཞིང་། དེ་
བཞིན་དུ་གོ་རིམས་སུ་རྟོགས་པར་བྱས་ནས་ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཆོས་ཡང་
དག་པར་སྤྱད་པའི་མདོར་གསུངས་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་སྤྱད་པ་པོས་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་
བསྐྱབ་སོ། །འདིར་སྤྱད་པ་པོ་སུ་ཡིན། མིང་ངེས་པར་འདི་²ཅི་ཞེ་ན། བཅོམ་ལྡན་
འདས་ཀྱིས་བཀའ་གནང་བ་ཁོ་ན་དེས་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་འདིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཁོ་
ནའི་གསུང་ཡིན་ནོ། །ཡང་འདི་ལ་རྒྱུད་གཏད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་ན་རྟོ་རྟོ་ཞེས་
གསུངས་སོ།³ །དེ་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱ་བ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་རྒྱུད་ཀྱི་དོན་མཐའ་དག་འདི་
སྐད་ཅེས་པའི་ཆོག་ཐུང་འདིས་གསལ་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་འདི་སྐད་ཀྱི་ཡི་གེ་འདི་
ནི་རྒྱུད་ཀྱི་དོན་མཐའ་དག་གི་དོན་དང་ལྡན་པ་རྟོགས་པར་བྱའོ། །རྒྱུད་ཀྱི་དོན་ཡང་
ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱིས་ཡི་གེ་གཉིས་ཀྱི་ཡན་ལག་གི་ངོ་བོ་གནས་
སོ་ཞེས་འདོམས་སོ།⁶ །བདག་གིས་ཞེས་པ་སྤྱད་པ་པོ་བདག་གིས་སོ། །ཐོས་པ་ཞེས་
པ་ནི་ན་བའི་རྣམ་ཤེས་ཀྱི་ཆོག་འབྲུ་དང་། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་ཤེས་ཀྱི་དོན་རྟོགས་ཀྱི། འདི་
བདག་གིས་མཛོད་སུམ་དུ་བྱས་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཁོ་ནས་ཆོས་
འདི་ལ་ཐམས་ཅད་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་ཆོས་ལ་གུས་པར་སྟོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་སྤྱིར་
བསྟན་ནས་ཁྱད་པར་དུ་སྒྲེང་གཞི་དེ་རིམ་གྱིས་སྟོན་པ། དུས་གཅིག་ན་ཞེས་པ་ལ་
སོགས་པ་སྟེ། གཅིག་ནི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་དུ་མས་བསྐྱུན་པ་ཆོས་
དང་རྒྱ་སྐར་ལ་སོགས་པས་གཅད་ཏེ་དུ་མེད་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་དུས་ཁྱད་པར་
འགའ་ཞིག་གོ། དེ་ཡང་འདིར་སྐད་ཅིག་བཞི་པའི་ངོ་བོ་དུས་ཞེས་བཤད་དོ། །དུས་

1 པ་ བེ། ལྷ།

2 པ་འདིས་ བེ། ལྷ།

3 གསུང་ངོ་ བེ། ལྷ།

4 དེས་ན་ བེ། ལྷ།

5 པར་ བེ། ལྷ།

6 འདོམས་ ལྷ།

7 གི་ བེ། ལྷ།

8 བཅད་ བེ། ལྷ།

གཅིག་པོ་དེ་ནི་¹བཅོམ་ལྷན་འདས་བཞུགས་པ་རྣམས་སུ་གྱུར་ཏོ་ཞེས་པའི་ཆོག་
བསྐྱར་²བས་བཞུགས་པར་གྱུར་ཏོ་ཞེས་འབྲེལ་ཏོ། །འདི་ལ་རྒྱ་གཡོང་དོ་ཞེས་པ་
བཅོམ་ལྷན་འདས་³ཏེ། དེ་ཡང་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པའི་ཡིན་ཏན་རྣམས་སོ།

དེ་གསུངས་པ།

དབང་ཕྱུག་གཟུགས་དང་⁴གྲགས་པ་དང་།

དཔལ་དང་ཡེ་ཤེས་བཅོན་འགྲུས་རྣམས།

ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་དྲུག་རྣམས་ནི།

སྐལ་པ་ཞེས་ནི་བཤད་པ་ཡིན། ཞེས་བྱའོ།

ཡང་ན་བདུད་བཞི་རྣམས་བཅོམ་པས་ན་བཅོམ་ལྷན་ནོ། །ཡང་ན་ཆོས་ཐམས་
ཅད་ངེས་པར་རྟོག་⁶པ་ཉོན་མོངས་པའི་བདུད་ལ་སོགས་པ་ངེས་པར་⁷སེལ་བའི་ཤེས་
རབ་ནི་བཅོམ་པ་སྟེ། དེ་འདི་ལ་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་ཡོད་དོ་ཞེས་པས་བཅོམ་ལྷན་ནོ།

དེ་རྟོ་རྟེ་རྟེ་མོའི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པ།

ཤེས་རབ་གཞིམ་བྱ་ཉོན་མོངས་ཏེ།

དེ་ཕྱིར་ཤེས་རབ་བཅོམ་པར་བརྟེན། ཅས་སོ།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་པས་དེ་བཞིན་
གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་དེ། མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་རྣམས་ཏེ། དེ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱུ་དང་
གསུང་བྲགས་རྣམས་སོ། །རྟོ་རྟེ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དོ། །དེའི་ངོ་བོ་ཆེན་པོ་སྟེ་རང་དང་

1 ན་ བཤ། ལྷ།

2 ཞེས་པ་ཆོག་སྐྱུར་ བཤ། ལྷ།

3 འདས་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4 དང་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

5 ཞེས་སོ་ བཤ། ལྷ།

6 རྟོགས་ བཤ། ལྷ།

7 རྟོགས་པ་ཉོན་མོངས་པའི་བདུད་ལ་སོགས་པ་ངེས་པར་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྷག་ཡོད།

གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དག་ཡེ་ལྟོ། ལྷན་ཏུ་བླ་ན་མེད་པར་བྱེད་པ་སྟེ་བྱ་
 བ་དང་བྱ་¹ ལས་གང་ཡིན་པ་དེ་རྒྱན་ཆེན་པོ་སྟེ། རྟོ་རྟོ་སྟོམས་མ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་
 དུ་སྟེན་པའི་བདག་ཉིད་དོ། །དེའི་དགྱིལ་སྟོང་པོ་བྱང་ཐུབ་ཀྱི་སེམས་ལེན་ཅིང་འཛིན་
 པས་ན་དགྱིལ་འཁོར་ནི་ཆོས་འབྱུང་རོ། །དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐྱུ་
 དང་གསུང་དང་ཐུགས་ནམས་ཀྱང་དེ་ཡིན་ལ། རྟོ་རྟོ་རྟོ་རྟོ་པོའི་དགྱིལ་འཁོར་
 ཡང་ཡིན་པའོ། །འདིའི་དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐྱུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་
 ཀྱི་རོལ་ཉིད་ཀྱང་དེ་དང་རོལ་ཅིག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཡང་གྲུ་
 གསུམ་སྟེ་དེའི་དབྱས་སུའོ། །འདིར་གཞུང་ཡས་ཁང་མ་གསུངས་པ་ཉིད་ན་ཡང་ཆོས་
 འབྱུང་གི་དབྱས་ན་གནས་པའི་གཞུང་ཡས་ཁང་དུ་ཞེས་དོན་གྱིས་རྟོགས་པར་བྱ་
 སྟེ། དཔེར་ན་གྲོང་ཁྱེར་ན་ཕྱག་པོ་གནས་སོ་ཞེས་པ་གྲོང་ཁྱེར་ན་གནས་པའི་ཁང་
 བཟང་ན་ཞེས་དོན་གྱིས་འགྱུར་བ་བཞིན་ནོ། །དེ་ལྟར་མ་གསུངས་པ་ནི་བདེ་བ་ཆེན་
 པོའི་ས་གནི་གཙོ་བོར་ཉི་ཤེས་བརྟན་པའི་དོན་དུ་སྟེ། གཞུང་ཡས་ཁང་ཡང་དེ་དང་རོ་
 གཅིག་པ་ཁོ་ནས་སོ། །ཡང་ན་རྟོ་རྟོ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ཆོས་འབྱུང་སྟེ། དེར་རྒྱན་ཆེན་
 པོའི་དགྱིལ་འཁོར་ནི་གཞུང་ཡས་ཁང་དེའི་དབྱས་སུའོ། །དེ་ལྟར་གྱུར་པའི་གནས་སུ་
 བཅོམ་ལྷན་འདས་བཞུགས་པར་ཉི་ཤེས་བརྟན་པས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟོང་རྟོ་རྟོ་རྟོ་
 མེད་པ་ལྷན་ཅིག་སྟེན་པའི་སྐྱུ་གསལ་བར་རིག་པར་བྱས་ལ། སྐྱེ་ཁོ་ནས་རྒྱུད་སྟོན་
 པ་ཡང་དེ་དང་རོ་གཅིག་པར་བརྟན་ཏོ། །དེ་ལྟར་དུས་དང་ཡུལ་དང་སྟོན་པ་པོ་ཕུན་
 སུམ་ཚོགས་པ་བརྟེན་ནས། འཁོར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་གསུངས་པ། ཐམས་ཅད་
 ཅས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་² དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ནམས་དང་།
 ལྷ་ཚོགས་སྟེ་མ་ལ་སོགས་པ་ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་དང་འཕགས་པ་ཀྱན་དགའ་བོ་ལ་
 སོགས་པ་ནམས་དང་ཡང་བཞུགས་སོ། །འདོད་ཆགས་དང་བྱལ་བ་བཟུང་³ བཞི་ཉན་
 ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཅན་ཉི་ཤེས་བརྟན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་པ་རོལ་དུ་སྟེན་པའི་ཐེག་པ་བ་

1 བྱ་བ་ལས་ བོ། ལྷ།

2 བ་ བོ། ལྷ། མ་གསལ།

3 གཟུང་ བོ། ལྷ།

[illegible]

१ क. य. ५२।

2 ལྟ་ཚུགས་ བེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 521 9121

4 23 92

པོའི་ཆོག་¹ནི་སྒྲ་ཆོག་ས་སྤེ་མ་ནི་བཅུན་མོ་ཐམས་ཅད་བསྐྱུས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་
རོ།། དེར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཕུག་གྱུ་ཆེན་པོ་དེ་རྗེའི་གནས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་སྤྱིད་པ་
ལ་མི་གནས་ཤིང་སྤྱིང་རྗེས་ཞི་བ་ལ་མི་གནས་པའོ་ཞེས་པ་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་
འདས་པས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ཏེ། དེའི་བླདག་ཉིད་དུ་གྱུར་ནས་རོ་གཅིག་
པའི་རང་བཞིན་གྱིས་ཐ་དད་མཐའ་དག་གིས་མ་རེག་པ་ལས་འཁོར་བའི་བར་དུ་
དཔག་དུ་མེད་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དང་། རྣལ་
འབྱོར་མ་དང་། འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བ་དང་། ཕུག་གྱུ་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་དང་།
རྟུགས་བྱེ་བ་ཕྲག་བརྒྱད་ཅུ་པོ་རྣམས་དང་ལྡན་ཅིག་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པར་གྱུར་
ཀྱང་རྩོན་གྱི་འཕེན་པའི་དབང་²ལས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཅི་བྱ་བའི་ཆུལ་གྱིས་
བཞུགས་སོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་ན་ཡང་མཆོག་དུ་ཟབ་པའི་ཆོས་འདི་བདག་
གིས་³རྟོགས་ཀྱི། སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱང་ཡལ་ཆེར་བསོད་ནམས་ཞན་པ། ཤེས་རབ་
ངན་པ་ཐེག་པ་དམན་པ་ལ་མོས་པ་རྣམས་ཏེ། དེས་ན་སུ་ཞིག་འདི་ལ་མོས་པར་
འགྱུར་ཞེས་གདུག་བྱ་རྩོན་པོ་རྣམས་གུས་པས་རིངས་པའི་དོན་དུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་
ཏེ། །ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་ཆོས་སྟོན་པ་ལ་བྱ་བ་མེད་ཅིང་མི་སྟོབ་པའི་ཞེས་པའི་དོན་སྟོན་⁴
ཏོ། །དེ་ཞེས་པ་སྤྱིད་པ་དང་ཞི་བ་ལ་མི་གནས་པ་དང་མི་སྟོབ་པོ། །མཆོག་དུ་བརྩེ་བ་
དང་ཤེས་རབ་དང་ལྡན་པས་ཅི་བྱ་བའི་ཆུལ་གྱིས་བཞུགས་པ་དེ་ལྟར་མི་སྟོབ་ཞེས་ཆད་
དུ་གྱུར་པ་ཐོབ་པོ། །སྒྲ་ཆོག་ས་སྤེ་མ་ལ་ཞེས་པ། སྒྲ་ཆོག་ས་ཏེ་རྣམ་པ་སྒྲ་ཆོག་ས་པ་
དང་ཆད་དུ་བྱུང་བའི་སྤེ་སྤེ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་གང་གི་ཡིན་པ་དེ་ལོ།།

རྣལ་འབྱོར་མ་ཞེས་པ། ཤེས་རབ་ཐབས་དང་སྟོམས་འདུག་པ།

རྣལ་འབྱོར་ཞེས་པར་མངོན་པར་བཞིན།

1 ཆོག་ས་ སྒྲ།

2 དབང་ བོ། སྒྲ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 གི་ བོ། སྒྲ།

4 རྟོན་ བོ། སྒྲ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

5 དང་ བོ། སྒྲ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།

དེ་འདི་ལ་ཤིན་ཏུ་ཡོད་པའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཐུར་རྩིས་པ་ལ་མཉམ་གཤམ་པ་ལ་རྒྱས་
 པའོ་ཞེས་འདྲིའོ། །གང་གིས་སེམས་ཅན་རྣམས་རྒྱས་པ་རང་དང་གཞན་ལ་ཕན་པ་
 རྒྱུ་གས་པར་བྱེད་པོད་པ་འཛོལ་པའི་ཐབས་འགའ་ཞིག་ཡོད་དམ། རྒྱུད་ལ་སོགས་པ་
 རྣམས་སུ་སྤྲུགས་ཀྱི་ཐབས་བརྟན་པ་ལ་དགོས་པ་འདི་ག་ལས་ཤེ་ན་གསུངས་པ་སྟེ།
 འདིར་བརྒྱས་པའི་དོན་ནི། གང་རྒྱུད་ལ་སོགས་པ་ཐུབ་པའི་དབང་པོ་རྣམས་ཀྱིས་
 གསུངས་པ་དེ་རྣམས་ལ། སྤྲུགས་མེད་ན་རྒྱས་པ་མ་མཐོང་ཞིང་། སྤྲུགས་ལ་ནི་
 དོགས་¹པ་མང་པོ་རྣམས་སྟེ་སྟེ། དེ་ལྟར་ནི་ཁྱེད་དང་འབྲེང་དང་ཆེ་བའི་བསོད་
 རྣམས་ཅན་གྱི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་རིམ་པ་ཇི་ལྟར་བར་བྱེད་དང་། འབུམ་དང་། ཁྱི་
 བཟླས་²པ་རྣམས་ཀྱིས་འབྲུག་པར་དེ་ཇི་ཅན་ཆེན་པོས་གསུངས་ན། ང་ཡང་ཅི་ཁྱེད་
 ཏུ་ལ་སོགས་པའི་ནང་དུ་རྟོགས་³སམ་མ་ཡིན་ཞེས་ཐེ་ཚོམ་དང་ལྡན་པ་ནི་སེམས་
 ཞན་⁴པས་ཇི་ལྟར་སྤྲུགས་སྟེས། འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པས་ཉེ་བར་བཅོམ་པ་ལོག་
 པའི་ཤེས་པ་ཅན་རྣམས་ཇི་ལྟར་འདོད་ཆགས་ལ་ཞུགས་པ་དེ་ལས་སྤྲུགས་སྟེས།
 འདོད་ཆགས་ལ་ཞུགས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཞེས་སྟོགས་པ་ལ་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཞེས་
 བརྟག་པར་བྱའོ། །མི་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱུད་དང་སྤྲུགས་སྟེས་པ་ལ་ཕྱིས་⁵བགྲང་བ་
 སྟེད་ཀྱང་ཇི་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་སེམས་ཀྱིས་ཡིན་⁶། ཡང་དག་པའི་ཤེས་པ་
 ཅན་གྱི་ཡང་ཤིན་ཏུ་སྟེ། དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པའི་མཐར་སེམས་དམིགས་པ་
 ནི་གང་གིས་ངས་པར་བརྟགས་པ་སྟེ། བེལ་ལེ་མཐའ་ཅན་ནི་འགའ་ཞིག་ཏུ་པ་རོལ་
 ཆོག་ལྟ་དོ། དེའི་སྤྲུགས་ནི་ཇི་ལྟར་སྤྲུགས་ཏེ་སྤྲུགས་སུ་བྱ་བ་བཟླས་བྱ་ཡིན་ཏེ།
 སེམས་རྟོགས་པ་དེ་ལས་ཡིད་ཀྱི་རོལ་ཡིད་དང་། རྒྱུབ་པའི་རོལ་རྒྱུབ་པ་སྟེ་སྟོང་པ་
 ཉིད་དང་སྟོང་ཇི་དབྱེར་མེད་པ་དོན་དམ་པའི་སྤྲུགས་ཡིན་ཅིང་དེ་ཁོ་ན་ལས་རང་དང་

1 དགོས་ རྟེ། བེ། ལྟ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྤྱད་ལྟར་བཞག་ཡོད།

2 འདས་ བེ། ལྟ།

3 གཏོག་ བེ། གཏོགས་ ལྟ།

4 ཞན་ རྟེ། བེ། ལྟ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྤྱད་བཞིན་བཞོད་ཡོད།

5 བཅིས་ བེ། ལྟ།

6 ནི་ བེ།

གཞན་གྱི་དོན་རྒྱས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཡིན་ན་སྐྱེས་པ་བློས་པས་ཅི་ཞིག་ཅས་པ་དགོངས་
 པའོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ཇི་ལྟར་ཞེས་པ་བྱི་བ་ལའོ། དེ་ལྟར་ཞེས་པ་བཟོད་པའི་རིམ་¹་
 པས་ཤོག་དཔྱིད་དང་ལྡན་པས་མི་བཟླས་ཏེ། དེ་ལ་ཡང་ཟློས་པ་ཡོད་ན་ཡང་དངོས་
 གྲུབ་གཞན་དུ་དངོས་གྲུབ་མ་ཡིན་པའོ། །བསྐྱེད་པ་སྐྱར་མ་ལྟ་བུ་བྱེ་བ་ཞེས་པ་གསུམ་
 པའི་དོན་ལ་དང་པོའོ། །ནམ་མཁའ་ལ་སྐྱར་མ་དཔག་དུ་མེད་པ་བཞིན་དུ་དཔག་དུ་
 མེད་པའི་བསྐྱེད་པ་བྱེ་བས་སོ། །དེ་ལྟར་ཞེས་པ་ཇི་ལྟར་དོགས་པ་ལ་བཟླས་པ་མི་
 སྲིད་པ་དེ་ལྟར་དོན་ལ་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ལ་སོགས་པས་རེས་འགའ་བཟླས་པ་ཡོད་པ་ཡང་
 དངོས་གྲུབ་ཀྱང་ངོ་། །བཅོམ་ལྡན་འདས་ཞེས་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་འོ། །ལྟ་མོ་
 ཆེན་མོ་ནི་བརྩམ་མོ་མཆོག་གོ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྡན་འདས་བཞིན་དུ་རྒྱད་
 ཐམས་ཅད་ཀྱི་³་བདག་མོ་སྟེ། རྒྱད་ཐམས་ཅད་སྟོན་པར་རུང་བ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །དེ་
 ལྟར་ནི་འདིས་དོ་རྩེ་ལག་མའི་གཟུགས་ཀྱིས་འབྲུམ་པ་མངོན་པར་བཟོད་པ་དང་། དོ་
 རྩེ་མཁའ་འགྲོའི་རྒྱད་དག་བཞུགས། ཞེས་གསུངས་པ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཁོ་ན་
 འདིའི་ཞེས་པ་ནི་དགོས་པའོ། །དབང་ཕྱུག་མ་ནི་ཐམས་ཅད་དུ་ཐོགས་པ་མེད་ཅིང་
 བསམ་གྱིས་མི་བྲུབ་པའི་རྒྱས་པ་དང་ལྡན་པའི་ཕྱིར་རོ། །

གཟིགས་པ་ཙམ་གྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་།།

ཞེས་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་འོ། །ཐོད་པར་ཞེས་པ་ཐོད་པ་ལས་ཏེ། ཀམ་བདེ་བ་
 སྦྱིང་བར་བྱེད་ཅས་པ་ཀ་ཕུ་ལ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ས་པོན་གཞོམ་དུ་མེད་པའོ། །དེ་ལས་
 སྐྱེས་ཕྱང་ངོ་། །འདི་ནི་འདིར་དགོངས་པ་སྟེ་སྒྲིན་མའི་དབྱུས་སུ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ས་པོན་
 ཐིག་ལེའི་རྣམ་པར་བསྟོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར། སྒྲིན་མའི་དབྱུས་སུ་
 ཐིག་ལེའི་རྣམ་པར་སེམས་སྟོམ་⁴་པས་བཟན་པར་བྱས་ནས་སྐྱེས་སྟོ་བར་བྱའོ་
 ཞེས་པའོ། །ཡང་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་དང་འབྲེལ་པའི་ཐོད་པ་ལས་ཏེ་སྒྲ་ཆོགས་སྟེ་

1 རིམས་ བོ། ལྟ།

2 དགོས་ རྟེ། ལྟ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

3 ཀྱི་ བོ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4 བསྟོམ་ བོ། ལྟ།

མའི་ཆོས་འབྱུང་ལས་སོ། །གང་གསུངས་པར་འགྱུར་བ། དེའི་ཐོད་པར་དཀྱིལ་
 འཁོར་དང་སྒྲགས་དང་རྒྱུད་ལེགས་པར་ནམ་པར་གནས་སོ་ཞེས་འདི་ནི་འདིར་མན་
 ངག་སྟེ། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོའི་གནས་གཞིམ་དུ་མེད་པ་
 ལས་འོངས་ཏེ། འོག་གི་ལམ་ནས་བྱུང་ནས་བཅོམ་ལྷན་འདས་མའི་ཆོས་འབྱུང་དུ་
 ཞུགས་ཏེ། ཨ་ཐ་རྒྱུད་ཀྱི་²སྒྲིམ་མཆོམས་ཀྱི་དཀྱིལ་ནས་སྒྲགས་བྱུང་བའི་ལུགས་³
 འབྱུང་ཡིན་ཞིང་ལུགས་མི་མཐུན་གྱིས་འདུག་པའོ། །དོན་འདི་ཉིད་ནི་འདི་ལྟར་ཞེས་
 པ་ལ་སོགས་པ་ནས་ཐོད་པར་ཞུགས་སོ་ཞེས་པའི་མཐར་ཐུག་པ་གསལ་བར་མཛད་
 ཏོ། །བཅོམ་ཞེས་པ་བཅོམ་ནས་སོ། །སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མ་ནི་འདིར་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་
 སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མའི་ཅ་ཨ་ཐ་རྒྱུད་ཀྱི་⁴སྟེ། དེའི་སྒྲིམ་མཆོམས་ཀྱི་དབུས་སུ་ཞུགས་
 བེང་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་ལྷན་ཅིག་ཞུ་བར་གྱུར་ནས་འོག་གི་ཐོད་པ་ཆོས་འབྱུང་
 གི་ནང་དུ་ཞུགས་སོ། །དེ་ནས་བྱུང་ནས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་དེ་རྒྱའི་ལམ་གྱི་སྟངས་ན་
 ཨན་དྲུའ་ལ་རིམ་པ་ལས་བརྒྱུད་པས་ཞུགས་པའོ། །འདིའི་ཞེས་པ་འདིའོ། །སྟེ་⁷
 རྣམས་ཞེས་པ་སྟེ་རྣམས་སོ། །སྟེ་ཐམས་ཅད་ནི་རྩ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་དང་འབྲེལ་
 ཏོ། །ཁོར་རྒྱས་དང་སྟོབས་རྒྱ་ལ་སོགས་པ་དང་། གཞན་ཡང་གང་སུ་ཡང་རུང་བ་
 དུག་འབྱུང་བ་རྣམས་ཏེ། མཐོང་བ་དང་། མཆེ་བ་དང་། ཁ་རྒྱུ་དང་། རེག་པ་དང་།
 འོད་ཟེར་དང་། ཟ་འཕྲོའི་དུག་རྣམས་ལས་འབྱུང་བའོ། །བཀའ་བསྒྲོ་བའི་ཀྱི་ལྟ་སོ་
 བདག་ཅག་ལའོ། །སྟེ་བའི་སྟེ་བ་རྣམས་སོ། །གསུངས་པ་ནི་སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མས་སོ། །
 དེ་ལྟར་ཞེས་པ་སངས་ཀྱིས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཐོས་⁸པའི་དེ་མ་ཐག་ཁོ་ནར་རོ། །

1 སོ་ བཤ། ལྟར། དཔར་མར་ལྟག།

2 ཏིའི་ བཤ། ལྟ།

3 ལྟགས་ བཤ།

4 ཏིའི་ བཤ།

5 དུ བཤ། ལྟ།

6 རྒྱུ་ བཤ། ལྟ།

7 འདིའི་ལོ། ལྟ་ བཤ། ལྟ།

8 ཐོད་པ་ བཤ། ལྟ།

བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་¹ མོད་པ་ནི་བཤད་ཟིན་དོ། །ཁ་ཕྱེ་ནས་ཏེ་རྣམ་པར་གསལ་
 བར་གྱུར་ནས་སོ། །སྒྲིན་མཆོམས་ན་གནས་པའི་ཐིག་ལེ་ལས་ཡུ་ལི་ཀླ་ལའི་རང་
 བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། རྒྱུགས་བམ་ཆོས་ཐམས་ཅད་བསྐྱུས་པའི་རང་བཞིན་བྱིས་པའི་
 འདབ་མའི་བདག་ཉིད་སྐྱགས་བཞིན་དུ་བྱུང་ངོ་། །ཡང་ན་ཕུ་ཞེས་ཕུ་སྒྱིར་མ་² ལ་ཡར་
 ལྷ་³ ཞེས་པ་རྒྱས་པར་བྱེད་དེ་ཀླ་བ་དེ་བའི་ཞེས་པ་ཕུ་སྐྱག་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སོ། །དེ་
 ཁོ་ན་བྱིས་པའི་འདབ་མའི་བདག་ཉིད་དུ་རྒྱུགས་བམ་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །
 རྣམ་མཁའ་ལས་ཞེས་པ་བརྒྱས་ནས་བཤད་པ་ལས་སོ། །རྣམ་མཁའ་ལས་ཏེ་ཆོས་
 འབྱུང་དུ་རྟོ་རྟེ་པར་ཡང་དག་པར་སྐྱར་⁴ བའི་དུས་ན་གང་གི་ཆེ་སྒྲ་ཙམ་བྱུང་བ་དེའི་ཆེ་
 རྒྱུག་བམ་བྱུང་བའོ། །དེའི་ཆེ་ཁོ་ན་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་མཁའ་ལས་སྐྱེ་བྱེད་བཞིན་པ་
 བྱུང་བའོ། །རྒྱུད་ཅེས་པ་ལ་རྒྱུད་ནི་རྒྱུན་ཏེ། དེ་ཡང་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། རྒྱུད་ང་།
 འབྲས་བྱུང་ང་། ཐབས་ཀྱི་དབྱེ་བ་⁵ ལས་སོ། །དེ་ལ་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མེད་པའི་
 ཉེ་རུ་ཁེ་བདག་ཉིད་ནི་རྒྱུད་རྒྱུད་དེ། དེ་ཁོ་ན་རྒྱར་བྱས་ནས་འབྲས་བུའི་ཉེ་རུ་ཀ་
 འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །མོ་བྱར་ཀྱི་བྱི་མ་དང་བྲལ་བ་ལས་འགོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་བྱེད་
 པའི་རང་ཅན་འབྲས་བུའི་ཉེ་རུ་ཁེ་འབྲས་བུའི་རྒྱུད་དེ་⁶ ། དེ་ཁོ་ནའི་རྣམ་པར་དག་
 པའི་ཐབས་ནི་ཐབས་ཀྱི་རྒྱུད་དེ་མཁའ་ཁྲིང་གི་སྐྱེར་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ནི་ཐབས་ཀྱི་
 ཡན་ལག་ཉིད་ཀྱི་⁷ ཐབས་རྣམས་སོ། །དངོས་སུ་བའི་ཐབས་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་
 གུབ་ཀྱི་དུས་སུ་ཕྱག་རྒྱའི་ནལ་འཕྱོར་ལས་ཇི་སྟངས་བཤད་པར་སྐྱབ་པ་དང་དེའི་ཡང་
 དངོས་སུ་བའི་ཐབས་ནི་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་སྟེ་དེའི་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པའོ། །རྒྱལ་པོ་

1 ཀྱི་ པོ། ལྷ་།

2 ལུ་ རྟེ། མོད་དུ་ལེགས་སྐྱར་ལྷར་བཞོད་ཡོད།

3 རྟེ་ པོ། ལྷ་།

4 ལྱུར་ པོ། ལྷ་།

5 བྱེད་པ་ རྟེ། མོད་དུ་ལེགས་སྐྱར་བཞིན་བཞག་ཡོད།

6 རོ་ པོ། ལྷ་།

7 ཀྱིས་ པོ། ལྷ་།

ཆེན་པོ་ཞེས་པ་ཆེན་པོ་སྟེ། རང་དང་གཞན་¹ གྱི་དོན་སྤུན་སྤུམ་ཆོགས་པ་སྐྱབ་པས་
 སེམས་ཅན་ཁ་སྐྱར་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདིའི་རྒྱས་པར་བཤད་པ་ནི། སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་
 ཡན་བྱེད་པ། ཞེས་པའོ། །རབ་དྲུ་རྒྱས་པར་བཤད་པ་ནི། སེམས་ཅན་ཀུན་² ལ་བདེ་
 འབབ་པ། ཞེས་པའོ། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཅེས་པ་གང་གི་ཕྱིར་འདི་ལས་དངོས་
 གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཡིན་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་མའི་ཐེག་པ་ཞེས་པ་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ནི།
 དེར་འགྲོ་བ་དང་འདིས་འགྲོ་བ་ཞེས་པ་འབྲས་བུ་དང་། རྒྱུད་³ དང་། ཐབས་ཀྱི་རང་
 པའི་ནོལ་མོ། ཞོང་ན་མེད་ཅེས་པའི་རྒྱས་པར་བཤད་པ། ལྷུ་ར་དུ་འབྲས་བུ་སྟེར་བྱེད་
 པའོ། །ཞེས་པའོ། །དེ་ལ་དངོས་སྤྱུ་པའི་ཐབས་ཉིད་ཀྱིས་ན་རྩོགས་པའི་རིམ་པ་རེ་ཞིག་
 མདོར་སྟོན་ཏེ། སྤར་བ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །སྤར་བ་ནི་གཟེངས་བསྟོད་⁴ པ་སྟེ་དོ་
 རྩོད། ནང་དུ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སོ། །མནན་པ་ནི་རྟོན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་པ་སྟེ་དོ། །དེ་
 ལས་སྐྱེས་པ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྩ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ན་ཡེ་ཤེས་ཆེན་པོའོ། །སྐྱིབ་པ་མེད་
 པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ན་ཁྲ་ན་མེད་པའོ། །གནས་ཞེས་པ་གོ་འཕང་སྟེ། རང་
 དང་གཞན་གྱི་དོན་སྤུན་སྤུམ་ཆོགས་པའི་གཞིའོ། །ཡང་ན་གནས་ནི་རྩ་རྣམས་སྤྱུ་བ་
 སྤངས་པའོ། །རྟེན་དཀའ་བ་ནི་ལེ་ལོ་ལ་སོགས་པས་ཉེ་བར་བཅོམ་པ་རྣམས་པའོ། །
 གསང་བ་ནི་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ལ་གསལ་བྱ་མིན་པའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་
 མཆོག་སྤུལ་དུ་བྱུང་བ་སྟེ། ཤེས་རབ་ནོ་ཞིང་བསོད་ནམས་བསགས་པ་རྣམས་ཁོ་ནའི་
 ཡུལ་འདི་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཉམས་དགའ་བ་ནི་དགའ་བ་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པའོ། །
 ལུས་ཀུན་ལ་ནི་རྣམ་པར་གནས། ཞེས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྒྱན་མ་ཆད་པར་ཉམས་སྤྱུ་
 རྩོང་པའི་ཕྱིར་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སྤྱུ་རྒྱས་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་སོ། །ལུས་ཁོ་ན་དང་།
 དེ་རོ་གཅིག་པར་འབྱུང་པའི་ཕྱིར་རྒྱབས་དང་རྒྱ་བཞིན་ནོ། །དེ་རྩར་དངོས་པོ་ཐམས་

1 བཞིན་ བཤ། ལྷ།
 2 ཀུན་ བཤ། རྟེན་དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།
 3 རྒྱུད་ རྟེ། བཤ། ཞོང་དུ་ལེགས་སྐྱར་རྟེན་བཞེད་ཡོད།
 4 བཟང་སྟོན་ བཤ། ལྷ།
 5 གསགས་ བཤ། ལྷ།

ཅད་ལ་བྱབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་དགྲིལ་འཁོར་བ་དང་བཅས་པའི་རིག་པ་ནི¹་དགྲིལ་
 འཁོར་གྱི་དབང་པོ་བརྟན་ཏེ། །ཐབས་ཀྱི་ཡན་ལག་མདོར་བརྟན་²ཏེ། མཁའ་ཁྲིང་
 སྦྱར་དང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསེད་པའི་བར་ལས་བརྩུ་གཉིས་རྣམས་སོ། །བསྐྱེད་
 པའི་རིམ་པ་མདོར་སྟོན་པ། རྣམས་སྣ་ཚོགས་ཞེས་པ་དྲུག་ཡིག་ལ་སོགས་པ་བསྐྱེད་³་
 པའི་ས་པོན་ནོ། །དེ་ལྟར་རིགས་པ་ནི་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་ལེན་པ་ཤད་པའི་ཚོག་
 ཡིས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ནི་སྣ་ཚོགས་སྡེ་མ་ལ་སོགས་ཀྱི་འོ། །དེ་བཞིན་
 འབྱུང་བ་ནི་དེ་ལྟར་རིགས་པར་བསྐྱེད་⁴པའོ། །ཏེ་རུ་ཀ་ཞེས་པ་དཔལ་པོ་ཆེན་པོ་ཏེ་རུ་
 ཀ་འོ་འོ། །བསྐྱེད་པའི་རྒྱ་ནི་ཟླ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །གནས་པའི་རྒྱ་ནི་ཚོས་འབྱུང་ལ་
 སོགས་པའོ། །བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་འདི་དང་པོར་བསྐྱེམ་པར་བྱའོ། །ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་
 གསང་རྣམས་འདིར་ལས་དང་པོའི་སེམས་ཅན་རྣམས་དང་པོར་གཞུག་པའི་ཆེད་དུ་
 ལྟའི་སྒྲུབ་སྒྲོམ་⁶་པ་ཁོ་ན་གསུངས་ཏེ། གང་གསུངས་པ།

དང་པོའི་ལས་ཅན་སེམས་ཅན་ལ།

ལྟ་ཉིད་ཀྱི་ནི་སྒྲུབ་སྒྲོམ་⁷་པ་།

ཐོག་མར་རྒྱུད་དུ་ལས་ཐམས་ཅད།

འགྲུབ་པའི་ཆེད་དུ་ངེས་པར་བརྟན། །ཞེས་སོ།

བསྐྱེད་⁸པའི་རིམ་པའི་དངོས་སུ་བའི་ཐབས་ལས་འབྱུང་བ་རྣམས་པའི་རིམ་པའོ་
 ཞེས་པ་⁹གང་འདྲ་བའི་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ཐབས་ཡིན་ཞེས་པ་རྟོགས་པའི་དོན་དུ་

1 རིག་པ་ནི་ པ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

2 རྟན་ པ། ལྟ།

3 རྐྱེད་ པ། ལྟ།

4 རྐྱེད་ པ། ལྟ།

5 རྐྱེད་ པ། ལྟ།

6 རྒྱུ་ པ། ལྟ།

7 རྒྱུ་ པ། ལྟ།

8 རྐྱེད་ པ། ལྟ།

9 པས་གང་ པ། ལྟ།

བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་མདོར་བསྟན་པའི་དེ་མ་ཐག་དུ་རིམ་པ་གཉིས་ཀྱི་བྱུང་པར་གསུངས་པ། དངོས་པོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་དག་དུ་སྒྲོ་བདགས་པ་གནོད་པ་མཐའ་དག་གིས་¹ ཁྲབ་པར་བྱེད་པ་དག་མེད་པའི་ཕྱིར། དངོས་དང་དངོས་མེད་སྒྲོས་མེད་པའོ། །སྒྲིབ་པ་གཉིས་ཀྱི་ཆ་མེད་པའི་ཕྱིར་དགོས་པ་མེད་པའོ། ། འོ་ན་གཞན་གྱི་དོན་བྱ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། ཉན་ཐོས་ཀྱི་མུ་ངན་ལས་འདས་པ་བཞིན་ནི་ཞེ་ན་གསུངས་པ། སྤྱིད་པར་སྤྱོད་བྱེད་ཅེས་པ་སྟེ། སྒྲིབ་པ་མེད་ཀྱང་² གཞན་གྱི་དོན་དུ་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོས་སྤྱ་མཐའ་མེད་པའི་དུས་སུ་འཁོར་བར་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །བདེ་མཆོག་གི་དང་པོའི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པ།

དཔལ་པོ་མཆོག་རྣམས་ཇི་སྤྱིད་དུ།
 འཁོར་བའི་གནས་སུ་གནས་གྱུར་པ།
 དེ་སྤྱིད་མཉམ་མེད་སེམས་ཅན་དོན།
 མུ་ངན་མི་འདའ་བྱ་བར་རུས། །ཞེས་སོ།

སྤྱར་ཡང་ཐབས་ཀྱི་ཡན་ལག་གསུངས་པ། དགོངས་པའི་སྤྱད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །གཟུགས་བརྒྱན་དག་³ པ་ལ་སོགས་པ་རལ་གྱི་མཐར་ཐུག་པ་ནི་ལས་བཅུ་གཉིས་རྣམས་སྤར་དང་ཕྱི་མའི་ལས་བཤད་པས་སོ། །བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ལ་གནས་པ་དང་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་ལ་གནས་པའི་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་སྒྱུར་པ་ཡིས་ལས་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་གསལ་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསོད་པ་དང་རོ་དག་ལ་ཉེ་བར་མཆོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཉིས་ཀ་ལ་ཉེ་བར་ལེན་པའོ། །མི་སྤང་བ་ཞེས་པ་བདག་ཉིད་དོ། །མཆོག་མིན་ཞེས་པ་ལུལ་བྱང་མ་ཡིན་པའོ། །

དཀའ་བྱུང་ངེས་པ་དྲག་རྣམས་ཀྱིས།
 ལུས་ནི་སྒྲེམས་གིང་སྤྱག་བསྐྱེད་ཉིད།

1 གི་ བཤེས།
 2 གང་ བཤེས།
 3 དགས་ བཤེས།

སྤྱུག་བསྐལ་བ་ལས་སེམས་གཡེངས་ཏེ།
 གཡེངས་བ་ལས་དངོས་གྲུབ་གཞན་དུ་འོ།། ཞེས་གསུངས་པ།
 འདོད་པ་ལྡན་པ་ཞེན་བཞིན་པས།། ཞེས་སོ།།
 སྦྱོར་མ་རྣམས་ནི་ཐམས་ཅད་ལ།།
 བྱད་མེད་སྦྱོར་མ་ཁྱད་པར་འཕགས།།
 ཡེ་ཤེས་གསུམ་གྱི་དབྱེ་བ་འདི།།
 འདི་ཁོ་ན་ལ་གསལ་བར་མཛོམས།།

ཞེས་པའི་རིགས་པས་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྡན་མས་ལ་ཉེ་བར་སྦྱོད་པ་ནི་གཙོ་
 བོ་བྱད་མེད་བཞེན་པ་སྟེ་ཐབས་ལ་མཁས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་
 རྒྱ་ཉིད་ཀྱི་¹ཕྱིར་རོ། །དེ་ནས་²དེའི་དོན་དུ་རྩ་བར་བྱེད་པ་མདོར་བསྟན་པའི་དོན་
 དུ་གསུངས་པ། འཛིགས་པ་འཛོམས་བྱེད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། འཛིགས་པ་རྣམ་
 པར་རྟོག་པ་རྣམས་ལྟན་ཅིག་སྦྱེས་པ་འཆར་བའི་དུས་སུ་རྒྱབ་པར་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་
 འཛོམས་པར་རུང་བའོ། །གཡུལ་ཆེན་པོ་ནི་དགའ་ཅོད་སྣ་ཆོགས་པའོ། །བྱེད་བཞིན་
 པ་ནི་སྦྱེས་པ་གཅིག་གིས་བྱད་མེད་འབྲམ་ལས་རྒྱལ་བར་བྱེད་དེ་རྩ་བའི་བྱེད་པས་
 སོ། །ཅི་འདི་ལྟར་མཐོང་ངམ་ཞེ་ན་གསུངས་པ་སྦྱེས་པ་གཅིག་གིས་ཞེས་ཏེ། སྦྱེས་པ་
 གཅིག་འདོད་པ་ཆེན་པོ་ཅན་དུ་མཐོང་སྟེ་འཕགས་པ་ཆོས་འཕགས་ལ་སོགས་པས་བྱད་
 མེད་སྟོང་ཕྱག་དུག་ཅུ་ཅ་བརྒྱད་རྣམས་ཏེ། ཉེ་བར་མཛོམས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བྱད་མེད་
 འབྲམ་ཕྱག་ཟེལ་གྱིས་གནོན་ཞེས་པ་ལྟག་མའོ། །དེའི་ཕྱིར་འདོད་པ་སྦྱོད་དེ། གཅིག་
 གིས་ཞེས་པ་གཅིག་ཕུས་ཐམས་ཅད་ཅེས་ཐམས་ཅད་མ་རྣམས་ལའོ། །འདིར་ཡང་

1 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

2 དེས་ན་ བཤ། ལྟ།

3 ཙ་ བཤ། ལྟ།

4 ཙ་ བཤ། ལྟ།

ཐབས་ནི་རོ་ཙ་¹་བར་བྱེད་པ་ཞེས་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་འདུ་བར་བྱེད་པ་དང་འཛིན་
 པ་དང་། འཕེལ་བ་སྟེ། གསུམ་པོ་འདི་ཇི་ལྟར་འགྱུར་བ་དེ་འཆད་པར་འགྱུར་རོ།
 དེ་ནས་ཞེས་བྱེད་པ་སོགས་པས་མཁའ་ཁྲིའི་སྒྲོལ་བ་མདོར་སྟོན་ཏེ། མིང་ཇི་བཞིན་
 ཞེས་པ་ཇི་ལྟར་རབ་དུ་གསལ་པར་འགྱུར་བ་དེ་ལྟར་བཤད་པར་བྱའོ། །འབྲེལ་གྱི་འཕྲི་
 བྱེད་པ་དང་རིག་པ་འཛིན་པའི་བྱེད་པ་ནི་རབ་དུ་རྒྱས་པར་སྟོན་པར་འགྱུར་རོ།
 རྒྱན་པོ་³་ནི་ཆོ་ལོ་སྟེ། དེ་ཙམ་བས་དུག་གཞིག་པར་⁴་བྱེད་དོ། །རྩ་བ་དང་པོ་ལོ། ཟིན་པ་
 བྱད་མེད་ཀྱིས་འཕྲོག་པའོ། །ཀ་ར་བྲེ་རའི་ཤིང་གིས་མགོ་བོ་ནས་བཟུང་ནས་རྒྱང་པའི་
 མཐེལ་ཇི་སྟེད་བར་བ་སྟུན་པའོ། །ཞགས་པ་ཞེས་པ་ཞགས་པའི་རྣམ་པའི་ཐག་པས་
 མགྲིན་པར་བཅིངས་ནས་འགུག་པའོ། །ཁུ་བུག་གི་སྒྲུ་བྱེད་པའོ། །པར་འབྱེད་པ་ཞེས་
 པ་ནང་གི་པར་རྣམས་སུ་རྩ་བའི་འདོན་པའི་བསམ་པས་མན་ངག་ཇི་ལྟར་རྒྱང་འགོག་
 པའོ། །གཞན་ནི་ལོངས་སྟོང་རྩོགས་པའི་འཁོར་ལོའི་རྩེ་⁵་གཉིས་འཁྲུལ་འཁོར་དུ་བྱེད་
 པར་སྒྲུའོ། །སྟག་བྱེད་ནི་སྟག་བཞིན་དུ་བཟོད་པའི་རྒྱལ་གྱིས་འཆག་པའོ། །རྒྱ་ནི་རབ་
 དུ་རྒྱས་པར་སྟོན་པར་འགྱུར་རོ། །དུང་ཞེས་པ་ནི་དུང་གི་སྒྲུའོ། །ཐོད་ལོ་ཀོར་འཕྲོག་
 ཅས་པ་ནི་ཐོད་ལོ་ཀོར་གྱིས་བཟུང་བའི་མིང་བྱིས་པ་ལས་དུག་འཕྲོག་པའོ། །སྒྲུག་པ་
 ཞེས་པ་སྒྲུག་པར་བྱེད་པའོ། །རས་ཀྱི་གོས་ཀྱིས་གཡོགས་པའོ། །ཐལ་ལྷག་ཅིས་པ་
 ཐལ་ལྷག་གིས་བ་སྟུན་པའོ། །ཡིག་⁶་གསུམ་ཞེས་པ་རྟ་ཀ་ཀ་ར་ཡིས་བརྟེན་⁷་པའོ། །ད་
 ཏི་རྩི་⁸་ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གསུམ་གྱིས་དུག་འཛིག་པའི་ཞེས་ཁ་ཅིག་གོ། །བསམ་གཏན་ལྟ་
 བས་གཏན་ཞེས་པ་དཀར་པོའི་ཨ་ཡིག་ལ་སོགས་པ་བསྟོམ་པའི་ལྟ་བས་གཏན་བྱ་བའོ།

-
- 1 ཙ་ པེ། ལྷ།
 - 2 པ་ པེ། ལྷ།
 - 3 པ་ པེ། ལྷ།
 - 4 དུ་ཞི་བར་ པེ། ལྷ།
 - 5 ཙ་ པེ། ལྷ། ཅོ།
 - 6 ཡི་ པེ། ལྷ།
 - 7 དེག་ པེ། ལྷ།
 - 8 པ་ པེ། ལྷ།

ཞེས་པ་སྒྱུར་བ་བཅོ་བརྒྱད་པོ་འདི་ནམས་ཀྱིས་དྲུག་དགུག་¹་པར་འགྱུར་རོ། །རྫོགས་
 པའི་རིམ་པ་མདོར་བསྟན་པ་རྒྱས་པར་སྟོན་ཏེ་²། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ།།
 རོ་ལ་པ་³་བདེ་བ་ཅན་པར་ཡོད་པ་ནི་བཟང་པོ་སྟེ། ཡེ་ཤེས་ནི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་
 དགའ་བའི་དགའ་བའོ། །ཇི་བཞིན་པ་ནི་གཅིག་དང་དྲུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བ་
 ཉིད་ཀྱིས་རང་བཞིན་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་དེ་ལྟར་ཀྱན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའོ། །ཐྱ་ག་ནི་
 པརྫ་སྟེ་དེའི་དབུས་ཀྱི་གཞི་ལ་ནམ་པར་བཞུགས་ཏེ། ནམ་པར་རྟོག་པ་ནམས་བསལ་⁴་
 ནས་བཞུགས་ཏེ། སྤྱིད་པ་དང་ལྷ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་མི་གནས་པ་ཉིད་ཀྱིས་སོ།།

དེ་ཀྱའི་རྫོ་རྫོར་གསུངས་པ།

རྫོ་རྫོ་བཅུན་མོའི་ལྷ་ག་བཟང་།།
 བདེ་བ་ཅན་དྲུ་ང་བཞུགས་ཏེ།།
 སངས་རྒྱས་རིན་ཆེན་ཟ་མ་རྟོག་།།
 ཨེ་ཡིག་ཆ་བྱད་ངོ་པོར་རོ།།

དེ་བཞིན་དུ།

བཅུན་མོའི་ལྷ་ག་བདེ་ཆེན་དུ།།
 ལྷ་བའི་མིང་གིས་ནམ་པར་གནས།།
 དེ་མེད་པར་ནི་བདེ་མི་འགྱུར།།
 བདེ་བ་པོར་ནས་དེ་མི་འགྱུར།། ཞེས་སོ།།

དེ་བཞིན་དུ།

-
- 1 དགུགས་ པེ། ལྷ།
 - 2 ཏྲ་ པེ། ལྷ།
 - 3 རོ་ལས་ པེ། ལྷ།
 - 4 གསལ་ པེ། ལྷ།
 - 5 ཕྱ་མོའི་ ལྷ། པེ། ལྷ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་དགའི¹་རང་བཞིན་ང་²།

མཆོག་མཐའ་བྱད་དགའ་དང་པོ་ཅན། ཞེས་སོ།

འདིར་བྱ་བའི་མིང་གིས་ཞེས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཁོ་ནའི་
སེམས་དེ་ལྟར་གསལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །མཆོག་མཐའ་བྱད་དགའ་དང་པོ་ཅན། ཞེས་
མཆོག་གི་མཐའ་བྱད་པར་དགའ་བ་ནི་གང་གི་དང་པོ་ཡིན་པ་སྟེ། མཆོག་གི་དེ་མ་
ཐག་ཏུ་བྱད་པར་དགའ་བ་དང་། དེའི་དེ་མ་ཐག་ཏུ་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ཞེས་པའི་དོན་
རྟོ། ། ལུགས་གཞན་ལ་ནི་བྱད་པར་དགའ་བའི་དང་པོ་སྟེ། མཆོག་དང་བྱད་པར་
དགའ་བ་དག་གི་དབུས་སུ་འོ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ། ། འདོད་པ་འདི་ཡང་མི་འཐད་དེ།

བྱད་དགའ་དང་པོར་མཆོན་པར་བྱ།

དེ་ཡང་དགའ་བ་གསུམ་པོ་སྟངས། ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

འདིས་ནི་བྱད་དགའ་ཡང་འདི་ཡིན་ལ་དང་པོར་ཡང་ངོ་ཞེས་པས་བྱད་དགའི་
དུས་ཁོ་ནར་ཉི་བར་འཆར་བའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་དང་པོ་ཁོ་ནར་མཆོན་པར་བྱའོ་ཞེས་
རྟོགས་³པར་བྱས་ཏེ་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ཤར་⁴ན་ནི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་རྒྱབ་
པའི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ག་ལ་མཆོན།

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཕགས་པའི་ཞབས་ཀྱིས་གསུངས་པ།

ཡེ་ཤེས་གསུམ་གྱི་དབྱེ་བ་འདི།

འདི་ཁོ་ན་ལ་གསལ་བར་མཆོན།

ཞེས་པ་འདིས་དགའ་བ་གསུམ་པོ་མཆོན་པ་དང་བཞི་པ་མི་མཆོན་པར་
གསུངས་སོ། །

1 དགའ་ བཤ། ལྷ།

2 པ་ ལྷ། བཤ། ལྷ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

3 རྟོག་ བཤ། ལྷ།

4 བ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མར་ལྟག།

བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་།

མཆོན་ཉིད¹་བྲལ་བ་གསུམ་ལས་གཞན།། ཞེས་པ་འདིས་སོ།།

དེའི་ཕྱིར་ཇི་ལྟར་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་རྗེས་ཐོགས་སུ་བྱུང་དགའ་སྐྱེ་སྟེ།
 མཆོན་པར་མི་རྣམས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། །བྱུང་དགའི་དེ་མ་ཐག་པའི་བྲན་པ་ཁོ་ནས་
 མཆོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བའི་ཆོས་མ་བསྟན་པར་འགྱུར་རོ།། །ལྷན་ཅིག་
 སྐྱེས་པ་འཆར་བའི་གནས་ལ་ནི་ལོག་པར་རྟོགས་པ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ།། །འོ་ན་དང་པོར་
 ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་མཆོན་ཏེ། ཉམས་སུ་སྤྱོད་བའི་ཉིད་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན། མ་ཡིན་ཏེ།
 ཐོ་རངས་ཀྱི་དུས་མཆོམས་བཞིན་ནོ།། །འོ་ན་དེ་ལྟར་ཡང་དེའི་ངོ་བོ་ཉི་ཤེས་པར་མཆོན་པ་ཁོ་
 ནའོ་ཞེ་ན་བདེན་ཏེ། ཉམས་སུ་སྤྱོད་བའི་ཐབས་ནི་འདི་ལྟར་ཉི་ཤེས་པར་བསྟན་པར་བྱའོ།།
 །འོ་ན་དེ་ལྟ་བུ་ནི་ཐབས་སུ་ཡང་འགྱུར་པར་འོས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ནས་བརྒྱུད་ནས་དེ་ཉི་
 བར་མཆོན་པར་མངོན་པར་ཞེན་པ་འདི་ལ་དེ་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན། བདེན་ཏེ།
 གལ་ཏེ་དེ་ལྟར་གྱུར་ནའོ། །དེར་ནི་དེ་ལྟར་འབྱུང་བཞིན་པ་ན་ཇི་ལྟར་བྱ་བ³་དེ་ལྟར་སྒྲ་
 མ་ནམས་གསུངས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་འདོད་པ་གཉིས་ཀ་ལ་ཡང་ཉི་ཤེས་པར་མཆོན་
 པའི་རིམ་པ་གསལ་བར་བྱས་སོ། །བྱུང་དགའ་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དེ་མ་ཐག་པ་ཉིད་ན་
 རྒྱུད་གཞན་ནམས་དང་། བཙུ་བྱུག་སྟེད་སྟེད་ཐིག་ལེ་འཛིན་པ་འཕྲུག་བྱའི་དངོས་གྲུབ་
 ཀྱང་མི་འཐད་ཅིང་། ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བའི་ཐབས་ཀྱང་མི་སྲིད་ཀྱི།
 ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཁོ་ན་འབའ་ཞིག་པ་ནི་མི་འཐད་པ་མེད་དོ་ཞེས་

1 དང་ གེ། ལྷ། དཔར་མར་ལྷག།

2 རྟོག་ གེ། ལྷ།

3 དེ་ལྟར་བྱ་བ་ ལྷ། དཔར་མར་ལྷག།

4 གསུང་བར་ གེ། ལྷ།

5 ལ་ ཅོ།

6 བ་ གེ། ལྷ།

7 ལྷས་ ཅོ་ནེར་མ་གསལ།

པས་¹ ལྷགས་སྤྲུལ་ཁོ་ན་མཉམ་པ་ལ་རྒྱུ་ལས་ཀྱིས་འཇིགས་པ་མེད་ཏུ་ཁར་ལ་
བྱུང་བས་ཆོག་གོ། །ཡེ་ཤེས་བཟང་པོ་དེ་དཔེ་ཉིད་ཀྱིས་འཇིགས་ཏེ་ན་པའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་
བའི་བདེ་བ་² བསྐྱེད་པར་བྱ་བའི་སྐྱེད་པར་བྱེད་པར་བཞུགས་པར་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པ།

བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྐྱེར་བྱེད་པ།

ཞེས་པ་དེའི་ཐབས་སུ་གྱུར་པའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་མཉམ་པ་ལ་རྒྱུ་ལས་ཀྱིས་
ཁོ་མས་པར་བྱས་པས་³ ཁྱི་མི་འགྱུར་བ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྐྱེད་པ་ལྷུ་ལྷུ་དབྱུང་དུ་མེད་པ་
ཐབས་ལས་བྱུང་བ་ཉི་ཤེས་པ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །ཐབས་དང་ཐབས་ལས་བྱུང་བའི་བདེ་
བ་འདི་དག་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་རང་བཞིན་མེད་པའི་མཆོན་ཉིད་ཅན་སྟོང་པ་ཉིད་ཁོ་
ནའོ། །གང་རྒྱུས་བདེ་བ་ཁོ་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་ཡིད་ཆེས་ནས་གནས་པ་དེ་རྒྱུས་ཀྱི་
འབྲུལ་པ་བསལ་⁴ བའི་དོན་དུ་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་པ།

གང་ཕྱིར་འབྱུང་བ་ཆེ་བ་དེ་བ།

དེ་ཕྱིར་བདེ་བ་དེ་ཉིད་མིན། ཞེས་སོ།

ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆེ་ཐམས་ཅད་དུ་མེད་འབྱུང་སྟེ། དེ་
ལྷན་ན་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་སྟེ། དེའི་དོན་དམ་པ་སྟོང་པ་ཉིད་
ཁོ་ན་དང་ཀུན་རྫོབ་པ་རྟོགས་པའོ། །བདེ་བ་ན་⁷ རྟོགས་པ་ཡིན་མོད་ཀྱི། དེ་ལྷན་ཡང་
ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆེ་ཐམས་ཅད་དུ་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པ་ཡིན་ཏེ། ལྷག་བསལ་དང་བཏང་

1 པ་ལ་ ཅོ།

2 བདེ་བ་ཆེན་པོ་ ལེགས་སྦྱར།

3 པས་ བཤ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

4 གསལ་ བཤ། ལྷ།

5 ཆེན་ བཤ། ལྷ།

6 མ་ ལྷ།

7 རྟོ་ བཤ། ལྷ།

སྒྲིམས་སུ་¹མྱོང་བའི་དུས་སུ་དང་། བསམ་གཏན་བཞི་པ་ལ་དང་། གཟུགས་མེད་
པའི་ཁམས་སུ་རྟོགས་པ་བཞིན་དུ་ཉམས་སུ་མ་མྱོང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།

གང་མཆན་ཡང་དག་པར་བཟོད་པར་གསུངས་པ།

བསམ་གཏན་བཞི་པའི་ཚེ་མོ་འཆང་།།

ཞེས་པ་དེར་བསམ་གཏན་བཞི་པ་ལྟན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་དགའ་བའི་ཚེ་མོར་ཏེ་
ནམ་པར་རྟོག་²པའི་དྲི་མ་ཐམས་ཅད་དང་བུལ་བ་རབ་དུ་གྱུར་པ་མཐར་ཐུག་པ་ལ་
དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་གནས་པ་དེའི་ཕྱིར་དེའི་རང་གི་ངོ་པོ་འཛིན་པ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ།།
བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་དུ་སྤྲུམ་མཐའ་མེད་པའི་ཁམས་གསུམ་པ་སྤྱང་བར་གྱུར་པ་
ན་བསམ་གཏན་ལ་སོགས་པ་ཡང་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ནི་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཁོ་
ན་སྤེ་གཞན་གྱི་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་པ་བཟླས་ཏེ་བཤད་པའི་དོན་རྟོ།། ཁོ་ན་རྗེ་ལྟར་བདེ་
བ་ལྟན་ཅིག་སྐྱེས་པར་བཟོད་ཅེ་ན། རྗེ་ལྟར་དམིགས་པའི་སྤྱང་རྗེ་ཆེན་པོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་
མ་མཐོང་བའི་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ལྟག་པར་མོས་པས་བསྐྱོམ་བཞིན་པ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་
རྟོགས་པ་ན་རྟོ་³པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཀྱན་རྫོབ་པའི་ལྟན་ཅིག་སྐྱེས་པར་བཟོད་པ་དེ་
བཞིན་དུ་བདེ་བ་རེས་འགའ་ཉམས་སུ་མྱོང་བའི་གནས་སྐབས་སུ་དང་། ཉམས་སུ་མ་
མྱོང་བའི་གནས་སྐབས་སུ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་མཐོང་བས་ལྟག་པར་མོས་པས་སྤྱང་རྗེ་ཆེན་
པོ་དང་དབྱེར་མེད་པའི་རང་བཞིན་སྤྱང་པ་ཉིད་ཀྱི་བདག་ཉིད་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
མཆོག་དང་ལྷན་པས། སྐྱོམ་པ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པའི་གནས་སྐབས་སུ་འཛིག་
རྟོན་ལས་འདས་པའི་ཀྱན་རྫོབ་པའི་ལྟན་ཅིག་སྐྱེས་པར་བཟོད་དོ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་
རྟོགས་⁴པའི་གནས་སྐབས་སུ་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་ནི་འཛིག་རྟོན་པའི་ཀྱན་རྫོབ་པའི་ལྟན་
ཅིག་སྐྱེས་པ་སྤྱེ། ལྟན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་གྲིབ་མའི་རྗེས་སུ་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།

1 ཉམས་སུ་ བཤ། སྤྱེ། དཔར་མར་ལྟག།

2 རྟོགས་ བཤ། སྤྱེ།

3 ཀྱི་ བཤ། སྤྱེ། དཔར་མར་མེད།

4 རྟོག་ བཤ། སྤྱེ།

དེ་སྐད་དུ་ཡང་གསུངས་པ།

ལྷན་སྦྲེས་དག་ལས་གང་སྦྲེས་པ།
 དེ་ནི་ལྷན་ཅིག་སྦྲེས་པར་བཤད།
 རང་བཞིན་ལྷན་ཅིག་སྦྲེས་པར་བཤད།
 རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་སྣོམ་པ་གཅིག་།
 སྤྱིང་རྩེ་ཐམས་ཅད་ནལ་འཕྱོར་འགྱུར།
 དུག་རྒྱ་རྒྱ་དང་བྲལ་བ་ལས།
 སྤྱིང་ཉིད་སྤྱིང་རྩེ་དབྱེར་མེད་པ་།
 བྱང་ཚུབ་མེམས་ཞེས་བཤད་པའོ། ཞེས་སོ།¹

འདིར་འདི་ལ་སྣོམ་པར་² བྱ་བའི་ཞེས་པ་སྣོམ་པའོ། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
 སྣོམ་པ་པོ་དང་མེར་པོ་ལ་སོགས་ཀྱི་³ གཅིག་སྦྲེས་གཉིས་པ་མེད་པའི་སྣོམ་པ་སྦྲེས་
 ཅིག་སྦྲེས་པ་ཁོ་ན་དེ་ལྟར་སྤྱང་བའི་བྱིར་རོ། ལྷན་ཅིག་སྦྲེས་པ་དག་ཡང་གང་དག་
 ལས་སྦྲེས་པ་ལྷན་ཅིག་སྦྲེས་པར་བཤོད་པར་བྱ་བ་དེ་དག་ནི་སྤྱིང་རྩེ་དང་དུག་རྒྱ་དག་
 གོ། །དེའི་བྱིར་སྤྱིང་རྩེ་དམིགས་པ་མེད་པའི་སྤྱིང་རྩེ་ཆེན་པོའི་⁴ རང་བཞིན་དེ་གང་གི་
 ཐབས་ཡིན་པ་འདི་ལྟར་གྱུར་པ་དེ་ནི་ནལ་འཕྱོར་པར་འགྱུར་རོ། འདི་སྐད་བཤད་དེ།
 ཐབས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བདེ་བ་འདི་ཡིན་གྱི་⁵ ཤེས་རབ་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ།
 དུག་རྒྱ་ནི་སྤྱིང་པ་ཉིད་དང་དེ་ཁོ་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྦྲེས་པ་མེད་པའི་མཆོན་ཉིད་ཅན་
 ཤེས་རབ་དམ་པ་སྦྲེས་པ་དང་བྲལ་བ་ལས་ནི་རྒྱ་མེད་པ་ལས་ཏེ། ཆོས་རྣམས་ཐམས་
 ཅད་གདོད་མ་ནས་མ་སྦྲེས་པ་ཉིད་ཀྱི་བྱིར་རོ། །རང་བཞིན་འདི་དག་ཀྱང་ལྷན་ཅིག་

1 སོ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།
 2 པ་ བཤ། ལྷ།
 3 ཀྱིས་ བཤ། ལྷ།
 4 སྤྱིང་རྩེ་ཆེན་པོ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ ལེགས་སྦྱར།
 5 ཀྱིས་ བཤ། ལྷ།

སྒྲུབ་པ་དག་ཁོ་ན་སྟེ། རང་ཉིད་ལས་གྲུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འདི་དག་ལས་སྒྲུབ་
པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟོང་ཇི་དབྱེར་མེད་པའོ། །དེ་
ཅི་འདི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལས་གཞན་པ་ཁོ་ན་ལམ་ཁེ་ན། གཞན་མ་ཡིན་ཏོ། དེ་ཁོ་
ན་མི་མཐུན་སྟུགས་བསལ་བ་དེ་ནི་ནམ་པ་འདི་ལྟ་བུའོ་ཞེས་རང་གི་ངོ་བོ་¹རབ་ཏུ་
གསལ་བའོ། །ལྷན་ཅིག་སྒྲུབ་པ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་གི་ངོ་བོ་དག་ལ་གོམས་པ་
ལས་སྒྲུབ་པའི་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་འདི་ཁོ་ན་ནི་བཞི་པ་ལྷན་ཀྱི་ཆེན་པོའི་དབང་བསྐྱར་
ཏེ། རྣམ་པར་རྟོག་པའི་བྱི་མ་རྣམས་ཐམས་ཅད་དངོས་སུ་འདིས་འབྱུང་པའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་གསུངས་པ།

བཞི་པ་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ། ། ཞེས་སོ།

ལྷན་ཅིག་སྒྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ན་སྒྲ་ཚོགས་པར་སྟོན་པ་གསུངས་པ་དེ་ཁོ་
ནར་ནི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །བཟང་པོའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ཁོ་ནར་དངོས་པོ་དང་དངོས་
མེད་པ་ལ་སོགས་པར་སྟོང་བདགས་པ་མཐའ་དག་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པར་དེའི་
བདག་ཉིད་ཀྱི་²ཐམས་ཅད་གནས་སོ། །བྱིས་པ་ཞེས་པ་བྱིས་པ་རྣམས་ཏེ་སེ་སེའི་སྒྲུ་
བོའོ། །འོ་ན་ཇི་ལྟར་བདག་ཉིད་ཀྱི་རང་གི་ངོ་བོ་ཡང་མི་ཤེས་ཤིང་། གང་ཕྱིར་རྫོངས་
པ་རྣམས་ཏེ། དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་³ལ་སོགས་པར་འཛིན་པའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་
མི་ཤེས་པའི་རྫོངས་པ་འདི་རྣམས་ལས་སྒྲུབ་པའོ། །ཡེ་ཤེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བཅུད་དེ་བདེ་
བ་ཆེན་པོ་དང་བཅུད་ལེན་ཏེ། སྟོབས་དང་མི་འཇིགས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་
རྒྱས་པའི་རྒྱ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ནི་བྱུང་པར་ལ་སྟེ། ཕྱི་རོལ་གྱི་བཅུད་ལ་སོགས་
པ་རྣམས་ལས་བྱུང་པར་དུ་འཕགས་པའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟ་ཁོ་ནར་གོམས་
བཞིན་པའི་⁴ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྟེར་བར་བྱེད་པ་པོ་ནི་ཇི་ལྟར་སྒྲ་ཚོགས་པའི་རྣམ་པ་ཅན་
དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སོགས་པ་དང་བྲལ་བའི་དངོས་པོ་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟར་

1 བོར་ བཤ། ལྟ།

2 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

3 བར་ བཤ། ལྟ།

4 པ་ བཤ། ལྟ།

པརྟོགས་པ་ལས་སངས་ཀྱིས་ནམས་ཏེ། དེ་མ་མེད་པ་ཉིད་ཡོངས་སུ་དག་པས་སྟོབས་
དང་མི་འཛིགས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནམས་ངེས་པར་གནས་སོ།
འདིས་ནི་སེམས་ཀྱི་རྩི་རྩེའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་གསུངས་སོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་
པ་སྟེན་པོ་དང་མེར་པོ་ལ་སོགས་པ་སྒྲ་ཆོགས་པའི་ནམ་པ་ཅན་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟོང་
རྩི་དབྱེར་མེད་པར་སྟོམས་པར་ཞུགས་པའི་སྒྲིའི་ངོ་བོ་དགའ་བ་ལ་སོགས་པའི་དབྱེ་བས་
ཐ་དད་པ་སྐྱེ་བ་དང་འཆི་བ་དང་འགོག་པའི་ངོ་བོ་སྟོབ་དང་སྐྱད་པའི་བྱེད་པ་པོ་རྩི་རྩི་
སེམས་དཔའི་། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ཁོ་ན་ལོ།
བཟང་པོ་ནི་རྩི་ཆོགས་པའི་ངོ་བོ་ལོ། །བཞི་པའི་དོན་ཁོ་ན་བསྟོམ་²་བཞིན་པ་གྲུབ་པར་གྱུར་
པ་ནི་དབང་བཞི་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་གསུངས་པ།

དེར་ནི་སྟོབ་མ་བཟང་དབང་བསྐྱར་། ཞེས་ཏེ།

གང་ལྟ་གཞི་དབུས་སུ་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པས་དབང་བསྐྱར་³་བ་དེ་ནི་འཆད་པར་
འགྱུར་རོ། །དེ་རུ་ག་ཞེས་པ་དེ་རུ་ག་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཏེ། ཡོངས་སྟོན་རྩི་ཆོགས་པའི་
སྐྱེའི་བདག་ཉིད་དོ། །པ་རོལ་ཏུ་བྱིན་པའི་རྒྱལ་ལས་ས་བཅུའི་དབང་ཕྱག་བྱང་རྒྱབ་
སེམས་དཔའ་ནམས་ལ་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བའི་ཆོས་སྟོན་པས་ཆོས་ལ་ཡོངས་སྟོན་རྩི་ཆོགས་
པའི་ཡན་ལག་ཉིད་ཀྱིས་ན་མཆན་⁴་སུམ་ཅུ་ཅ་གཉིས་དང་དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་
ཅུའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་⁵་སྐྱེ་ཁོ་ན་ཡོངས་སྟོན་རྩི་ཆོགས་པའི་སྐྱེ་ལོ། །འདིར་ནི་འདི་ཆོས་ཀྱི་
སྐྱེའི་དབང་གི་གདུལ་བྱའི་ངོར་དེ་རུ་ག་ལ་སོགས་པའི་གཟུགས་ཀྱིས་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་
སྐྱུལ་པའི་སྐྱར་བརྩིད་དོ། །གང་སྐྱུལ་པའི་སངས་ཀྱིས་སྐྱུལ་པའི་སྐྱར་པ་རོལ་ཏུ་བྱིན་
པའི་རྒྱལ་ལ་གསུངས་པ། དེ་འདིར་ཡང་དེ་འདྲ་བ་ཁོ་ན་དང་སྐྱུལ་པ་དང་འདྲ་བ་ཡང་
ངོ་། །ཆོས་ཀྱི་སྐྱེའི་སྐྱུལ་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ཡང་ཡོངས་སྟོན་རྩི་ཆོགས་པའི་སྐྱེ་ནི་པ་རོལ་ཏུ་

1 དཔལ་ པེ། ལྷ།

2 སྟོམ་ པེ། ལྷ།

3 སྐྱར་ པེ། ལྷ།

4 རྩི་ པེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྟ།

5 ཀྱིས་ པེ། ལྷ།

ཕྱིན་པའི་ཐེག་པར་ལོག་པ་ཉིད་དེ། ཆོས་ལ་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདིར་
 རི་ངག་གི་རོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་སྟེ། ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱང་རོ་ལ་རྫོགས་པའི¹་
 ལོངས་སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་²་ཀྱང་རོ། །མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་དག་ཅ་བ་མེད་པར་བྱས་
 པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དཔའ་བོའོ། །ནང་དུ་དང་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ཡང་འཆད་པར་འགྱུར་
 པའི་ལྷ་མོ་ཉི་ཤུ་ཅ་བཞིའི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རོ་འབྱུང་པའི་ཕྱིར་དང་ཆོས་ཀྱི་གསུང་གིས་
 སྤྱོད་པའི་ཕྱིར་བདག་པོའོ། །ལུ་མཐའ་མེད་པར་ནམ་པ⁴་སྒྲ་ཆོགས་པའི་སྒྲ་སྒྲིས་པས་
 གཞན་གྱི་དོན་གྱི་རོར་རབ་དུ་འབྱུང་བའི་ངང་ཚུལ་ཅན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གཙོ་བོའོ། །
 མཁའ་ལྷིང་སྤྱོད་པ་ནི་དུག་གཞིལ་བའི་ཐབས་ཏེ། མཆོག་དུ་སྤྱོད་པ་ཉིད་ཁོ་ནའོ། །

གང་གསུངས་པར་འགྱུར་བ།

ཆོས་ནམས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ལ།

སྒྲུལ་དུག་དེ་ལས་ངེ་ལྟར་ཡིན། ། ཞེས་སོ། །

སྟོང་པ་ཉིད་ལ་ལྷག་པར་མི་མོས་པ་ནམས་ཀྱི་འཇིགས་པའི་རྒྱ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་
 འཇིགས་པའོ། །ལྷ་མིན་སྒྲུབ་པ་ཞེས་པ་གང་དེ་ལྟར་གེས་པའི་ནལ་འབྱོར་པའི་དབང་
 དུ་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་པ་དེ་ཡིད་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དུར་ཁྲོད་ཅེས་པ་བསྐྱེད་པའི་
 རིམ་པ་ལ་དབྱུང་རྒྱུའི་ཞེས་པ་དང་རོ་ནམས་གནས་སེ་ཞེས་བྱ་བའི་ངེས་པའི་ཆོག་གི⁶་
 ཚུལ་གྱིས་བདག་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་མཆོན་ཉིད་ཅན་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་གསལ་བར་བྱེད་
 པའི་རོ་ནམས་ཀྱན་ནས་གནས་པ་ནི་དུར་ཁྲོད་དེ། བརྒྱད་ཀྱི་གངས་སུ་བཅད་པ་ནི་
 འཆད་པར་གྱུར་རོ། །འདིར་ནི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་རོ་བོའི་ལུས་ཁོ་ན་ཡན་ལག་

1 པར་ བཤ། ལྷ།

2 ལས་ བཤ། ལྷ།

3 བོའོ་ བཤ། ལྷ།

4 ནམ་པ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

5 དུག་ རྟེ། བཤ། ལྷ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྤྱོད་ལྟར་བཞག་ཡོད།

6 གིས་ བཤ། ལྷ།

བརྒྱུད་པའི་དུར་ཁྲོད་དོ། །པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་ལ་བསྐྱལ་པ་གངས་མེད་པ་
གསུམ་རྣམས་ཀྱིས་སངས་རྒྱལ་ཉིད་སྦྱོང་པར་གསུངས་པ་ལ། འདི་ནི་ངེས་པ་མེད་
པའི་དུས་ཀྱིས་སོ་ཞེས་གསུངས་པ། ཡུད་ཅེས་པ་ཡིས་བསྦྱོང་པའི་རྒྱ། ཞེས་སོ།¹

སྟོང་གསུམ་དུ་ནི་རྩ་འཕུལ་ཆེ།

ཞེས་པ་སྟོང་གསུམ་པ²་ལ་སོགས་པའི་འཛིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་རྣམས་སུ་དཔག་དུ་
མེད་ཅིང་སྒྲ་ཆོགས་པའི་སྤྱལ་པའི་རོ་པོའི་རྩ་འཕུལ་ཆེན་པོ་གང་རྣམས་ཀྱི་ཡིན་པ་དེ་
རྣམས་དེ་སྟོང་དོ། །འདིས་ནི་སྤྱལ་པའི་སྒྲ་ནི་རྟོ་རྩེར་གསུངས་སོ། །སྟོང་གྱི་འཛིག་
རྟེན་ཡང་དེའི་རང་བཞིན་ནོ་ཞེས་གསུངས་པ། འཛིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཞེས་པ་སྟེ།
འཛིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་རྣམས་སོ། །དེ་ཉིད་ཅེས་པ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའོ། །མཆོག་དུ་
དགའ་ཅེའི་གནས་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རྩ་མོའོ། །སངས་རྒྱལ་རྣམས་ཐམས་ཅད་བསྦྱོང་པ་སྟེ་
རྒྱུའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་དཔལ་ཆེན་པོ་སྟེ།
བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །འབྲས་བུའི་གནས་སྐབས་སུ་
ནི། ཤེས་རབ་པ་རོལ་ཕྱིན་དཔུང་གཉིན། ཞེས་པས་ཤེས་རབ་པ་རོལ་དུ་སྟེ་རབ་ཀྱི་
མཐར་ཕྱིན་པར་མཆོག་དུ་བསྟོད་ཅིང་མཐའ་དག་པར་ཕྱིན་པ་སྟེ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་
དུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དཔལ་བའི་སྟོ་ཞེས་པ་དེ་སྟོང་བ་རྣམས་ཀྱིའོ།

ཇི་སྟངས་དུ་རྒྱལ་པོ་རིན་པོ་ཆེའི་འཕྲུང་བར་གསུངས་པ།

གཞན་ཡང་འདི་ཞེས་ངན⁴པའི་ཕྱིར།

སྟོངས་པ་མཁས་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན།

འདི་སྟོང་བདག་ཉིད་ལུང་བྱས་པ།

འོག་དུ་ཁ་ཕྱོགས་མནར་མེད་འགོ། ཞེས་སོ།

1 པོའི་ བོ། ལྟ།

2 སྟོང་པ་གསུམ་ བོ། ལྟ།

3 ཀྱི་ བོ། ལྟ། དཔར་མར་རྩྭ།

4 རྩན་ ལྟ།

དེ་ཁོ་ན་ནི་དེ་¹ཁོ་ན་ལོ། སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ནི་ཐར་པ་ལོ། སྒྲིབ་པ་
 ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པའི་དམིགས་པ་མེད་པའི་སྒྲིབ་རྗེ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་བདེ་བ་ཆེན་
 པོའི་རང་བཞིན་²ལས་བྱུང་བ་འགོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་གྱི་སྒྲུ་³ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའོ།
 གང་དུ་གང་གི་གཞན་ལས་ཡིན་པ་ནི་འདིའི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གྲགས་ཆེན་མོ།
 དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་ཀྱན་ལ་ཕན་འདོད་མ་སྟེ། སྒྲིབ་རྗེ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ནམ་པས་སྒྲ་ཆོགས་པ་བསྐྱེད་⁴པའི་ཕྱིར་མའོ།
 ཀྱན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པའི་ནམ་པར་དབྱེ་བ་བསྒྲུམ་⁵པས་སྐྱེས་པ་ཉིད་ཀྱི་
 ཕྱིར་སྤང་མའི་བྱ་མའོ། །ཀྱན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་དག་གི་ནམ་པར་དབྱེ་
 བ་འཆད་པའི་ཕྱིར་སྤང་མའོ།⁶ སྒྲིབས་དང་མི་འཛིགས་པ་ལ་སོགས་པ་སྐྱ་ན་མེད་
 པའི་ཡོན་ཏན་ནམ་ནམ་མཁའི་བ་བཞོན་ལས་འཇོ་བའི་ཕྱིར་ཏེ་བསྐྱེད་⁷པའི་ཕྱིར་ན་བྱ་
 མའོ། །སྐྱ་ན་མེད་པའི་བདེ་བས་རྗེས་སུ་ཆགས་པའི་ཕྱིར་བྱད་མེད་ཀྱི་ཤེས་པ་བྱད་
 མེད་དོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པས་རབ་དུ་གསལ་བས་བག་ལ་ཉལ་ནམ་པར་
 མཐུན་ནས་རྗེ་ལྟར་རིགས་པར་འཇུག་ཅིང་དགོད་པའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་
 རྗེས་སུ་ཆགས་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་པས་ཤེས་རབ་ཁོ་ན་བྱད་མེད་ཅེས་བརྗོད་དོ།
 སྐྱེས་བྱར་ལེགས་གཤེས་པ་ལེགས་པར་སྐྱེས་བྱ་ནམས་ལ་གཤེས་པ་སྟེ། སྒྲིབ་རྗེ་
 མཆོག་གི་ཟག་པ་མེད་པར་མེད་པ་མུར་ཐུག་པ་མེད་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་དོན་སེམས་
 ཅན་སོ་སོ་ལ་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཤོང་དུ་གཏོད་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རམ། ལས་དང་པོ་
 པའི་⁸སེམས་ཅན་ནམས་ཀྱིས་བརྟན་པར་བྱ་མི་རུས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་རབ་ནི་

1 དེ་ པ། ལྷ། དཔར་མར་མ་གསལ།

2 པོ་ པ། ལྷ།

3 ཀྱན་པའི་ ལེགས་སྒྲུར།

4 སྐྱེད་ པ། ལྷ།

5 སྐྱེས་ པ། ལྷ།

6 མའོའོ་ པ། ལྷ།

7 སྐྱེད་ པ། ལྷ།

8 པོའི་ པ། ལྷ།

སྤྱོད་པ་མེད་པ་ཉོགས་པ་སྟེ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དང་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཞེས་
 པའི་བར་རོ། །སྤྱོད་པའི་ཕྱག་རྒྱ་འདི་རྣམས་དང་གཞན་རྣམས་ཀྱང་བརྩུ་གསུམ་
 པར་འཆད་²པར་འགྱུར་རོ། །བསོད་ནམས་ཉེ་བར་མ་བསགས་པ་དེའི་རང་གི་ངོ་པོ་
 མ་རིག་པ་ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་རིགས་ཅན་རྣམས་འཛིགས་པའི་རྒྱ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ན་
 འཛིགས་བྱེད་མའོ། །དེ་འཕགས་པ་སྤྱོད་ཅན་འཛིན་བཟང་པོས་གསུངས་པ།

ཐུས་པ་རྣམས་ལ་འཛིགས་སྟོན་མ་། ། ཞེས་སོ། །

ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་སྟེ་ཆད་པ་དང་སྤྱོད་འདོགས་པས་ལྟ་བའི་འོ། །མཐོ་རིས་དང་
 བྱང་གྲོལ་ལམ་³ཕྱིར་ཕྱོགས་པའི་དཔྱལ་བའི་རྒྱ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཛིགས་རུང་ངོ་། །

དེ་གསུངས་པ།

ཁྱོད་ཀྱིས་མ་མཐོང་བས་འཆིང་འགྱུར། ། ཞེས་སོ། །

འགྲོ་བ་དུག་འཛིགས་རུང་ཞེས་ཁ་ཅིག་དུ་སྟོག་པ་དེའི་ཆེ་འཛིགས་རུང་
 འཁོར་བ་པོའོ། ⁴ །དེའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་གཅིག་ཕུ་ཁོ་ན་འདི་རྣམས་ཀྱི་དང་གཞན་
 རྣམས་ཀྱི་འང་མུ་ངན་ལས་འདས་པའོ། །

དེ་འཕགས་པ་སྤྱོད་སྤྱུབ་ཞབས་ཀྱིས་གསུངས་པ།

འཁོར་བ་ཡོངས་སུ་ཤེས་ཁོ་ན་། །

མུ་ངན་འདས་པ་ཞེས་པར་བཤད། ། ཅེས་སོ། །

དཔལ་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བའི་རྒྱུད་དུ་ཡང་གསུངས་པ།

ཀྱན་ཉོག་རྒྱུང་མེན་མུན་པས་བེལ་མནན་པ། །

རབ་དུ་བཅོམ་ཕྱིར་ཕྱོགས་པའི་སྟོག་འགྱུར་དང་། །

1 ཐུས་པ་ བེ། ལྷ།

2 ཆད་ བེ། ལྷ།

3 ལས་ རྟེ། བེ། ལྷ། ཁོང་དུ་ལོགས་སྤྱིར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

4 བའོ་ བེ། ལྷ།

ཆགས་སོགས་བརྒྱུག་དཀའི་དྲི་མས་གོས་པ་ཡིས།¹

སེམས་ནི་འཁོར་བར་དོ་རྩེ་ཅན་གྱིས་གསུངས།

རབ་རྩུ་འོད་གསལ་རྫོགས་པས་ནམ་གྲོལ་བ།

ཆགས་སོགས་དྲི་མས་གོས་པ་²རབ་སྤངས་གིང་།

གཟུང་དང་འཛིན་པ་མེད་པ་དེ་ཉིད་ནི།

སེམས་ཅན་མཆོག་གིས་ཐུང་འདས་མཆོག་རྩུ་གསུངས།

དེ་ཕྱིར་སྤྱད་བསྐྱེད་ཐུང་པོ་མང་པོ་ཡི།

རྩུ་མཆོན་གྱུར་པ་དེ་ལས་གཞན་ཅིའང་མེད།

མཐའ་ཡས་བདེ་བ་འཆར་བའི་རྩུར་གྱུར་པའང་།

དེ་ལས་གཞན་པ་ཡོད་མིན་ཐར་འདོད་ནམས། ཞེས་སོ།

མཐའ་ཡས་པའི་བདེ་བ་ཡང་དག་པར་འབྱོར་བས་རྩུ་འཕྲུལ་ཆེན་པོ་ཅན་ནོ།

འཁོར་བ་རྩུས་པར་སྟོན་ཏེ། རྣམ་རྟོག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་གྲངས་ཀྱི་མཐར་ཐུག་
པའོ། ཡོད་པ་དང་མེད་པ་དང་རྟག་པ་དང་ཆད་པ་དང་། གཟུང་བ་³དང་། འཛིན་
པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཆོགས་པར་རྟོག་པ་ནི་རྣམ་རྟོག་སྟེ། དེ་ཁོ་ན་རྩུན་དུ་འདུག་
པ་ནི་ཀྱན་རྟོག་པའོ། །འཆར་བ་དང་རྩུབ་པ་ནི་སྟེ་བ་འགོག་པ་དག་གོ། །དེ་རྟོག་⁴པའི་
ཐབས་སྟོན་པ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཅི་
ཞེག་རྣམས་ཤེན་གསུངས་པ། དམན་པ་⁵དང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དམན་པ་ནི་
སྤྲ་བའི་དངོས་པོ་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བའི་ངོ་བོའོ། །མཆོག་ནི་བྱིས་པའི་བར་
ལ་དངོས་པོའི་ཐ་སྟད་ཅན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ན་རགས་པའི་ངོ་བོའི་དངོས་པོའི་ལྷས་
ཁོ་ནའོ། །བར་མ་ནི་གཉིས་དག་ལས་གཞན་ལྷ་ལི་དང་ཀྱ་ལི་དག་གོ། །དེ་ལྟར་ལྷས་

1 ཡིན་ པེ། ལྷ།

2 བར་ པེ། ལྷ།

3 བ་ པེ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

4 རྟོགས་ པེ། ལྷ།

5 བ་ པེ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

དང་། ངག་དང་། སེམས་རྣམས་ཇི་ལྟར་རིགས་པར་དམན་པ་དང་བར་མ་དང་
 མཆོག་གི་ཆོག་རྣམས་ཀྱིས་གསུངས་སོ། །གཞན་རྣམས་ནི་དབང་པོ་དྲུག་རྣམས་སོ།།
 གང་རྣམས་དེ་རྣམས་ཞེས་པ་འདིས་བརྟན་པ་ས་¹གཞི་ལ་སོགས་པའི་རྣམས་དང་གཡོ་
 བ་གཞན་སློག་ཆགས་བརྗོད་དོ།།

དེ་ཀྱི་འོ་དོ་ཇི་ཇི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པ།

དམན་པ་ཕྱ་བའི་ཆོག་དོན་ཏེ།།
 མཆོག་ནི་²དངོས་པོར་བརྗོད་པར་³བྱ།།
 བར་མ་གཉིས་ཀ་སྤངས་པའོ།།
 གཞན་རྣམས་ཞེས་པ་དབང་པོ་དྲུག་།།
 གང་རྣམས་དེ་རྣམས་བརྟན་དང་གཡོ།། ཞེས་སོ།།

དམན་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་རྟོགས་⁴པ་མེད་པའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་
 པའི་རང་བཞིན་འདི་རྣམས་བསྐྱེད་⁵བཞིན་པ་རྣམས་ནི་གསལ་པོར་འགྱུར་ཞེས་ཀྱང་
 པ་བརྒྱས་⁶པས་ནི་མ་ཡིན་ཞེས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་སྤྲུལ་བསྐྱེད་པ་གསལ་བར་བྱས་
 སོ། །འོ་ན་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་བསྐྱེད་པ་ཞེས་པ་དོན་ཅི་ཞེ་ན། བདེ་བ་ཆེན་པོའི་
 ཐབས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་བསམ་པ་ཁོ་ན་ནི་བསྐྱེད་⁷པའོ་ཞེས་པའི་དོན་དོ།།
 དེ་⁸ཅི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྦྱོན་ཅན་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། སྦྱོན་ཅན་ཡིན་པ་⁹

1 པས་ སྤེ། པ། ལྷ། གོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 2 གི་ པ། ལྷ།
 3 པ་ པ། ལྷ།
 4 རྟོག་ པ། ལྷ།
 5 རྐྱེད་ པ། ལྷ།
 6 བརྒྱད་ སྤེ། པ། ལྷ། གོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞག་ཡོད།
 7 རྐྱེད་ པ། ལྷ།
 8 ད་ ལྷ།
 9 མ་ པ། ལྷ། དཔར་མར་ལྟག།

ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་དང་ཐ་མི་དད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཏེ། འགྲོ་བ་སྣོང་པ་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ལ་སྣོང་པ་ཉིད་བསམ་པར་ནུས་པ་ཡང་མ་ཡིན་ཞེས་པས་དེ་ཡང་ཡིད་ལ་
 བྱེད་པ་སྒྲིན་པའོ། །སེམས་པ་མེད་པའི་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ནི་ཉེ་བར་
 བརྟན་པའོ།།

རི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པ།

འབྲུལ་པ་ནམས་ཀྱིས་ཉེར་མཁོའི་ཆད།།

འབྲུལ་པ་གཞན་ནི་སེལ་བའི་ཕྱིར།། ཞེས་སོ།།

དེའི་ཕྱིར་ནམ་པར་མི་རྟོག་¹པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཁོ་ན་རྒྱུན་ཀྱིས་
 འདུག་པ་ན་དོན་དམ་པའི་སྒྲིམ་པ་ཞེས་པ་གདགས་པར་བྱའོ། །སེམས་པ་མེད་པའི་
 རྗེས་སུ་མཐུན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བརྟན་པ་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་²དེའི་ཆེ་ཁོ་ན་མཉམ་པར་
 གཞག་³པའི་རྣལ་འབྱོར་ཏེ། གཞན་གྱི་ཆེ་ནི་མཉམ་པར་མ་གཞག་⁴པའི་རྣལ་འབྱོར་
 ཁོ་ནའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་ལ་ཕྱག་རྒྱའི་རྣལ་འབྱོར་མེད་པར་ཡང་
 མཉམ་པར་གཞག་⁵པའི་རྣལ་འབྱོར་ཉེ་བར་སྟོན་ཏེ། བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཐབས་ཀྱིས་
 ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་པར་མི་རྟོག་པས་གནས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་ཕྱག་རྒྱའི་
 རྣལ་འབྱོར་ཁོ་ན་ལས་སོ། །དེ་ལྟར་འདི་ཅིག་ཕྱར་རང་གི་དོན་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པས་
 སྐལ་བ་ཆེན་པོ་དང་། གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པས་སེམས་ཅན་ཀྱན་ལ་བདེ་བ་
 འབབ་པ་ཞེས་པ་མཐུག་བསྟུ་བའོ། །དེ་ལྟར་ཞེས་པ་རིམ་པ་གཉིས་སོ། །དགའ་བ་ནི་
 བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ཐོས་པ་ལས་སོ། །སྤྱན་གདངས་པ་ནི་རྫོགས་པའི་རིམ་པར་ཐོས་པ་
 ལས་གིན་ཏུ་དགའ་བ་ལས་སོ། །སེམས་བཅས་ཞེས་པ་སེམས་དང་ལྡན་པ་ནམས་ཏེ་

1 རྟོགས་ བཅ། སྟེ།

2 དེ་ལ་གང་གི་ཆེ་དང་གང་གི་ཆེ་ཁོ་ན་སེམས་བརྟན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་ བཅ། སྟེ།

3 བཞག་ བཅ། སྟེ།

4 བཞག་ རྟེ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཤོད་ཡོད།

5 བཞག་ བཅ། སྟེ།

རིམ་པ་གཉིས་ལ་མཁས་པར་སྦྱངས་པའི་སྒོ་ཅན་རྣམས་སོ། །བདུད་ཅེས་པ་ཕྱག་
 འཛེལ་ནས་སོ། །དོན་གང་ཞེས་པ་དོན་བརྗོད་བྱ་གང་ཞིག་སོ། །ཡང་དག་པར་
 གླངས་སོ་ཞེས་པ་ཡང་དག་པར་བརྟུང་པའོ། །དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་འདིར་
 བསྟུས་པའི་དོན་ནི། །གང་བཅོམ་ཞུན་འདས་ཀྱི་ཐོད་པ་ནས་སྣ་ཆོགས་སྡེ་མའི་སྒྲིང་
 གར་ངལ་བསོས་ནས་ཕྱུང་བར་གང་སྤར་གསུངས་པའི་སྒྲེགས་བམ་དེ་སོ་སོར་སྤར་བ་
 ཅམ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། དེ་ལྟར་ཕྱག་ན་དོ་རྗེའི་ལག་པ་ནས་སྒྲིན་མཆོམས་ནས་གཞུག་སྡེ་
 གཞུང་དང་དོན་དང་བཅས་པ་སྒྲིང་གར་ཁུ་བར་གྱུར་ཏི་ཞེས་པའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་
 ཕྱིས་སྤྱང་³པ་པོར་འབྲད་དོ། །བཟུངས་པ་ཞེས་པ་སྒྲིན་དུ་བསྟེན་པ་ནའོ། །སྣ་ཆོགས་
 ཞེས་པ་ཡུལ་དང་དུས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །སྤར་དང་རེངས་པ་ལ་སོགས་པ་
 གང་གསུངས་པའོ། །དེར་རྗེས་སུ་ནན་ཏན་དུ་⁴བྱ་བ་རྣམས་ལ་ངེས་པའོ། །རི་ལྟར་
 འགྱུར་ཞེས་པ་དྲིས་པ་⁵གསལ་བར་བྱེད་དེ་ཅི་རྣམས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །ཀླི་པ⁶
 བདེ་བ་སྦྱོང་བར་བྱེད་པ་ཀལ་ལུ་ཁོ་ན་ཐོད་པ་སྟེ་པརྟའོ། །གྲུ་གསུམ་རྣམས་ཀྱི་འབྱུང་
 རོ་ཞེས་པ་གྲུ་གསུམ་ཡང་དག་འབྱུང་རོ། །བཅོམ་ཞུན་འདས་དང་བཅོམ་ཞུན་འདས་
 མའི་དོ་རྗེ་དང་པརྟ་དེ་དག་གི་སྦྱོར་པའོ། །ནང་དུ་ནི་དོ་རྗེ་ཅི་བྱང་ཐུབ་ཀྱི་སེམས་
 བཅོམ་ཞུན་འདས་ཏེ། གསང་བའི་འཁོར་ལོ་ལས་ཡང་དག་པར་འབྱུང་བའོ། །ཁྱུ་
 བའི་རྣམ་པ་བཅོམ་ཞུན་འདས་ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐོད་པའི་རྩལ་ཏེ་ཐོད་པ་
 ལ་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསུངས་པ། གྲུ་གསུམ་ལས་ཏེ་གསང་
 བའི་འཁོར་ལོ་ལས་ཡང་དག་འབྱུང་བའོ། །དེ་དག་མན་ངག་རི་ལྟ་བུ་བཞེན་རིན་ཆེན་
 འདས་སར་ལས་ཀྱི་གདུམ་མོ་ལ་སོགས་པས་སྦྱོར་བའོ། །དོན་དམ་པར་ནི་སངས་
 རྒྱལ་དང་ཐོད་པ་དག་གི་སྟེ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྒྲིང་རྗེ་དག་གི་སྦྱོར་བའོ། །དེའི་སྟེ་སྦྱོར་

- 1 ཏི་ བོ། ལྷ།
- 2 ཞུགས་ཏེ་ བོ། ལྷ།
- 3 ལྷས་ བོ། ལྷ།
- 4 བྱ་བའི་དུས་སུ་དང་ བོ། ལྷ། དཔར་མར་སྟག།
- 5 དྲི་བ་ བོ། ལྷ།
- 6 པ་ ལྷ། དཔར་མར་མ་གསལ།

བ་ནམ་པ་གསུམ་གྱི་གསང་བར་ཉེ་ནང་དུ་གནས་པའི་ཙུ་ཨ་བརྒྱུ་རྩེ་ནི་དངོས་སུ་ན་¹་
 ལྷ་ཚོགས་སྡེ་མའོ། །དེས་སྤྱོད་པའི་ཕྱིར་ནི་ཙུ་སྤྱོད་པ་ལྷ་གཉིས་ཀྱང་ལྷ་
 ཚོགས་སྡེ་མའོ། །ཡན་ལག་གི་དོན་གསུང་²པ་ལྷ་ཚོགས་ཞེས་པ་སྟེ། རོ་མཚར་
 རྟོབས་དང་མི་འཛིགས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་སྤྱི་བ་པ་མེད་པར་བྱེད་པ་སྟེ། ནམ་
 པ་ཐམས་ཅད་མཚོག་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་དོ། །དེ་ཁོ་ན་ལྷ་ཚོགས་པ་སྟེ།
 བརྟན་པ་དང་གཡོ་བའི་བདག་ཉིད་ཁམས་གསུམ་པ་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ཡེ་ཤེས་གྱི་
 རང་བཞིན་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་རོ། །འདིས་ནི་རི་ལྷར་བཅོམ་ལྷན་འདས་སྤྱོད་བ་ཉིད་དང་
 རྟོང་རྩེ་དབྱེར་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་སངས་རྒྱས་ཐོད་པར་བརྟེན་པ་དེ་ལྷར་བཅོམ་ལྷན་
 འདས་མ་ལྷ་ཚོགས་སྡེ་མ་ཡང་རོ་ཞེས་གསལ་བར་བྱས་སོ། །དེ་ལྷར་ན་ཆེན་པོ་
 ནམས་གྱི་³གང་གིས་སམ་གང་དུ་འགྲོ་བ་ཞེས་པ་ཐེག་པ་སྟེ་རྒྱ་དང་འབྲས་བུའི་
 བདག་ཉིད་ཐེག་པ་ཆེན་པོའོ། །འདི་སྟེ་འཁོར་ལོ་སྟེ་བོ་⁴ཞེས་པའོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་
 ཞེས་པ་རྣལ་འབྱོར་པ་གསུམ་ཕུལ་དུ་བྱུང་བ་དང་ལྷན་པ་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་
 མ་ནམས་ཏེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་རང་བཞིན་ཙུ་ནི་ཨ་བརྒྱུ་རྩེ་སྟེ། དེ་ལས་ཡང་དག་
 འབྱུང་བའོ། །བཤད་པའི་སྦྱར་བས་སོ། །དེ་ཉིད་དེ་ཡེ་ཤེས་བཟང་པོ་གང་སྤར་
 གསུངས་པ་དེ་མད་བྱུང་སྟེ། སྦོམ་པས་དྲོད་ལ་སོགས་པའི་རིམ་པས་ཆེ་མཚོག་སྟེ།
 འབྲས་བུ་རྩེ་རྩེ་འཛིན་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །སེམས་ཅན་ཀུན་ལ་བདེ་བ་འབབ། །ཅེས་པ་
 གོ་སྒྲུབ་ཏེ། ཁ་ཅིག་ཏུ། སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་བདེ་བ་⁷འབབ། །ཅེས་སྒྲོག་པ་དེའི་ཆོ།
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ནམས་ཀུན་གྱི་བདེ་བ་འབབ་པའོ། །
 རི་ལྷར་འདི་བཞིན་དུ་ཡིན་ཞེ་ན་གསུངས་པ། ལྷ་ཚོགས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ་

1 ན་ བེ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

2 གསུམ་ སྟེ། བེ། ལྷ། གོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྷར་བཞག་ཡོད།

3 ཀྱིས་ བེ། ལྷ།

4 བ་ བེ། ལྷ།

5 ལ་ བེ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

6 ལྷོ་ བེ། ལྷོ་ ལྷ།

7 བ་ བེ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

བཟང་ཆེན་ཁོ་ན་ལོ། བོད་པར་ཏེ་ཆོས་འབྱུང་དུ་ལོ། །གསང་སྤགས་རྒྱུད་དང་རྣམ་
 པར་གནས། ཞེས་པ། ཨོ་བུ་རྒྱ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྤགས་སོ། །རྒྱུད་ནི་སྤར་བརྩོད་
 ཟེན་ཏོ། །དེ་དག་དང་ལྷན་ཅིག་ཏེ་མ་དང་བུལ་བར་གནས་པ་ལོ། །ཡང་ན་སྤགས་ནི་
 ལྷོང་པ་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྟེ། དེ་རྒྱུད་དེ་རྒྱུན་དུ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་
 རྣམས་བསལ་པ་¹ རྣམ་གང་དུ་གནས་པ་དེ་དེ་སྤྲད་དོ། །དེའི་ནི་ཐོད་པ་ཁོ་ན་འདི་ལོ། །གྲུ་
 གསུམ་ཞེས་པ་གྲུ་གསུམ་གྱི་འབྲས་བུ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དང་ཐབས་གཞན་མེད་པར་ཤེས་
 པའི་དོན་དུ་ཉེ་བར་བརྟགས་པ་ལོ། །དེར་ནི་ཞེས་པ་གང་དུ་ཡེ་ཤེས་བཟང་པོ་ཤེས་རབ་
 ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རོ་བོ་དེ་སྐྱེས་པ་དེ་ལ་བརྟེན་པས་དང་དེ་ཁོ་ན་གོམས་པ་ལས་དབང་བཞི་
 པར་འགྱུར་བའི་གནས་དེར་བདུན་དང་ལྔ་ཞེས་པ་དང་དབང་བཅུ་བཞི་རྣམས་སོ། །
 སངས་རྒྱུས་མངོན་ཆོད་ཕྱེད་ཅེས་པ་ནི་མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པར་དག་པ་
 རྣམས་ཏེ་དེ་རྣམས་འཆད་པར་འགྱུར་རོ། །སྦྱོར་བ་སྤྱ་ཆོགས་རྣམས་ནི་ཞི་བ་ལ་
 སོགས་པ་འཆད་པར་འགྱུར་བ་རྣམས་སོ། །ཆོ་འཕེལ་ཞེས་པ་ཆོ་ལ་དབང་བ་ཉིད་
 ཀྱིས་ན་ཡེ་ཤེས་དེ་ཁོ་ན་ལོ། །ཡང་ན་སྦྱུལ་པའི་འཁོར་ལའི་མདུད་² པར་འོད་ཟེར་ལྔ་
 དང་ལྔ་ན་པའི་ཐིག་ལེ་སྤྲ་མོ་དཀར་པོ་ནི་དབང་བསྐྱར་ལཱའི་རང་བཞིན་ནོ། །

སངས་རྒྱུས་བདུན་ནི་ཆོད་ཕྱེད་པ།

ཞེས་པའི་ཐིག་ལེ་དེ་རེ་ཁྲ་བདུན་གྱིས་བསྐྱོར་པར་བྱ་བྱིང་སྤ་བར་འབར་བ་དེ་
 རྣམས་ཀྱང་རྒྱུང་འབྱུང་བ་ན་འབྱུང་བྱིང་འཇུག་པ་ན་སེམས་དང་ལྷན་ཅིག་ཐིག་ལེ་
 ལ་འཇུག་སྟེ། འདི་ལྟར་སྒྲིམ་པས་སྐྱེས་པའི་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་དབང་
 བདུན་རྣམས་སོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །ཆོ་འཕེལ་ཞེས་པ་འཇུག་པ་དང་འབྱུང་བ་དག་
 ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་³ བརྒྱས་པས་འགོག་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་པ་མན་

1 གསལ་ བཤ། ལྷ།

2 འདུད་ ལྷ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

3 ཀྱི་ བཤ། ལྷ།

ངག་གོ། །འདི་ཐམས་ཅད་ཐུ་མའི་མན་ངག་མེད་ན་རྟོགས་པར་དཀའ་ཞེས་གསུངས་
 པ། མན་ངག་ལམ་ཞེས་པ་སྟེ་མན་ངག་གི་ལམ་དེ་རྟོགས་པའི་ཐབས་ཡིན་པ་དེ་དེ་
 རྟེན་དོ། །མན་ངག་ཀྱང་ཁོ་པོས་ནམ་པར་སྟེ་ཟིན་ཅིང་འབྱེད་པར་ཡང་འགྱུར་རོ།
 མཁས་པ་འཇིགས་པ་མེད་པའི་འབྱུང་གནས་ཀྱི་སྤྲུལ་པས་མཛད་པའི་འཇིགས་པ་
 མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དཔལ་སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་རྒྱད་ཆེན་པོའི་འགྲེལ་པ་ལེའུ་
 དང་པོའོ། །

*

ཐལ་པའི་སྦྱར་བ་དང་ལས་སྒྲུ་ཆོགས་གཏན་ལ་དབབ་པ་དང་ སྒྲུ་གི་ལེའུ།

བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་རྒྱས་པར་སྒྲོན་པའི་ཆེད་དུ་སྒྲུ་གི་ལེའུ་གསུངས་པ་དེ་
ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ནི་སྒྲུ་གས་དང་སྒྲུ་གས་ཀྱི་སྒྲུའི་རང་
བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དང་བསྐྱེད་པའི་རིམ་པའི་ཡན་ལག་ལས་རབ་འབྱམ་ཡང་སྒྲུ་གས་
ཀྱིས་བསྐྱབ་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲུ་གས་ཀྱི་ངོ་བོ་ནི་སྒྲུ་གས་ཏེ། བོད་པར་བྱེད་
པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒྲུ་ལ་བར་བྱེད་པའི་སྒྲུ་བའོ། །དེ་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ལེའུ་ཡང་དག་
པར་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། རི་རྩར་འདོད་པ་བཅོམ་ཞུན་འདས་ཀྱིས་སངས་རྒྱས་ཐོད་
པའི་ཅ་བའི་རྒྱུད་སྤྱང་སྤྱག་བཅུ་གཉིས་པར་རོ། །དེ་རི་ཞེས་པ་ནི་དམ་ཆོག་གི་རྩལ་ཏེ།
དེ་དབུལ་པའི་སྒྲུ་གས་སོ། །དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་གཏོར་མ་སྒྲོན་དུ་འགྲོ་བ་ཉིད་ཀྱི་
ཕྱིར་གསུངས་པ། ཇོ་མ་རྒྱལ་ལ་བརྟུ་ཞེས་པ་སོགས་པའོ། །དབང་པོ་ལ་སོགས་པ་
རྣམས་འཁོར་དང་བཅས་པ་རྣམས་ནི་འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་དེ་དེ་རྣམས་འདིའི་ལྟོ་
ཞེས་པ་འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་པ་སྟེ། གཏོར་མ་ནི་ཉི་ལེ་སྦྱོར་པའི་བྱེད་པར་རོ། །
དེའི་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་པའི་སྒྲུ་གས་ནི། །འབྱུང་པོ་ཐམས་ཅད་པའི་གཏོར་མའི་སྒྲུ་གས་
སོ། །འདིར་སྦྱོགས་བཅུ་རྣམས་སྤྱད་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་སོགས་
པ་རྣམས་དང་དབང་པོ་ལ་སོགས་པ་འཁོར་པ་དང་བཅས་པ་རྣམས་དང་སྦྲོག་ཆགས་
དཔག་ཏུ་མེད་པ་རྣམས་ཤེས་རབ་དང་བཅས་པ་རྣམས་ཤེས་རབ་མཆོག་གི་དབང་
དུ་བྱས་པས་ཡུད་ཀྱིས་བཅོམ་ཞུན་འདས་དང་བཅོམ་ཞུན་འདས་མ་ཡང་དག་པར་
སྦྱར་བའི་གཟུགས་སྤྱད་ཆོ་ཞིང་གཏོར་མ་ཡང་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་སྦྱོམ་པས་སམ་
ཡུད་ཀྱིས་དབུལ་ཆུ་འདྲ་བ་བདུད་ཅིའི་རང་བཞིན་བདུག་སྦོས་ལ་སོགས་པ་དང་
བཅས་པ་དེ་རྣམས་ལ་སྦྱིན་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་མན་ངག་གོ། །འབྲས་སྤྱ་ལུ་ཞེས་པ་
འབྲས་སྤྱ་ལུ་དམར་པོ་མ་ཆག་པ། བ་དཀར་མའི་འོ་མས་བཀྱ་བར་བྱའོ། །གཞིན་རྒྱ་

1 བ་ བཤ། སྤྱ། དཔར་མའི་ནང་རྟག།

2 རྩ་ བཤ། སྤྱ།

མ་ནི་ཡན་ལག་མ་ཚང་བ་མེད་ཅིང་མ་ཉམས་པའོ། །ཤིན་ཏུ་ཞིབ་པའི་ཞེས་པ་ནི་ཤིན་
ཏུ་ཞིབ་པར་རོ། །དེ་ལྟར་བདག་པའི་འབྲས་ཀྱི་སྒྲིག་གཟུགས་ཏེ་དེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་
བརྒྱན་བྱ་སྟེ་རང་ཉིད་ཀྱིས་བྱ་བའོ། །ཤེས་རབ་ཅན་ཞེས་པ་མ་ཉམས་པའི་ཤེས་རབ་
དང་ལྡན་པའོ། །དྲི་རྩེ་གཙུག་ཅེས་པ་དྲི་རྩེ་གཙུག་ནི་གཞིན་ཏུ་མ་མ་ཉམས་པའི་མེ་
ཏོག་དང་པོའི་དུས་སུ་དྲི་རྩེ་དང་པ་རྩ་རྩྱུར་བ་ལས་སྦྱེས་པའི་གཉི་གའི་བྱང་ཆུབ་
ཀྱི་སེམས་ཏེ། དེ་དང་རང་བྱུང་གི་མེ་ཏོག་བསྐྱེད་པའི་དང་ལྡན་ཅིག་མཉམས་ཤིང་དེ་
དང་ཆ་མཉམ་པའི་དུས་ཁྲིད་ཀྱི་སྐོལ་བའི་སྤེམས་གཟུགས་བརྒྱན་དེ་བྱུག་པར་བྱའོ།

སངས་རྒྱུ་མཐོན་པའི་ནལ་འཁྱོར་པ། །ཞེས་པ་རྩྱུར་བ་ཐམས་ཅད་ལ་རང་ཉིད་
དེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་དོ། །དེ་རུ་ཀའི་ནམ་པའི་རབ་ཏུ་རྩྱུར་བས་ཞེས་པས་གཟུགས་
བརྒྱན་དམ་ཚིག་སེམས་དཔའ་ཡེ་ཤེས་སེམས་དཔའ་དང་ལྡན་ཅིག་དབྱེར་མེད་པའི་
དེ་རུ་ཀ་དངོས་སུ་བརྒྱུ་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་ན་གཟུགས་བརྒྱན་དེ་རུ་ཀའི་ནམ་པའི་
རྩྱུར་བས་སོ། །གཟུགས་བརྒྱན་དེ་ལ་ལག་པས་རེག་ནས་ཨོ་མ་ཏུ་བརྟུ་ཞེས་པ་ལ་
སྟོགས་པའི་ཐུགས་བརྒྱད་ལྟག་པའི་བརྒྱ་བརྒྱས་སོ། །ཆུ་ཞེས་པ་དྲི་རྩེ་འཁྱོར། །དེའི་
རྩེ་སུ་བཀྲུས་པའི་གཟུགས་བརྒྱན་མཆོད་དེ་མཛོན་པར་འདོད་པའི་བསམ་པས་ཁྱུས་ཀྱི་
ཆུ་དེས་བདག་ཉིད་ཀྱི་གདོང་བཀྲུས་པ་ལས་སྐྱབ་པ་པོ་མི་སྣང་བར་འགྱུར་རོ། །ཐལ་
བའི་རྩྱུར་བ་འཆད་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ་དེའི་ཞེས་པ་ལ་སྟོགས་པའོ། །བབ་པོ་ལའི་
ཤིང་གིས་ཕྱག་ནས་ཞེས་པ་ལྟག་མའོ། །མེས་ཞེས་པ་ནི་དུར་ཁྲིད་ཀྱི་མེས་སོ། །དེའི་
ཞེས་པ་གཟུགས་བརྒྱན་གྱི་འོ། །ཆངས་པའི་དྲི་རྩེ་ཞེས་པ་ལ། །ཆངས་པའི་དྲི་རྩེ་ནི་ནམ་
པར་སྣང་མཛད་དོ། །དེའི་ཞེས་པ་ནི་གཟུགས་བརྒྱན་གྱི་འོ། །ཐལ་བ་ཞེས་པ་ཐལ་
བའོ། །འདིས་ཞེས་པ་ཨོ་བུ་རྩ་ཞེས་པ་ལ་སྟོགས་པས་སོ། །ཨོ་བུ་རྩ་ཞེས་པ་ལ་སྟོགས་པ་

- 1 པའི་ བོ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།
- 2 མཉམ་ བོ། ལྷ།
- 3 རྩེ་ བོ། ལྷ།
- 4 ནི་ བོ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ནང་མ་གསལ།

ཨ་རྒྱུ་ལྟེ་དུ་ཞེས་པའི་མཐར་ཐུག་པ་སྤྲུག་གཅིག་སྟེ་ཀླང་པ་ལྔ་པའོ། །སྤྲུག་གི་
 ཞེས་པ་སྤྲུག་སོ། །འདི་ནི་འདིར་མན་ངག་དང་བཅས་པའི་བསྐྱེད་པའི་དོན་ཏེ།
 དུར་ཁྲོད་དུ་ཤིང་བབ་པོ་ལའི་ཤུན་པ་སྐྱམ་པོ་དང་ནམ་པར་སྤང་མཛད་སྐྱམ་པོ་
 གཅིག་དུ་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་མེས་ཀྱི་སྤྲུག་ལ་མེ་དེ་ལ་སྟོང་གར་ཤིང་བབ་པོ་ལ་གཞག་པའི་
 གཟུགས་བརྒྱན་དེ་བཞག་ནས་གཟུགས་བརྒྱན་དེའི་སྟོང་གར་ཚངས་པའི་དེ་རྒྱུ་ལྟེ་
 ཞེས་པ་ལ་སྤྲུག་པ་ཀླང་པ་ལྔ་པའི་སྤྲུག་གིས་བརྒྱན་པའི་བརྒྱུད་ཀྱི་སྤྲུག་གིས་
 ཞིང་གཟུགས་བརྒྱན་དེ་ཡང་བསྟེན་ནས་ཐལ་བར་བྱའོ། །དེའི་རྒྱུ་སྤྲུག་ཐལ་བར་སྤྲུག་
 མ་བཏང་བ་དང་པསྤྲུག་སྤྲུག་དབྱུགས་སྤྲུག་འདབ་མ་བཞི་པ་བྱི་ཞིང་དེའི་རྒྱུ་བར་ཀླང་པ་
 ལྔ་པའི་སྤྲུག་གི་ཅི་ཏྲ་སྤྲུག་ཀླང་པའོ། །འདབ་མ་རྒྱལ་པ་ཀླང་པ་གཞན་རྒྱལ་སོ། །

སྤྲུག་རྒྱལ་ཐལ་བར་ཅད་ཀྱང་།

ལྟ་ནི་དེ་སྤྲུག་གི་གཟུགས་ཀྱིས་ནི།

དངོས་གྲུབ་མཐའ་དག་སྤྲུབ་པར་མཛད།

ཅེས་དཔལ་པོ་གྲུབ་པའི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པའི་ཕྱིར། སྤྲུག་དང་ལྟ་དག་ཐ་
 མི་དང་ཅིང་རང་གི་རྒྱའི་རང་པོ་བཞིན་དུ་བསྐྱེད་པོ། །དེ་ནས་ཐལ་བ་དེ་སྤྲུག་ཐལ་བ་
 པའི་ཐལ་བར་དུ་བཞག་སྟེ། ཅི་མ་ཅི་ཤུ་ཅ་གཅིག་དུ་ཅི་མ་སྤྲུག་དུ་སྤྲུག་གསུམ་དུ་ལོ་
 བྱུ་ཞེས་པ་ལ་སྤྲུག་པའི་སྤྲུག་གིས་བརྒྱན་ཅ་བརྒྱད་དུ་མཛོན་པར་བསྤྲུག་པར་
 བྱའོ། །དེའི་རྒྱུ་སྤྲུག་ཐོད་པར་ཡང་དེ་ལྟར་འགྱུར་རེ་ཞེས་པས་ཐལ་བ་སྤྲུབ་པར་
 འགྱུར་རོ། །དེས་ཞེས་པ་ནི་དེ་ལྟར་བསྤྲུག་པའི་དེ་རྒྱུ་གཙུག་གཙུག་པས་སོ། །དེ་ཁོ་

1 ཐལ་བ་ བཤུ་ ལྟེ།

2 བཞག་ བཤུ་ ལྟེ།

3 གཞག་ ཅི།

4 ཀྱིས་ བཤུ་ ལྟེ།

5 རང་ བཤུ་ ལྟེ། དཔལ་མའི་ནང་མི་སྤྲུག་

6 སྤྲུག་ བཤུ་ ལྟེ།

7 བསྐྱེད་ བཤུ་ ལྟེ།

ན་ཞེས་པ་དག་པོའོ། རྒྱུར་བ་གཉིས་པ་གསུངས་པ། རྟེན་པོ་ན་ཞེས་པ་བརྒྱབ་¹པས་
 སོ། །མར་ཁྲ་བཟང་པོ་ནི་སྤྱེས་བྱ་སྤྱངས་པའི་མར་ཁྲ་སྟེ་དེས་སོ། རྟེ་ནམས་ཞེས་པ་
 གཏེར་ནམས་ཏེ། བརྟེན་གས་སོ་ཞེས་པ་ལྟག་མའོ། བཅས་ཅད་ནི་གཏེར་ནམས་སོ། །
 རྒྱུར་བ་གསུམ་པ་གསུངས་པ། ཐལ་བ་དེས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བརྒྱབས་པས་
 བྱགས་ཏེ། རྟེན་གས་མཛུབ་ཀྱིས་བརྟེན་གས་ཤིང་མཐེ་པོས་བསྐྱར་ནས་ཁ་སྤྱབ་ཏུ་རྒྱང་
 བར་བྱེད་དོ། རྒྱུར་བ་བཞི་པ་གསུངས་ཏེ། དེས་ཞེས་པ་བརྒྱབས་པས་སོ། །ཐལ་བ་
 དེ་དང་བདར་ཞིང་སྤྱངས་པའི་ཞ་ཉིའི་ཕྱི་མ་དང་རྟེ་རྟེ་གཙུག་ཆ་མཉམ་པའོ། རྟེ་
 ཟད་ཅེས་པ་ཞ་ཉིའི་སྤྱེ་ལས་དམན་པའི་ཆད་དོ། འདི²ཐམས་ཅད་བསྟེས་པར་བྱས་
 ནས་རྟེ་རྟེ་མཆུ་ཞེས་པ་ལག་ནག་པོ་སྟེ། དེའི་ཁྲ་བ་ནི་ཁྲག་གོ། རྟེ་རྟེ་དབྱུག་པ་ཞེས་
 རྟེ་ག་པ་ལ་ནི་རྟེ་རྟེ་དབྱུག་པའི་ཁྲ་བ་ནི་མའི་ཆུའོ། རྟེས་ཏེ་ཁྲག་གམ་ཆུས་བསྐྱོས་ནས།
 ཕྱི་ནས་སྤང་གང་གི་ཆད་ཀྱི་ཆོར་མས་³དབྱུག་ཏུ་རྒྱང་པའི་ཟངས་མའི་སྟོད་ཏུ་བཞག་⁴
 ཏེ། རྟེ་རྟེ་མཆུའི་ཁྲ་བས་སམ་མའི་གཅི་བས་བཀང་ནས་ཞག་བདུན་ཏུ་བསྐྱོམ་པར་
 བྱའོ། རྟེ་རྟེ་རྟེས་སྤྱུ་མཁྲིས་པ་ཆེན་པོས་ཏེ་མའི་མཁྲིས་པ་དང་ལྟན་ཅིག་ཞག་བདུན་ཏུ་
 སྟོད་དེ་ཁོ་ནར་མཉེ་བར་བྱའོ། རྟེ་ནས་ཞེས་སྟོད་ནས་སོ། །ལྷགས་ཀྱི་སྟོད་ཏུ་སྟེ།
 ཁབ་ལེན་གྱི་ལྷགས་ཀྱི་སྟོད་སྤང་གི་ཆད་ཁབ་ཀྱིས་དབྱུག་ཏུ་རྒྱང་བར་རྟེ་རྟེ་མཆུ་ལ་
 སོགས་པས་བསྐྱོམ་པ་ལ་སོགས་པ་བྱས་ནས་གཞག་⁵པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། རྟེ་
 ཞེས་པ་དེའི་ཟངས་ཀྱི་སྟོད་དམ་ལྷགས་ཀྱི་སྟོད་དོ། མེ་ལ་གཞག་སྟེ་གཞག་⁶པར་བྱའོ། །
 ཁ་ཅིག་སྤྱོ་བཞི་བར་ཆད་མེད་པར་⁷འབར་བའི་ས་གཞི་ལ་གཞག་སྟེ་ཐོབ་ནས་ཞག་བདུན་

1 བརྒྱབས་ བཤ། ལྟ།

2 འདི་དག་ བཤ། ལྟ།

3 ཆོ་མས་ བཤ། ལྟ།

4 གཞག་ བཤ། ལྟ།

5 བཞག་ བཤ། ལྟ།

6 བཞག་སྟེ་བཞག་ བཤ། ལྟ།

7 མེ་འབར་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།

མི་སྡེ་རང་བཞིན་དུ་གནས་པའོ། །སྦྱོར་བ་བདུན་པ་གསུངས་པ། དེའི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་
པའོ། ཐལ་བའི་རི་ལུ་རིམ་གྱིས་གསེར་དང་དངུལ་དང་ཟངས་ནམས་གྱིས་དགྱིས་
ནས་དེ་མ་ཐག་དུ་བརྗོད་པའི་སྒྲགས་འབྲམ་བཟླས་པ་བྱས་པས་ལན་བདུན་དུ་མངོན་¹་
པར་བསྒྲགས་པས་རྫོ་བ་དང་དུ་བ་དང་འབར་བའི་རྗེས་ཐོགས་སུ་ཁར་གཞུག་པར་བྱའོ།
འདིར་གསེར་གྱི་ཚད་ནི་ར་ཏི་ཕྱིད་དང་བཅས་པ་བདུན་ལྷག་པའི་དུག་ནམ་²་གསུམ་མོ།
དངུལ་གྱི་ནི་ཕྱིད་དང་བཅས་པའི་ར་ཏི་གཉིས་ལྷག་པའི་དུག་ནམ་བཞིའོ། །ཟངས་མའི་ནི་
ར་ཏི་ལྷ་ལྷག་པའི་དུག་ནམ་ལྔའོ།།

དེ་གསུངས་པ།

ཕྱིད་དང་བརྒྱད་དང་མྱ་ས་གསུམ།།

ཕྱིད་དང་གསུམ་དང་དེ་བཞིན་བཞི།།

ར་ཏི་ལྷ་དང་མྱ་ས་གསུམ།།

རི་ལུ་བཅིང་ལ་ཡང་དག་ངེས།། ཞེས་སོ།།

འཇིག་རྟེན་གསུམ་བསྐྱབ་པའི་སྒྲགས་ཞེས་པ་གྲོང་ཁྱེར་དཀྱུག་པའི་སྒྲགས་སོ།།
ལས་ཀྱི་རྗེས་སུ་འབྲང་བས་བཅོམ་ལྡན་འདས་དང་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་དག་གི་སྐྱ་མདོག་
གི་དབྱེ་བ་བརྒྱད་པར་³་འཆད་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་མཁས་པ་ཨ་ལྷ་ཡ་ཨྲ་ཀ་ར་གྲུབ་དས་
མངོད་པའི་འཇིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེའུ་གཉིས་པའོ།། །།

*

1 སྡེ་ བ།

2 ནས་ བ། ལྷ།

3 དང་ བ། ལྷ།

ལྷ་བསྐྱེད་པ་དང་དབང་བསྐྱར་པའི་ལུ་

སྐྱེས་པ་བཤད་ནས་སྐྱེས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་སྐྱེད་ཆེན་པོའི་འོ་ཡང་
 བཤད་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །ལྷའི་ལུ་ཞེས་པ་¹
 སྐྱེས་པ་ལས་སྐྱེས་པ་རྣམས་ཀྱི་དང་། ཆེན་པོའི་འོ་ཡི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ལུ་ལོ། །རྩ་
 ཡིག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་བསྐྱོར་པ་ནི་གསལ་བར་ཤུགས་
 གཅིག་ཏུ་འཆད་པར་འགྱུར་རོ། །ནང་གི་ནི་དོ་རྩེ་ས་གཞི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་དོ་རྩེ་
 ས་གཞི་ནི་ལྷེ་བ་ལྷེ་དེའི་དབུས་སུ་ལོ། །ཆེན་པོའི་རིམ་པ་ལ་ནི་ཨེ་ཡིག་བདག་ཉིད་
 ཆེན་པོ་ནི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །ཨེ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་གྲུ་གསུམ་
 ནི་ཆོས་འབྱུང་སྤྱལ་པའི་འཁོར་ལོ་ལྷེ། ཁམས་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་དུ་བསམ་པར་
 བྱའོ། །གྲུ་གསུམ་དེའི་དབུས་སུ་ཨེ་ཡིག་གམ་ལོ་ཡིག་ས་པོན་ཏེ། དེ་ཡོངས་སུ་གྱུར་
 པའི་སའི་དཀྱིལ་འཁོར་རོ། །སྤྱིང་གར་བོ་ཡིག་གམ་ཨོ་ཡིག་ནི་ཆོས་ཏེ་སེམས་ཡིན་
 རིང་དེའི་བདག་ཉིད་ནི་དེ་ལས་བྱུང་བ་ལྷེ། འཁོར་ལོ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལོ། །ཙ་
 རྣམས་ཀྱན་གྱི་རོ་བོ་ཅན། ཞེས་པ་ཙ་བརྒྱད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཏེ། འཁོར་ལོ་བཞིའི་ཙ་
 རྣམས་ཀྱང་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་སེམས་ལས་ཐ་མི་དད་པའི་ཕྱིར་དེའི་རང་བཞིན་ནོ། །
 མགོ་བོ་ལ། རྣལ་འབྱོར་མ་ནི་རྣམ་པར་གནས། ཞེས་པ་རྣལ་འབྱོར་མ་སུམ་ཅུ་ཙ་
 གཉིས་ཙ་རྣམས་ཏེ། བྱད་པར་དུ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་གནས་ནས་འཇག་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་
 སེམས་འབབ་བ་རྣམས་གང་དུ་གནས་པའོ། །བཟང་བ་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་
 དེའི་རང་བཞིན་ནོ། །ཙ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཙ་སུམ་ཅུ་ཙ་གཉིས་པོ་འདི་རྣམས་
 ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་འབབ་པ་སྤྱིའི་ལས་དང་བྱད་པར་གྱི་ལས་དང་མིང་ཡང་རྒྱད་
 གཞན་གྱི་རྩེ་ས་སུ་འབྱང་བས་བཤད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཨ་བ་རྩུ་རྩུ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་³
 སེམས་ཁོ་ན་འབེབས་སོ། །རྒྱང་མ་ལྷེ་བའི་ཙ་བར་འབྱུང་བཞིན་པ་ནི་ཟོས་པ་དང་

1 པ་ བོ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ནང་མེད།

2 འཁོར་ལོ་ནི་ བོ། ལྷ།

3 ཀྱི་ བོ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ནང་མེད།

འབྱུངས་པ་ན་མས་ལྟོ་བའི་མེས་¹ སྒྲིན་པ་ན་མས་ལས་ལྷ་བ་འབེབས་སོ། །དེ་ལས་ལྷ་བ་
འདི་ཙ་གཞན་དང་གཞན་དུ་རྒྱ་བས་ལུས་མངོན་པར་བྱུང་བར་བྱེད་དོ། །ར་ས་རྒྱ་ནི་ལྷ་བ་
ལས་ཁྲག་འབབ་པོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ཡང་དེ་ལྟ་ཁོ་ནར་ལུས་ལ་བྱུང་བར་བྱེད་དོ། །ཀྱན་གྱི་
ཡང་བསྐྱ་བ་འདི་ཡིན་ཏེ།

མི་ཕྱེད་སོ་དང་སེན་མོ་འབབ།

ཕ་མོ་སྐྱ་དང་བ་སྐྱ་འབྱེན།

ཅེན་མོ་པགས་པ་དྲི་མ་འབབ།

གཡོན་པ་མ་ནི་ག་འབབ་ཅིང་།

མིའུ་² ཐུང་མ་ཞག་འབབ་འགྱུར།

རུས་སྐལ་སྐྱེས་པ་³ རུས་སྐལ་འདོད།

སྒྲིམ་པོ་མོ་འགྱུར་མཁལ་མ་⁴ འབབ།

དབང་བསྐྱར་མ་ནི་སྒྲིང་འབབ་འགྱུར།

སྒྲིན་མ་མིག་ནི་འབབ་པར་འདོད།

མངུག་མ་མཁྲིས་པ་འབབ་པར་བཤད།

མ་མོ་མ་ནི་སྒྲོ་བ་འབབ།

མཚན་མོ་མ་ནི་རྒྱ་མ་འབབ།

བསེལ་བ་མ་ནི་ལྟ་⁵ ཟུར་དག།

དོད་མ་ལྟོ་བ་འབབ་པར་འགྱུར།

མི་བསྐྱོད་འབབ་པ་རྒྱང་མའོ།

ཨ་བ་རྒྱ་དྲི་ཟླ་བ་འབབ།

1 སེམས་ བེ། ལྷ།

2 མིའུ་ བེ། ལྷ།

3 མ་ བེ། ལྷ།

4 མཁལ་ལ་ བེ། ལྷ།

5 ལྟོ་ བེ། ལྷ།

6 རྒྱ་བའོ་ བེ། ལྷ།

དཔལ་སངས་ཀྱིས་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ།

རོ་མ་ཁྲག་འབབ་བྱེད་པར་བཤད།
 བཤང་བ་ལ་ནི་གཞི་མར་འདོད།
 དགའ་གདོང་མ་ནི་སྒྲ་མཚམས་ལའོ།
 སྒྲི་མ་ནག་ནི་འབབ་པར་བྱེད།

བད་ཀན་རྒྱ་སྒྲིན་མ་རུ་བཤད།
 རྒྱལ་འབབ་མ་ནི་བྲལ་བ་མ།
 ཆོལ་ལ་དགའ་བ་མ་ཞེས་བརྗོད།
 གྲུབ་མ་མྱ་ངན་མཆི་མ་འབབ།

འཆོད་¹མ་མཆིལ་མ་ལ་འདོད་དོ།
 ཡིད་བཟངས་མ་ནི་སྒྲ་བས་འབབ་པ²།
 གསུམ་སྒོར་མ་ནི་གཟུགས་ལ་འདོད།
 འདོད་པ་མ་ནི་སྒྲ་ལ་བཤད།

བྱིས་མ་ངྲི་འབབ་པར་འགྱུར་རོ།
 རོ་འབྲིན་བྱེད་མ་གཏུག་མའོ།
 རེག་ལ་རྣལ་འབྱོར་མར་གཤམ་བྱ།
 ཆོས་ལ་བདུད་འདལ་མ་རུ་འགྱུར། ཞེས་སོ།

འདིར་ལ³ལ་རྒྱ་དང་རོ་མ་དང་ཀླན་འདར་མ་ནི་སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མའོ། །དེ་
 ལས་གཞན་གཉིས་གཉིས་ནི་རིམ་པ་བཞིན་སྤྱང་བཟངས་མ་དང་ཐོད་པ་ཅན་མ་དང་།
 འཛིགས་མ་དང་བྱུང་དཀའ་མའོ། །དེ་ལས་གཞན་རྣམས་ནི་དགེ་བའི་སྒྲ་རགས་མ་ལ་

1 འཆོད་ རྒྱ། འཆོ་ བེ། སྒྲ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྲུར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

2 མ་ བེ། སྒྲ།

3 ལ་ ཅོ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

4 བཟང་ བེ། སྒྲ།

སྒྲིགས་པ་ནས་འཕྲོར་མ་ཉི་ཤུ་འོ་ཤོར་གེས་པར་བྱའོ། །བདུད་འབྲུལ་མ་ཉི་ལྔ་བ་
 རྒྱ་ཏྲུ་དང་འབྲེས་པ་ཁོ་ན་སྟེ། རྩེ་ཅེ་མོ་ཇི་སྟེང་པར་སྟེ་བ་ནས་ལངས་པ་དུས་ཀྱི་ཙ་
 མ། འགོག་པའི་མཆན་ཉིད་ཅན་གྱི་ཆོས་ནས་འཕྲོར་མ་ནམས་འབབ་པའོ། །དེ་ཉི་
 རྒྱ་ལ་འཕྲོར་མ་བསྐྱུས་³པས་རབ་དུ་འབྱུག་སྟེ། དེ་ནི་མ་རིག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་
 སྤྱིར་རོ། །འོ་ན་བཟླ་ག་གཉིས་པར་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སྤྲུལ་ཙུ་ཙ་གཉིས་འབབ་པ་
 རྣམས་སོ་ཞེས་གསུངས་པ་ཇི་ལྟར་ཞེ་ན། དུས་ཀྱི་ཙ་ཉི་འགོག་པ་ཉིད་དུ་འབབ་པར་
 བྱེད་པའི་སྤྱིར་སྟོན་མེད་དོ། །རྒྱ་ལ་འཕྲོར་མ་ངོ་བོར་ཙ་སྟོན་པའི་སྐབས་སྤྱི་ནི་དེ་སྟོན་
 པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའི་དོན་ཏོ། །དེའི་དབང་ལས་འཇིག་རྟེན་འདི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་
 རང་བཞིན་དུ་སྦྱེས་ཀྱང་དེའི་དཀྱིལ་འཁོར་མི་མཐོང་ངོ་། །དེའི་བདེ་བ་ཡང་ངོ་། །དེ་
 ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་གསུངས་པ། འབད་པས་ཀྱན་གྱི་ལྷག་མ་སྤང་། །ཞེས་སོ། །བཙུམ་
 རྣན་འདས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དོ་ཇི་ནི་ཀྱན་གྱི་ཐབས་སོ། །འདི་ཡང་དོན་དམ་པར་
 ས་བོན་ལས་སྦྱེ་བ་མེད་པ་ཁོ་ནར་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟིང་ཇི་དབྱེར་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་
 ཀྱི་⁴སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་རྫོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གསུངས་པ། བཙུ་དུག་ཆ་ཡིས་བརྒྱན་
 བྱུར་པ། །ཞེས་པ་མགིན་པར་ཏེ། ཆ་ནི་འདིར་ཙ་རྣམས་ཏེ། ཙ་བཙུ་དུག་དང་རྣན་
 པ་ཡོངས་སྟོན་གྱི་འཁོར་ལོའོ། །སྤྱལ་པ་ནི་སྤྱལ་པའི་པར་དེ་གང་དུ་དུག་ཙུ་ཙ་བཞིའི་
 འདབ་མ་རྣམས་ཏེ་ཙ་རྣམས་ཡིན་པ་དེའོ། །དེ་ལྟར་ཞེས་པ་འཁོར་ལོ་བཞི་རྣམས་སུ་
 ཙ་བརྒྱ་ཉི་ཤུ་སྟེ། ཙ་རྣམས་ཉི་ཤུ་ལྷག་པའི་བརྒྱར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་བསམ་པར་བྱ་
 ཞེས་པ་དེ་ལྟར་རྫོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསམ་པར་བྱ་སྟེ་བསྟོམ་པར་བྱ་ཞིང་བཟླས་
 པར་བྱའོ། །དེ་ལ་རྒྱང་མ་དང་རོ་མར་སྟོག་གི་རྒྱང་ཐུན་སྟེང་སྟེང་དུ་བདག་པོ་ཉིད་ཀྱི་
 སྤྱིར་ཉིན་མཆན་དུ་འཕོ་བ་བཙུ་དུག་རྣམས་མ་གྲིན་པར་རོ། །དེ་ཁོ་ན་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་
 བཞིའི་དབྱེ་བས་དབྱུ་གྱ་བཞིའི་བདག་པོ་ཉིད་ལས་སྤྱལ་པའི་འཁོར་ལོར་དབྱུ་གྱ་དབྱུག་

1 དལ་ བ། བལ་ ལ།
 2 དེ་ བ། ལ།
 3 ལྷག་ བ། ལ།
 4 རྒྱ་ བ། ལ། དཔར་མའི་ནང་ནང་མེད།
 5 ལྷ་ བ། ལ།

རྩ་ཙ་བཞི་རྣམས་སུ་འགྱུར་རོ། །བཙེམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་སྦྱོར་བ་ལ་
སོགས་པའི་རྒྱུད་རྣམས་སུ་དང་།

འཕགས་པ་སྐྱུ་སྐྱུ་བ་ཞབས་ཀྱིས་ཀྱང་ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པ།

མེ་ཉིད་དང་ནི་རྒྱུད་དང་ནི།

དབང་ཆེན་དང་ནི་དེ་བཞིན་ཆུའི་²།

དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ནི་དེ་རྒྱུ་བ།

སྤྱིང་ལོགས་ཐང་ཀ་ལོག་ཏུ་འགྲོའོ། །ཞེས་སོ།

དེ་ཁོ་ན་ལ་སོ་སོར་ཤེས་རབ་དང་། ཐབས་ཀྱི་ངོ་བོའི་དཀྱིལ་འཁོར་གཉིས་
ལོངས་སྦྱོད་པ་ལས་རྩ་བའི་འཁོར་ལོར་ཡང་དག་པར་རྒྱ་བའི་ཕྱིར་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་
འཁོར་ལོར་རྩ་སྐྱུ་རྩ་གཉིས་རྣམས་སོ། །ཉིན་མོ་དང་མཚན་མོའི་རྣམ་པར་དབྱེ་
བས་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱིས་དབྱེ་བ་ལས་བྱན་བརྒྱད་རྣམས་ཏེ་སྤྱིང་གར་རོ། །རྒྱུད་
གཞན་རྣམས་སུ་ཉིན་ཞག་དབྱུ་གྱུ་དབྱུ་ཅུའི་བདག་ཉིད་དུ་གང་གསུངས་པ་དེ་ནི་
དབྱུགས་དབྱུག་རྩ་ལྷག་པའི་སྐྱུ་བརྒྱ་རྣམས་དབྱུ་གྱུར་རྣམ་པར་གཞག་³པས་སོ། །
འདིར་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་བཞིར་རྣམ་པར་གཞག་⁴པས་དབྱུགས་སྦྱེད་དང་བཅས་
པ་སྐྱུ་རྩ་ཙ་བདུན་ལྷག་པའི་སྐྱུ་བརྒྱ་རྣམས་དབྱུ་གྱུར་རྣམ་པར་གཞག་⁵པའོ། །
གཉིས་ཀ་ལ་ཡང་ཉིན་མཚན་ལ་དབྱུགས་དབྱུག་བརྒྱ་ལྷག་པའི་སྤྱིང་སྐྱུ་⁶ཉི་ཤུ་རྩ་

1 རོ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ནང་མེད།

2 ཆུའོ་ བཤ། ལྷ།

3 བཞག་ བཤ། ལྷ།

4 བཞག་ བཤ། ལྷ།

5 བཞག་ བཤ། ལྷ།

6 སྐྱུ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ནང་མེད།

གཅིག་ཏུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་པ་ཁྱད་པར་མེད་དོ། །དེ་ལྟར་རྫོགས་པའི་རིམ་པ་ལ་སྟོས་¹
པས་བརྒྱས་པ་ཡང་རྫོགས་པར་²གསལ་པར་བྱས་སོ། །

དེ་གསུངས་པ།

ནལ་འབྱོར་དབང་པོ་ཉིན་མཆན་གྱིས།

ཉི་མེ་དང་ནི་སྟོང་ཕྱག་དང་།

དེ་བཞིན་བརྒྱ་ཕྱག་དྲུག་ཏུ་ནི།

བརྒྱས་པ་ཡིས་ནི་གྲངས་བྱེད་དོ། །ཞེས་སོ།

རིག་པ་བརྒྱས་པས་སེམས་བཏན་པ་ན་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་རྫོགས་པའི་
དགྲིལ་འཁོར་ལ་མངོན་ཏུ་སྟོགས་པར་འགྱུར་རོ། །ཤེས་རབ་ཅན་ཞེས་པ་ཤེས་རབ་
ཆེན་པོ་ཅན་རྫོགས་པའི་རིམ་པའི་དགྲིལ་འཁོར་བསྟོམ་པ་ལ་མཁའས་པའོ། །དོ་རྩེ་སྒྲུ་
ལ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་གྱི་སྒྲུ་ལའོ། །དེ་ཉིད་
ཀྱི་ཕྱིར་རང་དང་གཞན་དག་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་ཏུ་རུང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་
བདག་ཉིད་ཆེན་པོའོ། །དེར་ཞེས་པ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོར་རོ། །བསྐྱེད་པའི་རིམ་པ་ལ་
ནི་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་ཚུའི་དགྲིལ་འཁོར་རོ།

ཅ་རྣམས་ཀུན་གྱི་དགྲིལ་འཁོར་ནི།

ཆུ་ཡི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་ཐིམ་འགྱུར།

ཞེས་པ་རྩའི་དགྲིལ་འཁོར་གཞན་ནི་སྟོང་གའི་ཅ་བརྒྱད་པོ་རྣམས་ཁོ་ན་འཕོ་བ་
སྟེ། དེའི་ཕྱིར་རྩའི་དགྲིལ་འཁོར་ཐིམས་ཅད་ཚུའི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་འབྱོར་བར་བྱེད་
དོ། །སྒྲར་ཡང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྒྲུལ་པའི་འཁོར་ལོའི་འོག་ཏུ་མ་ཡིག་དམར་པོ་
ལས་སྐྱེས་པའམ། རྩ་ལས་སྐྱེས་པའི་མེའི་དགྲིལ་འཁོར་གྱི་གསུམ་པ་འབར་བ་སྒྲུལ་
པའི་རྩའི་འཁོར་ལོ་ལ་འབྱུར་བཞིན་པའོ། །མེ་ལས་འོག་ཏུ་ཡུ་ཡིག་ལས་སྐྱེས་

1 བརྟོས་ བཤ། སྟེ།

2 པའི་རུ་ བཤ། སྟེ།

པའམ། ཡོ་ཡིག་ལས་སྦྱེས་པའི་རྒྱུད་གི་དགྱིལ་འཁོར་རོ། །ཅ་རྣམས་ཐམས་ཅད་གཡོ་བྱེད་གཟུགས། །ཞེས་རྒྱུད་གི་དགྱིལ་འཁོར་དེས་མེ་འབར་བར་བྱེད་ཅིང་ཅ་ཐམས་ཅད་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་གཡོར་འདུག་གོ། །ཐིམ་བཞིན་པ་ནི་འཁོར་ལོ་རིག། ཅས་པ་འཁོར་ལོ་ལ་ཐིམ་བཞིན་པ་ནི་རིག་པ་སྟེ་རིག་པར་བྱེད་པ་དེས་གཡོས་པའི་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་རྒྱུད་གི་འཁོར་ལོར་ཐིམ་པ་དེའི་ཆེ་ལྷན་ཅིག་སྦྱེས་པའི་བདེ་བ་རིག་པར་འགྱུར་རོ།།

དེ་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཐིམ་པ་ཡིས།།

ནལ་འཕྱོར་པ་དེ¹་དབུས་སུ་གནས།།

ཞེས་པ་དེར་ཏེ་ལྷན་ཅིག་སྦྱེས་པའི་བདེ་བ་རིག་པ་ལ། ཐམས་ཅད་དེ་ཡུང་པོ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཐིམ་པ²་བཞིན་པ་རྣམས་དང་ནལ་འཕྱོར་པ་ནི་སེམས་ཏེ་དེ་ཡང་དེར་དེའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་གནས་སོ། །ཟླ་བ་ཞེས་པ་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་ཏེ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོར་སྤྱི་གཙུག་ཇི་སྟེང་བར་རོ། །ཉི་མ་ནི་རྩལ་ཏེ་སྤྱལ་པའི་འོག་ཏུ་འོ། །རྩྱུ་ཞེས་པ་ལ་ཁ་ཅིག་ཏུ་རྩྱུ་ཡོ་ཞེས་སྟོག་སྟེ། རྩྱུ་ཡིག་སྟོན་པོ་ནི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལོ་འོ། །ཡུལ་ཡིག་གམ་ཨོ་ཡིག་དམར་པོ་ནི་སྤྱལ་པའི་འཁོར་ལོར་རོ། །ལོངས་སྤྱོད་ཀྱི་འཁོར་ལོར་ཨོ་ཡིག་དམར་པོ་སྟེ་རྒྱུད་གཞན་དུ་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཀ་ཡིག་ཏ་ཡིག་བརྒྱན་རྒྱུར་པ། །ཞེས་པ་ཀ་ཡིག་ཀྱང་འདི་ཡིན་ལ་ཏ་ཡིག་ཀྱང་ཡིན་ཞིང་བརྒྱན་པའང་ངོ་། །ཀོ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྟེ་དེའི་རང་བཞིན་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོར་ཏ་ཡིག་དབུལ་བར་སྟོང་པ་གཞོམ་དུ་མེད་པ་ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་དང་ཐིག་ལེས་བརྒྱན་པ་དགའ་པོ་བསམ་པར་བྱའོ།།

ཀ་ཡིག་ཏ་ཡིག་ལ་ཐིམ་པ། །ཞེས་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་གཞོམ་དུ་མེད་པ་ལ་འདྲེས་པར་གྱུར་པ་སྟེ་དབྱེར་མེད་པ་ཞེས་པའི་བར་རོ། །ད་རྩྱུ་དབྱེར་མེད་པ་ཞེས་པ་

1 དེར་ བཤ། སྟེ།

2 ཐིག་ལེ་ སྟེ། མོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ཡོད།

3 ཨོ་ བཤ། སྟེ།

གཞོམ་དུ་མེད་པའི་རང་བཞིན་ཇི་ལྟ་བུ་¹ དེ་ལྟ་བུ་ནི་རྩྭ་ཡིག་སྟེ། གཉི་ག་ཡང་གཉིས་
ཀའི་རང་བཞིན་ནི་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ།།

ཇི་ལྟར།

དེ་ཡི་བདེ་བ་འདོད་པར་བགད།།

ཅེས་པའི་གསུངས་ལས། ཀྟི་ཤེས་རབ་དང་ད་ཐབས་ཏེ་དེ་དག་དབྱེར་མེད་
པ་དེ་ལྟར་བདེ་བའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དེ་ཡིག་ནི་ཤེས་རབ་ལྷོ་ཡིག་དང་ལྡན་པ་ལས་དེ་རྩྭ་
ཞེས་པའི་ཡི་གེ་གཉིས་འདྲེས་པ་ནི་རྩྭ་ཡིག་སེམས་ཐབས་སོ་ཞེས་པ་ཤེས་རབ་དང་
ཐབས་དབྱེར་མེད་པའོ།།

རྩྭ་ཡིག་གི་ནི་འོད་ཟེར་རྣམས།།

ཞེས་པ་རྒྱུད་གིས་མེ་གཏུམ་མོའི་འོད་ཟེར་བསྐྱལ་བ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་
ལོར་སོན་པ་སྟེ། དེར་རི་བོང་ཅན་བསྐྱལ་ཞིང་རི་བོང་ཅན་གྱིས་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་
གདུང་བ་ཞི་བ²་ལས་ཁ་བ་ལྟ་བུའི་ཀ་ཡིག་བདེ་བ་ཆེན་པོ་དང་ཉི་མ་རྩལ་དང་རྩྭ་³་དང་
ལོ་དག་ལྡན་ཅིག་ལྟ་བུར་གྱུར་ནས་རྩྭ་ཡིག་ལ་ངལ་བསོའོ།⁴ |དེ་ནས་རྩྭ་ཡིག་ཀྱང་ལྟ་
བུར་གྱུར་ནས་སྐྱལ་པའི་ས་བོན་ལ་ངལ་བསོའོ།⁵ |དེ་དང་ཉི་མ་དང་ཆོ་བའི་དཀྱིལ་
འཁོར་གཉིས་ཀྱང་འདྲེས་པར་གྱུར་ནས་ཉི་མ་ཞེས་པ་རྩལ་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཁོ་ན་ལྟག་
པའི་ཐིག་ལའི་གཟུགས་སུ་བལྟ་བར་བྱ། ཁུ་བ་ནི་ལྟག་མ་མིན་པའོ།།

ཡང་ནི་རྩྭ་ཡིག་འོད་ཟེར་རྣམས།།

ཞེས་པ་རྩྭ་ཡིག་ལྟ་བུའི་ཐིག་ལའི་འོད་ཟེར་གྱི་རི་མོ་རྩའི་འཁོར་ལོ་ཐམས་
ཅད་ལ་རེག་པའོ། |ས་བོན་ཞེས་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་པ་ཐིག་ལའི་གཟུགས་སོ།།

1 བྱ་ པེ། ལྷ། གྱི་བྱ་བ་ ཅོ།

2 བཞི་པ་ པེ། ལྷ།

3 ཏེ་ རྟེ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་སྟར་བཞག་ཡོད།

4 སོའོ་ པེ། ལྷ།

5 སོའོ་ པེ། ལྷ།

དེ་ལྟར་ཐིག་ལའི་ནལ་འབྱོར་གསུངས་སོ། །རྫོགས་པའི་དགྲིལ་འཁོར་བསྐྱོམ་པ་ལ་ནི་
 ས་བོན་ལ་སོགས་པ་བསྐྱེད་པ་མེད་པར་རྩལ་གྱི་ངོ་བོའི་གདུམ་མོ་ངེས་པར་འབྱུང་བ་
 ཡང་ཤིན་ཏུ་འབར་རོ། །དེས་མཆོག་ཏུ་སྤར་བའི་རི་བོང་ཅན་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེས་
 འཛིན་གྱོ། །དེས་བཏགས་པར་བྱས་པའི་གདུམ་མོའོ། །ཤིན་ཏུ་ཆེས་འབར་རོ། །རི་
 བོང་ཅན་དེས་མཆོག་ཏུ་གདུངས་པ་ཡང་ཆེས་འཛིན་གྱོ། །དེ་ལྟར་ནང་གི་ཆེ་བ་དང་
 ཉི་མ་མཉམ་པར་འདྲ་བ་བར་མ་ཆད་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ཡུང་པོ་དང་
 ཁམས་ལ་སོགས་པ་སྤྱོད་བདགས་པ་བྱེད་ཀྱིས་གཞོན་པ་རབ་ཏུ་སྐྱེའོ། །གང་ནམས་དེ་
 ལྟར་མི་མོས་པ་དེ་ནམས་ནི་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་བཟུངས་པས་སྤྱོད་ཀྱིས་པ་ལ་དབང་ཉིད་
 ཐོབ་པས་ཐུར་སེལ་གྱི་རྒྱུད་བསྐྱེད་ཀྱི་བའི་དགྲིལ་འཁོར་དུ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་དམིགས་ཏེ།
 རྒྱུད་བཀག་པས་གདུམ་མོ་འབར་དུ་འཇུག་གོ། །དེ་ནས་དེ་ལྟ་ཁོ་ནར་བདེ་བ་ཆེན་པོ་
 གསལ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་མི་རྣམས་པས་ནི་དེ་ལྟ་ཁོ་ནར་ལྟེ་བའི་དགྲིལ་འཁོར་དུ་
 རྒྱུད་བཀག་པར་མོས་ནས་གནས་པས་དབུགས་འབྱུང་བ་ནི་རི་མོ་དང་པོ་གདུམ་མོའི་
 ངོ་བོས་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་འབར་བ་མོས་ཏེ། བདེ་བ་ཆེན་པོའི་གནས་རྗེས་སུ་
 ཐོབ་པ་ལས་དབུགས་འཇུག་པ་ན་ཉི་ཡིག་ཆེ་བ་འཛིན་པའི་ཐིག་ལའི་གཟུགས་ཀྱིས་དེ་
 ལྟ་དམིགས་བཞིན་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ལྟེ་བའི་དགྲིལ་འཁོར་དུ་འོངས་
 ནས་དམིགས་པ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ཇི་སྤྱད་དུ་སྤྱོད་འགོག་པའི་བར་དུ་
 གནས་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ཁོ་ནར་དབུགས་འབྱུང་བ་དང་། འཇུག་པ་དག་ཡང་དང་
 ཡང་དུ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། །གང་ཡང་སྤྱོད་འབྱུང་བ་དང་། འཇུག་པ་བཏགས་པར་མི་
 རྣམས་པ་དེ་ལྟ་ལྟར་མོས་པ་ཅམ་ཁོ་ན་སྐྱབ་པར་བྱེད་དོ། །བསྐྱེད་པའི་རི་མ་པ་སྐྱོམ་པ་
 པོས་ནི་དེ་ལྟ་མ་ཅན་ཁོ་ནར་འདི་མཐའ་དག་སྟོབས་ཇི་ལྟ་བར་དམིགས་པར་བྱའོ། །

1 མོ་ བཤ། ལྷ།

2 འཛིན་ བཤ། འཛིན་ ལྷ།

3 བར་ བཤ། ལྷ། དཔར་མར་མ་གསལ།

4 རྒྱུ་པོ་ བཤ། ལྷ།

5 པ་ བཤ། ལྷ།

6 ལ་ ལྷ།

7 དག་ལ་ བཤ། ལྷ།

ཀྱས་པ་ལ་དགའ་བས་ནི་ནལ་འབྱོར་མའི་འཁོར་ལོ་མཐའ་དག་གི་ངོ་བོ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་
པོའི་བདག་ཉིད་བཅོམ་ཡུན་འདས་མ་སྒྲུབ་ཆོག་སྡེ་མ་གཏུག་མའི་ངོ་བོ་འབར་བཞིན་
པས་ཕྱོགས་བརྒྱར་འཕྲོས་པས་འདོད་ཆགས་ཆེན་པོའི་མའི་འོད་ཀྱིས་བསྐྱལ་བའི་དེ་
བཞིན་གསལ་གསལ་པ་འདོད་ཆགས་ཆེན་པོ་¹ རྗེས་སུ་ཆགས་པ་ནམ་པ་² ཐམས་ཅད་བདེ་
བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོར་ཁྱེད་ཀྱས་པ་བརྟུན་ནས་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་ཐམས་ཅད་བསྐྱལ་བ་³
པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་འདི་ལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱིན་རྒྱལ་བས་ཀྱང་འབྱུང་ངོ་ཞེས་པ་གཏུག་
མའི་གདམས་པའི་དབྱེ་བའོ། །འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལྷ་མ་དམ་པས་གདམས་པར་
བྱས་པ་བསྟན་པའོ། །དེ་ཁོ་ནས་ཞེས་པ་མའི་རྒྱས་པ་རྒྱུ་པས་ཞེས་པ་ལྟག་མའོ། །དེ་
ལྟར་པ་རོལ་བྱིན་མ་ཞེས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པའི་རང་བཞིན་ནོ། །བཅོམ་
ཡུན་འདས་ནི་སྤྱིར་རྗེ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ནོ།

དེ་ཡི་ལུས་སྦྱེས་འོད་ཟེར་རྣམས་།

ཞེས་པ་བཅོམ་ཡུན་འདས་དེའི་སྦྱེས་ལས་སྦྱེས་པའི་གཏུག་མའི་འོད་ཟེར་
རྣམས་སོ། །འཇག་པ་དེས་ཞེས་པ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་ས་བོན་བཀྲ་བའི་དུས་སྒྲུབ་ཆོས་
ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྩ་བ་རྒྱུད་པོའི་རང་བཞིན་ནལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཕྱི་རོལ་དུ་སྦྱོས་
ནས་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དྲི་བཟང་ལྷ་ཞེས་པ་བདུད་ཅི་ལྷ་རྣམས་སོ། །མེ་ཏོག་ནི་བྱད་
མེད་ཀྱི་རྒྱལ་ལོ། །བདུག་སྦྱོས་ནི་འདོད་ཆགས་དེ་རྗེ་མའི་ཆགས་པས་འབར་བའི་
གཏུག་མའི་མར་མའི་འོ། །དབའ་བོ་རྗེ་གསལ་པ་ཞེས་པ་དབའ་བོ་གྲུབ་པར་མཐོང་ནས་
ལྟར་བཞིན་འཇག་གོ། །ཨ་མའི་ལོ་མ་ནི་ས་ཏྲ་ཀླ་རའི་འདབ་མའོ། །གསོལ་བ་གདབ་
ཅས་པ་དོན་དུ་གཉེར་བར་བྱའོ། །དབང་བསྐྱར་བ་ཡིས་ཞེས་པ་ལ། དབང་བསྐྱར་ནི་
དྲི་མ་མེད་པར་བྱེད་པའོ། །མཁས་པ་ནི་རིག་པ་དང་ཡུན་པ་སྟེ། སྦྱོལ་བའི་ཐབས་
རིག་པ་རྣམས་སོ། །བྱ་ཆེ་མེད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་རྗེ་ལྟར་བྱ་གི་བའི་བྱིམ་དུ་

1 པོའི་ ལྷ།

2 རྣམས་ པེ། ལྷ།

3 ལྷུ་བ་ པེ། ལྷ།

4 མ་ པེ། ལྷ།

བྱས་སྟོང་པ་སྟེ་དེ་ལྟར་དབང་བསྐྱར་དང་བྲལ་བའི་སྦྱོས་བྲལ་ཐམས་ཅད་མཆིན་པའི་
ཡེ་ཤེས་དང་བྲལ་བའོ།

ཇི་ལྟར་ཐམས་ཅད་སྦྱར་བ་ན་ཡང་།

པེ་ཤང་རྒྱུད་མེད་བདུང་མི་རུང་།།

དེ་ལས་སྒྲ་འགྲུབ་མ་ཡིན་ནོ།།

ཇི་སྟེང་སངས་རྒྱལ་གྱིས་མི་སྟོང་སྟེ།།

དཔལ་བ་མི་འདོར་གྱི་བར་དུའོ།།

འདིས་ནི་དབང་བསྐྱར་ཐམས་ཅད་གདོན་མི་ཟ་བར་གཟུང་བར་¹གསུངས་སོ།།

དེ་རྒྱུ་ཀར་གྱུར་པ་ན་ཞེས་པ། དེ་རྒྱུ་ཀའི་གཟུགས་སུ་བསྟོན་པ་²པ་རྫོགས་པས། དགོས་
པ་ཅི་སྟེ་དབང་བསྐྱར་མེད་ན་སངས་རྒྱལ་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བསྟོན་ཐམས་ཅད་དུ་
ནི་འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དེ་ཞེས་པ་དེ་ལའོ། །ཕྱི་དང་གསང་བ་ཞེས་ཉེ་བར་
མཆོན་པ་ལས་ཤེས་རབ་དང་བཞི་པའི་དབང་བསྐྱར་དག་ཀྱང་ཤེས་པར་བྱའོ།།
དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཆེན་པོའི་འགྲེལ་པ་འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་
འགྲེལ་དུ་ལེན་གསུམ་པའོ། །

*

¹ གཟུང་བར་ གཞུང་། དཔལ་མའི་ནང་ནང་མེད།

² སྟོན་ གཞུང་།

ལྷ་མི་ཀའི་སྒྲོར་པ་དང་རྒྱལ་སྒྲོར་པའི་ལེའུ།

མཁའ་མིང་སྒྲོར་པ་བཤད་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པའོ། །བདག་ཅག་གི་ནི་བདག་ཅག་ནམས་སོ། །འོད་ཟེར་གྱིས་ནི་ལེའུ་དང་
 སྒྲོས་པའི་སྒྲགས་ཀྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་སོ། །སྤྱིང་གའི་¹འོད་ཟེར་ནམས་ཞེས་པ་སྒྲ་
 ཆོགས་ཇེ་མའི་སྤྱིང་གའི་འོད་ཟེར་ནམས་ཀྱིས་སྒྲ་ནམས་གཏད་པར་བྱས་ནས་འོངས་
 ཏེ་སྒྲ་ཆོད་ཇེ་མའི་སྤྱིང་གར་ཞུགས་པ་ནམས་སོ། །བཀའ་བསྒྲོས་པ་ཞེས་པ་བདག་
 ཅག་ནམས་སོ། །རྩོམ་ཞེས་པ་ཀྱེ་རྩོམ་འོ། །གསུངས་པ་ཞེས་པ་སྒྲ་ཆོགས་ཇེ་མས་
 སོ། །སྒྲ་ནམས་ལ་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་ནས་དེའི་ཁས་དུག་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྒྱས་པར་
 བརྟན་པའི་ཆེད་དུ་དྲི་མ་ལྔ་ནམས་ཏེ། ལུ་སྤྱོད་ལ་སོགས་མཁའ་མིང་སྒྲོར་། ཞེས་
 པ་ལ་སོགས་པའོ། །ཁྲབ་འཇུག་དང་དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་ནམས་ཀྱི་དང་། བཅོམ་
 རྒྱན་འདས་རྗེ་རྗེ་འཛིན་པའི་མཁའ་མིང་སྒྲོར་པ་སྒྲགས་དང་སྒྲན་དང་ཏིང་ཏེ་འཛིན་གྱི་
 ཁྱད་པར་རོ། །རི་ལྷ་བྱར་འདོད་དེ། ཡེ་ཤེས་ཀྱང་དེ་ཡིན་ལ་ཡང་དག་པར་འབྱུང་ངོ་
 ཞེས་བསམ་འབྱུང་བ་ཡང་སྟེ། ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་རི་ལྷ་བྱར་མ་ནིང་ཉིད་ནི་ཁྱད་པར་རྒྱར་
 བྱེད་པའམ་གཙུག་ལག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དུག་གི་ཞེས་པ་དུག་གོ། །རི་ལྷར་ཞེས་པ་
 རབ་དུ་དབྱེ་བ་དྲིས་པའོ། །ཞུས་པ་ཞེས་པ་སྒྲ་ནམས་ཀྱིས་སོ། །ཁྲབ་འཇུག་ཅེས་པ་ལ་
 སོགས་པ་ལུ་སྤྱོད་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོགས་ལ་དྲི་བ་ལྔ་པ་ལན་འདོན་²པའོ། །ཁྲབ་འཇུག་དང་
 དབང་ཕྱུག་ལ་སོགས་པ་སྒྲོ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་དངོས་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་པར་མི་ཤེས་
 པ་ནམས་ཏེ། དེ་ནམས་ཀྱི་ལུགས་ལ་མཆེ་བས་གཟུང་³པའི་དུག་དང་མཆེ་བ་ཡང་
 དོན་དམ་པ་ཡོད་ངོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མི་ཤེས་པ་ལས་དུག་གི་སྒྲོན་ནམས་
 ཀྱིས་⁴གཞོད་འགྱུར་ཏེ། འཆི་བར་འགྱུར་ཞིང་མཁའ་མིང་སྒྲོར་བས་ཀྱང་འཆོ་བར་
 རུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྷར་དུས་སུ་གཟུང་བར་སྒྲ་ཞེས་པ།

1 གི་ བཤ། ལྷ།

2 རྩོན་ རྒྱུ་ཆོད་ཏེ། བཤ། ལྷ།

3 བཟུང་ བཤ། ལྷ།

4 ཀྱི་ བཤ། ལྷ།

མདའ་དང་ཚུགས་དུས་མེད་དང་།།

ཟུང་དང་ཟུང་བ་སོགས་ཀྱི་¹ཉིན།།

དུག་དང་རིག་བྱེད་ལག་བདུན་མདའ།།

ཡོན་ཏན་ཡུན་ཚོགས་རི་མཚན་མོ།།

ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ལན་རྣམས་ལ་རིམ་པ་རིམ་པར་བྱན་བྱེད་རྣམས་ནི་
དུས་ཏེ། དེ་ལ་བཟུང་བ་ནི་བཅོས་སུ་མི་རུང་བར་སྒྲུབ་ཞེས་པ་དྲི་བ་གསུམ་པའི་ལན་
ནི། དེ་བ་དང་པོའི་ལན་འདེབས་པ། སྐུ་ལ་གྱུ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དུས་སུ་ཟིན་
པ་ཉིད་མེད་ན་འཕྲོག་གོ་ཞེས་པ་འཕྲོག་བྱེད་དོ། །ཁྲབ་འཇུག་དང་དབང་ཡུག་ལ་
སོགས་པས་བྱས་པའི་སྐུ་ལ་གྱུ་དུག་ཟེལ་གྱིས་གཞོན་པའི་ཐབས་ཡོད་དོ། །དེ་ལྟར་
གྱུར་ན་བཟུང་བ་ལ་སྐུ་ལ་གྱུ་དུག་མེད་དོ། །དུས་སུ་ཟིན་པ་ཉིད་ལ་མཁའ་ཁྲིང་གི་སྒྲོར་
བ་མེད་ན། སྐུ་ལ་གྱུ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་བར་བསྐྱབ་པའོ། །རྩ་འཁྲུལ་ཆེ་བ་ནི་
མཁའ་ཁྲིང་སྒྲོར་བ་²བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་ཕྱོགས་ལ་དྲི་བ་གཉིས་
པའི་ལན་ཕྱེན་ཏེ། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དོར་བྱ་དང་ཐང་བྱ་
སྟོན་པའི་ཕྱིར་སྟོན་པའོ། །ཁྲབ་འཇུག་དང་དབང་ཡུག་ལ་སོགས་པ་ཡང་། དེ་ལ་
གྱུས་པ་རྣམས་ཀྱི་སྟོན་པར་བརྗོད་དོ་ཞེས་པས་གསུངས་པ། སྟོང་ཉིད་ངེས་
གསུངས་³པ་ཞེས་ཏེ། ཐབས་བྱང་སྟེ་རྩ་རྒྱུ་གྱུར་པས། དེ་འཆད་པ་ནི་དཀའ་བ་
ཡིན། ཞེས་པའི་རིག་པ་ལས་དངོས་པོ་མཐའ་དག་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་བཅེ་
བའི་གཞན་དབང་ཉིད་ལས་གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་
ཉིད་གསུངས་པའོ། །ངེས་པ་ནི་ཟིན་པ་ཉིད་དེ་བྱ་བའི་ཁྱད་པར་རོ། །བདེ་བྱེད་ལ་
སོགས་པ་རྣམས་ནི་རང་ཉིད་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་ངེས་གིང་གཞན་རྣམས་ལ་ཡང་ངེས་
པར་མི་སྒྲུབ་ཞེས་པ་དགོངས་པའོ། །དེས་བརྟན་⁴པའི་སྟོང་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཁོ་ན་

1 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

2 བ་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་ནང་མེད།

3 པ་ཉིད་ངེས་གསུང་ བཤ། ལྟ།

4 ལྟན་ བཤ། ལྟ།

དུག¹་བྱེད་པ་སྐྱ་ན་མེད་པའོ་ཞེས་དྲི་བ་དང་པོ་ལན་འདེབས་པར་བྱེད་པ། རྫོང་པ་ལ་
ཞེས་པ་གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་རང་བཞིན་མེད་པ་རྣམས་ལའོ།

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་འབྲུང་གང་ཡིན་པ།

རྫོང་²་ཉིད་དེ་ཉིད་ཁྱོད་དགོངས་པ།

ཞེས་པ་ཚོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ལ་སྟེ་ཡུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྦྱེ་མཆེད་
རྣམས་ལའོ། །སྦྱལ་དང་གཟུང་བ་དང་དུག་ཀྱང་ངེ་ལྟར་ཉེ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ། །འདི་
ལྟར་རྫོང་པ་ཉིད་ལས་དུག་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ངེས་པས་དུག་གཏོན་མི་བླ་བར་འཇིག་པར་
འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དྲི་བ་གསུམ་པའི་ལན་ངེ་ལྟར་ཞེས་པ་ལ་
སོགས་པ་སྟེ། ཐམས་ཅད་དུ་ཅི་ནི་རྫོང་པ་ལའོ། །དྲི་བ་ལྷ་པ་ལ་ལན་བཞི་ན་པས་ཞེས་
པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྫོང་པ་ཉིད་ནི་མ་ངེས་པ་ལས་ནི་འཆི་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་རྣམས་
རྫོང་པ་ཉིད་སྦྱ་བས་བརྟན་པས་བཅོམ་ལུན་འདས་ཀྱིས་ངེས་པ་གསུངས་སོ། །ད་ནི་
གང་རྣམས་ལ་ནང་གི་དུག་མེད་པ་དེ་རྣམས་ལ་སྦྱལ་ལ་སོགས་པའི་དུག་ཀྱང་ངོ་ཞེས་
བཤད་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ། འདོད་ཆགས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། འདོད་ཆགས་
ནི་བླ་ག་པ་དང་བཅས་པའི་དངོས་པོ་ལ་ཆགས་པའོ། །གཏི་མུག་ནི་མ་རིག་པ་སྟེ་
དངོས་པོ་དང་དངོས་མེད་ལ་སོགས་པར་ཞེན་པའོ། །གྲགས་ཆེན་མ་ཞེས་པ་སྟེ་
ཆོགས་སྟེ་མ་བོད་པའོ། །ཐ་མལ་པའི་ཡུལ་ཞེས་པ་ལ་ཐ་མལ་ནི་འདིར་མ་རིག་པ་སྟེ།
དེས་སྟོང་བཅགས་པ་རྣམས་ནི་ཐ་མལ་པའོ། །རང་བཞིན་ཡུལ་ནི་དྲི་མ་མེད། །ཅིས་
པ་ལ། རང་བཞིན་ནི་འདིར་རྫོང་པ་ཉིད་དེ་དེས་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ལྷ་
སེམས་ཀྱིས་རྣམ་པར་བརྟུབས་པ་ལྷ་རྣམས་དྲི་མ་འདོད་ཆགས་³་པ་བག་ཆགས་དང་
བཅས་པ་རྣམས་ལེགས་པར་ཅད་⁴་ནས་བཏོན་ཅིང་རྫོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་གང་
རྣམས་ལ་ཡོད་པ་དེ་རྣམས་ནི་དེ་སྐད་དོ། །མང་པོ་ཉིད་ལ་གཅིག་གི་ཆོག་ནི་གཙུག་

1 དུག་ཞུ་བར་ བཤ། སྟེ།

2 རྫོང་པ་ བཤ། སྟེ།

3 ལ་སོགས་ བཤ། སྟེ། དཔར་མར་ལྟག།

4 བཅད་ བཤ། སྟེ།

ལག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ནམས་ཀྱི་དྲི་མ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་སེམས་དྲི་མ་མེད་པ་
ཉིད་ལས་སོ། །སེམས་ཀྱང་རང་བཞིན་གྱིས་དྲི་མ་མེད་པ་སྟེ།

དེ་ཚད་མ་ནམ་འགྲེལ་དུ་གསུངས་པ།

སེམས་ནི་རང་བཞིན་འོད་གསལ་བ།།

དྲི་མ་ནམས་ནི་སྒྲོ་བྱར་བ།། ཞེས་སོ།།

དཀྱུས་མ་ལ་སྒྱུར་བ་ནི་དྲི་མ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དོན་འདི་ཡིན་ཏེ།
འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་ཁོ་ན་ནང་གི་དུག་སྟེ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་
ཚོགས་ཀྱི་སྟོག་འཛམས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་སེམས་ཀྱི་²དབང་ལས་ཡུལ་གྱི་རང་གི་
ངོ་བོ་ཡང་དུག་གོ། །གང་གི་ཆེ་སེམས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟིང་རྩེ་དབྱེར་མེད་པའི་རང་
བཞིན་དྲི་མ་མེད་པ་ཉིད་ལས་དུག་མེད་པར་ངེས་པ་དེའི་ཆེ་ཡུལ་གྱི་³རང་གི་ངོ་
བོ་ཡང་དྲི་མ་དང་བྲལ་བ་སྟེ་རྩི་ལྟར་ཏེ་དུག་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་འོ། །འདི་ལྟ་བུའི་ཚུལ་
གྱིས་བརྟེན་⁴པའི་དུག་ལ་སོགས་པ་ཟ་བ་ལ་སོགས་པ་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་མེས་པ་ལས་
མི་གཞོད་དོ་ཞེས་གསལ་བར་བྱས་སོ།།

དེ་ཀྱའི་རྩི་རྩི་རྒྱུད་དུ་དཔེ་ཉིད་ཀྱིས་གསུངས་པ།

གང་ཞིག་སེམས་མེད་འཛིན་རྟེན་མི།།

དུག་ཟོས་པ་ཡིས་བརྒྱལ་བ་ཡིན།།

སྟངས་སྟངས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤེས།།

དེ་ཆེ་ཉིད་ན་མུ་ངན་སྟོང་།། ཞེས་སོ།།

1 མ་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ་ལ།

2 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

3 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

4 བརྟེན་ བཤ། ལྟ།

འདིར་མོངས་སྤངས་ནི་དུག་གི་དེ་ཁོ་ན་ནི་ད་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་ཕྱིར་རོ།
 དེ་ཁོ་ན་ནི་དེ་ཤེས་པ་ནི་དུག་གི་དེ་ཁོ་ན་ནི་ད་ལ་མོས་པ་བཞིན་པའོ། །མྱ་ངན་ནི་མྱ་ངན་
 མོ། །ནང་གི་དུག་འཛིགས་²་པ་ཡང་དེས་དཔེས་བསྟན་པ་ནི་དུག་སྤངས་པ།

དེ་བཞིན་མྱ་ང་འདས་ཐབས་ཤེས་ཤིང་།

ཀྱེ་ཡི་དོ་རྗེར་ངལ་བ་བྱས།

མ་རིག་སོགས་ཀྱིས་མི་འཆིང་སྟེ།

གཏི་མུག་ལ་སོགས་འཆིང་བས་མིན། ཞེས་པ་སྟེ།

འདིར་ཀྱེ་ཡི་དོ་རྗེར་ཞེས་པ་སྟོང་པ་ནི་དང་བདེ་བ་ཆེན་པོ་དམིགས་པ་མེད་
 པའི་སྤོང་རྗེ་ཆེན་པོ་དབྱེར་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ལའོ། །མ་རིག་ལ་སོགས་རྣམས་ཀྱིས་
 ཏེ། ཡན་ལག་བརྒྱ་གཉིས་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །གཏི་མུག་ལ་སོགས་རྣམས་ཀྱིས་ཏེ།
 ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །དེ་ལྟར་ནང་གི་དུག་དང་བྲལ་བ་ལ་སྤྱི་རོལ་གྱི་དུག་
 གིས་ཀྱང་མི་གཞོད་པར་གསུངས་ལ། སྤྱལ་གྱིས་ཀྱང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དྲི་བ་
 བཞི་པའི་ལན་འདེབས་པར་བྱེད་དོ། །ཐ་མལ་དུག་དང་སྤྱལ་གྱི་དུག ཉེས་པ་ཁོ་ན་
 ཞེས་པ་ལ་ཐ་མལ་ནི་མ་རིག་པ་སྟེ། དེས་སྒྲོ་བཏགས་པ་ལས་བྱུང་བ་ནི་ཐ་མལ་པའི་
 དུག་སྟེ། སྤྱལ་གྱི་འདི་ཡིན་པ་ནི་སྤྱལ་གྱི་སྟེ། ཡུཾ་འཕེལ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་
 དང་ཡུལ་གྱི་དུག་ཅེས་པ་གཉིས་ཀྱི་ཡང་³ཅི་ཞིག་བྱེད་ཅེས་འབྲེལ་ཏེ་⁴ མུ་སྟེགས་
 པའི་ཚྭ་གས་ལ་དྲི་བ་གཉིས་པའི་ལན་འདེབས་པ་སྟེ་རྣམས་ཡུལ་གྱིས་བསྐྱབ་པ་ཞེས་ཏེ།
 བདེ་བྱེད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཡུལ་རྣམས་ལ་ཉོན་མོངས་པ་དང་། ཤེས་བྱའི་སྤྱི་བ་པ་
 རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ནི་དུག་གིས་པ་བསྐྱབ་པར་བྱས་པ་རྣམས་ཏེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་རྣམས་
 ལ་ནང་གི་དང་སྤྱི་དུག་ཡོད་དོ། །ཁོ་ན་ཀྱང་རྩ་འཁུལ་ཆེ་བ་ནི་དུག་གིས་ན་དུག་ཞི་པའི་
 ཐབས་བྱེད་ཅིང་། དུས་སུ་ཟེན་པ་གསེར་མི་རུང་བར་སྒྲུའོ།

1 མྱ་ངན་ བོ། ལྟ།

2 འཛིག་ བོ། ལྟ།

3 ཡང་ བོ། ལྟ། དཔེར་མར་མ་གསལ་ལ།

4 ཏེ་ བོ། ལྟ།

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསུངས་པར¹་འགྱུར་བ།

རྒྱ་འབྲུལ་ཆེ་ལ་སྒོ་མེད་པ། ཞེས་སོ།

བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཅད་ནས་ཕྱུང་བའི་བཅོམ་
ཡུན་འདས་སངས་ཀྱིས་ཐོད་པ་ནི་འདོད་པ་ལ་སྤྱོད་ཀྱང་མི་འཆིང་ངོ་ཞེས་སྟོན་པ་ཡུལ་
ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་བཞིན་དུ་སྤྱོད་བཞིན་པ་ནི་སངས་ཀྱིས་ཐོད་པའི་རྣལ་
འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱང་མེད་སྤྱོད་ཀྱང་མི་དགོས་ཏེ་སངས་ཀྱིས་ཐོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་
ལས་སོ་ཞེས་གསུངས་པ། སངས་ཀྱིས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་
མཆོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཐུག་སྟུང་པ། དེ་ལས་དུས་ཟིན་མེད་ཅེས་པ་སངས་ཀྱིས་ཐོད་
པའི་སྤྱོད་པར²་ལས་སོ། །དེ་ལྟར་དོན་དམ་པའི་དུག་ཁྱི་ཐབས་བཞིན་ནས་ཀྱན་རྒྱུ་བ་
གསུང་པ། སྤྱི་ལོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །བསྐྱམས་ཏེ་ཡང་དག་པར་བསྐྱམས་
པར་སྤྱི་ཀྱི་ཉེ་བར་འདིར་འགྱུར་པའོ། །མུ་སྟེགས་པ་རྣམས་དུས་སུ་བཟུང་བ་
གསོར་མི་རུང་བར་སྒྲིབ་པ་བཅོམ་ཡུན་འདས་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དགོངས་པའོ། །

དེ་སྐད་བཞིན་ནས་ཁྱུ་རྣམས་ཀྱིས།

སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མར་ཕྱག་འཆའ་ནས།

རང་རང་གནས་རྣམས་སུ་ནི་སོང་།

ཞེས་པ་སྟུང་པ་པོས་གསུངས་པ།

འདི་འདྲ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །རབ་དུ་རྟོགས་པ་ཞེས་པ་རང་གི་ངོ་བོ་
ངས་པར་སེམས་པའོ། །ཁོ་ཞེས་པ་སྐྱུ་གསུང་བྱགས་སོ། །སྐུ་རྒྱུ་རང་བཞིན་མེད་པ་
ཉིད་དོ། །རྣམ་ཉི་མུགས་རྗེ་ཆེན་པོའོ། །དེ་གསུམ་དབྱེར་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དོ་རྗེ་འོ་

1 གསུང་བར་ བོ། ལྟ།

2 བ་ བོ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 ག་ལོ་ ལྟ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཞེད་ཡོད།

རང་བཞིན་གང་གི་བདག་ཉིད་དེ་རང་གི་ངོ་བོ་ཡིན་པ་དེ་རེད། ཇི་ལྟར་དེ་ལྟ་བུར་
 ཡིན་པ་དེ་ལྟར་མཐའ་དག་གི་ཞེས་གསུངས་པ། ལྟོང་དང་ལྟོང་མིན་ཞེས་པ་ལ་སོགས་
 པ་སྟེ། ལྟོང་པ་སྟེ་རང་གི་ངོ་བོ་དང་བུལ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། ལྟོང་མིན་ཏེ་དེ་ལྟར་
 ཡང་བཟོད་དུ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དང་། གཉིས་དང་བུལ་བའི་ངོ་བོར་གནས་པའི་
 ཕྱིར་རོ། མཐོ་ལུ་ཞེས་པ་སོར་དུག་ཅུ་པ་ཙ་བའི་ཐིག་གི་ནང་དུ་སྟེ། བྱ་བཞི་པའི་
 དཀྱིལ་འཁོར་རོ། ལྷུ་མ་པོ་ནི་སོར་སུམ་ཅུ་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་དུ་དྲོ་རྩོན་པོའི་སྤང་བས་
 བསྐྱར་བ་པར་འདབ་མ་བརྒྱད་པ་སོར་བརྒྱུ་པའོ། རྒྱུད་གཞན་དུ་ས་ཤིང་ལ་སོགས་
 པས་ཟུག་རྩ་དབྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་སྦྱང་བ་གསུངས་སོ། འདིར་ནི་མཆོག་གི་རྒྱུད་
 ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ན་ལག་པས་རིག་ནས་སྤྲུགས་བརྒྱ་ཙ་བརྒྱད་བཟས་པས་དཀྱིལ་
 འཁོར་གྱི་ས་གཞི་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་སྤྱིན་སྟེག་གི་ཐབ་ཀྱི་ས་གཞི་ཡང་སྦྱང་བར་
 བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པ། ས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། འདིར་དུག་གི་ཐབ་ཀྱི་དབང་དུ་
 བྱས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ལྟའི་སྟེགས་བུ་དང་སྐམ་བུ་མི་བྱའོ་ཞེས་གསུངས་པ།
 སྟེགས་བུ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། རྩལ་ཆོན་དམར་པོས་ཞེས་པ་ཕྱོགས་བཞི་རྣམས་
 སུ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གནས་ཀྱང་རྩལ་ཆོན་དམར་པོ་ཁོ་ནས་དགང་བར་བྱའོ། ཇི་ལྟར་
 འདུས་པ་ལ་སོགས་པར་རྣམ་པར་སྤང་མཛད་ལ་སོགས་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་དབྱེ་བས་སའི་
 ཁ་དོག་ཐད་དང་པ་དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ཞོ་ཞེས་གསུངས་པ། གཞན་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ།
 རེ་ཁྲ་ལུ་ལ་སོགས་པ་གཞན་ནི་ཁ་དོག་ལྟའི་ཆོན་རྣམས་ཀྱིས་ངེ་ལྟར་རིགས་པར་
 བྱའོ། གཏོར་མ་སྤྱིན་པ་དང་ས་གཞི་སྦྱང་བ་དང་། ཐིག་བསྤྲུགས་པ་དང་། ཐིག་
 གདབ་པ་དང་། རྩལ་ཆོན་གདབ་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཏེ་རུ་ཀའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་
 པའི་ཐུ་མས་བྱའོ། བུམ་པ་རྣམས་ཞེས་པ་ཙ་བ་མི་ནག་པ་སྟོ་བ་དང་མཆུ་འཕྱང་བ་
 དང་། མཁྱིན་པ་རིང་བ་རྣམས་ཏེ། དབང་ལྡན་དང་མེ་ལ་སོགས་པའི་མཆོམས་
 སུའོ། བུམ་པ་བཞི་རྣམས་སུ་གངས་ངེ་ལྟ་བར་མཆོན་མ་བཞི་རྣམས་སོ། རྣམ་པར་
 རྒྱལ་བའི་བུམ་པ་ནི་ལྟ་པ་གཙོ་བོའི་སྟེ། འདིར་མ་བཟོད་ཀྱང་རྒྱུད་གཞན་གྱི་རིགས་

1 བཞིན་ བེ། ལྷ།

2 པ་ བེ། ལྷ།

པས་གར་སྒྲོ་ལས་རྒྱུད་ཟད་སྒྲོར་གཏོགས་པས་¹ བྱའོ། །དེ་ཁོ་ན་འདིར་ལས་ཐམས་
 ཅད་པ་སྟེ། འདིར་མཚན་མ་ནི་ཆོས་འབྱུང་དབུས་སུ་ཅང་ཉེ་བྱ་སྟེ། ཅང་ཉེ་བྱའི་སྟེང་
 དུ་རྩི་རྩི་དང་པར་བློའོ། །སྟོབ་དཔོན་སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་ནལ་འབྱོར་དང་² ལྡན་པར་
 འབྱུར་རོ་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་ཞེ་ན་གསུངས་པ། པར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ལྡོ་ཆོགས་
 པར་ཞེ་སྟེ་བར་རོ། །ཕྱིས་ནི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ། སྟོབ་དཔོན་རང་ཉིད་ལྡོ་མོ་
 བརྒྱད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བའི་དེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཡེ་ཤེས་སེམས་དཔའ་
 བསྟེམས་པའི་རྩིས་ཐོགས་སུ་བདག་ཉིད་ལ་དབང་བསྐྱུར་བར་བྱའོ། །དེ་རུ་ཀའི་སྐྱུ་
 ལུས་སྐྱེས་པའི་འོད་ཟེར་ཞེས་པ་སྟེང་གའི་ཅ་བརྒྱད་རྣམས་ལས་སྟོས་པའི་འོད་ཟེར་
 དང་བཅས་པའི་ལྡོ་མོ་བརྒྱད་རྣམས་ཀྱིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ལ་རེག་རྒྱ་
 གཞུག་པར་བྱ་སྟེ་སྟོབ་དཔོན་ཀྱིས་སོ། །ལྡོ་མོ་དེ་རྣམས་དང་བྱོན་པའི་དེ་བཞིན་
 གཤེགས་པའི་འོད་ཟེར་ཀྱིས་སྟོས་པའི་ལྡོ་མོ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་རུ་ཀ་དང་ལྡོ་མོ་
 བརྒྱད་རྣམས་བྱས་ཤེད་དུ་འདུག་གོ། །ཅོད་པན་ཅན་དུ་ཞེས་པ་དེ་རུ་ཀ་ཅོད་པན་ཅན་
 དང་། ནལ་འབྱོར་རྣམས་དང་ལྡན་ཅིག་སྟེ། དེ་རྣམས་ཀྱང་ཅོད་པན་ཅན་ཞེས་པའི་
 རོན་རྟོ། །དཀྱིལ་འཁོར་རྩིགས་པ³་ཞེས་པ་དེ་ལྟར་རང་ཉིད་དེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་དུ་
 རྩིགས་པ་ན་རྩལ་ཆོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཡུད་ཀྱིས་དམ་ཆོག་སེམས་དཔའ་དང་ཡེ་
 ཤེས་སེམས་དཔའ་དང་དབང་བསྐྱུར་བ་དང་རྒྱས་གདབ་པ་རྣམ་པར་བསྐྱོམས་ནས་
 དཀྱིལ་འཁོར་སྐྱབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཏོར་མ་ཞེས་པ་ལྷ་རྣམས་ལའོ། །མར་མེ་ཞེས་པ་
 སྒྲང་ཅི་དང་མར་དང་ཉལ་ཆེ་བ་བྱ་དང་། དྲི་ཞིམ་པའི་འབྲུ་མར་དེ་མར་མེ་བཞི་
 རྣམས་དཀྱིལ་འཁོར་དང་ཉེ་བར་སྦྱིན་པར་བྱའོ། །ཡམ་མུ་དང་ན⁴་རི་ཀེ་ལ་དང་ཁྱུ་
 བེང་དང་། ཀ་པི་ཐུའི་⁵འབྲས་བུ་བཞི་རྣམས་སོ། །རས་བྱང་གསུམ་ནི་སྦྱད་གཡོགས་

1 པར་ བཤེས་ ལྟོ།

2 དང་ བཤེས་ ལྟོ། དཔལ་མའི་ནང་མེད།

3 ཞེས་པ་ བཤེས་ ལྟོ། དཔལ་མའི་ནང་མེད།

4 ལྟོ་ བཤེས་ ལྟོ།

5 པི་ཏ་ཐུའི་ ལྟོ།

དང་སྟོང་གཡོགས་དང་ཐོད་པའོ། །རྒྱལ་འཕྲོར་མ་ནི་རང་ཉིད་ཀྱིས་ཕུལ་བའི་སྒྲ་མའི་
 ཤེས་རབ་མ་དང་དཔལ་པོ་ནི་སྒྲ་མའོ། །འཁོར་ལོ་ནི་ཆོགས་འདུ་བའོ། །དམ་ཆོག་
 རྟེན་པོར་གཅིག་སེམས་ཀྱིས། །ཞེས་པ་ལ། དམ་ཆོག་རྟེན་པོ་ནི་བཙུག་ལྷན་འདས་
 སོ།། བདག་ཉིད་དོགས་པ་རྫོགས་ཀྱི་ཕྱེད་པ། ཞེས་པ་དགོངས་པས་དུག་བྱུང་གི་དོགས་
 པ་མེད་པ་ལ་ནི་མ་ཡིན་ནི་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ། །བཟན་པ་ནི་པོང་ངའི་དུག་ལ་སོགས་
 པའོ། །གཡོ་བཞི་སྒྲུལ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་འོ། །ལུས་སྒྲུལ་ནི་སྟོག་པ་ལ་སོགས་
 པའོ། །བཙུག་མ་ནི་མར་དང་སྒྲུང་ཅི་ལ་མཉམ་པར་སྦྱོར་བ་ལ་སོགས་པའོ། །རྣམ་
 པ་བཞིའི་དང་དུག་ནི་དུག་མེད་པར་བཀྱི་ཞིང་ངོ་། །ཤིང་བུ་ནི་སོ་ཤིང་ངོ་། །སྟོབ་
 མ་ནི་ཏེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་སུ་བསྟོམ་པར་བྱའོ། །མགིན་པར་ཞེས་པ་སྟོབ་དཔོན་གྱི་
 དང་། སྟོབ་མའི་འོ། །ལག་པར་ཡང་སྟེ་གཡོན་པར་ངོ་། །ཟླ་བར་ཞེས་པ་མགིན་
 པར་གནས་པ་དང་ལག་པར་གནས་པ་ལའོ། །བསྟོམ་པའི་རྩས་པས་ཞེས་པ་ཏེ་རུ་
 ཀའི་སྒྱུ་དང་། ཟླ་བ་ལ་སོགས་པ་སྟོམ་པར་བྱེད་ཅིང་། དེ་ལྟར་བསྟོམས་པའི་ལག་པ་
 སྟོབ་མའི་མགོར་བཞག་ནས་སྟགས་བཟས་སོ། །བུམ་པ་ཞེས་པ་བུམ་པའི་ཆད་ངོ་། །
 བཟོད་དཀའ་ཞེས་པ་སྟག་བསྟུལ་བའོ། །རྣམ་མཁའ་ལྗང་སྦྱོར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་
 ནི་གང་གི་ཆེ་སེམས་ཅན་འདིས་མཁའ་ལྗང་གི་སྦྱོར་བ་རྟོགས་པར་འགྱུར་བ་དེའི་ཆེ་
 བདག་ཅག་རྣམས་ལ་འགའ་ཞིག་དུ་ཡང་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་ཆེད་དུ་བཟན་པར་བྱ་
 བ་ཉིད་ཀྱིས་རྟེན་དུ་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་མ་ཐག་པ་ཞེས་པ་སྟག་པར་གནས་པའི་

1 བརྫོག་ བཤ། ལྷ།

2 ལྷར་ བཤ། ལྷ།

3 དང་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4 ས་ བཤ། ལྷ།

5 སྟོམ་ བཤ། ལྷ།

6 བསྟོམ་ བཤ། ལྷ།

7 རྣམ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མར་མ་གསལ།

8 པ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

9 མ་ཆད་དུ་རྟེན་ བཤ། མ་ཆད་དུ་རྟེན་ ལྷ།

དེ་མ་ཐག་དྲེལ། །རྗེས་སུ་སྦྱིན་པ་ཞེས་པ་བྱེད་པ་པོ་ལ་འཇུག་བཞིན་པ་ལྟ་ཏེ་སྟེ།
གཙུག་ལག་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །རིམ་པས་དབུལ་བར་བྱའོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དྲུང་
ཆོས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་མན་རི་གཅིག་ལ་ནི་དྲུང་རོ། །གཉིས་པ་ལ་ནི་ཟངས་ཀྱི་
སྟོད་དོ། །བུམ་པ་ནི་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ་དང་། བུམ་པ་གཞན་བཞི་རྣམས་སོ། །
རྣལ་འབྱོར་མ་བརྒྱད་ལྟ་བུར་གྱུར་ནས་ཞེས་པ་ལ་བཅོམ་ལྷན་འདས་དང་དགྱིལ་
འཁོར་ན་གནས་པའི་རྣ་མོ་རྣམས་དང་རྣན་ཅིག་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་གནས་པ་
རྣམས་སོ། །དམ་ཆོག་དང་ཡེ་ཤེས་སེམས་དཔའ་དག་རོ་གཅིག་པར་གྱུར་པ་ཁོ་ན་ནི་
དགྱིལ་འཁོར་གྱི་རབ་གནས་སོ། །བུམ་པར་ཏེ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པར་བཅོམ་
ལྷན་འདས་དང་རྣ་མོ་བརྒྱད་ལྟ་བུ་བ་བཞུགས་ཤིང་བུམ་པ་གཞན་རྣམས་སུ་རི་
ལྟར་རིགས་པར་རྣ་མོ་རྣམས་བསམ་མོ། །ཀྱུ་ཞེས་པ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ་ལ་
སོགས་པའི་ཀྱུ་བག་ཙམ་ཟངས་སྟོད་དང་དྲུང་ཆོས་སུ་གཞག་པར་བྱའོ། །ཀྱུ་ཞེས་པ་
ཟངས་ཀྱི་³རྣམས་ཏེ་དེའི་རྗེས་སུ་དྲུང་པོར་གྱི་ཀྱུ་ཅུང་ཟད་ཀྱིས་སོ། །བརྗོད་དུ་གཞུག་
སྟེག་དུ་གཞུག་ཅིང་⁴སྟོབ་དཔོན་གྱི་སྟོབ་མའོ། །མཆོད་དུ་གཞུག་སྟེ་སྟོབ་མས་སྟོབ་
མའོ། །སྟོབ་མ་ཞེས་པ་གདོང་གཡོགས་དགྲོལ་བ་ལའོ། །ཡང་ཞེས་པ་བྱུས་ཀྱི་དོན་དུ་
གཟུང་⁵པ་ལ་སྟོས་⁶ནས་སོ། །རྫོང་རྗེ་དང་བཙས་པའི་ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་⁷འཐུང་དུ་
གཞུག་སྟེ། ཏེ་རུ་ཀའི་སྟགས་སྟོས་ཤིང་ལན་གསུམ་དུ་ཟངས་སྟོད་ཀྱི་ཀྱུ་བསེས་པའི་
དྲུང་གི་⁸ཀྱུའོ། ཀྱུ་འཐུངས་པའི་ཕན་ཡོན་འཆད་པར་འགྱུར་རོ། །འདྲིར་རིམ་པ་ནི་
འདི་ཡིན་ཏེ། སྟོབ་དཔོན་རི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་དབང་བསྐྱར་ཞིང་སྟོབ་མས་རྗེས་སུ་

1 ཕྱིན་ པེ། ལྷ།

2 བཞག་ པེ། ལྷ།

3 ཀྱིས་ པེ། ལྷ།

4 རྫོང་ པེ། ལྷ།

5 ཟུང་ པེ། ལྷ།

6 བསྟོས་ པེ། ལྷ།

7 ཀྱི་ པེ། ལྷ།

8 བཞུག་ པེ། ལྷ།

9 དྲུག་ པེ། ལྷ།

གནས་པའི་¹ ཉིང་པེ་འཛིན་གསུམ་ལ་མཁས་པ་ཉེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་སྐྱགས་
 བཟུངས་པར་གྱུར་པས་² ཡུན་རིང་པོར་བར་མ་ཆད་པར་ལེགས་པར་བརྟགས་པའི་
 རོན་དུ་གཉེར་བའི་སློབ་མ་ལ་དབང་བསྐྱར་བར་འདོད་པས། ཐོག་མར་བྱུང་པོ་དང་
 རྒྱན་པོ་³ ལ་སོགས་པའི་ཉེ་བར་འཛེ་བ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཁང་
 པ་ལ་སོགས་པར་ཆོ་ག་ཇི་ལྟ་བར་བཞེངས་པའི་རྩལ་ཚོན་གྱི་⁴ དཀྱིལ་འཁོར་རམ་རས་
 བྱིས་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ཇི་སྐད་བཤད་པའི་མར་མེ་དང་འབྲས་བུ་ལ་
 སོགས་པ་ཉེ་བར་མཆོད་པ་ལྷས་མཆོད་པས་⁵ ལྷའི་རོན་དུ་འོ་མ་ལུལ་བ་ན། བུམ་པ་
 རྣམས་ལྟག་པར་གནས་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་རྣམ་པར་བྱུང་བའི་བུམ་པ་ཚོས་འབྱུང་གི་
 དབྱས་སུ་གནས་པའི་ཅང་ཉེའུ་དང་དོ་ཇི་ཤུས་མཆོན་པ་བྱིའི་རྒྱས་གང་བ་གསེར་དང་
 དངུལ་དང་མུ་མན་དང་མུ་ཉིག་དང་བྱི་རུ་སྟེ་རིན་པོ་ཆེ་ལྟ་རྣམས་དང་། རས་དང་།
 བྱོ་དང་། ཉིལ་དང་། སྐན་མོ་དང་འབྲས་སོ་བ་སྟེ། འབྲུ་སྒྲ་ལྟ་རྣམས་དང་། བྱི་
 ཏ་ཉི་དང་། ཀའ་ཀའི་དང་། ཨ་པ་ར་ཇི་ཏ་དཀར་པོ་དང་། དེ་ཏ་ཏེ་ལ་དང་། ས་
 ཏ་⁷ དེ་ཐ་སྟེ་སྐན་སྒྲ་ལྟ་རྣམས་ནང་དུ་ལྟན་པ། ཨ་མའི་ལོ་མས་ཁ་བརྒན་པ་མགྱིན་པ་
 གོས་དམར་པོས་དཀྱིས་པ་མེ་ཉོག་གི་སྟེང་བ་དང་ལྟན་པ། མེ་ཉོག་སྟེང་བ་བཙེངས་
 པའི་དོ་ཇི་སྟེང་ན་ཡོད་པ། འོ་མས་བཀང་བའི་སྟོད་སྟེང་ན་གནས་པ། ནང་དུ་ཡུད་
 ཀྱིས་བསྐྱེད་པའི་དམ་ཚིག་སེམས་དཔའ་དང་ལྟན་པར་བྱས་ནས། ཉེ་མ་དང་དོ་ཇི་འི་
 ལྟེ་བ་ལ་གནས་པའི་རྩྭ་གི་ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས། འོག་མིན་ནས་བཙོམ་ལྟན་
 འདས་ནས་འཕྱོར་བརྒྱད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བ་སྒྲན་དངས་ཉེ་སྟོང་པོའི་སྐྱགས་
 ཀྱིས་མཆོད་ཡོན་ལ་ལན་བདུན་བཟུངས་ཏེ། ཨ་ཉེ་རུ་ཀ་བཟླ་ ཨ་རྩྭ་ཉེ་རྩྭ་རྩྭ་ཞེས་པ་

1 གནང་བའི་ བཤ། ལྟ།

2 འབྱུང་བས་ བཤ། ལྟ།

3 མོ་ བཤ། ལྟ།

4 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

5 པར་ བཤ། ལྟ།

6 ལྟ་ག་ བཤ། ལྟ།

7 ཏ་ས་ ལྟ། མོང་དུ་ལེགས་སྐྱར་ལྟར་བཞེད་ཡོད།

འདིས་ཕུལ་ནས་དེའི་དབྱས་སུ་བརྟུག་པ་སྟེ། དམ་ཆོག་སེམས་དཔའ་དང་ལྷན་ཅིག་གཅིག་དུ་གྱུར་པའི་བདེ་བ¹་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རིཾ་པོར་ཆུ་དེ་བསམས་ལ། ཁུ་ཆུར་གཡོན་པས་དྲི་རྩེ་ལ་བཅིངས་པའི་མེ་ཉོག་གི་ཕྱང་བ་བཟུང་²་ནས། སྟིང་པོའི་སྒྲགས་ཀྱིས་བརྒྱ་ཙུ་བརྒྱད་དུ་བསྟུ་སོ³། །དཀྱིལ་འཁོར་བ་གཞན་གྱི་བུམ་པའི་དྲིའི་ཆུས་ཡོངས་སུ་གང་བ་ཨ་མའི་ཡན་ལག⁴་དང་ལྷན་པ་གོས་དམར་པོས་མགྱིན་པ་དཀྱིས་པ་མེ་ཉོག་གི་ཕྱང་བ་ཅན་གངས་རི་ལྷ་བར་ཐོད་པ་དང་ཁ་ཏྲུ་ག་དང་གི་གྲག་དང་ཅང་ཉེའུའི་མཆན་མས་མཆན་པ། ནང་དུ་དམ་ཆོག་གི་ལྷ་མོས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ལྷ་མོ་དང་དབྱེར་མེད་པ་ལྷ་བའི་ཆུ་དང་ལྷན་པ་ནམས་ལ་སོ་སོར་ལྷ་མོའི་ས་པོན་གྱི་སྒྲགས་ཀྱིས་བརྒྱད་ལྷག་པའི་བརྒྱར་མངོན་པར་བསྒྲགས་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཐོད་པས་མཆན་པར་ཆང་འཛོང་མ་དང་སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མའོ། །ཁ་ཏྲུ་ག་ཡིས་མཆན་པར་འབྱུང་མོ་དང་ལེགས་པཟང་མའོ། །གི་གྲག་གིས་མཆན་མར་ཕྱག་བཞི་མ་དང་ས་འོག་གནས་མའོ། །ཅང་ཉེའུས་མཆན་པར་ནམ་མཁའ་⁷་གནས་མ་དང་འདྲོད་མའོ། །རྩྱ་མོ་རྩྱ་སྤྱེ་རྩྱ་ཁྲི་རྩྱ་རྩྱ་རིམ་པ་བཞིན་དུ་འདི་ནམས་ཀྱི་ས་པོན་ནོ། །དེའི་རྩེས་སྒྲ་ཆོགས་པར་མེ་ཉོག་དང་བདུག་པ་ལ་སོགས་པ་ནམས་ཀྱིས་ཡང་དག་པར་⁸་མཆོད་ལ་གཏོར་མ་ཕུལ་རྟེ། དྲི་རྩེ་པར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པས་བསྟོད་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བས་དེའི་བྱ་དྲོའི་ཕྱག་བྱའོ་ཞེས་བུམ་པ་ལྷག་པར་གནས་པའི་ཆོ་གའི་རྩེས་སོགས་སུ་སྟོབ་དཔོན་སྟོབ་མས་ཕུལ་བའི་རས་གསུམ་ལ་སོགས་པས་བརྒྱན་པ་ཤེས་རབ་དང་

1 འདྲོད་ཆགས་ ལེགས་སྒྲུར།

2 གཟུངས་ བེ། ལྷ།

3 བསྟུ་གོ་ བེ། ལྷ།

4 ཡལ་ག་ བེ། ལྷ།

5 མོ་ བེ། ལྷ།

6 པར་ བེ། ལྷ།

7 མཁའ་ བེ། ལྷ།

8 པར་ བེ། ལྷ། དཔར་མར་གསལ།

9 པ་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྷག་།

བཅས་པ་རོལ་ཅིང་བྱས་པས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གནས་ལས་ཐུ་རོལ་གྱི་སྟན་ལ་
 འདུག་པས་སྒོ་བ་མ་མཐུན་གསུམ་བྱས་པ། མེ་དོག་གི་ཤིང་བ་བཟུང་བ། དུས་མོ་ས་
 ལ་བཅུགས་པ། ཐལ་མོ་སྒྱུར་བ། དུག་ཞི་ཐབས་སོགས་པའི་སྐལ་བ་ཅན། སྒོས་རང་
 གི་¹ལུས་ལ་བཅུག་ནས་དེ་རྗེ་ནས་སྤྱང་བ་གཤམ་རབ་ཀྱི་པར་གནས་པ་ལ་སྤྱིང་གའི་ས་
 བོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་སྒྱུན་དངས་པ་ཨ་བརྒྱ་²དྲུ་ནས་ཁྱུགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་
 ཟུ་བ་ནམས་ཀྱིས་དབང་བསྐྱར་བ་དེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་ཅན་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གར་སྒྲོར་
 བཞག་ནས།

སེམས་ཅན་དོན་ལ་གཅིག་དུ་བཅོན།
 བཅོམ་ཞུན་ཐུ་མ་སྟོན་པ་ཀྱེ།
 དག་ཞིའི་ཐབས་ནི་བཟང་པོ་འཆོལ།
 སྤྱི་ལ་ཀ་བྱེད་སྒྲོར་བ་སྒྲེས།
 སེམས་ཅན་དོན་ནི་བཟང་པོ་བཀྱིད།
 དུས་སུ་བཟུང་བརྒྱུག་³བྱེད་པ།
 དེ་ནི་སྟོན་ཆེན་བདག་ལ་གསུངས།
 སངས་བྱུང་བྱེད་པའི་སྒྲོར་ཞུན་པས།

ཞེས་པ་འདིས་འདུག་པ་ཁྱུར་བཅུག་ནས།

དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་བདག་སྐྱབས་མཆི།
 རྗེས་པ་མི་དག་སོ་སོར་བཤགས།
 འགྲོ་བའི་དགེ་ལ་རྗེས་ཡི་རང་།
 སངས་བྱུང་བྱེད་ཐུབ་ཡིད་ལ་གཟུང་།

1 གིས་ བཤ། ལྟ།

2 དུ་ བཤ། ལྟ།

3 བཟང་བ་བརྒྱུག་ བཤ། ལྟ།

ཞེས་ལན་གསུམ་བཅོད་དུ་གཞུག་སྟེ། སྟིང་པོའི་སྤྲགས་ཀྱིས་བསྐྱངས་ལ།
 དེའི་སྟིང་གར་དོ་རྩེ་ནག་པོའི་ལྗེ་བ་ལ་དྲུག་མགྱིན་པར་པར་དམར་པོ་ལ་ལྷ་། མགོ་བོ་
 ལ་འཁོར་ལོ་དཀར་པོ་ལ་ལྷ་ཞེས་པའི་ལྗེ་གེ་རྣམས་ནག་པོ་དང་། དམར་པོ་དང་
 དཀར་པོ་རྣམས་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ལངས་ཏེ་དྲིའི་ཆུ་དང་། དོ་རྩེ་དང་ལྗན་
 པའི་ལག་པ་གཡས་པས་དྲུག་ལྷ་། ལྷ་ཞེས་བཅོད་ཅིང་། སྟིང་ག་དང་། མགྱིན་པ་དང་།
 མགོ་བོ་རྣམས་ལ་རེག་ནས་མགོ་བོ་ལ་མེ་ཏོག་དང་། མདུན་དུ་སྟོས་དང་། མར་མེ་
 དང་། སྟིང་གར་དྲི་སྟེན་ནོ། དེའི་རྩེ་སྤྱུ་ལ་ཤུ་ལ་སོགས་པའི་སོ་ཤིང་ཅེ་མོ་མ་
 གས་པ། འཕྲིག་པོ་ལ་སོགས་པ་མ་ཡིན་པ། སོར་བརྩུ་གཉིས་པའི་ཆད་ཅམ་པ་༢། མེ་
 ཏོག་གི་སྤང་བ་ཅེ་མོ་ལ་དཀྱིས་པ། དྲི་ཞིམ་པོའི་ཆུས་བཀྱས་པ། སོ་ཤིང་གི་སྤྲགས་
 ཀྱིས་ལན་བདུན་མངོན་པར་བསྤྲགས་པ་ཤར་དུ་སྟེགས་པས་སྟེན་པར་བྱའོ། །སྟོབ་
 མས་ཀྱང་ཤར་རམ་བྱང་དུ་སྟེགས་པས་ཅེ་མོ་འཆོས་ནས་ཀྱེན་དུ་སྟོས་³པ་མེད་པར་
 ས་གཞི་བ་ལང་གི་ཀོ་བ་ཅམ་བྱུགས་པར་⁴དོར་རོ། །དེ་ནས་ཁ་བཤལ་བའི་དོན་དུ་
 དྲིའི་ཆུ་ཁྱོར་བ་གསུམ་གྱི་བདུང་བ། ལྷ་རྩི་ལི་ཤུ་རྣམས་རྣམས་ར་བྲ་པ་འཛི་ཅ་ལ་སྟེ་ལོ་
 རྒྱ་ལ་སར་ལི་ཀུན་ལ་པ་ན་ལ་དྲུག་ཞེས་པའི་སྤྲགས་འདིས་བྱེད་དུ་གཞུག་གོ། །དེའི་
 རྩེ་སྤྱུ་སྟོབ་དཔོན་གྱིས་རང་གི་ལག་པ་གཡོན་པ་དང་། མགྱིན་པ་དྲིས་བྱུགས་ཤིང་
 མེ་ཏོག་གིས་དཀྱིས་པར་ཆུ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བལྟས་ལ། དེའི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་
 སྟེགས་བརྩེའི་སངས་ཀྱིས་རྣམས་སྟུན་དངས་པ་འདོད་ཆགས་ཆེན་པོས་ཁུ་བར་གྱུར་
 རས་ཆུ་བ་གཉིས་ལ་ཐིམ་པར་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ལག་པ་དེ་སྟོབ་མའི་མགོར་
 བཞག་ནས་ལྷག་གནས་ཀྱི་སྤྲགས་ལན་བདུན་བཟུང་སོ། །དེ་ནས་མགྱིན་པར་གནས་
 པ་དང་། ལག་པར་གནས་པའི་སངས་ཀྱིས་དེ་རྣམས་ཆུ་བ་དང་བཅས་པ་སྟོབ་མའི་

1 ལ་ བ།

2 ལ་ བ།

3 བརྟོས་ བ།

4 པ་ བ། རྒྱ།

5 པ་ བ། རྒྱ།

ལུས་ལ་ཞུགས་ནས། བྱིན་རྒྱལ་མཛད་པར་བསམས་ཏེ། སློབ་མ་བསྐྱེད་པར་
བྱའོ། །དེ་ནས་དེ་ལ་སྤྱིང་པོའི་སྤྲུག་པ་བླས་པའི་ཀླ་ག་ནམས་བཏིང་སྟེ། རྒྱས་དང་³་
སྟན་གྱི་དོན་དུ་⁴སྤྱིན་ནོ། །སློབ་དཔོན་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཁང་པར་ཞུགས་ཏེ། བསློམ་
པ་དང་བཟླས་པ་བྱའོ་ཞེས་པ་སློབ་མ་ལྟག་པར་གནས་པ་བྱས་ནས། ཐོ་རངས་གཏོར་
མ་བྱིན་ཏེ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཁང་པ་ནས་བྱང་ལ་སློབ་མ་ལ་མི་ལམ་བྱས་ཏེ། སྤྱིང་པོའི་
སྤྲུག་གིས་བསྐྱེད་པར་བྱ་ཞིང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཁང་པར་འཕྱོར་པ་ཇི་ལྟ་བར་
མཆོད་ནས་ལྟའི་འཁོར་ལོ་དངོས་སུ་དེར་གནས་པར་མོས་ལ། རང་གི་སློབ་གཙོ་པོ་
ལྷ་མར་བྱས་ཏེ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་སློབ་མ་གཞུག་པའི་ཆོ་གས་རང་ཉིད་དང་
པོར་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ཞུགས་ལ། རིགས་ཀྱི་བདག་པོས་བདག་ཉིད་དབང་བསྐྱར་གྱི་
མཐར་ཐུག་པ་བསྐྱེད་པས་ནས། དེ་ཉིད་ལས་སློབ་དཔོན་གྱིས་ལས་ཀྱིན་ལ་གནང་བ་
ཐོབ་སྟེ། བདེན་པའི་བྱིན་རྒྱལ་བྱའོ།།

བདེན་པ་གང་གིས་ཡེ་ཤེས་མཆོག་།
ཤེས་རབ་ཐབས་བདག་དཀྱིལ་འཁོར་ཡིན།།
བདེན་པ་དེ་ཡིས་མགོན་པོ་བྱོད།།
བདག་གི་འདོད་པ་ཡོངས་ཚོགས་མཛོད།།
ཆོས་ནམས་གཟུགས་བརྒྱན་དང་མཉམ་པ།།
དྲངས་ཤིང་དག་ལ་རྟོག་པ་མེད།།
གཟུང་དུ་མེད་ཅིང་བཟོད་དུ་མེད།།
རྒྱ་དང་ལས་ལ་ཡང་དག་བྱུང་།།

1 བརྒྱལ་བ་ བཤུ་ ལྟ།

2 ལྟུང་ བཤུ་ ལྟ།

3 རྒྱས་དང་ བཤུ་ ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མེད་

4 དང་སྤྲུག་གི་དོན་དུ་ བཤུ་ ལྟ། དཔར་མར་ལྟག་

5 ཆོགས་ བཤུ་ ལྟ། གོང་དུ་ལེགས་སྤྱོད་ལྟར་བཞག་ཡོད།

6 བརྒྱལ་བ་ བཤུ་ ལྟ།

དེ་ཉིད་དེ་བཞིན་ཉིད་¹་ལས་སྐྱེས་²།

དེ་ལྟའི་བདེན་པས་དཀྱིལ་འཁོར་ནི།

གཟུགས་བརྒྱན་གསལ་བར་སློབ་མ་རྣམས།

ཀྱན་གྱིས་སྒྲིག་མེད་མཐོང་བར་ཤོག།

ཅེས་པས་སོ། །དེའི་རྗེས་སུ་སློབ་མ་ཁྱུས་བྱེད་དུ་བརྟུག་ལ། དེ་བཟང་པོ་ལ་
སོགས་པས་གཙང་སྤྱ་ཅན་དུ་འགྱུར་བ། གོས་དམར་པོའི་སྤྲད་གཡོགས་དང་སྟོད་
གཡོགས་ཅན། གདོང་གཡོགས་དམར་པོ་བཅིངས་པ། དཔལ་ཏེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་སུ་
དམིགས་པ་ལ། ལྷ་ཁྱི་བྱེ་ར་རྩྭ་ཞེས་པའི་སྤྲགས་ཀྱིས་མེ་ཏོག་གཟུང་³་བས་ཡོལ་བའི་
ཕྱ་ངོས་⁴་སུ་ཡོན་ཡུལ་བ་ལས་ཐམས་ཅད་པའི་བུམ་ཆུས་གཏོར་བ། རྩྭ་ཡིག་གིས་
དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་གར་སྟོར་བཞག་པ་ལ། དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གཞུག་པའི་དོན་དེ་བར་བྱ་
སྟེ། གྲུ་བྱོད་སུ་ཡིན་ཞེས་པའོ། །དེས་བདག་ནི་རྒྱལ་བའི་སྤྲས་ཞེས་བརྗོད་པར་བྱའོ། །
དེ་ནས་འདི་ལ། ལོ་སངས་ཡོ་ག་ཙོམྱ་ལྷ་བླ་ཡུ་མེད་ཞེས་པ་འདིས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་
བསྐྱེད་ནས། མེ་ཏོག་དང་བཅས་པའི་དོན་རྗེས་ཀྱིས་ཀར་རྩྭ་ར་ཏེ་སམ་ཡ་སྟོ་དོ།
སིཾ་བཱ་ཡ་ཐུ་ཁྱི་ཞེས་བརྗོད་ཅིང་གཞག་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་སྤྱི་ཐོར་དོན་རྗེས་བཞག་
ནས་བརྗོད་པར་བྱ་སྟེ། འདི་ནི་བྱོད་ཀྱི་དམ་ཆོག་དོན་རྗེས་ཀྱིས་འདི་
འགའ་ཞིག་ལ་སྤྲས་ན་སྤྱི་ཐོ་འགམས་⁷་པར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་སྤྱིང་གར་དོན་རྗེས་བཞག་
ནས་འདི་སྐད་བརྗོད་དེ།

1 ཉིད་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

2 པ་ བཤ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།

3 བཟུང་ ལྷ།

4 དངོས་ བཤ།

5 ཏལ་ བཤ། ལྷ།

6 བཞག་ བཤ། ལྷ།

7 འགམས་ བཤ། ལྷ།

ཨོ། དེ་ནི་རྩོམ་མཁས་དཔལ་རང་།
 ཁྱོད་ཀྱིས་¹སྤྱིང་ལ་ཡང་དག་ཞུགས་པ།
 གལ་ཏེ་ཚུལ་འདི་སྤྲོས་ན་ནི།
 དེ་མ་ཐག་དུ་དལ་ཏེ་ག་ཤེགས།

ཞེས་པ་འདིས་མནའ་བྱེད་དུ་བརྟུག་སྟེ། བསྐྱེད་སྟོན་དུ་འདུག་པ་ཡི་གེ་གསུམ་
 གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་པའི་བདུན་ཅི་ལྟ་བུ་སྤྲོས་པའི་བུམ་པའི་སྤྱིང་ན་གནས་པའི་འོ་
 མ། ཨོ་པརྱུ་མ་མྱོད་ལྟར་ཀམ་རྩེ་ཞེས་པ་འདིས་ལན་བདུན་དུ་བརྒྱས་པ།

འདི་ནི་ཁྱོད་ཀྱི་དཔུལ་བའི་ཚུ།
 དམ་ཆོག་འདས་ན་སྟེགས་³པར་བྱེད།
 དམ་ཆོག་བསྐྱེད་པས་དངོས་གྲུབ་སྟེ།
 རྩོམ་བདུན་ཅི་འུ་འབྱེད་སྟེ་གིག།

ཅེས་བརྗོད་ཅིང་འབྱེད་དུ་གཞུག་གོ། ཁྱོད་ཀྱིས་ང་ལ་བརྒྱས་པར་མི་བྱ་སྟེ།
 ཁྱོད་དམ་ཆོག་ཉམས་ནས་དཔུལ་བར་སོང་བར་གྱུར་ཏེ་འུ་ཞེས་བརྗོད་ནས། བཅོམ་
 ལུན་འདས་ལ་ཐལ་མོ་སྐྱར་བས།

དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ནི་སྟོབ་མ་དག།
 བདག་གིས་ཡང་དག་བརྟུག་པ་འདི།
 ལྟ་རྒྱུ་མཁས་རིགས་ཀྱི་རིམ་པ་ནི།
 བསོད་ནམས་ཇི་ལྟ་དེ་ལྟར་ཤོག།
 འདི་ཡིས་དངོས་གྲུབ་ཅི་འདྲར་འགྱུར།
 རིགས་གང་ལ་ནི་སྟོན་ཡིན་དང་།

1 ཀྱི་ བཤུ་

2 བཞུགས་ བཤུ་

3 བསྟེག་ བཤུ་

4 འབྱེད་ བཤུ་

5 ཡི་ བཤུ་

བསོད་ནམས་མཐུ་ཡང་གང་འདྲ་བ།

དེ་འདྲ་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་གྱུར་ཅིག།

ཅེས་པ་བདེན་པའི་བྱིན་རྒྱལ་སྤྱུང་། ཡི་གེ་ལྡས་སྤར་བཟུང་བའི་མེ་ཏོག་ཏྲི་
ཡིག་གིས་བྱིན་གྱིས་བརྒྱལ་སྤྱུང་པ་²དྲུག་ཡིག་གིས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་དབུས་སུ་འཕང་ཞིང་། ལྷ་
བཟླ་ཏེ་རུ་ཀ་བཟླ་པུམྱི་པདྱུ་རྩེ་ཏྲུ་ཞེས་འདོན་དུ་གཞུག་གོ། །འཕངས་པའི་མེ་ཏོག་དེ་
སློབ་མའི་མགོ་ལ་འཛིང་ཞིང་། གྲེ་སློབས་པོ་ཆེ་ཁྱོད་ཀྱིས་འདི་སྤར་བྱང་ཤིག་ཅེས་
བརྗོད་དོ། །དེའི་འཛེས་སུ་སློབ་མའི་སྤིང་གར་ཆུ་བ་ལ་བདག་པོ་དང་། དཔལ་བར་ར་
ཡིག་དང་མིག་གཉིས་ལ་ལོ་ཡིག་གཉིས་བསྒྲམས་ནས།

ལོ་ རྟོ་རྩེ་སེམས་དཔའ་རང་ཉིད་དེང་།

ཁྱོད་ཀྱི་མིག་ནི་འབྲེད་པར་བཙོན།

ཐམས་ཅད་མིག་ནི་འབྲེད་མཛད་དེ།

རྟོ་རྩེ་མིག་ནི་ཐུ་ན་མེད།

ཅེས་འདོན་ཅིང་གདོང་གཡོགས་བསལ་ནས། དགུ་ཡི་བདག་ཉིད་དཀྱིལ་
འཁོར་དུ། །ལྷ་ཏེ་རུ་ཀ་བཟླ་པུམྱི་པདྱུ་རྩེ་ཏྲུ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའི་སྤྲུགས་རྣམས་ཀྱིས་
⁴བདུག་པ་ལ་སོགས་པའི་སྤྲུགས་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་མཛོད་དེ། གྲེ་རྟོ་རྩེ་སྤྲུག་ཤིག་ཅེས་
བརྗོད་པས། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་བརྗོད་པ་སྤྲོན་དུ་འགོ་བར་བརྟན་
པར་བྱའོ་ཞེས་པ་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་འདུག་པའི་རྩེས་ཐོགས་སུ་སློབ་མས་ཡན་ལག་ལྡས་
ཕྱག་བྱས་པས་ཕྱས་མོ་གཡས་པ་ས་ལ་བརྟུགས་པ་འཕམ་མོ་སྤར་བས།

བདག་ནི་འཁོར་བའི་འདམ་དུ་བྱིང་།

དཔུང་གཉེན་སློབ་པ་པོ་མཛོད་ཅིག།

1 བརྒྱལ་སྤྱུང་ བཤུ་ ལྷ།

2 པ་ བེ་ཀྱང་དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 དེ་ བཤུ་ ལྷ།

4 གྲེ་ བཤུ་ ལྷ།

5 ཐེ་བའི་ བཤུ་ ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྷག།

བདག་ནི་སྐལ་དམན་སྒྲོ་བ་ཆུང་།།
 སངས་རྒྱས་ཆོས་དང་རྣམ་བུལ་ལས།།
 གྲེ་གྲེ་མགོན་སྟོན་ཐུ་མ་ཆེ།།
 མགོན་པོ་ཁྱིད་ཀྱིས་བྱགས་རྩེ་མཛོད།།

ཅེས་བཅོམ་པས་གསོལ་བ་གདབ་པོ། ཉེ་ལ་སྒྲོབ་དཔོན་གྱིས་རང་གི་ལྟེ་བར་
 གདུམ་མོ་འབར་བས་བཞུ་¹པའི་བདུད་ཅིས་སྟིང་གའི་ས་པོན་བཀྲུས་པའི་དུས་སུ།
 སྟིང་གའི་ཅ་བརྒྱད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ལྟ་མོ་སྒྲོས་པ་རྣམས་དང་། སྟིང་གའི་ས་པོན་གྱི་
 འོད་ཟེར་གྱིས་སྒྱུན་དངས་པའི་ཕྱོགས་བརྒྱའི་དེ་བཞིན་གསལ་གསལ་པ་དང་། རིག་པའི་ལྟ་
 མོ་རྣམས་དང་བཅས་པ་རྣམས་ལ། སྟིང་རྩེ་ཅན་རྣམས་འདི་ལ་དབང་བསྐྱར་²སྒྲུབ་དུ་
 གསོལ། །ཡང་ཡང་ཕྱག་འཆལ་ཐལ་སྐྱར་གསོལ་འདེབས་བཞུད། ཅེས་གསོལ་བ་
 གདབ་ཅིང་། གདུགས་དང་། རྒྱལ་མཆོན་དང་། བ་དན་དང་། གོས་དང་། རོལ་
 མོ་ལ་སོགས་པ་དང་ལྷན་པ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྒྱུས་གང་བའི་བྲམ་པ་དཀར་པོའི་ཕྱག་ཅན་
 བྲལ་གིས་ཀྱི་སྒྲུ་ལེན་པ་རྣམས་ཀྱིས། གང་གི་ཆེ་སྒྲོབ་མ་དེ་རུ་གའི་གཟུགས་ཅན་ལ་
 དབང་བསྐྱར་བར་མཛད་པ་དེའི་ཆེ་མན་རྩེ་གཉིས་ལ་གནས་པའི་ཟངས་སྟོད་དང་།
 དྲུང་ཆོས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་བྲམ་པ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱས་བཀའ་ནས། དང་པོར་རྩེ་རྩེ་
 དང་བཅས་པའི་ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་བཟུང་བའི་ཟངས་སྟོད་ཀྱི་ཆུ་ཉུང་དུ་ཡིས་དང་
 དེའི་རྩེས་སུ་དྲུང་གིས།

དབང་བསྐྱར་རྩེ་རྩེ་ཆེན་པོ་ནི།།
 ཁམས་གསུམ་པ་ཡིས་ཕྱག་བྲས་པ།།
 སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་གསང་གསུམ་གྱི།།
 གནས་ལས་བྱུང་བ་སྦྱིན་པར་བྱ།།

¹ གཞུ་ ལྟ།
² བ་ གཞུ། དཔར་མའི་ནང་ལྟ།

ཨི་དེ་རུ་ག་པུ་ར་སྟེ་¹ཨ་ཉི་པི་སྟེ་²མི་ཞེས་པ་ཐོད་ཅིང་བྱས་ཕྱེད་པའི་སྟོབ་མ་
 ལ་ཅོད་པན་གྱིས་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབ་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་རྒྱུད་ཅོད་པན་གྱི་དབང་
 བསྐྱར་བ་³དག་གིས་དབང་བསྐྱར་བའི་སྟོབ་མ་ལ་དེ་ལྟར་བཟུང་བའི་དྲུང་གི་བཅངས་
 སྟོད་ན་གནས་པའི་ཁུ་ལྷག་མ་བསྐྱེད་པའི་ཁུ་ལྷག་མ། ལེའུ་དང་པོར་པོར་ཐོད་པའི་
 རྒྱགས། ཨི་བུ་རྒྱ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་པོར་ཅིང་། ལན་གསུམ་རྒྱུད་དོ་ཞེས་པའོ། །
 རྒྱར་བ་རྣམས་ཞེས་པ་བྱས་རྣམས་སོ། །གཞན་རྣམས་ནི་སྟོག་པ་ལ་སོགས་པའི་ལུས་
 ལ་སྐྱེས་པའི་དྲུག་རྣམས་སོ། །ཉི་བའི་དྲུག་ནི་ལྷ་ག་ལེ་⁴ལ་སོགས་པའོ། །མདའ་⁵དྲུག་
 གི་རྒྱ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ། །བྱུག་པ་ཞེས་པ་བཟུང་བའི་དོན་དུ་བཟུང་བྱ་ལ་སོགས་པ་ལ་
 བྱུག་པ་རྣམས་བྱས་ནས་སོ། །གང་རྣམས་ཞེས་པ་དྲུག་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཞེས་པ་
 དེ་ཐམས་ཅད་དོ། །དེ་ཉིད་དུ་ཞེས་པ་གང་གིས་གཟུང་བའམ་སྦྱིན་པ་དེ་རྣམས་ཁོ་ནར་
 རོ། །ཐུ་ལི་ཀླ་བྱེད་པས་ཞེས་པ་ཐུ་ལི་ཀླ་བྱེད་པ་ཅམ་གལ་ཏེ་ཤེས་པར་འདོད་ན་དེ་
 ཁོ་ནས་ཤེས་པར་གྱིས་ཤིག །ཡང་ན་དྲུག་ནི་ཐབས་ཏེ་འཛིག་རྟེན་པ་དང་དོན་དམ་པ་
 ཐམས་ཅད་ཅེས་པའི་དོན་རྟོ། །སྟོང་ཕྱག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་⁶སྟོང་ཕྱག་བརྒྱའི་
 རང་ན་གང་བསམ་པ་རྣམ་པར་དག་པ་ལ་གདམས་པ་དང་། འཆད་པར་འགྱུར་བའི་
 རྒྱགས་སྦྱིན་ནོ། །སྐྱལ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྐྱལ་གྱིས་བྱིན་པ་ལའོ། །དེ་བཞིན་
 ཞེས་པ་མི་བཙོན་པའོ། །དོན་འདི་ཡིན་ཏེ། གཟུང་བ་ལ་ཇི་སྟོང་དུ་དྲུག་གསོ་ཐབས་
 གཞན་རྒྱགས་དང་སྟོར་བ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ཕྱེད་པའམ། ཕྱེད་པར་འགྱུར་བ་དེ་
 སྟོང་སངས་ཀྱིས་ཐོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པས་སྟོབ་པར་མི་བྱའི་འདི་ནི་དུས་སུ་བཟུང་བ་སྟེ་

1 ལྟ་ བཤ། ལྟ།

2 པི་སྟེ་ བཤ། ལྟ།

3 པ་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

4 ལམ་ ལྟ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྐྱར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

5 དྲུག་ནི་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་ལྟོག།

6 ལ་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

གི་བའོ་ཞེས་དུག་གསོད་པ་¹་གཞན་རྣམས་ཀྱིས་དོར་བ་ན་བཟུང་བ་ལ་ལས་བརྩམ་པར་
 བྱའོ། །འོད་ཟེར་རྣམས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ། བདག་ཉིད་ཏེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་ཅན་
 གི་སྒྲིང་གའི་ས་པོན་གྱི་འོད་ཟེར་རྣམས་ཀྱིས་ནོར་རྒྱས་ལ་སོགས་པའི་སྒྲུའི་གནས་སུ་
 བསྐྱལ་བས་སྒྲུའི་སྒྲིང་རྣམས་པ་ཅི་བཀྱི་ཞེས་ཟེར་བའི་སྒྲུ་རྣམས་ལ་གསུངས་པའོ། །
 སྔོན་ཞེས་པ་ལེའུ་དང་པོར་ཏེ། འདིར་ཡང་སངས་རྒྱས་ཐོད་པ་གསུངས་པ་ཞེས་དུན་
 དུ་འདུག་སྟེ། བྱེད་རྣམས་སྟུགས་ཀྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་ཟེལ་གྱིས་²་མཚན་པ་བཅོམ་ལྷན་
 འདས་མ་ལ་ཞུས་ནས། དེའི་བཀའ་ཁས་སྒྲུངས་པ་ཞེས་པ་དགོངས་པའོ། །དེ་ནས་
 འགྱུར་ཞེས་པ་འདི་ལྟར་རིག་³་པ་སྐྱབ་པ་མ་ཡིན་ཞེས་པ་སྒྲུ་རྣམས་ཀྱིས་གསོལ་བའོ། །
 གྱེ་འོད་ཟེར་བཞུད་ཅིག །གང་གི་⁴་ཕྱིར་དུས་སུ་ཟིན་པ་མེད་ཅིང་། གཟུང་བ་དང་
 འཛིན་པ་མེད་དེ། འཛིན་པར་བྱེད་པ་དུས་སུ་ཟིན་པ་ལས་གཞན་མེད་དོ། །དོགས་པ་
 སྟོང་དོགས་པ་ཅན་དུ་དུག་གིས་འཆི་བ་ལ་དོགས་⁵་པ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །འོད་ཟེར་
 ལ་ནི་འོད་ཟེར་རོ། །བ་ལང་གི་ཚུ་བ་ས་ལ་མ་སྐྱུང་བ་ནི་བ་སེར་སྐྱའི་འོ། །དེས་འདབ་
 ཆགས་རི་སྟེགས་དང་རི་སྟེགས་མོ་ཡང་བྱའོ། །སྟོད་དཀར་པོ་ནི་འབྲས་དཀར་པོ་
 བདགས་⁶་པ་ལས་བྱས་པ་སྟེ། དེར་འདབ་ཆགས་གཉིས་པོ་དེ་གཞག་⁷་པར་བྱའོ། །
 དེར་དུང་ལ་སོགས་པའི་སྟོད་དཀར་པོར་རོ་བསྟེགས་པའི་སོལ་བ་མཉེས་པའི་སྟག་ཆ་
 བཞག་ཅིང་དེས་ཀར་བྱེ་ར་⁸་དཀར་པོའི་འདྲི་སྟུག་⁹་གིས་རི་སྟེགས་ཀྱི་¹⁰་སྟགས་བྲི་
 བར་བྱའོ། །ཁོ་དང་མོ་རུ་ཞེས་པ་མོ་ནི་¹¹་རི་སྟེགས་མོ་སྟེ། དེའི་པོ་ནི་རི་སྟེགས་སོ། །

1 གསོ་བ་ བཤ། ལྟ།

2 གྱིས་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 རིགས་ བཤ། ལྟ།

4 གིས་ བཤ། ལྟ།

5 སོགས་ བཤ། ལྟ།

6 བདག་ བཤ། ལྟ།

7 བཞག་ བཤ། ལྟ།

8 རའི་ བཤ། ལྟ།

9 སྟག་ བཤ། ལྟ།

10 རི་སྟེགས་ཀྱི་སྒྲིང་གར་ ལེགས་སྐྱར།

11 མི་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

འདི་ནི་ཁྱད་པར་ལ་སྟེ་དེའི་ཕྱིར་དེས་བྱིས་པའི་སྤྲལས་ཀྱི་གྲོ་ག་ལ་སོགས་པའི་འདབ་
 མ་གཉིས་རི་སྟེགས་ཀྱི་སྟིང་གར་དང་རི་སྟེགས་མའི་སྟིང་གར་བཞག་གོ་ཞེས་བསྟན་
 ཏོ། །སྟེགས་ཆ་སྟེན་པར་བྱ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ། སྟེགས་ཆ་དེས་རི་སྟེགས་གཉིས་ལ་
 བྱག་ཅིང་བྱིས་ལ། བདག་ཉིད་ཀྱི་མིག་ལ་སྟོགས་པར་བཞག་སྟེ། བདེན་པའི་རི་
 སྟེགས་གཉིས་བཞིན་དུ་བཟླ་ཞིང་ཀ་ར་བྱེ་ར་དཀར་པོའི་ལོ་མས་སྤྲལས་ལན་བདུན་
 བདུན་བརྗོད་ཅིང་བཀྲག་པའི་སྟེང་རི་སྟེགས་གཉིས་དང་དབྱེར་མེད་པར་བསྟོམ་མོ།
 མི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྤྱ་དྲུའི་མཐར་ཐུག་པ་ནི་སྤྲལས་གཅིག་གོ། །ཞུགས་ཞེས་པ་
 རི་སྟེགས་དེ་གཉིས་སོང་ནས་སྤྱིའི་གནས་སུ་ཞུགས་པའོ། །གང་གིས་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པ་འཛིན་པ་པོའི་སྟེང་། རི་སྟེགས་མཐུ་ཆེན་པོ་ཅན་མཐོང་ནས་མ་གེན་ལང་
 ལོང་བར་ནི་མི་འགྱུར་རོ། །ཤུ་ལི་ཀླ་ན་མས་ལ་ནི་ཤུ་ལི་ཀླ་དག་ལའོ། །གསོལ་བ་ནི་
 གསོལ་བ་ན་མས་སོ། །ཆོག་ནི་སྟེ་ཆོགས་སྟེ་མ་ལ་ཁས་སྒྲངས་པའི་ཆོག་སྟེ། ན་མ་པ་
 གཞན་དུ་མི་བགྱིད་¹པའོ། །ཁ་ཅིག་དུ་མ་མཛད་ཅེས་སྟོག་པ་དེའི་ཆེ་སྟེན་ལ་ཞོན་གྱི་²
 རྒྱ་ཉི་བར་མི་འཆེ་བའི་དོན་དུ་བྱེད་དུ་བཅུག་པའི་ཆོག་གིས་བྱ་བྱང་གི་བྱ་ལ་པོས་འདབ་
 ཆགས་སྟོབས་པོ་ཆེ་བམས་ཅད་ལ་ངག་བྱ་སྟེ་³། དེའི་ཕྱིར་ཆོག་དེ་ན་མ་པ་གཞན་དུ་
 མ་མཛད་ཅིག་ཅེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལྟར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་རི་སྟེགས་དང་ཤུ་ལི་
 ཀླ་མོ་དག་གིས་མགོ་དང་མཇུག་མ་དག་གཟུང་⁴ནས་ཟེན་པའི་མདུན་དུ་བྱེར་ལོང་པའི་
 སྤྱུ་ལ་ལོང་བ་ལ་འགྲགས་པའི་སྤྲལས་ཀྱིས་མངོན་པར་བསྤྲལས་པའི་སྤྱུ་ལ་གྱི་བྱང་བུའི་
 ས་ཡིས་འགྲགས་པའི་སྤྲལས་བརྗོད་པ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བར་བྱབས་པ་ལོ། །མིག་བྱང་བ་
 ཟེན་པ་མཐོང་བ་ལ་རྐང་བ་ནས་⁶མགོ་པོའི་མཐར་ཐུག་པ་དང་། མགོ་པོ་ནས་རྐང་

1 འགྱིད་ བཤ། ལྷ།

2 ཀྱིས་ བཤ། ལྷ།

3 བྱས་ཏེ་ བཤ། ལྷ།

4 བཟུང་ བཤ། ལྷ།

5 ལས་ བཤ། ལྷ།

6 ནས་ བཤ། ལྷ། དཔར་མར་མ་གསལ།

པའི་མཐར་ལན་གསུམ་དུ་འགྱུར། །དེ་ནས་བཟུང་¹་བ་ལངས་པ་ན་ཡུ་མི་ཀླ་གཉིས་
 གྱིས་སྐྱལ་རང་གི་གནས་སུ་སྤྱོད་ནས་སོང་བ་ནི། རང་གི་གནས་སུ་རྟག་དུ་གནས་སུ་
 གཞུག་གི་ཞེས་སྤྱིར་དོན་དོ། །ཡན་ལག་གི་དོན་ནི་བཟུང་བའི་ཞེས་པ་བཟུང་བའོ།
 སྐྱལ་གྱིས་ནི་སྐྱལ་ལོ། །མི་བ་འགྲེལ་བའི་ཞེས་པ་མི་ཞིང་འགྲེལ་བའོ། །འགྲོ་བ་ནི་
 མགོ་བོའི་མཐར་ཐུག་པར་རོ། །འོང་བ་ནི་རྒྱང་པའི་བར་དུ་ལོ། །ཀྱན་ཚོ་བ་པའི་དུག་
 གསོ་ཐབས་རི་སྐློགས་ཀྱི་བྱེད་པ་གསུངས་ནས་དོན་དམ་པ་གསུངས་པ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་
 ཡེ་ཤེས་ཞེས་པའོ། །དེ་ཉིད་རྒྱས་པར་སྟོན་དེ། སྟོང་པ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ།
 སྟོང་པ་ནི་རང་བཞིན་མེད་པ་རྣམ་པར་རྟོག་པའི་གོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའོ།
 མཐའ་དག་སྟེ་ཕྱི་དང་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོའི་ཞེས་པའོ། །ཡོད་པར་སྟོ་
 འདོགས་པ་བསལ་²ནས་མེད་པར་³སྟོ་འདོགས་པ་སྟོང་སྟེ། ཆོས་ནི་དངོས་པོ་རྣམས་
 ཀྱི་ཆོས་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་མེད་དེ་⁴དེ་ནི་སྟོས་པ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྟིད་དུ་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཉིན་ཞག་ནི་བྱ་ཅ་གཅིག་རྣམས་ཇི་སྟིད་པའོ། །མང་པོས་ཅི་སྟེ་རི་
 སྟིད་དུ་ཟིན་པའི་གདོང་པ་ལ་སོགས་པ་མི་དབྱེ་བ་སྟེ། གདངས་ནས་མི་གནས་པ་དེ་
 སྟིད་དུ་འབྱུལ་འཁོར་གྱི་ལས་བྱའོ། མཇུག་བསྟུ་བ་ནི། དེ་རྣམ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་
 སྟེ། དེ་རྣམ་དུང་གི་ཁུ་སྟུད་པའི་མཐར་ཐུག་པས་རྗེས་སུ་བཟུང་ནས་དུག་ཞི་ཐབས་
 རི་སྐློགས་ཀྱི་བྱེད་པ་དང་། དོན་དམ་པ་ལུང་བརྟན་པར་བྱའོ། །སངས་རྒྱས་ཐོད་
 པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་ཨོ་ཕུར་ཀ་ཡུ་ལི་ཞུ་ཡུ་ལི་ཞུ་ཞེས་པ་འདིས་ལན་ནི་བྱ་ཅ་གཅིག་དུ་
 མངོན་པར་བསྐྱགས་པའི་དུག་བཟུང་བར་བྱའོ། །ཕྱི་རོལ་གྱི་སར་ཞེས་པ་དཀྱིལ་
 འཁོར་གྱི་གནས་ལ་སྟེ། དཀྱིལ་འཁོར་གཤེགས་སུ་གསོལ་ནས་སོ། །འདིས་ཞེས་པ་
 བརྗོད་ཟིན་པས་དེ། རྟུལ་ཚོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དགའི་བདག་ཉིད་མཆོད་པར་བྱའོ་

1 གཟུང་ ཤེ། ལྷ།
 2 གསལ་ ཤེ། ལྷ།
 3 བ་ ཤེ། ལྷ།
 4 དེ་ ཤེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།
 5 དུག་ ཤེ། ཤེ། ལྷ། མོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་རྣམ་བཞག་ཡོད།

ཞེས་པ་སྤར་བཞིན་ནོ། །ཡང་ན་སྤྱབ་པ་པོ་མེམས་བདན་པ་དེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་
བརྗོད་ཟིན་པའི་མཆོད་པའི་སྤྲལ་འདིས་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བར་མཆོད་པར་བྱའོ་ཞེས་
འགྲེལ་ལོ། །དཀྱིལ་འཁོར་ནི་ཙུག་ལ་སོགས་པས་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །དཀར་པོའི་
ལུས་ཅན་ཞེས་པ་དཀར་པོའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཚོགས་དང་ལྡན་པའོ། །མི་ཤིག་པ་ནི་མགོ་
པོ་མེད་པ་སྟེ། བདེ་བའི་གནས་ཀྱི་ནང་དུའོ་ཞེས་པ་མན་ངག་གོ། །སྟོད་ཀྱི་ཁ་ནི་བུམ་
པའི་ཁའོ། །ཟླ་བ་ཞེས་པ་ཟླ་བ་ལྷ་བར་གྱུར་པའོ། །ལངས་པར་ཞེས་པ་ལྷང་བར་བྱེད་
དོ་ཞེས་པའོ། །སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཆེན་པོའི་འགྲེལ་པ་མཁས་པ་མི་འཛིགས་
པའི་འབྱུང་གནས་ཀྱི་སྤྲལ་པས་མཛད་པ་མི་འཛིགས་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་
ལེའུ་བཞི་པའོ། །

*

1 མི་ཤིགས་ རྟེན་ མི་ཤིག་ པེ། ལྷ། གོང་དུ་ལེགས་སྤྱར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

སྒྲུབ་པ་ཅད་པོ་དང་དགོངས་པ་བཤད་པའི་ལེའུ།

བརྒྱུད་ལེན་ཀྱིས་པར་སྒྲིན་པ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ།།
 ཟླ་བ་དྲུག་དུ་ཞེས་པ་སྐར་ཟུགས་¹འབྱོར། ཞེས་པ་སྐྱག་མའོ། ཤེས་རབ་བྱ་རོག་མ་
 ཉི་²གང་གི་གཟུགས་དང་ཁ་དོག་བྱ་རོག་གི་ལྷ་བྱ་སྟེ་ལུས་ནག་པོའོ། འང་པ་མོ་ནི་
 ཤེས་རབ་མ་སྟེ་གང་གི་གཟུགས་ངང་པའི་བྱ་བྲག་གི་བཞིན་དུ་དཀར་པའོ། འོད་མ་ནི་
 ཤེས་རབ་སྟེ། གང་གི་འོད་གཟུགས་ཏེ་སྒྲིན་པོ་དང་དཀར་པོ་བསྐྱེས་པའོ། ཁ་ཅིག་
 ཉི་ཁ་དོག་སྒྲིན་པོ་སྟེ་འོད་གཟུགས་ཞེས་པ་ནི་རྟག་དུ་འདེའི་ལུས་འོ་བའོ་ཞེས་ཟེར་རོ་
 ཞེས་པ་ཤེས་རབ་རྣམ་པ་གསུམ་མོ། རེ་ལ་བྱ་རོག་མའི་རྩལ་ནི་ནག་པོའི་སྟོགས་ལ་
 བྱང་བ་གཟུང་བར་བྱའོ། འང་པ་མའི་དཀར་པོའི་སྟོགས་ལ་བྱང་བའོ། འོད་མའི་
 སྟོགས་གཉིས་ཀ་ལ་བྱང་བའོ། གཞོན་རྒྱ་མ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱི་³མཆན་ཉིད་
 གསུངས་པ། སྔོ་སངས་⁴ནི་བྱ་རོག་མ་སྟེ་མིག་སྔོ་བས་བྱད་པར་དུ་བྱས་པའོ། རེའི་
 ལོ་བཙེ་བརྒྱད་མ་ནི་རྩས་མིག་ནག་དང་ཁ་སྐར་སྐྱོར་བ་ཞེས་ཐབས་དང་ཡང་དག་
 པར་སྐར་པའི་སྐྱོར་བ་ལས་སྐྱེས་པའི་གཉི་གའི་བྱང་ལྷབ་ཀྱི་སེམས་དང་དེའི་རྩལ་
 ཞེས་པ་གསུམ་གཞོན་རྒྱ་མ་ཅན་དུ་བརྗོད་དོ། ཤེས་རབ་མ་གསུམ་པོ་དེ་རྣམས་སུ་
 བྱང་བས་ན་དེར་བྱང་དོ། རེ་རྣམས་སུ་ཡང་དེ་ཅིའི་ཡིན་ཞེན་གསུངས་པ། ཅ་
 རྣམས་ཀྱི་སྟེ་ཨ་བ་རྒྱ་དྲི་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིའོ། བརྒྱ་སྐྱེས་⁵ནི་ཆོས་འབྱུང་དུ་སྐྱེས་
 པའི་རྩས་བྱང་ལྷབ་⁶སེམས་མོ། རེའི་ཡང་ཅི་ཞིག་དུ་གནས་ཤེན་གསུངས་པ། ཞེ་
 སར་དུ་སྟེ་ཅ་ཆོགས་པར་རོ། བྱད་པར་ངི་ལྷ་བྱ་⁷ཞེན། སྐས་པའི་སྒྲིད་ཡུལ་དུ་སྟེ་⁸

-
- 1 ཟུག་ བཤ། ཟླ།
 - 2 མིན་ བཤ། ཟླ།
 - 3 ཀྱིས་ བཤ། ཟླ།
 - 4 བསངས་ བཤ། ཟླ།
 - 5 བ་ བཤ། ཟླ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།
 - 6 ཀྱི་ བཤ། ཟླ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།
 - 7 བྱར་ བཤ། ཟླ།
 - 8 སྐས་པའི་སྒྲིད་ཡུལ་དུ་སྟེ་ བཤ། དཔར་མར་མ་གསལ།

སྤྱི་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་ནི་གང་གིས་རྩམ་གནས་པའི་ཡུལ་རྟེ། རྩེ་བ་ནས་བྱང་ནས་གེ་
 སར་དུ་གནས་པ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ། །འདིའི་དོན་ནི་འདི་ཡིན་རྟེ། ཤེས་རབ་མ་གསུམ་
 པོ་རྣམས་ལས་གང་ཡང་རུང་བ་ལོ་བཅུ་གཉིས་ལོན་པ་དང་སྦྱོར་བ་ལས་སྦྱོས་པའི་གཉི་
 གའི་བྱང་རྒྱུ་ཀྱི་སེམས་དང་དེའི་རྩལ་དང་པོ་གཉིས་ཤུ་ལེ་¹ ཀྱའོ། །མེ་རྟོག་ལྡན་པ་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ། བྱ་རྟོག་མ་ལོ་བཅུ་དྲུག་ལོན་པ་རྩལ་དང་ལྡན་པ་དང་སྦྱར་བ་
 ལས་བྱང་བའི་གཉི་གའི་བྱང་རྒྱུ་ཀྱི་སེམས་ནི་² བྱུང་མའོ། །ཉེར་སྦྱོད་ཐམི་དང་པ་
 ཞེས་པ་ནི་སྦྱོད་པ་མཚུངས་པའོ། །མི་མོ་ནི་ཤེས་རབ་མ་གསུམ་ལས་གང་ཡང་རུང་
 བའོ། །མ་ཉམས་མ་ནི་སྦྱོས་པ་གཞན་གྱིས་མ་བཟོད་པ་རྩེ། སྦྱོས་གནས་མ་ཉམས་པ་
 ཞེས་པའི་དོན་རྟེ་³ དེ་ལས་དང་པོར་བྱང་བ་ཞེས་པ་དེ་ལོ་ནི་ཤུ་མ་ཟམ་ཚན་དང་
 ལྡན་པའི་ཉི་མ་དང་པོ་ལས་⁴ བྱང་བའི་རྩལ་དང་། དེའི་ཆེ་ཁོ་ན་དེ་དང་སྦྱར་བ་ལས་
 སྦྱོས་པའི་བྱང་རྒྱུ་ཀྱི་སེམས་ཞེས་པ་གཉིས་ནི་བྱིས་པ་ཅན་མའོ། །ལྷན་ཅིག་སྦྱོས་པ་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཤེས་རབ་གསུམ་པོ་གང་ཡང་རུང་བ་ལོ་ནི་ཤུ་ཙ་ལྡན་པ་དང་སྦྱར་
 བའི་གཉི་གའི་ཁྲ་བ་དང་། བྱང་མེད་ཤི་བའི་ཐོད་པའི་རྩ་ལས་བྱང་བའི་འབྲུ་མར་ཞེས་
 པ་གཉིས་ནི་ཐོད་པ་ཅན་མའོ། །སྤྱོད་ལུ་འདི་རྣམས་དངུལ་རྒྱུ་དང་སྦྱངས་པ་ར་རྟེ་
 རེ་དང་ལྷན་ཅིག་རིམ་པ་རི་བཞིན་དུ་ཟླ་བ་དྲུག་དང་གསུམ་དང་གཅིག་དང་བྱེད་
 དང་གཉིས་དང་གཅིག་རྣམས་སུ་འཆད་པར་སྤྱོད་སྦྱར་བར་བྱའོ། །དེ་ལ་སྤྱོད་བྱ་
 རྟོག་མ་སྤྱོད་བྱ་གཡོན་པར་རྒྱང་རྒྱ་བའི་དུས་སུ་སྤྱར་རྒྱགས་པར་བྱའོ། །སྤྱོད་ངང་པ་
 མ་ནི་གཡས་ཀྱིས་སོ། །རྫོད་མ་ནི་གཉི་གནས་སོ་ཞེས་གསུངས་པ། ཟླ་བ་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པའོ། །ཟླ་བ་ནི་འདིར་རྒྱང་མའི་རྒྱང་རོ། །ཉི་མ་ནི་རོ་མའི་རྒྱང་རོ། །ཟླ་བ་ནི་
 ཁྲ་བའོ། །ཉི་མ་ཞེས་པ་རྩལ་ལོ། །གལ་ཏེ་སྤྱོད་དེ་ལ་ཁྲ་བ་ཤས་ཆེན་དེའི་ཆེ་སྤྱོད་

1 རེ་ བོ། ལྷ།

2 ཉི་ བོ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 རྟོ་ བོ། ལྷ།

4 ལ་ བོ། ལྷ།

5 གཉིས་གནས་ བོ། ལྷ།

གཡོན་པར་རོ། ཅི་སྟེ་དུལ་གས་ཆེན་དེའི་ཆེ་གཡས་ནས་སོ། །དེ་ནས་འདི་ལས་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གོ་སྟེ། །ནལ་འབྱུང་མའི་མཆོག་ཅེས་པ་བདུད་ཅི་ལྟ་ནམས་ནི་
 ནལ་འབྱུང་མ་¹་ནམས་སོ། །ནལ་འབྱུང་མཆོག་ནམས་ནི་ཐབས་སྟོན་མ་ལྟ་ནམས་
 སོ། ། ལུས་ཏེ་བཟའ་བར་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །ནམ་ཏྟིག་ནི་ནམ་ཏྟིག་ནམས་སོ། །དེ་
 བཞིན་གཤེགས་པས་མི་ཏྟིགས་སོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་དུ་བྱུང་བས་བརྗོད་²་པ་
 ཅི། ལུས་པ་བསྐྱེད་པའི་དོན་དུའོ། །འོ་ན་སུ་ནམས་ཀྱིས་ཏྟིགས་ཤེ་ན་གསུངས་པ། རྒྱ་
 མ་ལ་གསུ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཏྟིག་པ་ལ་སོགས་པའི་མཐའ་ལས་འདས་པའི་
 རྟོང་པ་ཉིད་བསྐྱེམས་³་པས་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་དང་བྲལ་བ་ནམས་སོ། །དེ་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཉོན་མོངས་ཐམས་ཅད་ནམ་སྤངས་པ། འདི་ནམས་ཀྱིས་ཟིལ་གྱིས་
 མནན་པའོ། །བཟའ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་མ་ཞེན་པའོ། །ཤེས་རབ་ཐབས་སོགས་ཀྱིས་
 ཞེས་པ་⁴་རེག་བྱ་ལ་སོགས་པ་འདོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྟ་ནམས་ཀྱིས་སོ། །སྟོགས་
 གཅིག་གིས་ཤེས་པ་སྟོགས་གཅིག་གིས་ཏེ། རྒྱ་ན་མེད་པའི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་དག་
 གཅིག་གི་ངོ་བོས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མཉམ་པར་གཞག་⁵་པ་དང་མ་གཞག་པའི་གནས་སྐབས་
 དག་དུ་སྟོམ་⁶་པར་བྱེད་པས་འགྲུབ་པོ་ཞེས་པའི་དོན་ཏོ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྟོམ་པ་ཁོ་ན་ལ་
 ལྷུར་ལེན་པ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དུ་ཡུལ་ལ་ཞེན་པ་སྤངས་པ་⁷་གསུངས་པ། ཀྱེ་ལགས་ཞེས་པ་
 ལ་སོགས་པའོ། །ཅལ་ཅོལ་ནི་འགལ་བའོ། །ཅི་ཞེན་གང་དབང་པོ་ནམས་ཀྱིས་
 གནོད་ཅིང་ཡུལ་ནམས་ལ་ཀུན་ནས་ཞེན་པའོ། །སེམས་ཅན་འདི་སྟེ་མངོན་པར་ཞེན་
 པའི་སྒྲིས་པོ་ནམས་སོ། །དུ་དུ་ཞེས་པ་ཐུང་ན་ནོ། །ཅལ་ཅོལ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྟོམ་པ་

1 མ་ བོ། ལྷུར། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

2 རྗོད་ བོ། ལྷུ།

3 སྟོམ་ བོ། ལྷུ།

4 ཀྱེ་གིས་པའི་ བོ། ལྷུ།

5 གི་ ལྷུ།

6 བཞག་ བོ། ལྷུ།

7 བསྐྱེམས་ བོ། ལྷུ།

8 སྤང་བར་ བོ། ལྷུ།

ལས་གཞན་བཟའ་བ་དང་། བརྟུང་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་¹སེམས་གཡེང་བའོ། གྲིབ་
 མ་ནི་གཟུགས་བརྟན་ནོ།། གཉུག་མའི་བདག་པོ་ཞེས་པ་གཉུག་མའི་བདག་པོ་རྣམས་
 ཏེ་མེ་ལོང་ལྟ་བུ་ལ་སོགས་པ་ཡེ་ཤེས་ལྗེའི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་སྤང་མཛད་ལ་
 སོགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྟ་རྣམས་འགྲུབ་པར་འགྱུར་རྟེ། རྣལ་འབྱོར་པ་དེའི་
 རང་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ།།

མི་འཇིགས་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེའུ་ལྟ་པའོ། །

*

1 ལ་ གེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།

དགྲིལ་འཁོར་འཇིགས་པ་བྱི་བ་དང་སྒྲོབ་མ་དབང་བསྐྱར་བའི་ལེའུ།

དབང་བསྐྱར་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་བར་བྱ་ཞིང་། དབང་བསྐྱར་ནས་དགྲིལ་
འཁོར་སྒྲོབ་མ་ཅན་ཏེ། དེ་ནས་སྒྲོབ་མ་དབང་པོ་མཆོག་ཡིད་གྱིས་རང་བཞིན་གྱི་
དགྲིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐྱར་བར་བྱའོ་ཞེས་ཉིགས་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་གསུངས་པ།
དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །ཕྱི་རོལ་གྱི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་
རྣམས་འཇིགས་པར་བྱེད་པ་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་འཇིགས་པའོ། །དབང་པོ་རྣོན་པོ་དགའ་བའི་
གནས་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་བཟང་བ་སྟེ་ཡིད་གྱིར་བཞིན་ནོ། །མཆོག་ནི་འཇིགས་པར་བྱེད་
པའི་འབྲས་བུ་འབྱེན་པ་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་རོ། །གང་གིས་ཞེས་པ་དགྲིལ་འཁོར་གྱིས་སོ། །
ཤེས་རབ་ཐབས་ཀྱི་སྒྲུབ་པ་ནི། །ཞེས་པ་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་དག་གི་སྒྲུབ་པ་སྟེ། །
དེས་རྗེས་སུ་བསྒྲུབ་པའོ། །མཐའ་ནི་བྱ་གདོང་གི་ཅེ་མོ་སྟེ་དེ་དང་སྒྲུར་ཞིང་འབྲེལ་
པའོ་ཞེས་པ་མཐའ་ལ་སྒྲུར་བའོ། །ཕྱིའི་དགྲིལ་འཁོར་ནི་རྩལ་ཚོན་གྱི་དགྲིལ་འཁོར་
རོ། །རྩ་ཉིད་གཞིག་¹་པ་ཅམ་གྱིས་ཞེས་པ་བག་མེད་པ་ལས་རྩ་གཤེགས་སུ་མ་གསོལ་
བའི་རྩལ་ཚོན་བཞིག་པས་ཞེས་ཉིགས་པར་བྱ་སྟེ། །གཞན་དུ་ན་སྔ་ཕྱི་དང་རྒྱུད་གཞན་
རྣམས་དང་འགལ་བའོ། །དེ་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་རྩ་བཞིག་པ་སྟེད་པ་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་རྩལ་ཚོན་
གྱི་རྩ་ལ་གཟུང་²་འཛིན་དུ་འཛིན་པས་དག་པ་སྟེ། །གཉིས་མེད་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་
མེད་ཅིང་ཡིད་རང་བཞིན་གྱི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་ནི་ཡོད་དོ་ཞེས་མངོན་པར་དགོངས་སོ། །
རྩ་བཞིག་པ་བཞིན་དུ་དེའི་མཆོན་མ་བཞིག་ན་ཡང་སྤྲིག་པའོ་ཞེས་གསུངས་པ། དེ་རྗེ་
ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་མི་བསྐྱེད་པ་ལ་སོགས་པའི་རིགས་ཀྱི་བདག་པོ་རྣམས་ཀྱི་མཆོན་³་
མ་སྟེ། །ཡང་ཡིད་⁴་ལས་ས་བོན་རྣམས་དང་། རྩ་གཞན་རྣམས་ཀྱི་ཡང་ངོ་ཞེས་རིག་⁵་
པར་བྱའོ། །སོང་ནས་ཞེས་པ་འགྲོ་བའོ། །དོན་དམ་པར་ནི་ཡང་སངས་རྒྱས་ཞེས་པ་

1 བཞིག་ བོ། ལྷ།

2 གཟུགས་ བོ། ལྷ།

3 མཆོན་ བོ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4 ཡིག་ བོ། ལྷ།

5 རིགས་ བོ། ལྷ།

ལ་སོགས་པ་སྟེ་ཅི་ཡིས་ཏེ་ཅི་ཞིག་གིས་ཀྱང་མ་ཡིན་ནོ། །སྤྱན་དྲང་བ་སོགས་པ་ནི་
 སེམས་ཅན་དམན་པའི་བསམ་པའི་དབང་གིས་གསུངས་པའོ། །འགར་ཡང་ཞེས་པ་
 རོན་དམ་པར་འགའ་ཞིག་ཏུ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་
 སྤྱན་པར་གསུངས་པ། རིགས་ཀྱི་བྱ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ནི་གང་ལས་ཀྱང་
 སྤྱོན་པའམ་བཞུད་པ་མེད་དོ། །དེ་བཞིན་ནི་ནི་མི་གཡོ་བ་སྟེ་དེ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་
 པའི་ཞེས་སོ། །དྲི་མ་མེད་ཅེས་པ་དྲི་མ་མེད་པ་རྣམས་ཏེ་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་
 དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་རོ། །ཤེས་བྱའི་སྤྱིབ་པ་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་དག་པ་ཆོས་
 གྲུ་རྣམས་སོ། །གཞན་རྣམས་ཞེས་པ་གང་རྣམས་དོན་དམ་པར་སྤྱན་དྲང་བ་ལ་
 སོགས་པ་སྟེ་དཔལ་རྒྱལ་ཆོན་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རིགས་པ་བཞུད་པ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོས་
 པ་ལ² གྲོལ་བ་སྤྱིབ་པ་མེད་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ལས་གཞན་པའི་དེ་བཞིན་
 གཤེགས་པ་རྣམས་ཡོད་དོ་ཞེས་འདོད་པར་མི་བྱའོ། །འདི་ལ་ཆད་མ་ཅི་ཞེན་
 གསུངས་པ་འདིར་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །གང་གི་པར་དཀྱིལ་འཁོར་ཏུ་འགྱུར་བ་
 ཤེས་རབ་མ་ཇི་ལྟ་བུར་ཞེན་གསུངས་པ། ལོ་བཅུ་གཉིས་མ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །
 ཟླ་བ་བརྟན་³ པ་ནི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསགས་པའོ། །མི་གཡོ་བ་ཞེས་པ་མི་གཡོ་བ་
 རྟེ་སྤྱོད་པ་གཞན་ལ་མི་འགྲོ་བ་ཞེས་པའི་བར་རོ། །འདི་ལྟ་བུའི་ཤེས་རབ་ཟླ་མ་⁴ ལ་
 དབྱལ་བའི་སྒྲོབ་མ་དེ་རྣམས་ནི། འདི་རྣམས་ཁོ་ན་ཞེས་པ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་
 ཡོན་ཏན་དང་ལྡན་པ་རྣམས་སོ། །དེ་ནི་དེ་ནི་བཞི་པའོ། །ལྷ་ཞེས་པ་ཆུ་དང་། ཅོད་
 པན་དང་། རྩ་ཆེ་དང་། བདག་པོ་དང་། མིང་རྣམས་སོ། །སྤྲུགས་དང་། རྩ་ཆེ་
 བརྟལ་ཞུགས་དང་། སྤྱོད་པའི་བརྟལ་ཞུགས་དང་། ལུང་བརྟན་པ་དང་། སྤྱིར་མི་
 རྩོག་པ་དང་། གསང་བ་རྣམས་རིག་མའི་བརྟལ་ཞུགས་དང་བཅས་པ་བདུན་ནོ། །
 གཉིས་ནི་ཤེས་རབ་ལེ་ཤེས་དང་བཞི་པའོ། །གཅིག་ཏུ་བསྐྱུས་པ་ཞེས་པ་འདི་རྣམས་

1 དངས་པ་ བཤ། ལྟ།

2 ལས་ བཤ། ལྟ།

3 རྟེན་ བཤ། ལྟ།

4 མ་ ལྟ། གོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

གཅིག་དུ་འདུས་ན་དབང་བསྐྱར་བཅུ་བཞི་ན་མས་སུ་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་ཁུ་ལ་སོགས་
 པ་ཕྱིར་མི་སྟོག་པའི་མཐར་ཐུག་པ་ནི་སྟོབ་དཔོན་གྱི་དབང་དུ་བརྟེན་པར་བྱའོ། །དེ་ཁོ་
 ན་ཉིད་རིག་པའི་¹བརྟུལ་ཁྱུགས་དང་བཅས་པ་ནི་ཕྱིའོ། །གསང་བ་ནི་གསང་བའི་
 དབང་བསྐྱར་རོ། །གསང་བའི་²དེ་ཉིད་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་དབང་བསྐྱར་རོ། །དེ་ཁོ་ན་
 ཉིད་ནི་དབང་བསྐྱར་བཞི་པའོ། །དེ་ལྟར་ཡང་རིག་མའི་བརྟུལ་ཁྱུགས་སྟོབ་དཔོན་གྱི་
 དབང་ངམ། ཤེས་རབ་ཀྱི་དབང་བསྐྱར་དུ་དེ་དང་དེའི་ཡན་ལག་ཉིད་ཀྱིས་ནང་དུ་
 བསྐྱས་ནས་གསུངས་པ། སྟོབ་དཔོན་གསང་བ་ཤེས་རབ་དང་། བཞི་པ་དེ་ཡང་དེ་
 བཞིན་ནོ། །ཞེས་སོ། །དབུལ་བྱ་ཞེས་པ་ནི་བླ་མ་ལ་སྟོབ་མས་གསེར་ལ་སོགས་པའོ། །
 བླ་མར་ཞེས་པ་བླ་མའོ། །མི་གསུང་པ་³ནི་ཉིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྟོབས་པའོ། །འདི་ཐམས་
 ཅད་མཆོན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། གསལ་བར་རྟོགས་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྟུང་པ་པོས་
 གསུངས་པ་འདི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །འདིར་གདམས་ངག་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ།
 འདིར་སྟོབ་དཔོན་ལྟ་མོ་ནི་ཤུ་རྩ་བཞིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བའི་དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་བདག་
 ཉིད་དུ་དང་། སྟོབ་མ་ཡང་དེ་ལྟར་དཔལ་དེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་དུ་བསྐྱོམས་ནས་
 འཕྱུད་པའི་ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་སྟོར་ཆོགས་སྟེ་མའི་གཟུགས་ཅན་ཆོག་ཇི་ལྟར་སྐྱུངས་པའི་
 པ་ལྟའི་སའི་དབུས་སུ་རང་གི་སྟིང་གའི་ས་པོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱི་⁴ཆོགས་ཀྱིས་སྐྱུན་
 ངངས་པའི་ནི་ཤུ་རྩ་ལྟའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་བཙུམ་ལྟན་འདས་ཨ་བ་རྩུ་རྟའི་⁵སྟེང་གི་སྟོ་
 ནས་བཅུག་སྟེ་ཞུ་བར་གྱུར་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་དུལ་རྟེན་ལམ་ནས་དབབ་པོ། །
 དེས་ཡུད་ཀྱིས་⁶ཁང་པ་བཅེགས་པ་དང་བཅས་པའི་ལྟ་ནི་ཤུ་རྩ་ལྟའི་བདག་ཉིད་
 ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་རིམ་པ་གསུམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྐྱབས་ནས་སྟོབ་མས་མཐུལ་
 ལྟ་བུས་པས།

1 རིག་མའི་ སྟེ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

2 བཞི་ བེ། ལྟ།

3 གསུངས་པ་ བེ། ལྟ།

4 ཀྱིས་ བེ། ལྟ།

5 ཉིང་ བེ། ལྟ།

6 ཀྱི་ བེ། ལྟ།

ཐར་པ་ཆེན་པོའི་གྲོང་མཆོག་ཏུ།

མགོན་པོ་བདག་ནི་གཞུག་ཏུ་གསོལ།

ཞེས་ལན་གསུམ་དུ་གསོལ་བ་བཏབ་པ། རང་གི་ལུས་ལ་སྒོས་བཙུག་ནས་དྲི་རྩེ་
ལམ་ནས་ཕུང་བ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཤར་གྱི་སྒོར་འདུག་པ་ལ།

རང་བཞིན་དག་པ་སངས་རྒྱལ་བདག།

ལུས་རང་བཞིན་གྱི་བྲི་མ་མེད་།

དཔལ་པོ་དཔལ་མོའི་དབང་མོའི་གྲོང་།

དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ནི་བྱ་ཁྱོད་ལྟོས།

ཞེས་བཅོད་ཅིང་དཀྱིལ་འཁོར་བསྐྱེད་ནོ། །དེ་ནས་འཁོར་བའི་འདམ་དུ་
བྱེད་བ་བདག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པས་གསོལ་བ་བཏབ་པ་ལ་གདུམ་མོས་ཞུ་བའི་བྱང་
ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་བདུད་ཅིས་འབྱུང་བཞིན་པ་དང་། སྤྱིང་གའི་ས་པོན་གྱི་འོད་ཟེར་
གྱིས་བཀྲུག་པའི་དེ་བཞིན་གསེགས་པ་དང་རིག་པའི་ལྷ་མོ་རྣམས་སྤྱིང་གི་སྒོ་ནས་
ཞུགས་ཏེ་ཞུ་བར་གྱུར་པའི་དྲི་རྩེ་ལམ་ནས་ཕུང་བ་རྣམས་ཀྱིས་མི་བསྐྱོད་པའི་རང་
བཞིན་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ཆུས།

སངས་རྒྱལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནི་དབང་།

གསང་བ་གསུམ་གྱི་གནས་ལས་བྱུང་།

ཁམས་གསུམ་ཀུན་གྱིས་ཐུག་བྱས་པ། །

དྲི་རྩེ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་པར་བྱ། ཞེས་བཅོད་ཅིང་།

ཨོ་ཕྱི་ཙ་ཀུའྲུ་རྒྱུ་འཕྲི་ཕྱི་ཕྱི་མི། ཞེས་པའི་སྐགས་ཀྱིས་དབང་བསྐྱར་བར་
བྱའོ་ཞེས་ཆུའི་དབང་བསྐྱར་རོ། །དེ་ནས་ཆུ་དེ་རིན་ཆེན་འབྱུང་ཐོན་གྱི་བདག་ཉིད་ཀྱི་

1 པ་ བཤ། སྤ། དཔར་མའི་ནང་ལྟ།

2 ཕྱི་ཙ་ཀུའྲུ་རྒྱུ་ བཤ། སྤ།

3 ཕྱི་ བཤ། སྤ།

ཅོད་པན་དུ་བསྐྱེམ་ཞིང་། ཡ་ཐྱི་ཤིལ་ཏུ་མི་། སམ་ཡོ་གི་ཚུ་ལུ་ཁྱེ་ཡ་ཏུ་ཡ་ཐྱི་ཏི་ཐུན།
ཡུ་གཞུ་ཏུ་སྤྲུ་། ཞེས་བཅོད་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ཅོད་པན་ནི། འོད་དཔག་མེད་ཀྱི་
བདག་ཉིད་ཀྱི་རྩི་རྩེ་ལག་པ་གཡས་པས་སྒྲིང་གར།

ཉེ་རུ་ཀ་དཔལ་སོགས་དཔའ་པོས།

དེ་རིང་ཁྱོད་ནི་དབང་བསྐྱར་རོ།

འདི་དེ་སངས་ཀྱས་ཐམས་ཅད་ཉིད།

རྩི་རྩེ་རབ་དུ་གྱུབ་ཆེད་བྱུང་།

ཞེས་བཅོད་ཅིང་འཛིན་དུ་གཞུག་གོ་ཞེས་པ་རྩི་རྩེ་ལོ། འོ་ན་ཡོད་གྱུབ་པའི་
རང་བཞིན་གྱི་དྲིལ་བུ་ལག་པ་གཡོན་པས་སྒྲིང་གར་འཛིན་དུ་གཞུག་ཅིང་།

འདི་དེ་སངས་ཀྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་།

དབྱངས་ཀྱི་རྩིས་འགྲོ་དྲིལ་བུར་བཤད།

ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ནི་ཉག་དུ་བཟུང་།

བྱང་ཆུབ་མཆོག་དུ་ཆུལ་བ་བཞེད།

ཅེས་བཅོད་ཅིང་འཁྱུད་པའི་ཆུལ་བྱེད་དུ་གཞུག་གོ་ཞེས་པ་བདག་པོའོ། འདི་
ནས་སྒོ་བའི་མགོ་བོར་རྩི་རྩེ་དང་དྲིལ་བུ་མཉམ་པར་འཛིན་དུ་གཞུག་ཅིང་། ཡོ་ཐྱི་
ཅ་ཀྱ་ཡ་ཐྱི་པ་ཏི་ཐུ་ཉེ་རུ་ཀ་ཐྱིར་སྤྲུ་ཡ་ཐྱི་ཤིལ་ཏུ་མི་ཆེ་གོ་མི་རྩི་རྩེ་ཁྱོད་དོ་ཞེས་བཅོད་
དོ་ཞེས་པ་མིང་རོ། འོ་ཐུན་ཀ་པུ་ལི་ཞུ་ཡུ་ཉེ་ཉེ་ཏུ་པུ་ཅེས་པ་བདག་པོའི་སྒྲིང་པོ་
འོད་ན་དུ་གཞུག་གོ་ཞེས་པའི་སྐགས་སོ།

1 རྩི་པུ་ བཤ། རྩ།

2 འཁྱུབ་ བཤ། རྩ།

3 ཀྱི་ བཤ། རྩ།

4 ཏུ་ བཤ། རྩ།

5 ན་ བཤ། རྩ། དཔར་མར་ཞུག། ཤིལ་ ཅོ།

6 ཡུ་ བཤ། རྩ།

དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ།

འདི་དེ་སངས་རྒྱལ་ཐམས་ཅད་ཉིད།

དེ་རུ་ཀ་དཔལ་གོ་འཕང་གནས།

ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ནི་རྟག་རྟུ་གཟུང་¹།

དེ་རུ་ཀ་དཔལ་བརྟུལ་ཞུགས་བརྟན་²།

ཞེས་བཅོད་ཅིང་དེ་རྗེ་སྤྱིན་ནོ། །དེས་ཀྱང་ལོ་སྐྱེ་ཏ་ཐུ་ག་ཏ་སྤྱི་བཟླ་ས་མ་
ཡ་ཏིལ་ཨེམ་སྒྲི་³རྒྱ་ར་ཡུ་མི། ལོ་ཏ་ཏ་ཏ་ཏ་རྒྱེ་ཞེས་བཅོད་ཅིང་གཟུང་བར་བྱའོ་ཞེས་
པ་དེ་རྗེའི་བརྟུལ་བཞུགས་སོ།

དེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཕྱག་རྒྱ་འདི།

སྤྱི་དང་ནང་དུ་ཡང་དག་གནས།

དེ་ནས་⁴ཁ་ལྷོ་ཅང་ཏེལ་སྤྱོད།

སྤྱིན་པ་དཔལ་འཕྲོ་གཟུང་བར་གྱིས།

ཞེས་བཅོད་ཅིང་ཁ་ལྷོ་ག་དང་། །ཅང་ཏེལ་དང་ཐོད་པ་ནམས་སྤྱིན་པར་བྱའོ་
ཞེས་པ་སྤྱོད་པའི་བརྟུལ་ཞུགས་སོ། །ལག་པ་གཡོན་པས་ཆོས་གོས་ཀྱི་⁵ནྟ་བ་བཟུང་
ནས། ལག་པ་གཡས་པ་མེ་འཛིགས་པ་སྤྱིན་པས།

རང་ཉིད་སངས་རྒྱལ་ཀྱན་རང་བཞིན།

འཁོར་ལོ་གསུམ་གྱི་དབང་ཕྱག་ངས།

དེ་རུ་ཀ་དཔལ་ཞེས་བྱ་ཡི།

དེ་བཞིན་གསེགས་པར་ཁྱོད་ལུང་བསྟན།

1 བཟུང་ བཤ། ལྟ།

2 བརྟན་ བཤ། ལྟ།

3 རྒྱ་ བཤ། ལྟ།

4 དེས་ན་ བཤ། ལྟ།

5 སྟ་ བཤ། ལྟ།

6 ལྟ་ བཤ། ལྟ།

དཔལ་དེ་རུ་ཀ་ཞེས་པའི་མིང་ཅན་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ས་
མ་ཡ་སྟོ་རྩུར་རྩུ་ཅ་སྟེ་ཞེས་བརྗོད་དེ་ལུང་བསྟན་པའོ།

དེ་ནས།

གང་གིས་བདག་ནི་ད་ལྟར་ཉིད།
རྒྱ་མེད་འགྲོ་བའི་དོན་བྱེད་པ།
ཐྱིང་མི་སྟོག་པའི་དབང་བསྐྱར་ཆེ།
དཔལ་པོ་ཆེན་པོ་བདག་ལ་སྟོལ།

ཞེས་གསོལ་བ་བཏབ་པའི་རྗེས་ཐོགས་སུ་སྟོང་གའི་ས་པོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་
སྟུན་དངས་པའི་མཐའ་ཡས་པའི་ཚྭ་གས་ན་བཞུགས་པའི་དཔལ་པོ་དང་རྩ་མོ་ནམས་
སྟར་བཞིན་བཅུག་སྟེ་དེ་རྗེས་ཐུང་ནས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྒྱས་གང་བའི་བུམ་པའི་ཕྱག་རྒྱ་
ཅན་ནམས་ཀྱིས་བཀྲ་ཤིས་དང་། རྒྱ་དང་། མཆོད་པ་དང་། བཀྲར་སྟེ་རྒྱ་ཆེན་པོས་
དབང་བསྐྱར་ཞིང་།

དབང་བསྐྱར་དེ་རྗེས་ཆེན་པོ་ནི།
ཁམས་གསུམ་པོ་ཡིས་ཕྱག་བྲས་པ།
སངས་རྒྱས་ཀྱན་གྱི་གསང་གསུམ་གྱི།
གནས་ལས་བྱུང་བ་ཐུན་པར་བྱའོ།

ཨོ་སྐྱ་ཏ་བྲ་ག་ཏ་ཨ་ཞི་ཏི་ཀ་ས་མ་ཡ་བྱི་ཡེ་ཏི་ཞེས་བརྗོད་དོ། །དེ་ནས་
མི་བསྟོད་པས་⁴དབྱ་བརྒྱན་པར་⁵བསམས་ལ། དཔལ་པོ་དང་རྩ་མོ་གཞན་དེ་ཉིད་དུ་

1 རྩུར་ཅ་སྟེ་ བཤ། རྩུར་ཅ་སྟེ་ རྩ།

2 རྒྱ་ ལེགས་རྒྱར་ནང་མ་གསལ།

3 ཐྱི་ཡེ་ བཤ། རྩ།

4 པ་ བཤ། རྩ།

5 དུ་ བཤ། རྩ།

ཡེ་ཤེས་སེམས་དཔའི་འོ་བོར་བརྟུག་ལ། ཨོ་སྤྱ་པ་ཉིལ་བརྟུ་སྤྱ་དུ། ཞེས་པ་ལ་སོགས་
པའི་སྤྲུགས་བརྗོད་དོ། །དེའི་རྗེས་སྤྱ་བཀའ་བསྒྲོ་པར་བྱ་སྟེ།

དེ་ཉིད་རིག་པའི་ནལ་འབྱུར་པས།

མི་བྱ་བྱང་བཅད་མེད་དེའི་ཕྱིར།

དཔའ་པོས་དེ་ཉིད་ཤེས་ནས་ན།

ཁྱོད་ཀྱི་འདོད་པ་ལྷ་སྤྱོད་ཅིག །

སེམས་ཅན་གཟུགས་བརྟན་རང་བཞིན་ཏེ།

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་པར་འབྱུང་ཆོས་ཅན།

དེ་ནམས་ཁམས་གསུམ་པས་ཤེས་ནས།

ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་དོན་ཅུས་ཀྱིས། ཞེས་པ་ཕྱིར་མི་ལྟོག་པའོ།

དེའི་རྗེས་སྤྱ།

འཁོར་བའི་འདམ་དུ་བྱིང་བ་བདག །

ཅས་པ་ལ་སོགས་པས་སྒྲ་མ་ལ་དང་།

བདག་ནི་འཁོར་བའི་འདམ་དུ་བྱིང་།

ནམ་རྟོག་མིང་དང་བདག་ལྷན་པས།

བག་ཆགས་ཡང་དག་བཅད་པ་ཡིས།

མངོས་མ་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྐྱབ་¹པར་མངོད།

གཤགས་པ་ཆེན་མོ་བྱགས་རྗེར་²ལྷན།

དེ་ནི་ཉི་ཤེས་ཀྱི་བར་ཁྱིམ་མངོད།

ཅས་པས་ཤེས་རབ་མ་ལ་གསོལ་བ་བཏབ་པར་བྱས་པ་ལ། རང་གི་སྤྱིང་གའི་
ས་པོན་གྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་སྤྱན་དྲངས་པའི་སྤྱོགས་བཅུར་བཞུགས་པའི་དཔའ་པོ་དང་ལྷ་

1 བསྐྱབས་ བཤེས་ ལྷ།

2 རྗེར་ བཤེས་ ལྷ།

3 ཉིད་ བཤེས་ ལྷ།

མོ་ནམས་སྤར་བཞིན་བརྒྱུ་སྟེ་ཁྱེ་བར་གྱུར་ནས་ཕྱང་བའི་བྱང་སེམས་སྟིང་པོའི་
 སྤགས་བཞོད་ཅིང་དགྲིལ་འཁོར་དུ་གནས་པའི་སྒྲོས་སྤྱི་རོལ་དུ་གནས་པའི་སྒྲོབ་མ་
 མཐེ་པོང་དང་མིང་མེད་བདག་གིས་བཅིང་¹ ལ་དྲོ་རྩེ་པར་ལས་ཕྱང་སྟེ་དངོས་སུ་འབྱུང་
 དུ་གཞུག་² ལོ། །སྒྲོབ་མས་ནི་ཨ་ཉོ་སུ་ཁ་ཞེས་སྒྲུ་ཞིང་བརྟུང་རྡོ། །ཤེས་རབ་མས་
 གྱང་ལངས་ལ། རང་གི་ཚུ་སྤྱོས་ཀྱི་ནང་གི་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་ལྷག་མ་མེ་ཉོག་གི་
 བརྒྱུད་ཀྱི་ཐིག་ལེ་དེའི་ཁོའི་ནང་དུ་གོས་མེད་པ་ཁོ་ནས་འཇུག་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ཤེས་
 རབ་དང་ཐབས་དག་གིས་གསང་བས་དབང་བསྐྱར་བའོ་ཞེས་པ་གསང་བའོ། དེ་ནས་
 སྤར་བཞིན་དུ་རྒྱ་མ་དང་ཤེས་རབ་མ་ལ་གསོལ་བ་བཏབ་པ་ལ། ཤེས་རབ་མ་དེ་འཇམ་
 གཞན་ཡང་རྟུང་བས་བཀའ་བསྒྲོ་བ།

དཔའ་པོ་བྱང་ཆུབ་སེམས་བཟའ་བར།

ཁྱོད་ནི་སྒྲོ་བར་གྱུར་ཏམ་ཅི།

རིགས་ལྔ་ལས་བྱང་རིག་མ་ནི།

གུས་པས་ཡང་དག་མཆོད་བྱེད་དམ།

བཤང་གཅི་སྟོབས་དང་བྲག་ལ་སོགས།

གཞན་ཡང་དམ་ཆོག་བཟང་པོ་ནི།

དེ་ཡིང་རབ་རྩ་བ་བྱེད་དམ།

བྱུ་ཁྱོད་རྩེ་ལྷར་འདོད་པ་སྒྲོས། །ཞེས་པའོ།

དེས་གྱང་།

རྩེ་སྤྲད་བཞོད་པའི་དམ་ཆོག་སོགས།

ལྷ་མོ་བདག་ནི་ཅིས་མི་སྒྲོ།

བྱད་མེད་པར་མཆོད་པ་དང་།

ཏག་རྩ་གུས་པ་ཅིས་མི་བགྱི།

1 བཅིར་ བོ། ལྷ།

2 བཞུག་ བོ། ལྷ།

ཞེས་ཁས་སྒྲུང་ངོ་། །དེ་ནས་དེས་པསྒྲུ་གསལ་བར་བྱས་ཏེ། ཐར་པ་བསྟན་
 ཅིག་རྟེ་ཞེས་བཅོམ་དོ། །དེས་ཀྱང་སྒྲ་མའི་མན་ངག་ལས་དགའ་བ་ལ་སོགས་པའི་
 དབྱེ་བ¹ཁོང་དུ་རྒྱུད་པས་རོལ་པར་བྱའོ། །པསྒྲའི་ནམ་མཁའ་དང་ནོར་བུའི་ལྗེ་བ་
 བདག²་བཙུང་བའི་གནས་སུ།

རྩ་རྒྱུལ་ཀྱང་ལས་སེམས་ནི།
 མོར་བུའི་ནང་དུ་གནས་བཞུགས་ཞིང་།
 དེ་ལས་སྒྲེས་པའི་ཡེ་ཤེས་གང་།
 དེ་གཟུགས་ཞེས་པ་བཅོམ་མི་རུས།
 འདོད་ཆགས་མ་ཡིན་ཆགས་བྲལ་མིན།
 བར་མར་དམིགས་པ་མ་ཡིན་ཏེ།
 གསུམ་པོ་སྒྲངས་པ་ཁོ་ན་ལས།
 ལྟན་སྒྲེས་བྱང་རྒྱུ་བཅོམ་པར་བྱ⁴།
 གང་དུ་དབང་པོ་ཉམས་པར་འགྱུར།
 བདག་གི་རང་བཞིན་རྣམ་པར་ཉམས།
 ལྟན་ཅིག་སྒྲེས་དགའ་ལྟོགས་དེ་ཡིན།
 སྒྲ་མའི་ཞལ་ལ་གསལ་འདྲི་ནའོ།

ཞེས་ལྟོགས་པས།

རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་བྱང་རྒྱུ་སེམས།
 རི་སྤྲིད་གཏོང་བར་མི་བྱེད་པ།

1 བས་ བེ། ལྟ།

2 དག་ བེ། ལྟ།

3 ལྟ་ བེ། ལྟ།

4 བྱའོ་ བེ། ལྟ།

དེ་མྱིད་པར་མ་ཆད་པར་ནི།
དགའ་སྐྱེས་བདེ་བ་ཅི་ཡང་འཛོམ།

དངོས་བྱུང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནི་གཏེར།
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་ལྷུང་བ་ན།
ཡུང་པོ་ནམ་ཤེས་བརྒྱལ་བ་ལ།
དངོས་བྱུང་མ་སྤྲད་ག་ལ་ཡོད།

ཅེས་པས་ཇི་ལྟར་རྣམས་པར་བཟུང་སྟེ། དལ་བྱས་བཏང་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་
ལཱ་¹་ལྟ་བས་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་དམ་ཚིག་གི་ངོ་བོ་ཐུ་སྐྱེས་ནས་ལྷུང་བར་བྱའོ།
དེའི་རྗེས་སུ་དེས་མགོ་བོར་རྒྱང་པ་གཡོན་པ་བཞག་ནས་བཀའ་བསྟོན་སྟེ།

བྱ་ཁྱོད་དེ་རིང་ནས་བརྩམས་ཏེ།
རི་མྱིད་བྱང་ཆུབ་སྟོང་པོའི་བར།
མི་འདྲར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི།
དོན་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཁྱིས་བྱོས།

ཞེས་པས་ཏེ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་ནས་གླ་མས།

རིག་མ་འདི་ནི་སྤངས་ནས་ཐབས།
གཞན་གྱིས་²་སངས་ཀྱིས་ཉིད་མིན་ཕྱིར།
བརྟུལ་ཞུགས་གོང་མའི་གོང་མ་སྟེ།
མཉེས་³་ག་ཤིན་རིག་མའི་བརྟུལ་ཞུགས་སྟོད།

ཅེས་བཅོད་དེ་རིག་མའི་བརྟུལ་ཞུགས་སོ། །དེའི་རྗེས་སུ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་
སྤངས་པ་ཁོ་ནའི་སྟོབ་མ་ལ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཁོ་ན་གོ་མས་པ་ལས་དོ་རྗེ་འཛིན་པའི་ངོ་

1 ལ་ བཤེས་སྟེ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

2 གྱི་ བཤེས་སྟེ།

3 མཉེན་ བཤེས་སྟེ།

པོ་བཞི་པའི་ཞེས་ཆོག་ཁོ་ནས་དབང་བསྐྱར་བཞི་བ་སྐྱ་མའི་མཉམ་ངག་ལས་ཉོགས་པར་
བྱ་བའི་ཁྱད་པར་སྦྱིན་ནོ།

དཔལ་སྐྱ་པུ་ཏར་གསུངས་པ།

ཇི་སྐད་བརྗོད་པའི་ཆོ་གས་དབང་བྱིན་ནས།

སྐྱ་བ་མའི་མོས་པ་ཡིད་ཀྱིས་བཏྲ་བྱ་སྟེ།

ཟབ་ཅིང་བྱ་ཆེའི་ཚུལ་ལ་མོས་པ་ལ།

དབང་བསྐྱར་རིན་ཆེན་ཆོག་ཉིད་ཀྱིས་སྦྱིན་བྱ།

ཞེས་སོ། །དབང་བཞི་པའི་ཞེས་པའོ། །གང་སྐྱ་བ་མ་དབང་པོ་འབྲིང་པོ་དེ་
ལ། བྱ་རོལ་དུ་བསྐྱེམས་པའི་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ལ་ཆོས་འབྱུང་གི་
པསྐྱའི་ནང་དུ་དཔག་ཆད་བྱེ་བའི་²ཆད་ཅན་ཡིད་ཀྱི་རང་བཞིན་རིམ་པ་³གསུམ་
པའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྐྱེམས་ནས་ཇི་ལྟར་རིགས་པར་བརྗོད་པའི་ཆོ་གས་དབང་
བསྐྱར་བར་བྱའོ། །གང་བསྐྱེད་ནམས་བསགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གཉིས་པོ་འདི་
བསྐྱེད་པར་རྒྱས་པའི་སྐྱ་མས་སྐྱལ་པ་གསལ་བར་མཐོང་བ་དེ་ནི་དབང་པོ་མཆོག་གི་
མཆོག་ཡིན་ཏེ། །དེ་ལ་ཡང་འདི་ལྟར་དབང་བསྐྱར་བར་བྱའོ། །དབང་པོ་རྒྱལ་⁴པོ་ནི་
རྒྱལ་ཆོན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རམ་རས་བྲིས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དུའོ། །དེ་ལྟར་གདམས་པ་
བྱེ་ནས་བྱ་སྟེ། །གདམས་པ་ཉམས་པས་འདེགས་པའི་བྱར་རོ། །བསྐྱེད་པའི་རིམ་པའི་
ཕྱོགས་ལ་དཀྱིལ་འཁོར་གསུངས་ནས་ཉོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་བརྗོད་པའི་ཆེད་དུ་
གསུངས་པ། ཅི་རུ་ཞེས་པ་⁶ལ་སོགས་པ་སྟེ། ཅི་རུ་ཞེས་པ་དོན་དམ་པར་རྟེན་འགོག་

1 གས་ བཤ། ལྟ།

2 བྱེད་པའི་ བཤ། ལྟ།

3 པའི་ བཤ།

4 བརྒྱལ་ བཤ། ལྟ།

5 གདམ་ བཤ། ལྟ།

6 བྱ་བ བཤ། ལྟ།

པའོ། ཅི་ཞིག་ཅེས་པ་ལྟའི་ངོ་བོའི་བརྟེན་¹་པ་འགོག་པའོ། འདྲིལ་འཁོར་བ་ཞེངས་
 པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་སྐྱབ་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བྱང་ཚུབ་ཆེན་པོའི་ལམ་
 ཡིན་མོད་ཀྱི། དེ་ལྟར་ཡང་རིང་བ་དང་མངོན་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡིན་ཏན་
 རྣམས་ཀྱིས་²་སྟོང་པའི་ཞེས་གསུངས་པ། ལྟོང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བརྟེན་ལ་
 ཞེས་པ་རྣམས་པར་རྟོག་³་པས་སྒྲོ་བ་ཏགས་པ་བརྟེན་པའི་ངོ་བོ་ལའོ། ཅེས་ཅོལ་ཞེས་པ་
 གཡེང་བ་རྣམས་པ་སྒྲ་ཆོགས་སུ་སྦྱར་དུ་རྫོགས་པའི་བྱང་ཚུབ་འགྲུབ་པའི་ལམ་ལས་
 སྟོལ་བའི་འགྲོ་བ་ལྟར་ངོ་བོ་ཞེས་བྱགས་བརྩེ་བར་མངའ་དོ། འོ་ན་སྒྲོ་མ་བཏགས་པ་ཅི་
 ཞེན་གསུངས་པ། སྟོང་པ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། མཐའ་དག་ཅེས་པ་ཕྱང་པོ་དང་
 ཁམས་ལ་སོགས་པའོ། དེ་འདྲའི་དྲིལ་འཁོར་ནི་རྫོགས་པའོ། ཇི་ལྟར་ཞེན་
 གསུངས་པ། བརྟེན་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བདེ་བ་ཆེན་པོ་⁴་ལ་སོགས་པའི་བརྟེན་
 དབྱས་སུ་གནས་པའོ། རྣལ་འབྱོར་མ་ཆོགས་ནི་རྩའི་རང་བཞིན་ནོ། ཉེ་རུ་ཀ་ནི་
 བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་སོ། ཉེ་ཁོ་ན་ཉིད་⁵་སྟེ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་བདག་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་
 དང་རོ་གཅིག་པ་མི་ལམ་དང་གཟུགས་བརྟན་དང་། ལྷ་མ་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་
 ནི་ཕྱང་པོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་སྟོའི་ཞེས་གསུངས་པ། མཐའ་དག་སྟེད་བྱེད་ཅེས་
 པའོ། ཉེའི་ཕྱིར་རྫོགས་པའི་དྲིལ་འཁོར་གླང་བར་བྱ་བ་འདི་བརྟོམས་ལ་⁶་མཐོང་
 བར་གྱིས་ཤིག་པའོ།

དེ་དྲིལ་བྱ་ཞབས་ཀྱིས་གསུངས་པ།

སེམས་གནས་ལས་ཀྱི་ཐིག་དང་ནི།

རྟུལ་ཆོན་དགེ་བའི་རིམ་ལས་བྱང་།

1 རྟེན་ བཤ། ལྷ།

2 ཀྱི་ བཤ། ལྷ།

3 རྟོགས་ བཤ། གིང་དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4 པོ་ བཤ། གིང་དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

5 ཉིད་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

6 པ་ བཤ། ལྷ།

7 དགེས་པའི་ བཤ། ལྷ།

འགྲོ་འདི་དཀྱིལ་འཁོར་ཁོ་ན་སྟེ།

རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་གཉིས་མེད་པའོ།

བཙམ་¹མ་གཉིས་ཀྱིས་²ངོ་བོ་གང་།

དེ་ནི་གདུལ་བྱའི་དབང་ལས་འདོད།

དེ་ནི་ཐར་འདོད་བསྐྱབ་བྱ་མིན།

ཐར་པ་ཡང་དག་དོན་མཐོང་ལས། །ཞེས་སོ།

གལ་ཏེ་ནམ་པར་དེ་ལྟར་རྫོགས་པ་ཡིན་ན་ཨྀ། འོ་ན་དེ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོ་
ཡོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ།⁴ སྒྲིམ་པས་ཀྱང་ཅི་བྱ་ཞེ་ན་གསུངས་པ། གནོད་པས་ཏེ་གནོད་པ་ནི་
ཕྱིན་ཅི་ལོག་པ་སྟེ། མི་ལམ་གྱི་རང་བཞིན་གྱི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཆོངས་པས་སོ།
དེའི་ཕྱིར་སྟོས་ཏེ་གྲང་བྱ་དང་དོར་བྱ་ལ་ཆོངས་པ་ལ་⁵ངེས་པར་དཔྱད་ཅིག །སྒྲིན་
པར་ནི་ཕྱར་བར་ཏེ་ཇི་སྟོན་དུ་དལ་འབྱོར་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་ཡིད་བཟན་དུ་མེད་པ་
འདི་ཡོད་ཀྱི་བར་དུ་འོ་ཞེས་པ་ལ་སྦྱོར་བའོ།

འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེའུ་དུག་པའོ། །

*

1 བཙམ་ བཤ། ལྟ།

2 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

3 རྟོ་ བཤ།

4 ཅིས་འགྲོ་བས་མེད་ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

5 ལས་ བཤ། ལྟ།

6 སྦྱོད་པའོ་ བཤ། ལྟ།

དཀྱིལ་འཁོར་དང་ཉེ་རུ་ཀ་བསྐྱེད་པ་དང་སྒྲིམ་པའི་ལེའུ།

དེ་ནི་འབྲས་བུའི་རྒྱུད་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་སྒྲིམ་པ་བརྟེན་པའི་ཆེད་དུ་གདུལ་བུའི་སྐྱེ་བོའི་འོར་ལེ་ཞིག་ཕྱིའི་དཀྱིལ་འཁོར་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །རི་བོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་སྐྱ་ཇི་བཞིན་པའོ། །རྒྱུམ་པོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ལ་རིམ་པ་འདི་ཡིན་ཏེ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ས¹གཞིའི་ཆོག་ཇི་ལྟ་བུར་ཡོངས་སུ་སྦྱངས་པ་འཇམ། ལག་པས་རེག་²ནས་ས་སྒྲོང་བའི་སྒྲགས་བརྒྱུད་ལྷག་པའི་བརྒྱ་བརྒྱས་པས་སྦྱངས་པར་ཁོ་བོས་བྱས་པའི་དུས་འཁོར་ལ་འཇུག་པར་བརྟེན་པའི་རིགས་པས་ཐུར་³མའི་གྲིབ་མ་དང་ཉ་དག་གིས་སྒྲིགས་དང་སྒྲིགས་བྲལ་ངས་པར་བྱས་ནས་ལྟའི་སྐྱ་ཅན་གཏོར་མ་བྱིན་ལ⁴སྒྲོབ་དཔོན་གྱིས། དང་པོར་གར་དུ་ཁ་བཞུས་པར་གྱུར་ནས། སོ་སོར་ཡེ་ཤེས་ལྟའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ལྟར་བསྒྲིམས་པའི་རྒྱུད་པ་ནི་བྱ་ཅ་ལྟ་བུ་སྒྲོབ་དཔོན་གྱིས་⁵ནས་ཅམ་དུ་སྒྲིམ་པ་⁶གསར་པ་རིང་བར་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཉིས་འགྱུར་མཐོག་དང་ལྷག་པའི་ཐིག་སྐྱུད། གཡོན་པའི་དོ་རྩེ་ཁྲ་ཚུར་གྱིས་ལྟེ་བར་བཟུང་བས། སྒྲོབ་མ་ལྟའི་སྐྱ་ཅན་དང་། ལྷན་ཅིག་དུ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ཅེས་བྲ་བ་ཆངས་པའི་ཐིག་གཉིས་ནམ་མཁའ་ལ་བཏབ་ནས། འོག་དུ་ས་གཞི་ལ་ཆངས་པའི་ཐིག་དེ་ལྟར་བྲང་པོར་གདབ་པོ། །དེ་ནས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱུ་བཞི་པར་འགྲུབ་པའི་ཆེད་དུ་ཉའི་ཁ་དང་། མཇུག་མ་དག་གི་སྟེང་དུ་ཆངས་ཐིག་གཉིས་པ་བྲང་དུ་ཁ་སྒྲིགས་པས་གདབ་པོ། །དེ་ནས་ཟུར་ཐིག་གཉིས་པ་⁷ཆོག་ཇི་ལྟ་བུར་གདབ་པོ།

1 གྱིས་ རྟེན། ཤེ། ལྟ། གོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

2 རིག་ ཤེ། ལྟ།

3 ཐུར་ རྟེན། གོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

4 པའི་ ཤེ། ལྟ།

5 གྱི་ ཤེ། ལྟ།

6 པ་ ཤེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

7 པ་ ཤེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

དེ་ནས་སྤྱུག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆད་ཅན་¹ གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ཙ་པའི་ཐིག་བཞིའོ།
 དེ་ནས་ཆངས་ཐིག་གཉིས་ཀྱི་ཕྱི་རོལ་དུ་གར་ལ་སོགས་པའི་ཕྱོགས་སུ་འགྲོ་ཞིང་།
 རྩལ་ཚོན་གྱི་སའི་ཆད་ཀྱིས་ཐིག་གཅིག་དོར་ནས་ཐིག་བཞིའོ། །སྤར་ཡང་ཐིག་གཅིག་གོ།
 དེ་ནས་རྩལ་སུ་ཐིག་གཉིས་དོར་ནས་སྒྲུའི་སྒྲུམ་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་ལྟར་
 ཆངས་ཐིག་ནས་བཟུང་ནས་ཙ་པའི་ཐིག་དང་བཅས་པ་ཐིག་བརྒྱ་རྩ་ལྟ་གཅིག་དུ་
 ལྟོ། རོགས་གཞན་དུ་ཡང་རིམ་པ་འདི་ལྟར་རོ། དེ་ནས་ཙ་པའི་ཐིག་ལས་ཕྱི་རོལ་དུ་
 འཁོར་ལོའི་བརྒྱད་ཆའི་སྒྲུའི་བཞི་ཆའི་ཆད་དུ་རྩལ་ཚོན་གྱི་སའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་
 ནས་སྒྲུའི་ཕྱེད་ཀྱི་ཆད་དུ་སྒྲུའི་སྒྲུགས་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་ནས་ཚོན་གྱི་སའི་ཆད་
 ཀྱིས་རིན་ཆེན་སྒྲུམ་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་ནས་སྒྲུམ་པའི་ཆད་དུ་དྲ་བ་དང་དྲ་བ་²
 ཕྱེད་པའི་སྒྲུམ་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་ནས་ཚོན་གྱི་སའི་ཆད་ཀྱིས་བ་ཀྱུ་ལྟའི་སྒྲུམ་
 པའི་འཇམ། ཁ་ཅིག་གི་ལྷགས་ལ་སྤར་ཡང་རིན་ཆེན་སྒྲུམ་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་
 ནས་སྤྱན་པའི་སྒྲུམ་པའི་ཐིག་ཐུང་བ་གཅིག་སྟེ། དེ་ཁོ་ན་ལ་མདའ་ཡབ་རྩམས་སོ།
 དེ་ནས་དབྱེ་པའི་ངལ་བས་འདིགས་པས་ཐིག་ཐུང་གིས་སམ་རིང་པོས་ཀྱང་རུང་སྟེ།
 སྒྲོ་ལས་སུམ་འགྱུར་³ ཏེ་བབས་ཀྱི་ཐིག་བཞིའོ། དེ་ནས་ཐིག་གཉིས་དོར་ནས་ཏ་
 བབས་དང་འབྲེལ་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་ནས་ཐིག་གསུམ་དོར་ནས་བྱེད་པའི་
 བཅས་པ་རྒྱུད་གིས་བསྐྱོད་པའི་བ་དན་དང་། རྩལ་མཚན་དང་། གདུགས་དང་།
 དཔག་བསམ་གྱི་ཁིང་ལ་སོགས་པའི་གནས་ཀྱི་ཐིག་གཅིག་གོ། །སྤར་ཡང་ཐིག་
 གཅིག་དོར་ནས་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་ནས་པརྒྱའི་འདབ་མའི་ཕྱེད་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ།
 དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་པརྒྱའི་ལྟེ་པའི་ནང་དུ་གནས་པའི་སྤྱོད་གས་རྩི་རྩེའི་ལྟེ་བ་ལ་ཁང་པ་
 བཅུགས་པ་གནས་པའོ། །ལྟེ་བ་དེའི་ཕྱི་རོལ་པརྒྱའི་ལྟེ་བ་ལ་ནི་སྤྱོད་གས་རྩི་རྩེའི་ར་⁴
 དང་ཏ་བབས་ལ་སོགས་པ་བྱེདོ། དེ་ནས་རྩི་རྩེའི་ཕྱེད་པའི་ཐིག་གཅིག་གོ། དེ་ནས་

1 ཅན་ བོ། ལྟོ།

2 དྲ་བ་ བོ། ལྟོ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 གྱི་ བོ། ལྟོ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

4 བ་ བོ། ལྟོ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

ཐིག་གཉིས་དོར་ནས་འོད་ཟེར་གྱི་ཕྱང་བའི་ཐིག་གཅིག་¹གོ། །པརྒྱའི་འདབ་མའི་ཕྱང་
 བ་མེད་དོ་ཞེས་ཁ་གཅིག་གོ། །ཀོང་ཀ་ཏ་ནི་དོ་རྗེ་དང་། པརྒྱ་དང་། འཁོར་ལོ་དང་།
 འོད་ཟེར་གྱི་ཕྱང་བའི་ཐིག་བཞི་རྣམས་སོ་ཞེས་སྒྲུའོ། །དེ་ལྟར་ཚོན་གྱི་སའི་ཐིག་ནས་
 བཅུ་མས་ཏེ་ཐིག་བཅུ་དྲུག་རྣམས་ངོས་གཅིག་དུའོ། །དེ་ལྟར་ངོས་གཞན་དུ་ཡང་ངོ་
 ཞེས་པ་ཐིག་ཉི་ལྔ་ཅ་དྲུག་རིམ་པ་གཉིས་པའི་དགྲིལ་འཁོར་དུ་གདབ་པའི་ཚོ་གའོ།
 ཕྱགས་འདི་ཁོ་ནས་རིམ་པ་གསུམ་པ་ལ་སོགས་པའི་དགྲིལ་འཁོར་དུ་ཐིག་གདབ་པར་
 བྱའོ། །དེ་ལྟར་གཅིག་གི་ཚེ་ཐིག་བཏབ་²པས། དགྲུ་དང་། བཅུ་གསུམ་དང་། བཅོ་
 རྩ་དང་། བཅུ་དགྲུ་དང་། སུམ་ཅུ་ཅ་གཉིས་དང་། སུམ་ཅུ་ཅ་བདུན་དང་། ཇི་སྲིད་
 དུ་འབྲུམ་ལ་སོགས་པ་བརྒྱས་པའི་དགྲིལ་འཁོར་གྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། །འདིར་
 ཏེ་བབས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་སུ་ནང་གི་ཐིག་གི་ཁྱད་པར་དང་། ས་སྦྱང་བ་ལ་སོགས་
 པ་དང་། དབྱི་བ་དང་། ཚོན་དབྱེ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་ཁོ་བོ་ཅག་གིས་དགྲིལ་
 འཁོར་གྱི་ཚོ་གར་བཤད་དོ། །དོ་རྗེ་གསུམ་གྱིས་³ཡོངས་སུ་བསྐྱོར། ཞེས་པ་རྩོན་པོ་
 དང་། དམར་པོ་དང་། དཀར་པོའི་དོ་རྗེའི་⁴ཕྱང་བ་གསུམ་རྣམས་ཀྱིས་བསྐྱོར་བའོ།
 ཡུད་ཀྱིས་ཞེས་པ་རྩྱུ་ཡིག་གཅིག་ཁོ་ན་ལས་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་དང་། བཅོམ་ལྷན་
 འདས་ཏེ་ཉི་ལྔ་ཅ་ལྔ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་རུ་སྦྱང་བ་ཞེས་པ་བཅོམ་ལྷན་འདས་
 བསྐྱེད་པའི་དུས་སུ་རྩྱུ་ཡིག་ལས་སོ། །ཁ་དོག་ལྷའི་རྣམ་བརྒྱན་པ་ནི་རྟེན་གྱི་དགྲིལ་
 འཁོར་རོ། །རྩྱུ་ཡིག་འབདག་ཉིད་ནི་རྩྱུ་ཡིག་ལས་སྦྱེས་པའི་བདག་ཉིད་གང་ལ་ཡོད་པ་
 དེ་ལ་⁶དེ་སྐད་དོ། །ནག་དང་དཀར་མོ་⁷ལྷང་གུ་རྣམས། ཞེས་པ། དབུས་མ་དང་།
 གཉིས་པ་དང་། གསུམ་པར་གནས་པ་རྣམས་གོ་རིམ་བཞིན་ནོ། །སློལ་མ་རྣམས་

1 ཅིག་ བཤ། ལྷ།

2 གཏབ་ བཤ། ལྷ།

3 གྱི་ བཤ། ལྷ།

4 རྗེ་ བཤ། ལྷ།

5 ཡིས་ བཤ། ལྷ།

6 ལ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

7 སོ་ བཤ། ལྷ།

ནི་ནག་མོ་སྟེ་རིམ་པ་དབུས་མར་གནས་པ་ལྟར་རོ། །མི་བསྐྱོད་པ་ཡི་ཅོད་པན་ཅན། །
 ཞེས་པ་དབུས་ན་གནས་པའི་མི་བསྐྱོད་པ་གཙོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གསུངས་པ་སྟེ་གསུངས་པ་
 ཡང་སངས་ཀྱིས་ཐོད་པན་ཅན་གྱིས་བརྒྱན་པ་ཞེས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ཀྱན་
 ཞེས་པ་ཉི་ཤུ་ཅུ་ལྟོ། །དེའི་གཟུགས་ཞེས་པ་རི་ལྟར་བཙོམ་ལྟར་འདས་དབུ་ལ་རྒྱས་
 བཏབ་¹ པ་དེ་ལྟར་དེ་རྣམས་ཀྱང་རྒྱས་བཏབ་པ་སྟེ། འོན་ཀྱང་དེ་རྣམས་ཀྱི་སྦྱོལ་ར་
 གནས་པའི་དེ་བཞིན་གསེགས་པ་གཙོ་བོ་སོ་སོ་ཡིན་ནི་ཞེས་གསུངས་པ་གཙོ་བོ་ཞེས་པ་
 ལ་སོགས་པ་ལོ། །འདོད་པར་བྱ་སྟེ་འདོད་དུ་འཇུག་པ་ལོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ནི་
 བྲུང་བཟངས་² མ་ལ་སོགས་པ་བཞི་རྣམས་སོ། །སྤྲེལ་ཁ་ཅིག་སྟོན་སྟོང་མ་རྣམས་སོ་
 ཞེས་སོ། །སྦྱིད་ལུག་གྱུར་པ་ནི་གཞན་གྱི་ངོར་སྦྱིད་ལུག་པར་གྱུར་པ་སྟེ། སྟོང་པ་ཉིད་
 གཅིག་ཤུའི་མཐར་ཐུག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །མིག་ཅེས་པ་འགྲོ་བ་འདོན་³ པར་དམ་
 བཅས་པ་ལོ། །དན་བྱེད་ནི་དན་པར་བྱེད་པ་ལོ། །བདག་པོ་ཀྱི་ནི་མཐའ་དག་གི་བདག་
 པོ་ལོ། །བྱ་བ་ཞེས་པ་རང་གི་དོན་ཅམ་བྱས་ནས་སོ། །བདག་པོ་སྟོན་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པ་བདག་པོས་སྟོན་རི་ལྟར་དམ་བཅས་པ་དན་པར་གྱིས་ཤིག་པ་ལོ། །སྦྱིད་ལུག་
 ནི་སྦྱིད་ལུག་པ་སྟེ་འཁོར་བའི་སྒྱུག་བསྐྱེད་ཀྱིས་ཉི་པར་གཙོས་⁴ པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །
 མོག་པ་ནི་མོག་པར་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་ལ་སྟེ་དངོས་པོའི་མཐའ་དང་དངོས་པོ་མེད་
 པའི་མཐར་རོ། །ང་རྒྱལ་ཞེས་པ་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ལོ། །དགོས་པ་ཞེས་པ་འཛིན་
 པ་ལོ། །དེ་འཁྱར་དངོས་པོར་འཛིན་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་⁶ གསུངས་པ། མཐོང་⁷ ཞེས་
 པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་ཚོགས་ལ་འདོད་པ་ཡིས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རོ་
 གཅིག་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་འབྱུང་བ་ལས་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སོགས་

1 བརྒྱན་བཏགས་ རྟེན། མོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བཞུགས་ཡོད།

2 བཟང་ བེ། ལྟ།

3 འདོན་ བེ། ལྟ།

4 བཙོས་ ལྟ།

5 དེ་ལྟར་དངོས་པོར་འཛིན་པ་ལོ། བེ། ལྟ། དཔལ་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

6 ཞེན་ བེ། ལྟ།

7 ཐོབ་ བེ། ལྟ།

པར་མཆོག་ཏུ་འཛིན་པ་ཟད་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་རྟོ། །སྤྲོན་བཞིན་ཞལ་དང་
 ཟུག་མཆོན་སོགས། ཞེས་པ་རྒྱ་དྲུང་འཆང་བཞིན་ནོ། །སྤྲོ་མདོག་ནི་འབྲས་བུ་དྲུང་
 འཆང་གི་ནག་པོ་རྒྱ་དྲུང་འཆང་གི་དཀར་པོའི་ཞེས་རྒྱུད་གཞན་དུ་འོ། །འདིར་ནི་སྤྲོན་
 པོ་ཁོ་ནའོ། །ཁ་ཅིག་ཏུ་སྤྲོན་བཞིན་སྤྲོ་མདོག་ཟུག་མཆོན་སོགས་ཞེས་སྒྲིག་སྟེ། དེའི་
 ཆོ་རྒྱ་དྲུང་འཛིན་པ་ཡང་སྤྲོན་པོའི་ཞེས་གསལ་ལོ། བཞེངས་སོ་ཞེས་པ་ནི་སྤྲོ་ཆོག་གས་
 གྲེ་མ་དང་བཅས་པའོ། །འོ་ན་མེ་ལོང་ཡེ་ཤེས་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་རྒྱ་བ་དང་ཉི་
 མ་ལ་སོགས་པར་²ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ནི་རྒྱ་དྲུང་འཛིན་པར་གདམས་པ་དེ་ལྟར་འདི་
 ཡང་རྒྱ་ལྟར་མིན་ཞེ་ན་མ་ཡིན་རྟོ། །ཟུ་བ་ལས་བྱུང་བའི་རྟོ་ལས་སྐྱེས་པའི་དྲུང་དང་
 བཅས་པའི་རྟོ་ཡིག་ལས་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་³འབྲས་བུ་དྲུང་འཛིན་པའི་ཡེ་ཤེས་
 ལཱའི་རང་བཞིན་ནམ་ཞེ་ན། དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ཏེ་གིན་ཏུ་ནམ་པར་དག་པ་⁴ནམས་དེའི་
 རོ་བོར་སྐྱེ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་གང་དུ་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་མེ་ལོང་ལ་བཞིན་གྱི་
 གཟུགས་བརྒན་དུ་གྱུར་པ་སོ་སོར་སྤང་བ་དེ་མེ་ལོང་ཡེ་ཤེས་སོ། །མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་
 ཡེ་ཤེས་ནི་གང་གིས་དེ་ལྟར་གཟུགས་བརྒན་དུ་གྱུར་བའི་འགྲོ་བ་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་
 རྟོགས་པའོ། །སོ་སོར་རྟོག་⁶པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་གང་གིས་⁷དེ་ལྟར་མཉམ་པར་གཞག་⁸པ་
 ཁོ་ནས་སེམས་ཅན་ནམས་⁹ཐམས་ཅད་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ནམས་སོ་སོར་རྟོག་¹⁰
 པའོ། །བྱ་བ་གྲུབ་¹¹པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་གང་གིས་དེ་ལྟར་སོ་སོར་བརྟགས་པའི་འགྲོ་བའི་

1 གཅིག་ པ།

2 པ་ པ། ལ།

3 དེ་ཅི་ པ། ལ།

4 འདི་ པ། ལ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

5 ཏུ་ པ། ལ།

6 རྟོགས་ པ། ལ།

7 གི་ པ། ལ།

8 བཞག་ པ། ལ།

9 རྟམས་ པ། ལ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

10 རྟོགས་ པ། ལ།

11 ཟུ་བ་ པ། ལ།

བྱ་པའི་¹ རྗེས་སུ་སྐྱབ་པའོ། །ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་
གང་བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སྒྲིབ་པ་གཉིས་ལས་གྲོལ་བ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་
བཞིན་སྤྱིང་རྗེ་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་སུ་མེད་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྟོགས་པ་རྫོགས་པའོ། །
དེ་ནས་འབྲས་བུ་རྗེ་རྗེ་འཛིན་པ་ཡང་ཡེ་ཤེས་ལྡེའི་རང་བཞིན་ནོ། །ཡེ་ཤེས་འདི་
རྣམས་ནི་ལས་དང་པོ་པས་ལྷག་པར་མོས་པས་སྦྱོམ་པར་བྱེད་དེ། འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་
ཀྱི་ཡིད་ཤིན་ཏུ་དང་བ་ཟླ་པའི་ཚུལ་ཅན་ཁོ་ན་ནི་མེ་ལོང་དང་ཟླ་བ་དང་ཉི་མ་འདུས་པ་
ན་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་གྱི་ཡིད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་གཟུགས་བརྒྱན་
རྩ་བུ་ཉིད་དུ་ཡང་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། འགྲོ་བའི་དོན་ལ་ངེས་པར་
རྟོག་³ པ་ལྟར་ལེན་པ་དང་། སྐུལ་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་དེའི་དོན་བྱེད་པ་དེ་
ལྟར་གསལ་བར་གྱུར་པའི་ཞེས་པ་བསམ་པ་འདི་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །རྫོགས་པ་ནི་དེའི་
དོན་ངེས་པར་སེམས་པས་⁴ མོས་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་པ་མང་པོས་ཆོག་གོ། །འདི་ནི་
འདིར་གདམས་ངག་རི་རྩ་བར་བསྒྲུབ་པའི་རིམ་པ་སྟེ། འདིར་བསྒྲུབ་པའི་དབང་དུ་
བྱས་པའི་རྟུགས་པ་ལྟ་མོ་བཞིའི་སྐྱུས་བསྐྱལ་བས་སད་པ་སྐྱ་བར་ལངས་ཏེ། རྩ་མཁོ་
ཅས་པ་འཇམ། མོ་ལྷ་རྩ་ཞེས་པ་གནས་དང་བདག་དང་ནལ་འབྱོར་བསྐྱུང་བ་བྱས་ནས།
དུར་ཁྲོད་ལ་སོགས་པ་ཡིད་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པའི་གནས་སུ་སྟན་བདེ་བ་ལ་རྗེ་རྗེ་
སྒྲིབ་ཀྱང་གིས་འདུག་པ་ཤེས་རབ་དང་བཅས་པ་འཇམ། ཤེས་རབ་མེད་པ་གཅེར་བུ་སྐྱ་
གྲོལ་བ་ལས་ཐམས་ཅད་པ་ལ་ཁ་ལྟོར་ཕྱོགས་ཞི་བའི་སོགས་པའི་དབྱེ་བས་ནི་རང་
ཉིད་རི་རྩ་བའི་ཕྱོགས་སུ་གདོང་ཕྱོགས་པས། དམ་ཆོག་གི་རྗེས་བརྟེན་⁷ པ་སྟེན་མ་
ཅན་གྱིས་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་རིམ་པས་བདུད་ཅི་བསྐྱབས་ཏེ། གདོང་མ་བྱིན་ནས་

1 བ་ བཤམ།

2 མི་ བཤམ།

3 རྟོགས་ བཤམ།

4 དཔལ་ བཤམ།

5 སྦྱོམ་ བཤམ།

6 བཞི་པ་ རྟེན་ བཤམ། མོང་དུ་ལེགས་སྐྱུར་རྩུམ་བཞོད་ཡོད།

7 རྟེན་ བཤམ།

རང་གི་སྤྲིང་གར་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པའི་དྲུག་ཡིག་གི་འོད་ཟེར་གྱི་ཚོགས་
 གྱིས་འོག་མེན་ན་བཞུགས་པའི་བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་རུ་ཀ་གཉུག་མའི་སྤྲུག་ཚོགས་སྡེ་
 མས་འབྱུང་པ། སྤང་བཟངས་མ་ལ་སོགས་པ་དྲེ་རྩེ་ལ་མོ་ཉི་ཤུ་ཅུ་བཞིས་ཡོངས་
 སུ་བསྐྱར་བ། བདག་ཉིད་ལ་ཞལ་ཕྱོགས་པ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་སྤྲུག་མདོག་ལ་
 སོགས་པ་ཅན་མདུན་གྱི་ནམ་མཁའ་སྤྲུན་དངས་ལ། དྲུག་ཡིག་ལ་འོད་ཟེར་དེ་ཞུགས་པ་
 པའི་རྩེ་སྤོགས་སུ་དྲུག་ཡིག་ལས་ཅིག་ཅར་འབྱུང་བའི་དྲེ་རྩེ་ལྷ་མོ་ནམས་གྱིས་མཆོད་
 པར་བྱའོ། །དེ་ལ་བཅོམ་ལྷན་འདས་གྱི་གར་ཕྱོགས་དྲེ་རྩེ་བདུན་མ་དང་པ་སྤྲེལ་ཚུལ་
 གྱིས་ཕྱག་གཉིས་གྱིས་བཟུང་བའི་ཐོད་པས་གཅོ་བ་ལ་རྩལ་འབུལ་བའོ། །དབང་ལྷན་
 ཕྱོགས་སུ་དྲེ་རྩེ་ལྷ་མོ་ཕྱག་གཉིས་གྱིས་ཅང་ཉེ་ཕྱུགས་པར་བྱེད་དོ། །མེ་
 མཆོམས་སུ་དྲེ་རྩེ་ལག་མོ་པ་སྤྲེལ་ཚུལ་གྱིས་བཟུང་བའི་ཐོད་པས་ནམ་པར་སྤང་མཛད་
 གསོལ་དུ་འདུག་པའོ། །ཁྱིན་པའི་མཆོམས་སུ་དྲེ་རྩེ་མ་དེ་ལྷར་བཟུང་བའི་མཆོད་ཡོན་
 གྱི་སྤྲོད་དྲེ་རྩེ་རྩེ་ལྷ་སྤྲུག་པ་ལ་འབུལ་བའོ། །སྤྲོད་དྲེ་རྩེ་གཅོགས་མ་ལག་པ་དག་
 གིས་པ་རྩེ་ཐོ་ཆེ་བདུང་བའོ། །རྒྱང་མཆོམས་སུ་དྲེ་རྩེ་ལྷ་མོ་ལ་དེ་ལྷར་བཟུང་བའི་ཐོད་
 པས་རི་དྲགས་མཆོན་ཅན་མ་འབུལ་བའོ། །རྒྱུའི་ཕྱོགས་སུ་དྲེ་རྩེ་འདྲིགས་མ་དེ་ལྷར་
 བཟུང་བའི་ཐོད་པས་གཅོད་བྱེད་ཅེས་རབ་དུ་གྲགས་པ་ཅེ་སྤྲང་གི་གསོལ་དུ་འདུག་
 པའོ། །བྱང་དུ་འདོད་ཆགས་ལྷན་མ་དང་ལྷན་ཅིག་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་གྱུར་ནས་ཡང་
 དག་པར་འབྱུང་དོ། །ཆགས་པ་ཆེན་པོས་རྩེ་སྤོགས་སུ་ཆགས་པར་བྱེད་པའོ། །གར་དང་
 ལྷ་ལ་སོགས་པ་ནམས་གྱིས་ཀྱང་ཡང་དག་པར་མཆོད་ནས་ཕྱག་འཆའ་ཉེ། རྩིག་པ་

1 བཞུགས་ བེ། ལྷ།

2 ལྷ་ བེ། ལྷ།

3 གྱི་ བེ། ལྷ།

4 པ་སྤྲེལ་ བེ། ལྷ།

5 རྩེ་ བེ། ལྷ།

6 གི་ བེ། ལྷ།

7 ཅན་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

8 དྲེ་རྩེ་ལྷ་མོ་ཕྱོགས་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྷག་ཡོད།

བཤགས་པ་ལ་སོགས་པ་འདི་ལྟར་བྱའོ། །བདག་གིས་¹བདག་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིག་པ་ཐམས་ཅད་སོ་སོར་བཤགས་ཤིང་སྒྲར་ཡང་མི་བཀྱིད་དོ། །སངས་རྒྱུ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་དང་འཕགས་པ་དང་སོ་སོ་སྒྲུ་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསོད་ནམས་ཐམས་ཅད་ལ་རྗེས་སུ་ཡི་རང་དོ། །བདག་ཉིད་ཀྱི་དགེ་²བཤམས་ཅད་ལྷན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་རྟུ་ཡོངས་སུ་བརྩོ་³བར་བཀྱིདོ། དཀོན་མཆོག་གསུམ་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། སངས་རྒྱུ་དཀོན་མཆོག་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་རྟུ་ཕྱིན་པ་ཆོས་དཀོན་མཆོག་དང་། སྤྱིར་མི་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་དཀོན་མཆོག་ལ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བར་རྟུ་སྐབས་སུ་མཆོདོ། །ཀྱེ་མ་མ་ལ་བདག་ཉིད་སེམས་ཅན་ཀྱན་གྱི་དོན་དང་། སན་པ་དང་། བདེ་བ་དང་། རི་སྤྱིད་དུ་དེ་ནམས་ཤིན་རྟུ་མཐར་ཐུག་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལྷན་མེད་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་⁴དགོད་པའི་ཆེད་དུ་དེའི་ལམ་སྐྱབ་པས་ལྷན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་པར་བྱང་ཆུབ་པར་⁵བཀྱིདོ། །དེའི་རྗེས་སུ་འོག་གི་རྒྱུང་གིས་བསྐྱལ་བས་འབར་བའི་གདུམ་མོས་འབྱུང་པའི་སྤྱིང་གའི་རྟུ་ཡིག་གི་འོད་ཟེར་ནམས་ཀྱིས། ཞམས་མ་ལུས་པ་བཟུང་། མི་བྱུང་རྟུ་⁶རྣམས་བརྩོ་སྒྲུ་མ་ལྷ་སྒྲོགོན་⁷དོ། ཞེས་པ་འདི་ནང་གི་བརྗོད་པ་རྩོན་མ་ཅན་གྱི་⁸དོན་མངོན་དུ་བྱེད་ཅིང་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྤྱོད་པ་ཉིད་ལ་གཞུག་གོ། །དེའི་རྗེས་སུ་རྩོན་གྱི་སྒྲོན་ལམ་གྱི་ཤུགས་ལས་རྩི་གྱི་ས་པོན་ལས་སྐྱེས་པའི་ཉི་མར་རྟུ་ཡིག་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་སྒྲ་ཆོགས་དེ་རྗེའི་མཐིལ་ལ་གནས་པའི་རྟུ་ཡིག་དག་གིས་བསྐྱལ་བའི་འོད་ཟེར་གྱི་ཡལ་ག་ནམས་ཀྱིས་དེ་རྗེ་ར་བ་

1 གི་ བཤ། ལྟ།

2 བདེ་ རྩ། བོད་དུ་ལེགས་སྒྱར་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

3 རྩོ་ བཤ། ལྟ།

4 ལས་ བཤ། ལྟ།

5 པར་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

6 ཏ་ རྩ། བཤ། ལྟ། བོད་དུ་ལེགས་སྒྱར་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

7 ཉ་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

8 གྱིས་ བཤ། ལྟ།

སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། །དེ་ཁོ་ན་འོད་ཟེར་ནམ་པ་ལྟ་བུར་བས་སྒྲིམ་
 པའི་ལྟ་ནམས་ཀྱིས་ཀུན་ནས་འགྲོ་བའི་དོན་བྱེད་པ་ནི་བྱ་བ་སྒྲུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་
 བཞིན་ནོ། །ཁྲི་བ་ལ་སོགས་པ་འདི་ཡོངས་སུ་གྱུར་པ་ཚེས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་ཏུ་ནམ་
 པར་དག་པའི་རང་བཞིན་བཅོམ་ལྷན་འདས་སངས་ཀྱིས་ཐོད་པའི་རྒྱ་རྩེ་རྩེ་འཆང་ཆུ་
 ཤིང་གི་མེ་རྟོག་མངོན་པར་གསར་པ་ཁ་འབྲས་པ་ལྟ་བུ་རྒྱུད་གཞན་གྱི་རིགས་པས་
 ཀུན་ད་ལྟར་དཀར་པའི་འོད་ཅན་གྱི་སྒྲ། འཆད་¹ བར་འགྱུར་བའི་འབྲས་བུ་རྩེ་རྩེ་
 འཛིན་པ་ལྟ་བུའི་ཡུག་ལ་སོགས་པ་ཅན་སྒྲ་ཚོགས་སྡེ་མ་དམར་པོས་² འཁྱུད་པ། ཉུ་
 ཡིག་ལས་བཅོམ་ལྷན་འདས་འགྲུབ་པའི་དུས་ཁོ་ནར་གྲུབ་པའི་སྤང་བ་བཟང་མོ་ལ་
 སོགས་པའི་ལྟ་མོ་ནི་བྱ་ཅ་བཞི་ནམས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བ་བསྐྱོམ་པར་བྱའོ།
 བདག་གི་ཁྲི་མ་ཁ་ཅིག་ནི་³ སྒྲ་བས་འདིར་ཡང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ལྟ་མོ་ནི་བྱ་ཅ་བཞིས་
 ཡུལ་བ་ཐོད་པ་ན་གནས་པའི་བདུད་ཅི་ལྟ་གསོལ་བའོ་ཞེས་གསུངས་སོ།⁴ །དེའི་རྩེས་
 སུ་སྒྲ་ཚོགས་སྡེ་མའི་དབྱ་དང་མགོན་པ་དང་ཐུགས་ཀ་དང་གསང་བ་དང་བརྒྱ་དག་ལ་
 རིམ་པ་རྩེ་ལྟ་བུར་⁵ མི་ལྟ་ ཉུ་སྒྲ་དུ། ཞེས་པ་འདི་ནམས་བསྐྱོམ་སྟེ། བན་ཚུན་གྱི་
 བར་དུ་སྒྲིམ་པ་དེ་ནམས་ཀྱིས་འདིའི་སྒྲ་བྲུབ་པར་བྱས་པས་རྩེ་ཡིག་ལས་བྱུང་བའི་
 པརྒྱ་དམར་པོའི་ལྟ་བུར་ལྟ་ཡིག་དམར་པོ་དང་། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་རྩེ་རྩེ་ཉུ་ཡིག་
 ཅག་པོ་ལས་སྒྲེས་ཤིང་ཅེ་མོ་མི་ཡིག་དཀར་པོས་བྱེན་གྱིས་བརྒྱབས་པར་བསྐྱོམ་ཏེ།
 ལྟ་མོ་ནི་བྱ་ཅ་བཞི་སྒྲ་ཚོགས་སྡེ་མ་དང་ལྟ་ཅིག་དབྱེར་མེད་པ་ནམས་ཀྱིས་ནམ་པ་དེ་
 ལྟ་བུའི་རྩེ་རྩེ་དང་པརྒྱ་སྒྲིམ་པས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ལ་འདོད་པ་མངོན་དེ་བཅོམ་ལྷན་
 འདས་ཀྱང་རོ། །མི་སངས་ཏ་ཐུག་ཏ་ཨ་ཁུ་རྩ་གཏ་བཇོ་སྒྲ་ཐ་ལྟ་མོ་ཏ་ཉུ་ཏེ། ཞེས་

1 འཆང་པར་ སྟེ། ཤོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལོང་ཡོད།

2 པོ་ བེ། ལྟ།

3 ཅེ་ བེ་ཀིང་དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4 གསུང་རོ། བེ། ལྟ།

5 བར་ བེ། ལྟ།

6 ཉུ་ བེ།

7 ཉུ་ བེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

པའི་སྐྱེས་ཀྱིས་དགའ་བ་ཚོམ་བཞིན་པ་ནི་འདོད་ཆགས་ཆེན་པོས་བཙོམ་ལྡན་འདས་
མ་དང་ལྡན་ཅིག་ཉི་མའི་སྤྲོད་དུ་ལུ་བར་འགྱུར་རེ་ཞེས་པ་དང་པོའི་སྦྱར་བ་ཞེས་བྱ་བ་
ཉིང་རེ་འཛིན་དང་པོའོ། །དེ་ནས་སྡོན་གྱི་སྡོན་ལམ་ལ་སྡོན་པ་ལ་ལུ་བ་ལས་སྡོན་
པའི་ལྷ་མོ་བཞི་རྣམས་ཀྱིས་མངའ་བདག་མ་མཐོང་བས་གདུང་བ་དང་བཅས་པར་སྦྱ་
རྣམས་ཀྱིས་མགོན་པོ་སྦྲང་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ལ་བྱམས་པ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་སྤང་བ་
བཟང་མོས་ཅི་ཡིས་སྤྱོད་ནི་སྦྱང་ལུག་གུར། འཇིག་རྟེན་མགོན་པོས་ཅི་ཞིག་ཡིན།
གལ་ཏེ་སྤྱོད་ཆོག་བྱན་བྱེད་ན། །ཀྱན་གྱི་བདག་པོ་བཞེངས་མཛོད་ཅིག །ཅེས་པའི་སྦྱ་
འདིས་སོ། །ཐོང་པ་ཅན་མ་སྤྲོད་རྗེ་ཆེན་པོའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས།

བདག་ཉིད་བྱ་བ་བྱས་ནས་ནི།

སྦྲང་པ་ཉིད་ལ་སེམས་མ་མཛོད།

སྦྱ་ཀྱན་སྤྱོད་པ་འཇིགས་པར་སྦྱང་།

རྣལ་འབྱོར་མ་ཡི་གྲོགས་པོ་བཞེངས། །ཞེས་པ་འདིས་སོ།

འཇིགས་མ་དགའ་བ་ཆེན་མོའི་རང་བཞིན་གྱིས། །བདག་པོ་སྡོན་གསུངས་
བྱན་པར་མཛོད། །བྱ་བར་སྦྱང་ལུག་མ་མཛོད་ཅིག་ །སྤྱོད་རྒྱུ་བ་ནི་སྦྱ་པོ་ཀྱན།
སྦྱང་ཞིང་འགོ་བསྦྱང་ལུག་འགྱུར། །ཞེས་པ་འདིས་སོ། །དེ་ལྟར་བསྐྱེད་པའི་རྗེས་
ཐོགས་སུ། །ལུ་བ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་རྒྱ་ལས་སྦྱས་པའི་རྗེ་རྒྱ་དང་བཅས་པའི་རྒྱ་ཡོངས་
སུ་གྱུར་པའི་བཙོམ་ལྡན་འདས་ཉི་རུ་ཀ་མདོག་སྡོན་པོ་ཞལ་གཅིག་པ་ཕྱག་བཞི་པ་
ཕྱག་གཡས་པ་གཉིས་ཀྱིས་ཅང་ཉེའུ་དང་གི་གྲག་དག་དང་། །གཡོན་པས་ཁ་འྲུ་ག་

1 བསྡོན་ བཤ། ལྷ།

2 བདུང་ བཤ། ལྷ།

3 པ་ བཤ། ལྷར

4 ལུགས་ བཤ། ལྷ།

5 འབྱུང་ བཤ། ལྷ།

6 འྲུ་ བཤ། ལྷ།

དང་ཐོད་པ་དག་བསྐྱམས་པ། ལྷ་ཚོགས་པར་ཉལ་བའི་རོའི་བྲང་¹་ལ་གནས་པའི་ཉི་
 མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གནས་པ། སྒྱེལ་ཀྱང་ཕྱེད་པ་བཅེངས་པས་སྒྲིག་པ་ལ་སོགས་པ་
 གར་གྱི་ཉམས་དགུས་གར་མཛད་པ། མགིན་པར་མ་མགོ་རྫོན་པ་ལྷ་བཙུའི་ཕྱེད་པ་
 འཕྲང་བ་མའི་རྒྱ་མ་རྫོན་པའི་ཆངས་²་སྒྲུང་ཅན། རྒྱལ་གྱི་ཆར་ལྷག་གི་པགས་པ་
 འཛིན་ཅིང་མདུན་གྱི་ཆར་གཅེར་བུ་འཁོར་ལོ་ཅན་དང་། ར་རྒྱན་དང་མགུལ་རྒྱན་
 དང་དཔུང་རྒྱན་དང་གདུ་བུ་དང་སྒླེ་རགས་གྲོལ་བ་དང་། འབས་གདུབ་དང་།
 གཡེར་³་ཁའི་སྒྲིམ་བརྒྱན་པ། སངས་རྒྱལ་ལྷའི་ཙོད་པན་ཅན་ལྷ་ཚོགས་རྩི་རྩེ་དང་ཆེ་བ་
 ཕྱེད་པས་མཆོན་པའི་རལ་པའི་ཐོར་རྒྱགས་ཅན། དཔལ་བའི་མཐར་ཐོད་པ་ལྷའི་ཕྱེད་
 པ་བཅེངས་པ། རོ་བསྐྱེགས་པའི་ཐལ་བས་བརྒྱན་པ། བཅོས་མའི་ཁྲོ་བོས་དྲག་པོ་
 ཆེན་པོའི་སྒྲུ་ཅན། ཉི་མ་གར་ཀའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལྷ་བུ་སྒྱུན་གསུམ་པ། རྩྱ་ཡིག་
 རྫོགས་པས་བདུད་གྱི་སྒྲེ་རྩེགས་པ་ཅན་གྱི་ཀོལ་པ་བསྐྱེགས་ཤིང་ཕྱེ་མར་མཛད་པ།
 མཚོག་རྩྱ་བུམས་པ་དང་། ཐུགས་རྩེ་ཆེན་པོ་འཁོར་བའི་རྒྱ་མཆོའི་དོང་དུ་བྱིང་བའི་
 ལུས་ཅན་གྱི་ལུས་འཛིན་པ་རྣམས་འདོན་པར་མཛད་པ། རལ་འབྱོར་པས་དབུགས་
 རང་དུ་བསྐྱམས་པས་བསྐྱེམ་པར་བྱའོ། ། གཙོ་བོ་འདིའི་མཛའ་མོ་ལྷ་ཚོགས་སྒྲེ་མ་
 བཅོམ་ལྷན་འདས་དང་ལྷན་ཅིག་ཁོ་ནར་རྩྱ་ཡིག་ལས་སྒྲེས་པ་གོས་མེད་པ་རུས་པའི་
 རྒྱན་ཅན། མི་མགོའི་ཕྱེད་བ་དོར་བ་དབུ་སྒྲའི་ཚོགས་གྲོལ་ཞིང་དམར་མེར་གྲེན་དུ་
 འབར་བ་བརྒྱུའི་མེ་ཏོག་གི་ཐོད་ཅན། སྒྲིག་ཅིང་གཡོ་བས་ཅེན་པའི་སྒྲུ་ཅན། མཆེ་
 བའི་ཐུ་གུ་རྩྱང་ཟད་གཅིགས་པའི་འལ་གཅིག་མ་སྒྱུན་གསུམ་པ། སྒྲིག་པ་⁴་དང་
 བཅས་པའི་གཙོ་བོའི་མགུལ་པ་ལ་འཁྱུད་པའི་ཐུག་གཡོན་གྱིས་ཐོད་པར་རྒྱགས་པའི་
 གཉུག་མའི་ཆུ་སྒྲིམ་གྱི་བུ་ག་ལས་བྱུང་བའི་མེ་ཏོག་གི་རྒྱན་གཙོ་བོ་ལ་རྩྱེས་རྩྱེས་པས་⁶་པ།

1 འབྲང་ བཤ། ལྷ།

2 ཆང་ བཤ། ལྷ།

3 ཡེར་ བཤ། ལྷ།

4 མ་ བཤ། ལྷ།

5 ཀྱིས་གྱི་ བཤ། ཀྱིས་ ལྷ།

6 རྩྱེས་ རྩྱེ། ཀོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

སྲིད་པ་གསུམ་ན་གནས་པ། ལེགས་པའི་ལམ་ལས་གྲོལ་¹པའི་ཚོགས་ལ་བརྟེན་པའི་
 ཚུལ་གྱིས་གྲི་གྲག་དང་བཅས་པའི་ཕྱག་གཡས་པའི་སྟེ་མ་སྟེང་དུ་དང་པོ་ཅན་གྱི་ཏྲ་སྟ་
 དང་བཅས་པར་མ་མཆུ་བདུད་ཅི་སྟེར་བ་ལ་སོགས་པ་²ནམས་དང་། བེན་དུ་སྟུ་
 ཅལ་³ཅེད་མོ་ནམས་ལ་མཁལ་པས་ཁྲུ་བ་འཇག་ཅིང་། གཙོ་པོའི་ཡིད་བེན་དུ་འཇམ་
 ཞིང་ཆགས་པར་མཇེད་པའོ། །ཡབ་ཡུམ་འདི་དག་འགྲུབ་པའི་དུས་སུ་སྟེང་བཟངས་⁴
 མ་ལ་སོགས་པ་དོ་རྩེ་རོལ་བ་མོ་ནམས་གྲུབ་པོ། །དེ་ལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གདན་
 ལས་ཤར་གྱི་འདབ་མ་ལ་ལེགས་སྟེང་མའོ། །བྱང་དུ་སྟོང་པ་ཅན་མའོ། །རྒྱབ་དུ་
 འཇིགས་མའོ། །སྟོར་བྱུང་དཀའ་མའོ། །དབང་ལྡན་ལ་སོགས་པ་སྟོགས་བྲལ་གྱི་
 འདབ་མ་ནམས་ལ་གཡས་སྟོར་དུ་ཁྲུ་བ་དང་དུལ་དང་བདུད་ཅི་ལྟ་དང་སྟོན་མ་ལས་
 གང་བའི་⁶སྟོང་པ་ནམས་སོ། །འདི་ནི་རིམ་པ་དང་པོ་སྟེ་པར་འདབ་མ་བརྒྱད་པ་དོ་རྩེ་
 སྟོན་པོའི་སྟེང་བས་བསྟོར་བའོ། །དེ་ནས་རིམ་གཉིས་པ་ཅིབས་བརྒྱད་དམར་པོ་⁷ལ་
 གནས་པའི་པར་བརྒྱད་དེ། ཕྱི་རོལ་དུ་མངོན་པར་གསལ་བའི་སྐྱ་རིང་ལྟར་དམར་
 པོའི་དོ་རྩེ་སྟེང་བས་བསྟོར་བའོ། །དེའི་ཤར་དུ་ཅིབས་ལ་དགེ་བའི་སྟེ་⁸རགས་མའོ། །
 བྱང་དུ་གཟུགས་ཅན་མའོ། །རྒྱབ་དུ་ནམ་པར་རྒྱལ་མའོ། །སྟོར་བྱེད་མའོ། །དབང་
 ལྡན་དུ་དུས་ཅན་མའོ། །མེར་མཚོ་ཆེན་མའོ། །བདེན་བྲལ་དུ་བྱེད་མའོ། །རྒྱང་དུ་
 གསོད་བྱེད་མའོ། །དེ་ནས་རིམ་པ་གསུམ་པ་ཅིབས་བརྒྱད་དཀར་པོ་ལ་གནས་པའི་
 པར་བརྒྱད་དེ་དོ་རྩེ་སྟེང་བ་དཀར་པོས་བསྟོར་བའོ། །དེའི་ཤར་དུ་ཅིབས་ལ་དོ་རྩེ་སྟོལ་

1 གྲོལ་ བོ། ལྟར།

2 བ་ བེགིང་དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 དང་ བོ། ལྟར། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

4 སྟེང་བཟང་ བོ། ལྟར།

5 ཀྱིས་ བོ། ལྟར།

6 བའི་ བོ། ལྟར། དཔར་མའི་ནང་མེད།

7 མོ་ བོ།

8 སྟེ་ བོ། ལྟར། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

9 མའོ་ བོ། ལྟར།

མ¹་ཅན་མའོ། །བྱང་དུ་འཛིན་པའི་ཐོད་པའོ། །རྒྱལ་དུ་ལེགས་པའོ་མའོ།
 རྩོམ་མི་བྱུང་མའོ། །དབང་ལྡན་དུ་དགེ་བ་མའོ། །མེར་གྱིབ་གནོན་མའོ། །བདེན་
 བྲལ་དུ་དུས་མཚན་མའོ། །རྒྱུང་དུ་གྲགས་ཆེན་མའོ³། །དེ་ནས་གར་གྱི་སྒྲོར་པར་ལ་
 མཛེས་མའོ། །བྱང་དུ་པར་ལ་ཞོར་འཛིན་མའོ། །རྒྱལ་དུ་པར་ལ་སྐལ་བ་བཟང་མའོ།།
 རྩོམ་པར་ལ་དགའ་མཚོང་མའོ།། འདི་རྣམས་ཐམས་ཅད་གཡས་པ་དང་། ཅིག་གོས་
 ཀྱི་ཕྱག་གི་ལལ་གས་གྱི་གྲག་དང་ཐོད་པ་འཛིན་པ། བདག་པོ་ལ་སེམས་པས⁴་མཚུ་
 གཡོ་བསོ་རུང་ཟད་ཉོན་པ། ཞལ་གཅིག་པ་ཕྱོགས་ཀྱི་གོས་ཅན་རུས་པའི་རྒྱན་ཅན་
 མགོ་བོའི་སྤང་བ་དང་བྲལ་བ། སྤྱི་ཆོགས་གྲོལ་ཞིང་དམར་སེར་གྱེན་དུ་འབར་བ་
 བྱིན་དུ་ཆགས་པ་ལས་ཁུ་བ་འཛིན་པ། མེ་ཏོག་མཚུར་པ་ཁ་གསར་དུ་བྱེ་བ་ལྟ་བུའི་ཉི་
 མའི་གཟུགས་རྣམས་ལ་སྦྱིལ་གྱང་ཕྱེད་པས་གར་མཛད་པ་རྣམས་སོ། །སྒྲོ་སྒྲོང་མ་
 རྣམས་ནི་གཡས་བརྒྱུང་གི་རྩ་བའི་ཞབས་སྟབས་ཀྱིས་སོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྟག་གི་
 པགས་པའི་གམ་ཐབས་ཅན་ཐམས་ཅད་འོད་ཟེར་འབར་བ། ཞལ་ནས་ཐྲག་གི་རྒྱན་
 འཛིན་པ། སྟན་གསུམ་པ། སྟེག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོགས་ཀྱི་ཉམས་ཅན་མཛོན་
 པར་གསར་པའི་ཨིན་མི་ལའི་དོ་བ་བཅག་པའི་ཁ་དོག་གི་སྦྱང་ལྡན་པའོ། །ཡང་ན་
 ལེགས་པར་སྤྱང་མ་ལ་སོགས་པ་བཞི་རྣམས་ནག་མའོ།། རིམ་པ་གཉིས་པ་མ་རྣམས་
 དཀར་སེར་རོ། །རིམ་པ་གསུམ་པར་བཞུགས་པ་མ་⁸རྣམས་ལྗང་གྱ་རྣམས་སོ། །སྒྲོ་
 སྒྲོང་མའི་ལྟ་མོ་རྣམས་ནག་མའོ།། བདག་གི་རྩ་མ་གཞན་རྣམས་ནི་ལེགས་སྤྱང་མ་ནི་
 དཀར་མའོ།⁹ ཐོད་པ་ཅན་མ་ནི་སེར་མའོ། །འཛིན་པ་མ་དཀར་མའོ། །བྱུང་དཀར་

1 བ་ བེ། ལྷ།

2 ཕྱེད་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 མའོ་ ལྷ།

4 ལས་ བེ།

5 ཐམས་ཅད་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

6 སྟེགས་ བེ། ལྷ།

7 ཉམས་ཀྱི་ཆོགས་ བེ། ལྷ།

8 མ་ བེ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

9 མོ་ བེ། ལྷ།

མ་ནག་མོ་འོ། །རིམ་པ་གཉིས་པ་མ་རྒྱུས་དམར་མོ་འོ། །རིམ་པ་གསུམ་པར་
གནས་པ་རྒྱུས་དཀར་མོ་འོ། །མངོས་མ་དཀར་མོ་འོ། །ནོར་འཛིན་མ་སེར་མོ།
སྒྲུལ་བ་བཟང་མོ་དམར་མོ། དགའ་མཐོང་མ་ནག་མོ་སྟེ། རྒྱུད་རྒྱས་པར་གསུངས་
པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་གསུངས་སོ། །ཇི་ལྟར་མོས་པ་²བསྟོན་པར་བྱ་སྟེ། ཐུགས་གཉིས་
པ་³ཡང་རྩུང་དུ་འཛིན་པ་གསུངས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་
བྱགས་ཀར་ཨོ་དཔལ་བར་དོ། །མགྲིན་པར་དོ་སྦྱོར་པར་དོ་སྦྱག་པ་གཉིས་ལ་དོ་མིག་
གཉིས་ལ་དོ་གསང་བ་ལ་དོ་ལུས་ཐམས་ཅད་ལ་དུ་ཞེས་པ་གོ་ཆོའོ། །དེའི་རྗེས་སུ་
བྱགས་ཀར་དུ་ནག་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་དོ་རྗེའི་སྟེ་བར་དུ་མགྲིན་པར་ཨུ་⁵དམར་པོ་
ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་པདྨ་ལ་ཨུ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་ལ་ཨོ་ཡིག་དཀར་པོ་ལས་
སྐྱེས་པའི་འཁོར་ལོ་ལ་ཨོ་ཞེས་པ་བྱགས་དང་། གསུང་དང་། སྦྱུ་བྱིན་བྱིས་བརྒྱབས་
ནས། སྒྲིང་གའི་ཉི་མའི་དོ་རྗེ་ལ་གནས་པའི་དུ་ཡིག་གི་འོད་ཟེར་རྒྱུས་ཀྱིས་ཡོ་ཤེས་
ཀྱི་འཁོར་ལོ་བཀྲག་ནས། དུ་ཡིག་གིས་བཤེགས་རྒྱུས་བསྐྱད་དེ། མཆོད་ཡོན་ལུལ་
ནས་སྟོ་སྟོང་མ་བཞི་པོ་རྒྱུས་ཀྱིས་རིམ་པ་ཇི་ལྟར་བར་ཇུ་བོ་བོ་དེ་ཞེས་པས་དགུག་
པ་དང་གཞུག་པ་དང་། བཅོངས་གིང་དབང་དུ་བྱས་ནས། ཨོ་བུ་ཀླ་ཀླ་ལི་ནི་ཨུ་ཁྱི་
ཀྱི་དུ་སྦྱུ་ཨོ་ཨོ་ཨོ་དུ་དུ་དུ་ལྟ་ལྟ་ཅེས་བསྐྱེདས་པ་དང་བཅས་པ་བཟོད་ཅིང་དེ་དང་
ལྡན་ཅིག་དམ་ཆོག་གི་དཀྱིལ་འཁོར་མེ་གཅིག་དུ་གྱུར་པར་བཟོའོ། །དེ་ནས་⁹སྟེ་བར་
གདུམ་མོ་འབར་བས་རིམ་བྱིས་ལུ་བའི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོར་གནས་པའི་བདུད་
ཅིས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་ས་པོན་འབྱུང་པའི་དུས་སུ་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་ཙ་བརྒྱད་ཀྱི་

1 དཀར་ བེ། ལྷ།

2 ཡར་ གེ། ལྷ།

3 བྱ་ དེ། ལྟ།

4 ཏཱ་ རྟེ། དེ། རྩ། བོང་དུ་ལེགས་སྒྱུར་ལྟར་བཀོད་ཡིད།

5 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

6 ॐ ऐं ॐ

7 བུ་སྐྱོད་ཀྱི་རྒྱལ་བའི་མཆོག་པོ་ཡི་ཕྱོད་ནང་།

8 རྩོམ་པའི་སྐབས་ལྟར།

9 ན་ གེ། རྒྱ།

བར་གྱིས་ལ་སོགས་པས་ཕྱི་དང་ནང་དང་¹གསང་བ་དང་ཤེས་རབ་དང་བཞི་བའི་
དབང་བསྐྱར་བ་རྣམས་ཀྱིས་དབང་བསྐྱར་བར་མཛད་དོ། །དབང་བསྐྱར་བའི་དུས་
སྤྱའང་། རྩོུ་དུ་བྱེད་པ་དང་། བཀྲ་ཤིས་དང་²། ར་པོ་ཆེའི་སྤྱ་དང་ཅ་ཆ་དང་
གུར་གུམ་དང་མེ་ཉོག་ལ་སོགས་པའི་ཆར་པ་ནམ་མཁའི་མཐིལ་ལས་འབྱུང་བའོ།
དེའི་རྗེས་སྤྱ་དེ་རྣམས་རྩ་དེ་རྣམས་ལ་ཐིམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་བཙོམ་ལྡན་འདས་དང་
ལྷ་མོ་རྣམས་རང་རང་གི་རིགས་ཀྱི་འདྲེན་པས་རྒྱས་གདབ་པར་བྱ་སྟེ། དེ་ལ་བཙོམ་
ལྡན་འདས་དེ་རྗེས་མས་དཔའ་ལ་³སངས་རྒྱས་ལྟ་ཡིས་ཅོད་པར་བརྒྱན་ཞེས་གསུངས་
པའི་ཕྱིར་རོ།⁴ །མི་བསྐྱེད་པ་ལ་སོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ལྟ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །སྤྱ་
ཚོགས་སྟེ་མ་ལ་ནི་རྣམ་པར་སྤྱང་མཛད་ཆེན་པོ་མིང་གཞན་དེ་རྗེས་མས་དཔའས་སོ།
ལེགས་ཕྱེང་མ་ལ་སོགས་པ་བཞི་རྣམས་རིན་ཆེན་འབྱུང་བས་སོ། །རིམ་པ་གཉིས་
པར་གནས་པ་རྣམས་འོད་དཔག་མེད་ཀྱིས་སོ། །རིམ་པ་གསུམ་པར་གནས་པ་རྣམས་
རྣམ་པར་སྤྱང་མཛད་ཀྱིས་སོ། །སྟོ་སྟོང་མ་རྣམས་དོན་ཡོད་གྲུབ་པས་རྒྱས་གདབ་པོ།
དེ་ནས་རྩ་བརྒྱད་པོ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་རྣལ་འབྱོར་མ་བརྒྱད་རྣམས་ཀྱིས་སྤར་བཞིན་དུ་
གཙོ་བོ་ལ་མཆོད་ནས།

དོ་རྗེ་དང་ནི་པརྱ་འདུས་ཤིང་བདུད་ཅིའི་བདེ་རྒྱས་ཤིང་།
རིམ་གྱིས་ཡོངས་གུར་སྤྱ་ཅན་སེམས་ཅན་དོན་དུ་གར་བྱེད་པ།
དོ་རྗེ་ལྷ་མོའི་ཅེད་མོའི་རོལ་པ་ཅེན་མཛད་འགྲོ་མོངས་ལ།
འགྲོ་ལ་མི་དམན་ཀྱུན་དགའ་སྟེར་བ་བྱིད་ལ་བདག་འདུད་དོ།

ཞེས་པས་བསྟོད་དེ། འདི་ལྟར་བདུད་ཅི་མུང་བར་བྱའོ། །བཙོམ་ལྡན་འདས་
དང་བཙོམ་ལྡན་འདས་མའི་དགའ་བའི་སྤྱས་བསྐྱལ་བའི་དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ལྟ་
རྣམས་བྱོན་ཏེ་རྣམ་པར་སྤྱང་མཛད་ཀྱི་སྟོ་ནས་ཞུགས་པ་ཞུ་སྟེ་པརྱའི་ནང་དུ་བབས་

1 ནང་དང་ བེ། སྤྱ་ དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

2 དཀྱིལ་འཁོར་ ལེགས་སྤྱར།

3 ལ་ བེ། སྤྱ་ དཔར་མའི་ནང་མེད།

4 རོ་ བེ། སྤྱ་ དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

སོ། །དེའི་ཆེ་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་¹ཡི་ཤེས་ལཱའི་བདུད་ཅི་ལྟའི་ཅི་མོའི་རོལ་པས་
 རང་ཉིད་ཀྱིས་²སྒྲངས་ཤིང་། དཀྱིལ་འཁོར་པའི་རྩ་ཆོམ་པར་བྱའོ། །ཕྱི་རོལ་དུ་ནི་
 ཡི་ཡིག་ལས་སྦྱེས་ཤིང་ཡི་གི་སྦྱིང་པོ་ཅན་བ་དན་གཡོ་བ་གཉིས་ཀྱིས་མཚན་པའི་རྒྱང་
 གི་དཀྱིལ་འཁོར་སྔོན་པོ་ལ་རྩེ་ལས་བྱུང་ཞིང་རྩེ་དང་ལྷན་པ་འབར་བ་བདུན་པའི་མེའི་
 དཀྱིལ་འཁོར་དམར་པོ་ལ། དེའི་སྔོང་དུ་ཡི་གེ་གསུམ་ལས་སྦྱེས་པའི་མགོ་པོ་གསུམ་
 ལ་གནས་པ་ལྷ་ཡིག་ལས་སྦྱེས་པའི་པར་སྒྲིའི་སྔོད་དོ། །དེའི་དབུས་སུ་ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་དང་།
 ཐིག་ལེ་དང་བཅས་པའི་བེ་ར་བྱ་མ་ལ། གོ་ཀུ་ད་ད་ན་ཡོངས་སུ་གྱུར་པའི་བདུད་ཅི་ལྟ་
 དང་ག་ལྟ་ལྟོ་ལྟོ་ལྟོ་སྟོ་དང་བཅས་པ་ནམས་ཏེ། དེ་ནས་རྒྱང་གིས་⁴བསྐྱལ་པའི་
 མེས་གདུངས་པས་ཐོད་པ་ན་གནས་པའི་རྩེས་བརྒྱ་བསྐྱེད་པའི་རྒྱངས་པས་མཐོ་གང་
 གི་བར་ཅན་གྱི་སྔོང་གི་བར་སྒྲང་ལ་དྲུག་ལས་སྦྱེས་ཤིང་དྲུག་གིས་⁶མཚན་པའི་དོ་རྩེ་སྔོན་
 པོ་ལ་རེག་པས་ཁྱེ་ནས་ཁྱེགས་པ་ལས་ཐམས་ཅད་རོ་གཅིག་པར་སྦྱིན་པའི་སྔོང་དུ་
 མཐོ་གང་གི་བར་ན་ལོ་ལས་སྦྱེས་ཤིང་ལོ་ཡིག་གིས་⁷བྱིན་གྱི་བརྒྱབས་པའི་བདུད་ཅི་ལྟའི་
 འོད་ཅན་གྱི་⁸དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་⁹ལོ་ཡིག་གི་འོད་ཟེར་གྱིས་བཀྱག་པ་ཕྱོགས་བརྒྱ་ན་
 གནས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་བདུད་ཅི་རྩམས་
 དང་། རྩེ་བྱུང་དང་སྒྲགས་དང་། སྦྱན་གྱི་རྩམས་པའི་བྱེ་བྲག་རྩམས་དང་རྩེ་ཅིག་
 ཞུགས་པ་ན། དེ་ཐམས་ཅད་དཔལ་རྒྱའི་མདོག་ཅན་བ་མོའི་ཕྱང་པོ་བཞིན་དུ་བསལ་

1 ཀྱི་ བཤེས་ ལྟོ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

2 ཀྱི་ བཤེས་ ལྟོ།

3 ལྟོ་ བཤེས་ ལྟོ་ ལྟོ།

4 གི་ བཤེས་ ལྟོ།

5 བཤེས་ བཤེས་ ལྟོ།

6 གི་ བཤེས་ ལྟོ།

7 གི་ བཤེས་ ལྟོ།

8 ཀྱིས་ བཤེས་ ལྟོ།

9 ཀྱིས་ བཤེས་ ལྟོ།

བའི་བདུད་ཅི¹་དེ་ཉིད་གསུམ་གྱིས་ལན་གསུམ་བྱིན་གྱིས་བརྒྱབས་ཏེ། དེས་ལྷེ་རྩྱ་
 དཀར་པོ་ལས་སྐྱེས་པའི་དོ་རྩེ་གཅིག་པ་འོད་ཟེར་དང་བཅས་པའི་སྐྱ་གུ་ནས་བདག་
 ཉིད་དང་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་རྣམས་ཆོས་པར་བྱའོ་ཞེས་པ་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་རྒྱལ་པོ་
 མཆོག་ཅེས་བྱ་བའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་གཉིས་པའོ། །དེ་ནས་བཙམ་ལྷན་འདས་གྱིས་
 བསྐྱལ་བའི་མཁའ་འགོ་མ་ཐམས་ཅད་དང་། བཙམ་ལྷན་འདས་གྱི་²སྐྱའི་སྤྱིན་སྤྱོས་
 པ་རྣམས་གྱིས་སེམས་ཅན་རྣམས་གྱི་³དོན་མཛད་དེ་⁴དོ་རྩེ་འཆང་ཆེན་པོའི་གོ་འཕང་
 ཐོབ་པར་བསྐྱེད་ནས་རང་གི་སྐྱའི་སྤྱིན་རྣམས་རྩ་བའི་སྐྱ་ལ་བསྐྱའོ་ཞེས་པ་ལས་རྒྱལ་
 པོ་མཆོག་ཅེས་བྱ་བའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་གསུམ་པའོ། །དེའི་རྩེས་སུ་ནང་དུ་རྩོགས་པའི་
 དཀྱིལ་འཁོར་མཛོན་དུ་བྱ་རྟེ། དེ་ལ་མགོ་པོ་ལ་ཕུལྱིར་མ་ལ་ཡ་རུ་སྤྱོད་བཟངས་མའོ།།
 སྤྱོ་པོ་རྩྱ་ལ་རྒྱ་ར་ལ་ཐོད་པ་ཅན་མའོ། །རྩ་བ་གཡས་པ་ཨོ་⁵ཡ་ན་རུ་འཛིགས་
 མའོ།།མགོ་པོའི་རྒྱབ་དུ་⁶ཨ་རུད་རུ་རྒྱལ་དཀར་མའོ། །གནས་ཏེ་ས་རབ་དུ་དགའ་
 བའོ། །རྩ་བ་གཡོན་པ་གོ་དུ་སྤྱ་རྩེ་རུ་⁷མཛེས་མའོ། །སྤྱིན་མའི་དབུས་རྩ་མེ་བྱར་ལ་
 རོར་འཛིན་མའོ། །མིག་གཉིས་དེ་སྤྱི་གོ་⁸ཏེ་རུ་སྐྱལ་བཟང་མའོ། །ཕྱག་པ་གཉིས་མ་
 ལ་སྤྱ་རུ་དགའ་མཐོང་མའོ། །ཉེ་བའི་གནས་ཏེ་ས་རྩེ་མ་མེད་པའོ། །བརྒྱད་པོ་འདི་
 རྣམས་ནི་⁹ཐུགས་གྱི་འཁོར་ལོར་མཁའ་ལ་སྤྱོད་པ་རྣམས་སོ། །མཆན་ཁུང་དག་ཀྱང་མ་
 རུ་པར་¹⁰དགེ་བའི་སྐྱེ་རགས་མའོ། །ཨོ་རྩེ་¹¹རྩ་མ་གཉིས་སུ་གཟུགས་ཅན་མའོ།།

1 ཅིར་ བཤ། ལྷ།

2 གྱིས་ བཤ། ལྷ།

3 གྱིས་ བཤ། ལྷ།

4 ཏོ་ བཤ། ལྷ།

5 ཨོ་ བཤ། ལྷ།

6 ཏུ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

7 བརྩེར་ བཤ། ལྷ།

8 བོ་གོ་ བཤ། ལྷ།

9 རི་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

10 ལྷ་རུ་ བཤ། ལྷ།

11 རྩེ་ བཤ། ལྷ།

ཞིང་སྡེ་ས་འོད་བྱེད་པའོ། ཁྱི་ག་ཀྱི་ཉི་མེ་བར་ནམ་ཀྱལ་མའོ། ཀློ་ག་ལ་སྒྲེལ་ཅི་
 མོར་བྱེད་མའོ། ཉེ་བའི་ཞིང་སྡེ་ས²་འཕྲོ་མའོ། ཀྱལ་ཁྱེད་ཁ་རུ་དུས་ཅན་མའོ།
 ལས་ཀྱི་མགྲིན་པར་མཚོ³་ཆེན་མའོ། ཆེན་ཉི་མེ་སྤྱང་དགའ་བའོ། ཀྱུ་ཆེ⁴་སྤྱང་
 གར་བྱེད་པ་ཅན་མའོ། ཉི་མུ་ལྷ་ཡ་ཆེན་པ་ལ་གསོ་བྱེད་མའོ། ཉེ་བའི་ཆེན་ཉི་མེ་ས་
 མོར་ནད་ཀྱུར་པའོ། ཀྱུ་སྤྱང་གི་འཁོར་ལོར་ས་ལ་སྤྱོད་པ་ནམས་སོ། བྱེད་སྤྱི་
 ཉི་མུ་ལ་སྤྱོད་པ་ཅན་མའོ། ཁྱི་དེ་དེ་བ་དེ་བ་ཤར་ལམ་དུ་འཛིན་པ་མཚོང་མའོ།
 འདུ་བ་སྡེ་ས་རིང་དུ་སོང་བའོ། སོ་རྒྱུ་བརྒྱ་གཉིས་ལ་ལེགས་མཚོང་མའོ། ཀྱུ་སྤྱང་
 སྤྱང་བྱེད་པ་ལ་མི་བྱུབ་མའོ། ཉེ་བའི་འདུ་བ་སྡེ་ས་མི་གཡོ་བའོ། ཉི་མུ་ར་སོར་སོ་
 རྒྱུ་ལ་དགེ་བ་མའོ། སེ་རྒྱུ་ལ་གོང་དག་ལ་གྱིབ་གཞོན་མའོ། དུར་ཁྱོད་དེ་ས་
 ལེགས་པའི་སྤྱོད་སྤྱོད་སོ། མ་རུ་མཐེ་བོང་དག་ལ་དུས་མཚན་མའོ། ཀྱུ་ལུ་དུ་ལུས་མོ་
 དག་ལ་ཀྱུ་གསལ་ཆེན་མའོ། ཉེ་བའི་དུར་ཁྱོད་དེ་ས་ཆོས་ཀྱི་སྤྱིན་ནོ། སྤྱི་འཁོར་
 ལོར་ས་འོག་ན་གནས་པ་ནམས་སོ། བྱང་ཁུབ་ཀྱི་སེམས་ལ་སོགས་པ་བཞི་ནི་བདེ་བ་
 ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པའི་འཁོར་ལོ་བཞི་ལོ། བཅོམ་ལྷན་འདས་དང་སྤྱོད་གསལ་སྡེ་མ་
 དག་གི་གནས་ནི་ཤུའི་ཉི་མེ་བ་གཉིས་སོ། བཅོམ་ལྷན་འདས་ནི་ཀུན་རྫོབ་པའི་བྱང་
 ཁུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དེ། སྤྱོད་གསལ་སྡེ་མའི་དུལ་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ། བྱང་
 ཁུབ་ཀྱི་སེམས་ལ་སོགས་པ་བཞི་དང་གཞན་ཡང་ཐམས་ཅད་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ལ་
 འཕྲོས་པའོ། རང་རང་གི་གནས་ན་གནས་པའི་ཅའི་རང་བཞིན་ལྷ་མོ་ཉི་ཤུ་ཅུ་བཞི་
 རྒྱུ་མཚན་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཁོ་ནས་འཕྲོས་པས་ཡང་དག་པར་འབྱུང་པའོ། ཀྱུ་དམས་

1 ཀློ་སྡེ་ ཉི་མུ་ སྤྱི་ མོར་དུ་ལེགས་སྤྱང་ལྷར་བཞོད་ཡོད།

2 འོད་ བུ། སྤྱི་ དཔར་མའི་ནང་ལྷག།

3 མཚོན་ ཉི་ མོར་དུ་ལེགས་སྤྱང་ལྷར་བཞོད་ཡོད།

4 ཀྱུ་ བུ། སྤྱི་

5 པའོ་ སྤྱི་

6 རོན་ བུ། སྤྱི་

7 ལ་ བུ། སྤྱི་ དཔར་མའི་ནང་མེད།

ངག་ཇི་ལྟ་བུ་དང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བུ་དང་མེས་པ་¹ཇི་ལྟ་བུར་གཏུམ་མོའི་རབ་དུ་
 དབྱེ་བ་བསྒྲིམ་²པས་འདི་ཐམས་ཅད་དང་གྲོལ་³བ་ཡང་དོན་དམ་པ་⁴སྒྲིང་པ་ཉིད་
 དང་། བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་སྒྲིང་ཇི་དབྱེར་མེད་པའི་ངོ་པོ་སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མ་དང་
 སངས་རྒྱས་ཐོད་པའི་རང་བཞིན་ཁོ་ནར་བསྒྲིམ་པར་བྱའོ་ཞེས་པའོ། །གལ་ཏེ་ནལ་
 འཁྱོར་པ་དངོས་གྲུབ་ནམས་ཐམས་ཅད་མཉམ་དུ་འགྲུབ་པའི་ཆེད་དུ་སེམས་བདུན་
 པར་བྱེད་འདོད་ན་དེའི་ཆེ་ཉིང་ངེ་འདོན་གསུམ་མདོར་བསྡུས་ནས་བསྒྲིམས་ཏེ།
 སྤྱལ་པའི་འཁོར་ལོ་པར་འདབ་མ་དུག་ཅུ་རྩ་བཞི་པའི་ཁ་སྒྲིང་དུ་སྦྱགས་པའི་⁵བྱ་གར་
 ལྷོ་⁸སྒྲིན་པོའོ། །ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཅིབས་བརྒྱད་པའོག་དུ་སྦྱགས་པར་རྟོ་སྒྲིན་པོའོ། །
 སྒྲིང་དུ་ཁ་སྦྱགས་པའི་ལོངས་སྦྱོད་རྒྱུགས་པའི་འཁོར་ལོ་⁹ཅིབས་བརྒྱད་པར་
 ལོ་དམར་པོའོ། །བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་ཅིབས་སུམ་རྩ་རྩ་གཉིས་པའོག་དུ་ཁ་
 སྦྱགས་པའི་རྟོ་དཀར་པོའོ། །གསང་བའི་འཁོར་ལོར་གནས་པའི་རྒྱང་གི་མེ་བསྐྱལ་
 བའི་གཏུམ་མོའི་¹⁰རང་བཞིན་ལྷོ་¹¹ཡིག་འབར་བའི་འོད་ཟེར་གྱིས་བལྟ་བའི་རྟོ་
 ཡིག་ལ་སོགས་པ་ཡི་གེ་གསུམ་དང་རྩ་ཅིག་དབྱེར་མེད་པའི་ལྷོ་ཡིག་རྩ་ཅིག་སྦྱོས་
 པའི་དགའ་བའི་རང་བཞིན་གྱི་¹²ཐིག་ལེར་གྱུར་པའི་དཔའ་བོ་བསྒྲིམ་ཞིང་བསྒྲིམ་པ་¹³

1 པར་ བཤ། ལྷ།

2 བསྒྲིམ་ བཤ། བ་བསྒྲིམ་ ལྷ།

3 འགྲོ་ ལྷ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་རྒྱར་བཞོད་ཡོད།

4 པར་ བཤ། ལྷ།

5 བདུན་ བཤ། ལྷ།

6 བསྒྲིམ་སྡེ་ བཤ། ལྷ།

7 མདུད་པའི་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྷག་ཡོད།

8 ལྷོ་ ལྷ། ལ་ བཤ། ལྷོ་ ལྷ། ཁོང་དུ་ལེགས་སྦྱར་རྒྱར་བཞོད་ཡོད།

9 ལོར་ བཤ། ལྷ།

10 མེའི་ བཤ། ལྷ།

11 ལྷོ་ བཤ། ལྷ།

12 ཐིག་ བཤ། ལྷ།

13 སྒྲིམ་ཞིང་སྒྲིམ་ བཤ། ལྷ།

[illegible]

[illegible]

1 वर. २१ ॥

2 ཏེཨ་ལྔ་ བཤ། རྩ།

3. 2. 2. 2.

4 བེསྟན་ བེ། རྩ།

5 म. प्र. २१ अ॥

6 ਧ੍ਰ. ਪ੍ਰ. ਤ੍ਰ।

7 བ་ གེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

8 བ་ གེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

9 འཁོར་ལོ་ ལེགས་སྤྱར་ནང་མ་གསལ།

10 ਯਦੁ. ਏ। ਭ।

ཐུན་མཚམས་རྣམས་སུ་ལྟ་མའི་འཁོར་ལོ་ཐམས་ཅད་ཡུད་ཀྱི་སྒྲིམ་པས་གོས་ཆ་ལ་
 སོགས་པ་མ་ལུས་པ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། །ཉལ་པའི་དུས་སུ་སྤར་བཞིན་དུ་ཁྱུ་བར་གྱུར་
 པ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ལྷན་ཅིག་སྒྲིམ་པའི་རང་བཞིན་དུ་བདག་ཉིད་ཀྱང་དེའི་རང་
 བཞིན་དུ་མོས་ཏེ་ཉལ་བར་བྱའོ། །ལྷང་བར་འདོད་ན་སྤར་བཞིན་དུ་ལྟ་མོ་བཞིས་
 བསྐྱལ་བ་ཡུད་ཀྱིས་ལངས་ཏེ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་མཐའ་དག་མ་ཆང་བ་མེད་པར་བྱའོ། །
 དེ་ལྟར་ཇི་སྟེན་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་མཚན་མ་རྣམས་ཐོབ་ཀྱི་བར་དུ་ཉི་མ་སོ་སོར་1དབང་གི་
 ཆོ་གས་བྲས་བྱའོ། །བཟའ་བ་ཐམས་ཅད་ནི་བདུད་ཅི་མུང་པའི་ཆོ་གས་སོ། །གང་གི་
 ཆོ་བཅོམ་ལྷན་འདས་འདི་ཁོ་ན་ཤེས་རབ་མ་མེད་པར་བསྒྲམ་པར་བྱ་བ་དེའི་ཆོ་རྒྱུ་རྟོ་
 ཇི་འཆང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཏེ་རུ་ཀ་ཞེས་པའི་བར་གྱི་གཞུང་
 དང་། གཙོ་2པོ་འདིའི་མཛའ་མོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཉུང་དུའི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པ་
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་པའི་མཐར་ཐུག་དང་། སྒྲོ་སྒྲོང་བཞི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་དབང་
 དུ་བྱས་ནས་ཞེས་པའི་བར་དང་། དེ་ལ་ཞེས་པ་3ལ་སོགས་པ་རྒྱས་གདབ་པོ་ཞེས་པའི་
 བར་དང་4། བཅོམ་ལྷན་འདས་དང་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཆོམ་
 པར་བྱའོ་ཞེས་པའི་བར་དང་། དེའི་5ཇེས་སུ་ནང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་རབ་རྟུ་དབྱེ་བ་
 བསྒྲམ་པས་ཞེས་པའི་བར་དང་། ལྷ་ཆོགས་སྡེ་མ་དང་ཞེས་པ་དང་། ཉི་ཤུ་ཅ་བཞི་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་འབྲུད་པས་ཤེས་པའི་བར་དང་། སྤར་བཞིན་དུ་ཁྱུ་བས་ཞེས་པ་
 དང་། སྤར་བཞིན་དུ་ལྟ་མོ་བཞིས་བསྐྱལ་བ་ལས་ཞེས་པ་སྤངས་ཏེ། གཞན་བརྗོད་པ་
 ཐམས་ཅད་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཁྱུད་པར་ནི་བཅོམ་ལྷན་འདས་འདིའི་ཤར་དང་བྱང་
 དང་རུབ་དང་། ལྟོའི་པདྨའི་འདབ་མ་རྣམས་ལ་རིམ་པ་ཇི་ལྟ་བར་ཨོ་རྟུ་ཁྱི་སྟེ་ཞེས་
 པའི་ས་པོ་ན་ལས་བྱང་པའི་ལྷ་ཆོགས་སྡེ་མ་དང་འདོད་མ་དང་ས་འོག་གནས་མ་དང་

1 རུ་ བཤེས་ ལྟོ།

2 བཅོ་ ལྟོ། མོང་དུ་ལེགས་སྤྱར་ལྟར་བཀོད་ཡོད།

3 ལ་ཞེས་པ་ བཤེས་ ལྟོ། དཔལ་མའི་ནང་མེད།

4 དང་ བཤེས་ ལྟོ། དཔལ་མའི་ནང་མ་གསལ།

5 དེ་ བཤེས་ ལྟོ།

6 ལྟོ་ བཤེས་ ལྟོ།

རབ་བཟང་མོ་ནམས་སྐྱ་མདོག་སྒྲོ་བ་གཡས་བརྒྱུད་གི་ཆེ་པོའི་རྒྱུ་ལྟམས་ཅན། ལྷག་གི་པགས་པའི་ཤམ་ཐབས་ཅན། ལྷག་གཡས་གཉིས་ཀྱིས་གྲི་གྲག་དང་ཐོད་པ་དག་དང་། ལྷག་གཡོན་གཉིས་ཀྱིས་ཁ་ཏྲཱི་ག་དང་ཏ་མ་རུ་དག་འཛིན་པའོ། །དབང་ལྷན་དང་མེ་དང་བདེན་བྲལ་དང་རྒྱུད་གི་འདབ་མ་ནམས་སྐྱ་རིམ་པ་རི་ལྷ་བར་རྩྱ་རྩྱ་རྩྱ་ཡོངས་སྐྱ་གྲུར་པའི་ཆང་འཛོང་¹མ་དང་། འབྲུང་པོ་མོ་དང་། ལྷག་བཞི་མ་དང་། རྣམ་མཁའ་ལ་གནས་མ་ཁ་དོག་མེར་བ། ར་བཟའ་མེར་པོ་ཅན། འོད་ཟེར་མེར་པོ་འཕྲོ་བའི་སྐྱ་ཅན་གཡས་བརྒྱུད་གི་ཞབས་སྐབས་ཅན། སྐུལ་བརྒྱད་ཀྱིས་བརྒྱན་པ། ལྷག་གི་ཡལ་ག་གཡས་པ་དག་གིས་གྲི་གྲག་དང་། ཅང་ཉེའུ་དག་དང་། ལྷག་གཡོན་པའི་ཡལ་ག་དག་གིས་ཁ་ཏྲཱི་ག་དང་པརྒྱའི་སྒྲོད་འཛིན་པ་ནམས་སོ། །བརྒྱད་པོ་འདི་ནམས་ཀྱང་ལྷ་དུ་དཔྱད་དུ་མེད་པའི་སྒྲིག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཉམས་ཤས་ཆེ་བའི་སྒྲིང་པོ་ཅན། མདོན་པར་གསར་པའི་ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་གར་ཐབས་ཅན། ཞལ་གྱི་²པརྒྱ་མཆེ་བ་རུང་ཟད་གཅིགས་པ། དབུ་སྒྲ་ཁམ་པ་གྲུན་པར་འགྲང་བ། ཐོད་པ་ལྗེའི་ཕྱང་བ་ཅན། མི་རུས་ལས་བྱུང་བའི་འཁོར་ལོ་ཅན་དང་ན་རྒྱན་དང་མགུལ་རྒྱན་དང་། ལག་གཏུབ་དང་། སྒྲ་རགས་དང་། རིལ་བུ་གཡེར་³ཁ་དང་། དཔྱད་རྒྱན་དང་། ཞབས་གཏུབ་ཀྱི་རྒྱན་ཅན། མི་མགོ་ཚོན་པ་ལྷ་བརྒྱའི་ཕྱང་བ་སྒྲིལ་འཕྱང་བ། བསྐལ་པའི་མཐའི་མེ་འབར་བ་ལྷ་བྱར་རོལ་པའི་འོད་ཟེར་གྱིས་བདུད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒྲིག་པ། གད་མོ་དགོད་པས་ཆེར་འཛིགས་པ། ཞལ་གཅིག་པ། ཞལ་ནས་ཁྲག་འཛིག་པ། ལྷན་གསུམ་པ། ལྷག་བཞི་པ། ལྷ་ནམས་ཤིན་ཏུ་ཆེས་སྒྲག་པར་མཛད་པ། གཙོ་པོ་ལ་མདོན་དུ་ཕྱོགས་ནས་གཟིགས་པ་ནམས་བསྐྱེམ་སོ། །འདིར་བཅོམ་ལྷན་འདས་རྩོ་རྩེ་སེམས་དཔའ་⁴ནི། །སངས་རྒྱས་ལྷ་ཡི་ཙོད་པན་བརྒྱན་⁵། ཞེས་པའི་གསུངས་ལས།

1 ཆོང་ བོ། ལྷ།

2 ཞབས་ཀྱི་ བོ། ལྷ།

3 ཞེར་ བོ། ལྷ།

4 དཔའ་ བོ། ལྷ། དཔའ་མའི་ནང་མ་གསལ།

5 རྒྱན་ བོ། ལྷ།

མི་བསྐྱོད་པ་ལ་སོགས་པའི་སངས་རྒྱལ་ལྟ་མཉམས་ཀྱིས་རྒྱས་གདཔེ། །སྤྱོད་ཀྱིས་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་རྒྱུ་ལྟ་མཉམས་ཀྱིས་བསྐྱོད་པ་དང་རྣམ་པར་རྒྱུང་མཛད་དང་
 རིན་ཆེན་འབྱུང་ལྟ་དང་འོད་དཔག་མེད་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །ཆང་འཛོང་མ་ལ་སོགས་
 པ་རྣམས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ནོ། །ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་བདུད་ཅིས་ཆོས་པ་ཡང་གཏུམ་
 མོའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་བསྒྲུབ་པ་ཁོ་ནས་སོ། །དེ་ལྟར་དེ་རྒྱུ་རྣམས་¹སྤྱོད་ཀྱིས་
 བསྐྱོར་བའི་བཅོམ་ལྟ་འདས་ཏེ་རྩ་ཀ་འདི་ཁོ་ན་ཨ་རྩི་²ཏུ་དང་ཐིགས་པ་དང་སོལ་
 བའི་སྐྱོར་བ་རྣམས་ལ་དང་དུག་ཞི་བའི་སྐྱོར་བ་རྣམས་³བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །མོ་གཤམ་
 ལྷས་བྱེད་པའི་སྐྱོར་བ་ལ་ནི་ཤེས་རབ་དང་བཅས་པའོ། །རིག་པ་འཛིན་པའི་བྱེད་པ་
 ལ་ནི་བཅོམ་ལྟ་འདས་དང་སྤྱོད་ཀྱི་སྤྱོད་རྣམས་དཀར་པ། སྤྱོད་ཀྱི་སྤྱོད་རྣམས་
 རྣམས་དམར་བ་རྣམས་སོ། །མོ་གཤམ་དང་བྱེད་མེད་བྱ་གི་བའི་ལྷས་ཀྱི་ཆོ་ག་ལ་ནི་
 བཅོམ་ལྟ་འདས་འདི་ཤེས་རབ་དང་བཅས་པའོ། །དེའི་ཆོ་ག་ཤེས་རབ་མ་མེད་པ་ཉིད་
 ལ་སྤངས་པའི་⁴གཞུང་རྒྱུ་རྣམས་པ་ཏེ་བར་བྱུང་བར་བྱའོ། །གཞུང་ལ་ཡས་ཁང་
 འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དུར་བྱོར་བྱེད་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བ་རྣམས་པར་བསམ་
 པར་བྱའོ། །དེའི་ཤར་སྤྱོད་ཀྱིས་གཏུམ་དག་ཅས་བྱ་བའི་དུར་བྱོར་དེ། ལྷ་པ་པོ་
 རྣམས་སུ་འཛིན་པ་ཞེས་པ་མིང་གཞན་ནོ། །ཤིང་གི་རྩ་ག་སྤྱོད་ཡང་ན་པ་ཏེ་མེད། །རྩ་
 འབྲུལ་ཆེན་པོ་བ་སྤང་པོ་ཆེའི་གདོང་པ་ཅན་ནམ། མ་དེའི་གདོང་⁵ཅན་ནོ། །སྤྱོད་ཀྱིས་
 སྐྱོར་བ་དབང་པོ་ཉིད་བང་དོ། །ལྷ་མོར་རྒྱས་དཀར་པོའོ། །སྤྱོད་ཀྱིས་སྤྱོད་ཀྱིས་པ་ཞེས་
 བྱའོ། །མེར་དག་ཏུ་གྲོག་པ་འམ་མིང་གཞན་རབ་འཛིགས་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱའི་དུར་བྱོར་
 དེ། ཤིང་ཀ་ར་རྒྱུ་ལོ། །ལྷ་པ་པོ་ལོ། །རྩ་འབྲུལ་ཆེན་པོ་པ་རའི་གདོང་པ་ཅན་ནམ་
 བྱའི་གདོང་པ་ཅན་ནོ། །མེ་ལྷ་དང་། བསྐྱོར་ཆེན་པོ་དཀར་པོ་དང་། རྩན་སྤྱོད་པོ་

1 རྣམ་ བཤ། ལྷ།

2 རྩ་ བཤ།

3 ལ་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྷ།

4 པའི་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

5 ཅན་ནམ། མ་དེའི་གདོང་ བཤ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

6 དུམ་ བཤ། ལྷ།

7 རྩན་ བཤ། ལྷ།

ཞེས་བྱ་བའོ།¹ ཁྲོར་ཀོང་རུས་འཛིགས་པ་ལམ་མིང་གཞན་འཛིགས་རུང་མུན་པེ་ཞེས་
 པའི་དྲུང་ཁྲོད་དེ། བིང་ཨ་མུའམ། བེ་རྩི་ག་དང་རྩུ་འཕུལ་ཆེན་པོ་པ་མ་ཉིའི་གདོང་
 པ་ཅན་ནམ་སྟག་གདོང་ཅན་དང་། གཤིན་རྗེ་དང་པར་དཀར་པོ་དང་སྤྲིན་འཁོར་བྱེད་
 དོ། བདེན་བུལ་དུ་ཀྱི་ཅོ་ཅོར་སྟོགས་པ་ཞེས་པ་ལམ། མིང་གཞན་ནལ་འཕྲོར་
 མང་དུ་འདུས་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་པ་སྟེ། བིང་པ་ཀླུ་མ་མ་ཉ་དང་། རྩུ་འཕུལ་ཆེན་པོ་
 པ་མ་ཉིའི་གདོང་པ་ཅན་ནམ་བྱ་ཁོད་གདོང་དང་། སྤྲིན་པོ་དང་། མཐའ་ཡས་སྟོན་པོ་
 དང་། སྤྲིན་འཛིགས་རུང་དོ། རྒྱབ་རྒྱ་འབར་བ་འཁྲུགས་པ་ལམ་མིང་གཞན་ཁྲོ་པོའི་
 མེ་ཞེས་པའི་དྲུང་ཁྲོད་དེ། བིང་ཀླུ་མ་མ་ཉ་དང་། རྩུ་འཕུལ་ཆེན་པོ་པ་མུ་སྤྲིན་
 གྱི་གདོང་པ་ཅན་ནམ། རུག་པའི་གདོང་པ་ཅན་དང་། རྩུ་ཁྲོད་ཁྲོ་བས་ཀྱི་རྩུ་རྒྱང་གྱ་
 དང་། སྤྲིན་འཛིགས་རུང་དོ། རྒྱང་དུ་འཛིགས་རུང་མུན་པ་ཅན་ནམ་མེད་གེའི་སྟེ་མེ་
 ཉ་ཡིག་ཆེན་པོའི་སྟེ་སྟོགས་པ་ཞེས་པའི་དྲུང་ཁྲོད་དེ། ཨ་རྩུ་ནལ། ཨ་ལྷ་ཆོང་དང་།
 རྩུ་འཕུལ་ཆེན་པོ་པ་མི་དགས་ཀྱི་གདོང་པ་ཅན་ནམ། ཡག་གི་གདོང་པ་ཅན་དང་།
 རྒྱང་ཆོང་དང་། རིགས་ལྡན་ཁྲོ་པོ་དང་། སྤྲིན་ཆར་འབེབས་སོ། བྱང་དུ་ཀླུ་མིའི་དྲུང་
 ཁྲོད་དམ་མིང་གཞན་གཉིས་མེད་བྱེད་ཅེས་པའོ། བིང་ཨ་ལྷ་ཆོང་མུ།² ཀླུ་མི་དང་།
 རྩུ་འཕུལ་ཆེན་པོ་པ་མིའི་གདོང་པ་ཅན་ནམ་མེད། བྱེ་ལའི་གདོང་པ་ཅན་དང་། ལུས་
 ངན་དང་། ལོག་འདྲེན་དག་དང་། འཛིག་པོ་དམར་པོ་དང་སྤྲིན་ཕྱར་ཕྱར་སྟོགས་སོ།
 དབང་རྩུ་པུན་ཆོགས་ནགས་སམ་མིང་གཞན་མཆོ་སྤྲིས་དཔའ་པོ་ཞེས་པའི་དྲུང་
 ཁྲོད་དེ། པཌ་འམ་ན་ག་གེ་སར་དང་། རྩུ་འཕུལ་ཆེན་པོ་པ་མུང་གི་གདོང་པ་ཅན་ནམ།

-
- 1 བྱའོ བེ། ལྷ།
 - 2 པ་ཅན་ བེ། ལྷ། པར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།
 - 3 རྩུའི་ བེ། ལྷ།
 - 4 རྩུ་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།
 - 5 ལྷ་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།
 - 6 ལྷ་ བེ། ལྷ།
 - 7 ལྷ་འམ་ བེ། ལྷ།
 - 8 ཅན་དང་། བེ། ལྷ།

ག་ཟའི་གདོང་པ་ཅན་དང་། དབང་ལྡན་དང་། ཏུང་སྦྱང་སེར་པོ་དང་། སྤྲིན་གཏུམ་
བྱེད་དོ། །ཐམས་ཅད་དུ་མཆོད་རྟེན་ལྷ་བུར་བྱའོ།
དེ་ལ།¹

ས་སྦྱང་དཀར་པོ་ལ་ཞོན་པ།
རྩོ་རྩོ་ཅན་སེར་མིག་སྦྱང་པའོ།
ནག་མོ་འཁོར་ལོ་དབྱུག་ཏོ་དུང་།
གླིང་ལྷ་འཛིན་མཁའ་ལྷིང་གནས།
མེ་ལྷ་དམར་པོ་སྤྲིན་མ་དང་།
རལ་གཙུག་²སྦྱར་ར་འབར་ཞིང་འབྲུག།
ཆོན་པོ་རབ་གནས་མི་འཛིན་པ་དང་།
བགང་སྤང་རིལ་པ་དབྱུག་གུ་འཛིན།
གཡོན་བརྒྱུད་བ་ཡི་རྒྱུད་པ་ཅན།
དུས་ནག་མ་ཉེ་ལ་གནས་པ།
སྤྲིན་གྱི་དུ་འབར་ཞིང་ཁྲིས།
དབྱུག་པ་སྤྲིན་མཛུབ་འཛིན་པའི་ལག།
དེ་འདྲའི་བདེན་བུལ་རོ་ལ་གནས།
གཅེར་བུ་མི་རུས་ཀྱིས་བརྒྱན་པ།
ཞལ་ནི་མཆེ་བ་གཅིག་པ་ནས་³།
གྲི་གུག་ཐོད་པ་དག་འཛིན་པའོ།
ཁུ་སྤྲིན་ལ་ནི་ཁུ་ལྷ་དཀར་།
གདེངས་ཀ་བདུན་པ་སྦྱལ་ཞགས་འཛིན།

1 ལས་ བེ། ལྷ།

2 རྩུག་ བེ། ལྷ།

3 ཅན་ བེ། ལྷ།

ཨེ་ན་ཡེ་མེར་ལ་གནས་པའི།
 རྒྱང་ལྷ་ལྷང་གྲུ་རྒྱང་རས་ཅན།
 མེ་ལ་གནོད་སྦྱིན་ཆེན་པོ་སེར།
 ན་ཀྱུ་ལ་བེ་ཇ་པུ་ར་འཛིན།
 བྱི་བར་མྱང་ཆེན་གདོང་ཅན་དཀར།
 ལ་ཡུག་དབུག་ཏོ་ལ་དུ་ཕྱེང་།
 དབང་ལྷན་ཁྲུ་མཆོག་ལ་ཞོན་དཀར།
 རལ་པའི་ཐོར་ཚུགས་རུས་རྒྱན་ཅན།
 ཅེ་གསུམ་པས་²མཆོན་ཁྲུ་ག།
 ཅང་ཏེའུ་འཛིན་པའི་ཡུག་ཅན་ནོ།
 གདེངས་ཅན་བརྒྱད་རྣམས་མིའི་གདོང་ཅན།
 རྒྱན་བཟང་ཅན་གང་བྱེད་བྲག་མེད།
 བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་འདི་བརྒྱ་དུག།
 གཡོན་པས་ཡིད་འོང་མ་ལ་འཁྱུད།
 ཅིག་ཤོས་ཡུག་ནི་སྒྲིག་བཅས་རྣམས།
 ཤིང་དང་ཉི་བར་ཤེས་པར་བྱ།
 ཉི་མར་སྤྲིན་པོ་གཤིན་རྗེ་མ།
 གཞན་རྣམས་ཟླ་བར་ཟླ་འོད་ཅན།
 དབང་ལྷན་གཤིན་རྗེ་སྤྲིན་པོ་རྣམས།
 མ་གཏོགས་རིན་ཆེན་ཅོད་པན་འབར།
 དབང་ལྷན་རིན་ཆེན་ཅོད་པན་ཅན།
 ཞེས་ཀྱང་རྩ་འཁྲུལ་ཆེན་པོ་བརྒྱད།

1 རྗེ་ཡེ་ བཤེན་ལྷ།

2 ལས་ བཤེན་ལྷ།

ལུས་སྟོད་ཕྱེད་མཐོང་ཕྱག་རྣམས་ཀྱིས།།

ཐོད་པ་འདྲིན་པར་བྱེད་པ་སྟེ།།

གཞན་གྱིས་བྱིན་པའི་གཏོར་མ་ལ།།

གཡས་པས་འདྲིན་པའི་ཚུལ་གྱིས་འབྲེལ།།

སྤྱིན་རྣམས་ཁ་དོག་སྣ་ཚོགས་པའོ།།

བརྒྱུད་པོ་འདི་རྣམས་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་ཤིང་མཚོག་གཞན་རྣམས་ཀྱིས¹་
 ཀྱང་མཛེས་པར་བྱས་པས་བྱ་རོག་དང་། རུག་པ་དང་། བྱ་མོད་དང་། ཁྲི་དང་། ཅེ་
 སྤྱང་དང་། སེང་གེ་དང་། ཡག་དང་། རྟག་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་འདེགས་སུ་
 རུང་བ། གོ་རྒྱ་སྤྲེ²་ལ་སོགས་པའི་སྤྱུལ་རྣམས་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་བྱེད་འཇུག་པ་ཅན། ཀེང་
 རུས་དང་། གསལ་ཤིང་གིས་ཕྱག་པ་དང་། འཕྱང་བ་དང་། ཕྱེད་ཆོག་པ་དང་།
 མགོ་པོ་དང་། ཐོད་པ་དང་། ལུས་མོ་དང་། རོ་མགོ་མེད་པ་དང་། རུས་པ་དང་མགོ་
 པོའི་དུམ་བུ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་འདེགས་སུ་རུང་བ་སྣ་ཚོགས་པའི་གྲུབ་པ་དང་
 རིག་པ་འདྲིན་པ་རྣམས་དང་། དམ་ཆོག་སྟོད་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་³དང་། རྣལ་འབྱོར་
 མའི་ཚོགས་ཀྱིས་དང་། ཅ་ཅོ་སྟོགས་པའི་སྟོད་སྦྱིན་དང་། རོ་ལངས་དང་། སྤྱིན་པོ་
 ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དང་། འདི་དང་དེ་ནས་རྒྱག་པ་དང་། གཡོ་བ་དང་།
 འགྲང་བ་དང་། རྫོད་པ་དང་། ཉལ་བ་དང་། ལྷང་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་རོ་མཚར་
 བར་བྱེད་པ་དུར་ཁྲིད་ཆེན་པོ་རྣམས་སོ་ཞེས་པ་པཊིཏ་ཨ་ལྷ་⁴ལ་རྒྱལ་སྤྱོད་པ་
 འདེགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཆེན་པོའི་འགྲེལ་པ་ལེའུ་
 བདུན་པའོ།། ॥

*

1 ཀྱིས་ བོ།

2 གོ་རྒྱ་སྤྲེ། གོང་དུ་ལེགས་སྤྱད་རྒྱར་བཞག་ཡོད།

3 པ་ བོ། ལྷ། དཔར་མར་མ་གསལ།

4 ཨ་ ལྷ། གོང་དུ་ལེགས་སྤྱད་རྒྱར་བཞག་ཡོད།

ཐུན་ཐོག་གི་ཚེ་གའི་ལུ་

ཐབས་ཀྱི་ཡན་ལག་རྒྱས་པར་སྟོན་པ་དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལོ། །ཤིང་གིས་
 ཞེས་པ་རྒྱུད་གཞན་ནས་བཤད་པས་སོ། །མེ་ཏོག་གིས་ཞེས་མདོར་བསྟན་པ་རྒྱས་པར་
 སྟོན་ཏེ། མེ་ཏོག་ལྗེ་ཞེས་པ་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་པདྨ་ལ་སོགས་པ་མེ་ཏོག་ལྗེ་རྣམས་
 སོ། །འོ་མས་ཞེས་པ་ཉེ་བར་མཚོན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་མར་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །
 ནང་གི་ཐུན་ཐོག་ལ་ནི་ཤེས་རབ་མ་ལྗེ་རྣམས་ཀྱི་རྩལ་རྣམས་མེ་ཏོག་ལྗེ་དང་། འོ་མ་
 རེ་སྐྱེས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཏེ། སྟོམས་པར་ཞུགས་པ་ན་དེའི་རྩལ་དང་བསྐྱེས་
 པར་²ཤེས་པར་བྱའོ་ཞེས་གཞན་དུ་གསུངས་ཏེ། འདིར་སྐབས་མ་ཡིན་ནོ། །ཞི་བ་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་འདིར་ཐབས་གྲུ་བཞི་པ། རྒྱ་དང་ཟབས་སུ་སོར་བཅུ་གཉིས་
 པའོ། །དེའི་ཁའི་སྟངས་དུ་སོར་བཞིའི་བར་དོར་རོ། །དེར་³ཕྱོགས་བཞི་རྣམས་སུ་དྲི་རྩེ་
 དཀར་པོ་ཅེ་ལྗེ་པ་ཁ་གྲུས་པའོ། །དེའི་ཕྱི་རོལ་དུ་རྒྱ་དང་དཔངས་⁴སུ་སོར་བཞི་པ་
 ཐབས་ཁྲུང་གི་དབྱིབས་ཅན་ཅུང་ཟད་ཁ་དམའ་བའི་⁵ཀླན་ནས་ཁ་བྱེར་ཏེ། མཚམས་
 རྣམས་སུ་དྲི་རྩེ་ཅེ་གསུམ་པས་མཚན་པ། ཕྱི་རོལ་སུ་དྲི་རྩེ་ཅེ་གསུམ་པ་སྟོན་པའི་ཕྱིང་
 བས་བསྐྱོར་བའོ། །ཐབས་ཀྱི་དབུས་སུ་ཆོས་འབྱུང་གི་དབུས་སུ་གནས་པའི་ཁང་པ་
 བཅེགས་པར་པདྨ་སོར་བཅུད་པ་དྲི་རྩེ་ཕྱིང་བ་སྟོན་པོ་དང་དམར་པོ་དང་དཀར་པོ་
 གསུམ་གྱིས་བསྐྱོར་བའོ། །པདྨའི་སྟངས་དུ་དྲི་རྩེ་ཅེ་ལྗེ་པ་མགོ་ཤར་དུ་བསྟན་པ་སོར་
 བཞིའི་ཆད་ཅམ་པ་དཔངས་སུ་སོར་གཅིག་པའོ། །དེའི་སྟངས་དུ་པདྨའོ། །དེའི་དབུས་
 སུ་ཉི་མའོ། །དེའི་སྟངས་དུ་རྩྭ་འོ།⁶ །ཁང་པ་བཅེགས་པའི་གྲ་རྣམས་སུ་དྲི་རྩེ་ཅེ་དགུ་པ་
 སོར་པོ་རྣམས་སོ། །དྲི་རྩེ་ཁ་གྲུས་པ་ལ་སོགས་པ་འདི་ཐམས་ཅད་རྩལ་ཚོན་གྱིས་བྲིས་

1 ཀྱིས་ བཤ། ལྷ།
 2 ཐོས་པ་ བཤ། ལྷ།
 3 དེའི་ བཤ།
 4 པངས་ བཤ། ལྷ།
 5 དམར་བ་ ལྷ། མོང་དུ་ལེ་ཁྱུར་ལྟར་བཞུགས་པའོ།
 6 རྩྭ་ བཤ། ལྷ།

པ་ཡང་ངོ་ཞེས་པ་བསྟུས་པའི་དོན་དོ། །ཡན་ལག་གི་དོན་བརྟུན་པར་བྱ་སྟེ། རྟེན་
 ཡིག་བདག་ཉིད་བསྟུན་པ²ནི་རྟེན་ལས་སྟེས་པའི་རང་བཞིན་དུ་མོས་པ་འཇུག་གི་སྟངས་
 པོ་ཅན་ནོ། །འཁོར་ལོ་ནི་གཞལ་ཡས་ཁང་ངོ་། །གྲགས་མ་ནི་ཆོས་འབྱུང་ངོ་། །ཞེ་
 སྟེ་མ་ཡ་ཞེས་པ་ཡི་གེ་བཞི་ལས་སྟེས་པའི་ས་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་བ་བཞི་ཡོངས་སུ་
 གྱུར་པར་འཁོར་ལོ་མོས་པར་བྱའོ། །སྟེ་བས་དེ་སྟེ་བས་མཆོན་པའི་པར་སྟུང་པར་
 དུ་བྱས་པའོ། །ཉིས་འགྱུར་ནི་བརྒྱ་དྲུག་ལྷག་པའི་ཉིས་བརྒྱའོ། །ཁ་ལུ་ཀ་ཡིས་ཞེས་པ་
 གྱུར་གུམ་གྱི་བྱེ་བྲག་གིས་སོ། །འོག་དུ་པར་ཞེས་པ་རྩི་རྩེ་འོག་དུ་པར་འདབ་མ་
 བརྒྱད་པའོ། །སོར་བརྒྱ་གཉིས་ནི་སྟོབ་དཔོན་གྱི་སོར་མོས་སོ། །དེར་ཞེས་པ་ཐབ་
 དུའོ། །རེ་རེའི་ཞེས་པ་ཨ་མ་ལ་སོགས་པའོ། །དམར་བའི་རྩི་རྩེ་ཐོད་པ་འཛིན། །
 ཞེས་པ་དམར་བའི་རྩི་རྩེ་དང་ཐོད་པའི་ཞེས་སྟག་མཆོན་ནོ། །འབྲག་གིས་གང་པའོ། །
 སྟོང་པ་ཉིད་ཅེས་པ་ཐབ་ཀྱི་དབུས་སུ་ཅི་ཡང་མི་བྱི་བའོ། །ཤ་ལུ་མི་གོ་ཀྱང་ཏ་ནའི་
 བས་སོ། །མེ་ནི་སྤར་བཤད་པའོ། །ཞི་བ་ལ་སོགས་པ་འདི་རྣམས་ཀྱི་བྱུང་པར་གཞན་
 རྣམས་ནི་ཁོ་ཁོས་བྱས་པའི་སྦྱིན་སྟེག་གི་ཆོག་འོད་ཀྱི་སྟེ་མར་དེ། འདིར་བཤད་པའི་
 བྱུང་པར་དང་མི་མཐུན་པ་སྤངས་ནས་གཟུང་བར་བྱའོ། །འདི་ཐམས་ཅད་ནི་ཀུན་
 རྩིབ་དུའོ། །དོན་དམ་པར་ནི་ཅི་ཡིས་བསྟེན། ཅེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །

འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེན་བརྒྱད་པའོ། །

*

1 སྟེས་ བཤེས།

2 པ་ བཤེས། དཔར་མའི་ནང་མེད།

3 ཨ་མ་ རྩེ། མོང་དུ་ལེཌ་སྤར་ལོད་ཡོད།

4 ཐབ་ བཤེས།

སྒྱུད་པའི་ལེའུ།

རིམ་པ་གཉིས་པོ་མངོན་དུ་གྱུར་པ་ན་ཡང་སྒྱུད་པ་དང་བུལ་ན་ཕུག་གུ་ཆེན་
 པོའི་དངོས་གྲུབ་མེད་དོན་ཞེས་པས་སྒྱུད་པ་གསུངས་པ་དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་འོ།
 ལུས་དང་རག་དང་ཡིད་རྣམས་ཀྱི་བྱ་བ་བྱུང་པར་ཅན་ནི་སྒྱུད་པ་འོ། །ཉག་པ་དང་ཆད་
 པ་ལ་སོགས་པའི་མཐའ་ལས་འདས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་སྒྱུད་པ་གཞན་ལས་བྱུང་པར་དུ་
 འཕགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཤིན་དུ་མཆོག་གོ། །འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་
 སོན་པ་འོ། །ཁ་ཅིག་དུ་བྱད་མེད་ཤིན་དུ་མཆོག་དུ་གྱུར་ཞེས་སྒྲིག་པ་དེའི་ཆོད་བརྒྱང་
 རས་ཞེས་པ་སྟག་མའོ། །འདི་ནི་ཆོད་ཅིང་གཡེངས་པ་ལས་བབ་ཅིང་ཕྱེ་མི་བྱའོ་ཞེས་
 གསུངས་པ་དངོས་གྲུབ་བརྒྱད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་འོ། །ས་འོག་དང་མིག་སྒྲན་དང་
 ཀླང་པ་བྱུག་པ་དང་རི་ལུ་དང་མི་སྒྲང་བ་དང་རལ་གྱི་དང་རོ་དང་བརྒྱད་ལེན་གྱི་
 དངོས་གྲུབ་རྣམས་སམ། དབང་ཕྱུག་གི་ཡོན་ཏན་བརྒྱད་རྣམས་སོ། །འདིས་ནི་རྣམ་
 པ་ཐོབ་པ་ལ་འདོད་པར་གྱུར་ན། སྒྱུད་པ་རྗེས་སུ་གནང་སྟེ། གང་ལས་རྣལ་འབྱོར་
 ལ་དགའ་བ་འདི་བག་མེད་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་། རྒྱགས་ཆོལ་⁴པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་
 འདི་ལ་མི་ཚུགས་ལ། འདི་རྣམས་ཆར་གཅོད་པ་དང་རྗེས་སུ་འཇིན་རྣམས་པར་འགྱུར་
 ཞིང་། བྱང་བ་དང་ཆ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་ཐེལ་གྱིས་མི་མོན་པ་སྟེ།
 འཇིག་རྟེན་གྱི་ཆོས་བརྒྱད་ལ་སོགས་པས་མི་གཞོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྐྱེལ་པ་ཀུན་ལས་
 ཐོལ་བ་འོ། །གང་གི་ཕྱིར་ནམ་མཁའ་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་པ་སྟེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་
 མཉམ་པ་ཉིད་དུ་རྩི་གཅིག་པ་འོ། །སྟོང་⁶ཉིད་ལ་དགའ་ཞེས་པ་སྟོངས་མོ་སྟོང་བའི་
 དུས་སུ་སྟེར་བ་པོ་རྣམས་ཀྱིས་མེད་ཅེས་དགག་པ་བྱས་པ་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་
 དམ་པ་སྟོང་པ་ཉིད་བསྟོམ་པར་བྱའོ། །སྟོམ་པ་ཞེས་པ་ཐབས་སྟོམ་⁷པ་འོ། །ཐ་ན་

-
- 1 ལས་ བོ། ལྷ།
 - 2 ཕུག་ རྟེ། གོང་དུ་ལེ་ལྷུར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།
 - 3 ཐོད་ བོ། ལྷ།
 - 4 འཆོལ་ བོ། ལྷ།
 - 5 དུ་ བོ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།
 - 6 པ་ བོ། ལྷ། པར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།
 - 7 བསྟོམ་ བོ། ལྷ།

མེད་པ་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་དབྱེར་མེད་པའོ། །ཆོས་ལ་མཆོག་ཏུ་གཞིལ་བ་ནི་
གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཆོས་དེ་ལ་རྒྱན་མི་འཆད་པར་མངོན་པར་སྦྱར་བའོ། །རྗེས་ཞེས་
པ་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་ཆོགས་པ་བས་ཀྱིས་ཆོས་¹པས་ཇི་ལྟར་འདོད་པའི་ཡུལ་དང་།
དུས་དང་སྐབས་ཀྱི་བྱེད་པར་ནམས་སུ་གོམས་པའི་བྱེད་པར་ལས་ནལ་འཕྱོར་རྒྱན་མི་
འཆད་པར་འགྱུར་བས། མར་མེད་²སྤྱོད་བྱའི་³ཡུན་རིང་པོར་བསགས་པའི་ཡུག་གི་
ལུན་པ་བཞིན་དུ་ཡུན་རིང་པོར་བསགས་པ་⁴ཡང་ནམ་པར་རྟོག་པའི་སྦྱོན་གྱི་ཆོགས་
ཆེན་པོ་བསལ་⁵ནས་ཡུག་ཆེན་པོ་མངོན་⁶དུ་བྱའོ་ཞེས་པ་སྤྱིར་དོན་རྟོ། །སྤྱོད་པའི་
ནལ་འཕྱོར་དང་ལྷན་པའི་ཞེས་པ་དང་པོར་དོན་ལ་དུག་པའོ། །རྒྱུད་དུ་ནི་སངས་རྒྱུས་
ཐོད་པའི་རྒྱུད་སྤྱོད་ཡུག་བཅུ་གཉིས་པར་རོ། །རང་བཞིན་གྱིས་དག་ཅེས་པ་ལ་གལ་
ཏེ་རང་བཞིན་གྱིས་འགྲོ་བ་དག་ན་དེའི་ཆོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོ་ཁོ་ན་འབད་པ་མེད་པར་
ཡུག་རྒྱུ་ཆེན་པོ་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཞིང་། ནལ་འཕྱོར་གོམས་པས་ཅི་བྱ་ཞེ་ན། ཅི་ནམ་
པར་རྟོག་པས་ཉམས་ཞེས་བརྗོད་པ་མ་ཡིན་ནམ།

དེ་ནི་དེ་ཀྱི་ཕྱིར་ཡེ་ཤེས་ཞབས་ཀྱིས་གསུངས་པ།

ཐ་མལ་ནམ་རྟོག་འདུག་ལས་གཞན།།

སྤྱོད་པའི་སྤྱུག་བསྐལ་ཅི་ཡང་མེད།།

དེ་དང་འགལ་འདི་⁷སེམས་འདི་ཡིས།།

མངོན་⁸དུ་འདིར་ནི་བྱེད་པར་འགྱུར།། ཞེས་སོ།

མི་འཛིགས་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེའུ་དགུ་པའོ། །

1 ཟེལ་གྱིས་ བཅ། ལྷ།

2 མར་ བཅ།

3 བྱས་ བཅ། ལྷ།

4 པའི་ བཅ། ལྷ།

5 གསལ་ བཅ། ལྷ།

6 སྦྱོན་ བཅ། ལྷ།

7 པའི་ བཅ། ལྷ།

8 སྦྱོན་ བཅ། ཞོང་དུ་ལེའུ་སྤྱུར་ལྟར་བཞེད་ཡོད།

སྒྲུབ་ཆེན་པོ་ཁྱད་པར་ཅན་དང་མོ་ཤམ་གྱི་བྱས་གྱི་ཆོ་གའི་ལུ་ཤུ།

གཞན་རྗེས་སུ་འདོན་པ་སྒྱུར་བྱེད་པ་ལ། དེའི་ཐབས་བཤད་པའི་ཆེད་དུ་
 གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །སེམས་ཅན་དོན་གཅིག་རབ་ངེས་པ་།།
 ཞེས་པ་གང་དུ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་གཅིག་ཕུ་ལེགས་པར་ངེས་པར་བྱ་བའོ།། །གསེར་
 བྱེད་ཅིང་རབ་དུ་གསལ་བར་བྱེད་དོ་ཞེས་པ་གསེར་བྱེད་དོ། །བྱ་རུའི་ནི་བྱ་རུའོ།།
 གང་གིས་ཞེས་པ་གསེར་གྱིས་སོ། །མུ་ཏིག་ལ་སོགས་པའི་ནོར་རྒྱལ་གྱིས་ནོར་ལྡན་
 དུ་འགྲོ་སྟེ་འགྱུར་བའོ། །འདིའི་སྟེང་²གསེར་དེའི་ཕྱི་རོལ་གྱི་སྒྲུབ་རྒྱུད་གཞན་དུ་
 བཤད་པ་རྒྱལ་མེད་ཅེས་མདོར་སྟོན་པ་རྒྱས་པར་སྟོན་དེ། བྱན་ཐུགས་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པའོ། །ཐུགས་གཞན་གྱི་ཞེས་པ་ཐུགས་གཞན་ནོ། །འོན་ཀྱང་གྲུབ་པའི་སྒྲུབ་
 གཞན་ནོ། །དངུལ་གྱི་ནི་དངུལ་ལོ། །དེ་རྒྱལ་ཅི་ཞེས་པ་ནི་སྒྲུབ་ཆེན་པོའི་མཆོག་དེ་
 ཅི་ཡིན་པའོ། །བསྐྱགས་པས་གྲུབ་པ་ཞེས་པ་གང་ལ་བསྐྱགས་པ་སྟེ་ནང་གི་བརྗོད་པས་
 གྲུབ་པའི་ཐུགས་ཡོད་པ་དེ་ནི་དེ་སྟེང་དོ། །དེ་ཡང་ཞེས་པ་དེ་ཡང་གྲུབ་པོ། །སྟོད་དུ་
 རྟོ་ཤེས་རབ་གྱི་པར་རོ། །བཟང་³པ་ནི་སྒྲུབ་ནོ། །བཅུད་ཅེས་བྱ་བ་བྱང་ཆུབ་གྱི་
 སེམས་སོ། །དབུས་སུ་ནི་⁴པར་འཛིན་པོ། །རོ་སྟེང་གི་གནས་ནས་འོག་འདྲན་ནི་ཞེས་པས་
 རོ་བཅུད་མ་ནི་ཨ་ཐ་རྒྱ་ཏི་སྟེ། དེར་གནས་པའོ། །གཞིན་རྒྱ་མ་ནི་དར་མ་སྟེ་ལོ་བཅུ་
 དུག་མའོ།⁵ །དེ་ཡང་ཞེས་པ་མོ་དེ་ཡང་རོ། །དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ནི་སངས་རྒྱས་
 མོད་པའི་རྒྱལ་འབྱོར་མ་རྒྱལ་སོ། །སྐྱུག་བྱོ་མེད་པའི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་མེད་པའོ།།
 སྐྱུག་བྱོ་སྟོན་པ་ནི་རྒྱལ་དང་ལྡན་པ་ལས་སོ། །མི་གྲུབ་ཅེས་པ་ཤེས་རབ་དང་།
 ཐབས་གྱི་ཁྱབ་དག་མཉམ་པའི་དུས་སུ་འཕྲོས་པ་ནི་དངོས་གྲུབ་གྱི་རྒྱལ་ཞེས་དགོངས་

1 བྱའོ་ བཤ། རྟོ།
 2 རྟོ་ བཤ། རྟོ།
 3 བཟང་ རྟོ། མོང་དུ་ལེཾ་སྒྱུར་བཞོད་ཡོད།
 4 རྟོ་ བཤ། རྟོ། དཔར་མའི་ནང་མེད།
 5 བའོ་ བཤ། རྟོ།
 6 རྒྱག་ བཤ། རྟོ།

པའོ། །སངས་ཀྱིས་ནམས་ཀྱི་འདྲན་པའི་གནས། །ཞེས་འབྲེལ་པའོ། །དུས་ཅུང་ཟད་
བཟུང་བས་མཉམ་པར་འཕྲོས་པས་ཀྱང་སྒྲན་ཆེན་པོ་རྟེན་གསེར་སྦྱབ་པར་བྱེད་ཅིང་།
བར་མེད་པར་བཟུང་བས་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་སངས་ཀྱིས་ཉིད་དོ་ཞེས་པ་
སྟོང་པོའི་དོན་ཏོ། །བརྟན་པས་བསྐྱེད་པར་བྱ་སྟེ། སྒྲན་ཆེན་པོ་དེ་བྱའོ། །ཆེ་བའི་ཁྱེ་
པའོ། །བྱུགས་པ་ནི་ཁྱག་གིས་ཀྱང་རོ། །དེར་ནི་རྟེན་ཆེ་བ་ལའོ། །རི་རབ་ནི་སྤྱི་ཡིག་
གོ། །བྱ་བ་ནི་སྟོམས་འདུག་གོ། །གཞུག་²བྱ་ནི་འཕང་བར་བྱ་བའོ། །དངོས་པོ་ནི་
བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་སོ། །གཡོན་དང་གཡས་ནི་ཅ་གཉིས་སོ། །བསྐྱམ་པ་ནི་བྱ་བའི་
ཁྱད་པར་རོ། །བསྐྱམ་པ་ཡང་མུར་དུ་འཕྲོ་བ་འཛིན་པའི་ཐབས་གསུངས་སོ། །འོན་
ཀྱང་གདམས་ངག་ལས་གསལ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ནི་སྲོག་དང་ཐུར་སེལ་
དག་རྟེན་བར་བསྐྱམ་ནས་མན་ངག་རི་ལྟ་བུར་སེམས་བརྟན་པ་ལས་སེམས་ཀྱི་འདུག་
པ་དབང་དུ་བྱས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་རང་གི་གནས་ནས་དབབ་པ་དང་ཕྱིར་འགྲོ་
བ་སྐྱང་བ་ཉིད་དང་འཕེལ་བ་ནམས་རིམ་པས་འགྱུར་རོ། །དེ་ཁོ་ན་འདི་རོ་ཅ་³བར་
བྱེད་པའོ། །གསེར་ལ་སོགས་པ་འདོད་པས་ནི་གཏོང་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསུངས་
པ། རྩན་ཅིག་སྟེས་པ་ཅིག་ཅར་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དང་ཐབས་ཀྱིས་ཀྱང་འཕང་རོ། །
ཟངས་སྤང་གཅིག་གི་⁴དངོས་པོར་བཅས་ཞེས་ཁ་ཅིག་གོ། །འོགས་སུ་ནི་ཤེས་རབ་
མའི་གཡོན་པའི་གཞོགས་སུའོ། །པརྟའི་ནང་དོ་ཞེས་ཁ་ཅིག་གོ། །རྒྱས་པར་རྟོན་པ་
ཉིད་དེ་ནས་ལས་ཞེས་པ་སྟོམས་འདུག་གོ། །རི་རབ་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་པོའི་
དོན་ལ་དུག་པའོ། །ས་པོན་རྒྱལ་པོ་ནི་རྩི་ཡིག་གོ། །དྲིལ་བུ་ནི་ཟངས་ཀྱི་དོག་མའོ། །
ཤེས་རབ་ཅན་ཏེ་རྩི་ལྗོངས་བ་དང་ལྟན་པས་སྟོང་པོ་ལ་སོགས་པའི་སྤྲགས་ནམས་ཀྱིས་
བསྐྱང་བ་བྱའོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། རང་ཉིད་བཅོམ་ལྟན་འདས་ཀྱི་⁵གཟུགས་ཀྱིས་
བཅོམ་ལྟན་འདས་མའི་གཟུགས་ཀྱི་གཞོན་ནུ་མ་ལ་འཁྱུད་པས། རང་གི་སྟོང་གར་

1 འགྲེལ་ བཤམས།

2 བཞུག་ བཤམས།

3 ཅ་ བཤམས།

4 ཤེས་ བཤམས།

5 ཀྱིས་ བཤམས།

བྱང་ཁྱབ་ཀྱི་སེམས་ཆེ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནམ་པ་གྲུབ་པའི་བཙུན་མ་ལུས་པ་བྲག་
 དང་འདྲེས་པ་སྟེ། དེའི་སྟེང་དུ་ས་པོན་སྟེང་། དེའི་སྟེང་དུ་རྩི་ཡིག་བསམས་¹ནས་
 གསུམ་པོ་འདི་འདོད་ཆགས་ཆེན་པོས་ཞུ་བ་མཉམ་པར་དགའ་བ་ལས་བྱང་བའི་བྱང་
 ཁྱབ་ཀྱི་སེམས་དང་ལྡན་ཅིག་ཞུ་ཞིང་འདྲེས་པར་གྱུར་ནས་པར་ལྡར་ལྡང་བ་ཤེས་རབ་
 མའི་བྱང་ཁྱབ་ཀྱི་སེམས་དང་དུལ་དག་དང་འདྲེས་པ་སྟེ། དེ་དོན་མོས་²ཟངས་
 མའམ་ལྷགས་ལ་གྱུར་དུ་བྱུགས་ཏེ་མེ་ལ་འཕང་པར་བྱའོ་ཞེས་སོ། །སངས་རྒྱས་ཆད་
 མ་མེན་པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དངོས་པོ་གང་
 དང་གང་³ཞེས་པ་བཤད་ཟིན་པ་དང་། འཆད་པར་གྱུར་བའོ། །ཆད་མེན་ནི་ཆད་མ་
 མ་ཡིན་པར་སྟོ་བཏགས་པའོ། །དཔྱལ་བ་ལས་མི་ཉམས་ཏེ་མི་འདོར་བའོ། །ཆོས་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཆོས་ཀྱི་ཡུང་པོ་སྟོང་ཕྱག་བརྒྱད་རུ་ཅ་བཞི་ནམས་ཀྱི་⁴གསང་ཆེན་
 གླ་ན་མེད་པ་ནི་⁵ནལ་འཕྲོར་མའི་རྒྱུད་འདིའོ། །གསེར་དང་དངུལ་དུ་འང་ཞེས་པ་
 ཟངས་ནི་གསེར་དུ་དང་ཁབ་ལེན་གྱི་ལྷགས་ནི་དངུལ་དུ་འགྱུར་རོ། །འདི་ཁོ་ན་དོན་
 མོ་དང་⁶དངུལ་རྒྱུངས་པ་ར་ཏི་གཅིག་དང་ལྡན་ཅིག་ཆེ་བ་དུག་དུ་ཉི་མ་སོ་སོར་
 ལྷར་གྲུགས་⁷པར་བྱ་སྟེ། འདིའི་ཕན་ཡོན་ནི་འཆོའོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །ཡང་
 དག་སྦྱོར་བ་ནི་དོ་རྩེ་དང་པར་དག་གོ། །བཞི་ཞེས་པ་ནམ་པར་རྒྱལ་བའི་བུམ་པ་གཙོ་
 པོ་ནི་དཀྱིས་ནམ་བཞེད་ཀྱང་གྲུབ་པ་ནི་དཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འདིར་བུམ་པ་ལྷག་པར་གནས་
 པ་ནི་ལེའུ་བཞི་པར་ཇི་སྐད་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །བྱད་པར་གསུངས་པ། བདག་ཉིད་

1 རྩི་ཡིག་བསམ་ བེ། ལྷ།

2 པོས་ བེ། ལྷ།

3 གང་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

4 ཀྱིས་ བེ། ལྷ།

5 པའི་ བེ། ལྷ།

6 དང་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

7 གྲུག་ བེ། ལྷ།

ཀྱི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། བདག་ཉིད་ཀྱི་མིང་མེད་ཀྱི་ཁྲག་མོ་གཤམ་¹ ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་གཙོ་བོ་དང་བསྐྱེས་པས་སོ།།

ནག་པོ་དམར་པོ་འཛིགས་ཆེན་པོ།།

ཞེས་པ་ཁ་དོག་ནག་པོ་དང་། དམར་པོ་དེ་དག་གིས་འཛིགས་ཆེན་ནོ།།
 ནག་པོ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དམར་པོའི་སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མས་འབྱུང་པ་སྟེ། འདིར་རྩ་མོ་
 བརྒྱད་ཀྱིས་བསྐྱོར་བ་ཞེས་པའི་དོན་དོ། །ཐུ་མ་ཁ་ཅིག་ནི་ནག་པོ་ཡང་ཡིན་ལ་
 རྩུང་ཟད་དམར་བ་ཡང་ངོ་ཞེས་པ་ཤེས་རབ་མེད་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་གསུང་ངོ་། །དོན་
 འདི་ཡིན་དེ། འདིར་སྟོབ་དཔོན་འཁོར་དང་བཅས་པའི་དེ་རུ་ཀའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་ཆོ་
 གཛི་ལྟར་བཞེངས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རམ་རས་བྱས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཉི་ཤུ་དང་ལྷན་པ་
 ལྟས་མཆོད་པའི་ཤར་ཀྱི་སྟོར་སྟོར་བཅུ་གཉིས་མ་བྱེན་པས་ཁྲག་དང་ཁམས་ཀྱི་གཙོ་
 བོས་ཁའི་ནང་དུ་² བྱགས་པའི་བུམ་པ་ལྔ་ལྟག་པར་གནས་པ་བྱས་ནས་མོ་གཤམ་
 དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ཕྱེགས་པ་ལ་རྩལ་གྱི་རྩེས་ཐོགས་སུ་བྱས་ཤེད་པའི་དུས་སུ་རང་ཉིད་
 ལངས་ནས་དང་པོར་རྣམ་རྒྱལ་བུམ་པས་སྟོང་པོའི་སྒྲགས་དང་རྩྱ་ཡིག་བསྐྱེངས་པ་
 དང་བཅས་པར་བརྟེན་ཅིང་བྱས་བྱའོ། །དེའི་ཆོ་ཁོན་སྟོང་གའི་ས་བོན་གྱི་འོད་ཟེར་
 ཀྱིས་སྤྱན་དྲངས་པའི་དཔའ་བོ་དང་དཔའ་མོ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་³
 སེམས་ཀྱིས་གང་བའི་བུམ་པ་ལག་པའི་ཡལ་གས་བཟུང་⁴ བ་རྣམས་ཀྱིས་བྱས་ཤེད་དུ་
 འཇུག་པར་མཛད་དོ། །དེའི་ཆོ་ཁོན་སྟོང་བྱ་གདུམ་མོ་ཤེས་རབ་མ་⁵ མེད་པའི་གཅིག་
 ཡུལ་བདག་ཉིད་ཀྱི་དེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་ཅན་རལ་གྱི་འཛིན་པ་བཞི་རྣམས་ཀྱིས་ཅིག་
 ཅར་རལ་གྱིས་རྣམ་མཁའ་ལ་གདོན་ལ་སོགས་པའི་བདུད་རྣམས་གསོད་⁶ པའི་བསམ་

1 བཤམ་ བེ།

2 དུ་ བེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

3 ཀྱི་ བེ། ལྟ། པར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

4 གཟུང་ བེ། ལྟ།

5 མ་ བེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

6 བསོད་ བེ། ལྟ།

པས་བདེག་པར་བྱའོ། །འདི་ལྟ་བུའི་རིམ་པས་བུམ་པ་གཞན་ནམས་ཀྱིས་རིམ་གྱིས་
བཟུའོ། དེའི་རྗེས་སུ་འདོད་པ་སྦྱད་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་དེ་བུའི་མངལ་དང་ལྷན་པར་
འགྱུར་ཞིང་། དེ་བཞིན་དུ། བྱ་གི་མ་ནི་བྱ་འཛོའོ། །ཞེས་པའོ།

མི་འཇིགས་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེའུ་བརྩ་པའོ། །

*

རིག་པ་འཛིན་པའི་སྒྱུར་པའི་མན་ངག་ངེས་པའི་ལེའུ།

རིག་པ་འཛིན་པའི་སྒྱུར་པ་རྣམས་པར་སྟོན་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་
ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །ལེའུ་བཞི་པར་རི་སྒྲིགས་ཀྱི་བྱེད་པའི་ཆོ་གའི་སྐྱ་མ་ཐམས་
ཅད་འདིར་རྟོགས་པར་བྱོལ། །བྱེད་པར་གསུངས་པ། འདི་ཉིད་ཀྱིས་ཞེས་པ་འཆད་
པར་འགྱུར་བས་སོ། །ཟིན་པ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་²དུས་སུ་ཟིན་པར་གྱུར་པ་དུག་
གསོ་བ་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་མི་རྣམས་པས་གང་གི་ཆོ་དུས་སུ་བཟུང་བའི་ཞེས་དོར་
བའི་ཆོ་ལས་བཅུ་མོ། །ལུས་དཀར་རྣམས་ནི་ཞེས་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དང་
ཕྱོགས་ཀྱི་ལྷ་མོ་རྣམས་དཀར་བ་སྟེ། མཚམས་ཀྱི་ལྷ་མོ་རྣམས་དམར་པའོ། །ཆོ་ག་
བཞིན་དུ་ཞེས་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་གསུམ་རྩོགས་པར་བྱེད་པས་སོ། །རལ་གྱི་ནི་སྐྱ་ལི་
བཏགས་པ་ལས་བྱུང་བའོ། །དེའི་ཆོ་རིག་པ་འཛིན་པ་གཉིས་ཀྱིའོ། །བྱི་སྟེ་གཞུག་
གོ། །འདབ་མ་ནི་གྲོ་ག་ལ་སོགས་པའོ། །རྒྱག་མ་ནི་ཀར་སྒྲིར་དཀར་པོའི་འོ། །
གཅིག་ལ་ཞེས་པ་རིག་པ་འཛིན་པ་གཅིག་གོ། །རྒྱང་བ་ནི་ཟིན་པའི་སྟེང་དུའོ། །དེའི་
ཆོ་ཁོ་ན་ཟིན་པ་ལྡང་ངོ་། །དེ་ལྟར་རི་སྒྲིགས་ཀྱི་བྱེད་པ་དང་ཆུའི་བྱེད་པ་དང་། རིག་
པ་འཛིན་པའི་བྱེད་པ་རྣམས་པར་བཤད་དེ། གཞན་བྱེད་པ་བཅོ་ལྔ་རྣམས་ནི་སངས་
རྒྱུ་མོད་པའི་རྒྱུད་སྟོང་ཕྱག་བཙུ་གཉིས་པ⁴་རྣམས་པར་བཞུན་པ་རྣམས་ཤེས་པར་
བྱོལ་ཞེས་པའོ། །

མི་འཛིགས་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེའུ་བཙུ་གཅིག་པའོ། །

*

-
- 1 བཞུན་ བ། བཞུན་ ལ།
 - 2 བ་ བ། ལ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།
 - 3 ལྟེ་ བ། ལ།
 - 4 པར་ བ། ལ།

ལྷགས་སྒྲ་ཚོགས་ཀྱི་རབ་དུ་སྦྱར་བའི་ལེའུ།

མིག་སྒྲན་གྱི་དངོས་གྲུབ་མདོར་བསྟན་¹་པ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པ་ལོ། །གཙོར་གྱུར་ཏེ་ནལ་འབྱོར་མ་ཉི་ཤུ་ཙུ་བཞི་རྒྱལ་སྒྲ་ལོ། །མཐོང་བ་ནི་
 མཐོང་བ་རྒྱལ་སོ། །གང་རྒྱལ་ས་ཞེས་པ་གང་རྒྱལ་ས་སྤྱོད། །མ་གསུངས་པ་ནི་རྒྱད་
 གཞན་རྒྱལ་ས་སྤྱོད། །སྐལ་པ་ཆེ་ནི་བསྟགས་པར་འོས་པ་སྟེ་སྦྱོབ་པ་མེད་པའི་སྟོབས་
 དང་མི་འཇིགས་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ཆེན་པོ་སྟོན་པའི་ཕྱིར་རོ། །སེམས་
 ཅན་དོན་ལ་བརྩོན་པ་ཉིད་ལས་གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་གསུངས་སོ། །རྒྱུའི་
 གནས་སྐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སངས་རྒྱལ་བསྐྱེད་²་མའོ། །འབྲས་ཕྱེའི་
 རོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕུག་རྒྱ་ཆེན་མའོ། །ནལ་འབྱོར་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་པ་རྒྱལ་ས་སོ། །
 ཀུན་རྒྱལ་ས་ཏེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རོ་མཚར་ཐོབ་པའོ། །གཞན་པའི་རྒྱས་པ་ངེས་པ་ཐོབ་
 རས་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །རྒྱལ་མཚན་ནི་རྒྱལ་མཚན་ལྟ་བུའི་མའོ། །ཐབ་ཁྲུང་ནི་གྲུ་
 གསུམ་པའོ། །དེ་ཉིད་དུ་ནི་ཐབ་དུའོ། །མགོ་བོས་ནི་མགོ་བོར་ཏེ་ཐོད་བར་རོ། །དེའི་
 ནི་ཤེའོ། །གཞན་ཡང་ནི་ཐོད་པ་གཞན་དུའོ། །བགེགས་ཀྱི་ཞེས་པ་བགེགས་རྒྱལ་ས་
 སོ། །དུ་བ་ཞེས་པ་མ་ལུས་པའོ། །བདུང་བར་བྱ་ཞེས་པ་རང་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །འབྲུང་དུ་
 གཞུག་ཅེས་པ་ཤེས་རབ་མའོ། །འདིས་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པ་ནི་ནལ་འབྱོར་པས་དུར་
 ཁྲོད་དུ་སྦྱངས་པའི་མའི་³་རྟེན་པའི་རུས་པ་ལས་བྱས་པའི་ཐབ་ཁྲུང་གྲུ་གསུམ་པའི་
 རྟེན་དུ་དེའི་ཐོད་པར་དེའི་འཕྲོངས་ཀྱི་ཤེའི་མར་ཁྲུས་གང་བ་⁴་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་རས་ཀྱི་
 རྟེན་བྱ་ལ་དུར་ཁྲོད་ཀྱི་མེས་སྦྱར་བོ་བཞག་ལ། རྟེན་དུ་སྦྱངས་པའི་མའི་⁶་ཐོད་པ་
 གཞན་དུ་ལྷགས་སྒྲ་མིང་དུ་བ་དབབ་པར་བྱའོ། །དུ་བ་དེ་ས་ལ་མ་རེག་པ་དང་པོར་

1 རྟོན་ བ། ལྷ།
 2 སྦྱེད་ བ། ལྷ།
 3 མའི་ བ། ལྷ།
 4 བར་ བ། ལྷ།
 5 བ་ བ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།
 6 མའི་ ལྷ། གོང་དུ་ལེའུ་སྦྱར་ལྟར་བཞག་ཡོད།

ལག་པ་གཉིས་ཀྱིས་བཟུང་ནས། དེའི་རྗེས་སུ་ལག་པ་གཡོན་པར་བཞག་སྟེ། 1 གེ་ལི་
 མུ་ལི་ནི་འབྲུངས་པའི་བྱ་མོ་སྟེ། གནས་མ་ཉམས་པ་རྩལ་འབབ་མ་སྒྲ་ཆོགས་སྡེ་མའི་
 གཟུགས་སུ་མོས་པ་ལ་དལ་བྱས་འདོད་པ་སྤྱད་ནས་རྩལ་དང་འདྲེས་པའི་གཉིས་ཀའི་
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཅུང་ཟད་གཉི་གས་མྱངས་ཏེ་ཆ་གཞན་མང་པོ་དང་ལྷན་ཅིག་
 གཡས་པའི་མིང་མེད་དང་མཐེ་པོང་དག་གིས་མཐུར་རོ། །དེ་ནས་དེ་ཁོ་ནའི་རྩལ་
 གྱིས་རི་ལུ་བརྒྱད་ལྷག་པའི་བརྒྱ་བྱས་ཏེ། རི་ལུ་སོ་སོ་ལ་བརྒྱད་ལྷག་པའི་བརྒྱར་
 མངོན་པར་བསྟགས་ནས་སྟགས་འདོན་ཅིང་དེས་མིག་ལ་མིག་སྒྲན་དུ་བྱའོ་ཞེས་པ་
 ཆོགས་པའི་དོན་ཏོ། །འདི་ཉིད་ཀྱིས་ཞེས་པ་འདི་བྱུགས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་དང་
 འབྲེལ་²ལོ། །དཔུང་པ་ཆེ་ནི་ཕྱག་ན་དོ་རྗེ་སྟེ། སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ་ཆོམ་པ་ལ་
 གཞོལ་བའི་ཕྱག་ཅན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་མཆོག་ནི་རྣལ་འབྱོར་མའི་
 རྒྱུད་དུ་རྟེན་སྒྲུབ་³། མིང་མེད་དང་མཐེ་པོས་ཞེས་པ་གཡས་པས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་
 འོག་གི་མིག་སྒྲན་ལ་ཡང་གཡས་པའི་བྱ་བའོ། །རྣལ་མ་ཞེས་པ་མིག་མཉེས་པ་ལས་
 མིག་སྒྲན་མ་བྱུགས་པའི་གནས་སྐབས་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ་⁴། །ཤིག་དོབ་བདུན་གྱི་
 ཆད་དུ་འགྱུར་ཏེ་དྲ་ཅང་ཆར་ཆེས་པ་བཞྌག་པའི་དོན་དུ་འོ། །བདག་ཉིད་ཆེན་པོའི་
 ཞེས་པ་མཐུ་ལས་ཞེས་པ་ལྷག་མའོ། །རང་གི་གཟུགས་ནི་སྦྱར་བའི་ཞེས་པ་དང་པོའི་
 དོན་ལ་དུག་པའོ། །སྦྱར་བ་ཞེས་པ་རིག་འཛིན་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་འགྱུབ་པའི་ཆེད་དུ་
 སྦྱོར་བ་རྣམས་ཉུང་དུ་འཁོར་བྱུང་དུ་མ་གསུངས་གིང་རྒྱས་པར་ནི་གསུངས་པ་རྣམས་ལྷ་
 མའི་ཞལ་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། །སྟགས་བཞས་པའི་བྱེ་བྲག་ལ་བགྱང་སྟེང་གི་བྱེ་བྲག་
 བརྗོད་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །སྦང་ཆེན་རུས་པས་
 ཏེ་སྦང་པོ་ཆེའི་རུས་པས་མངོན་སྦྱོད་ཀྱི་དུས་སུ་བཞས་སོ། །རུས་པ་ཆེན་པོ་ནི་མིའི་

1 གེ་ལི་མུ་ལི་ རྟེ། གོང་དུ་ལེ་ཏུ་སྦྱར་ལོང་ཡོད།

2 འབྲེལ་ བོ། ལྷ།

3 ལྷའོ་ བོ། ལྷ།

4 བའོ་ བོ། ལྷ།

5 ཉུ་ བོ། ལྷ།

རུས་པའོ། །བྱའི་རུས་པ་ནི་བྱ་ཤོད་ཀྱི་རུས་པའོ། །ལྷགས་ཀྱིས་ནི་ལྷགས་ཀྱི་བགང་
 བྱང་གིས་སོ། །འདི་ཐམས་ཅད་ནི་སྦྱེད་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་སྒྲོས་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལྟ་དེ་
 ལྟར་གདུལ་བྱའི་སྦྱེ་བོའི་ངོར་གསུངས་པའོ། །རྫོགས་པའི་རིམ་པ་ལ་ནི་འདི་ཡིས་ཁྱི་
 ཞིག་ཅེས་གསུངས་པ། སེམས་གཅིག་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །སེམས་གཅིག་པུ་ཁོ་
 ན་ནི་ཁམས་གསུམ་པའི་དྲི་མེད་མེ་ལོང་སྟེ། གང་ཕྱིར་ངེས་གང་བསམས་པ་དེ་
 གཟུགས་བརྒྱན་བཞིན་དུ་སྒྲུང་བས་སོ། །འདི་ཐམས་ཅད་ནི་སེམས་ཀྱིས་²སྒྲོ་བཏགས་
 ཤིང་སེམས་དེ་ཡང་དོན་དམ་པར་མི་ལམ་གྱི་ངོ་བོ་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་སྒྲོངས་³པ་སྟེ།
 མོངས་པ་གང་ནམས་ཀྱིས་མི་ཤེས་པ་དེ་ནམས་ལ་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཆེན་པོ་མ་ཆང་བ་
 མེད་པ་ཡོད་ཅིང་། དེ་ནམས་ཐོས་པ་ལ་སོགས་པ་ཞེས་པ་ཡང་སྟེ་དེ་ལྟ་ན་ཡང་དེ་
 ནམས་ནམ་པར་རྟོགས་པས་གཟུང་⁴བའོ་ཞེས་པས་སྒྲོས་པ་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒྲོམ་
 པ་ལ་ཆེན་པོ་སྒྲོར་དགོངས་པས་བྱགས་བཙུང་བར་གྱུར་པའོ། །

མི་འཇིགས་པའི་གཞུང་འབྲེལ་དུ་ལེའུ་བཙུ་གཉིས་པའོ། །

*

1 མིས་ ལྷ།

2 ཀྱི་ བེ། ལྷ།

3 སྒྲུངས་ བེ། ལྷ།

4 བཟུང་ བེ། ལྷ།

སེམས་རྣམ་པར་དག་པའི་ལཱ།

རིམ་པ་གཉི་ག་ལ་ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་¹ ཁོ་ན་སྒྲིབ་² པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དག་
 པའི་ཞེས་གསུངས་པ་དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །རྣམ་དག་ལེའུ་ཞེས་པ་ལ་དེ་
 ཁོ་ན་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པ་ནི་རྣམ་དག་ཡིན་གྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་རྣམ་དག་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་
 ཁོ་ན་ཉིད་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་ན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོ་རྣམ་པར་དག་པར་
 ཐལ་བར་གྱུར་པའི་³ཕྱིར་རོ། །དེ་ཡང་ཐབས་ཀྱི་⁴དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མེད་པར་མངོན་དུ་བྱ་
 བར་མི་སྒྲུབ་ཞེས་པ་དེའི་ཐབས་དང་ལྡན་པ་ཇི་ལྟ་བུ་སྟོན་པ་ལ་བརྟེན་པས་
 མངོན་དུ་བྱ་བ་དེ་སྟོན་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ། སྤང་མི་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ།
 རྣམ་པོ་ལ་སྒྲུ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནོ། །ཡང་ན་སྤང་མི་ནི་དོ་ཇི་ཇི་ཐེག་པ་ལ་ཡང་དག་པར་
 གནས་པའོ། །དེའི་བྱ་མི་ཆ་མེད་པའོ། །དབང་བསྐྱར་སྟེར་བ་མི་ནི་མེད་པའོ། །བྱ་མི་
 མཉེས་གཤིན་མའམ་⁶དེར་གཞག་པར་བྱའོ། །ཤེས་རབ་ཅན་ནི་རྣམ་པར་དག་པ་
 ཞེས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐུག་ཀྱི་ཆེན་མོ་ཞེས་པ་མངོན་དུ་བྱ་བར་རོ། །འདིས་ནི་ཐབས་
 ལས་བྱུང་བའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསུངས་སོ། །གཡུང་མོ་ནི་བསམ་གཏན་ལ་དགའ་བའོ། །
 གར་མཁན་མ་ནི་རབ་དུ་སྒྲིབ་པ་མཁས་⁷མེད་པའོ། །བྱས་མཁན་མ་ནི་དཀར་པོའི་ཆོས་
 ལ་དགའ་བའོ། །གཏུམ་མོ་⁸ནི་ང་རྒྱལ་ངེས་པར་བཅོམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བཟོད་པའི་
 ངང་རྒྱལ་མེད་པའོ། །དགེ་བའི་འདུ་བྱེད་དོ་ཇི་ཇི་གསུམ་གྱི་ལུས་ཅན་ལ་དགའ་བ་པགས་པ་

-
- 1 དེ་ཉིད་ རྟེན། མོང་དུ་ལེཾ་སྒྲུར་ལྟར་བཏོད་ཡོད།
 - 2 སྒྲིབས་ ལྟ།
 - 3 འགྱུར་བའི་ བེ། ལྟ།
 - 4 ཀྱིས་ བེ། ལྟ།
 - 5 རྣམ་འགྱུར་པ་ རྟེན། མོང་དུ་ལེཾ་སྒྲུར་ལྟར་བཏོད་ཡོད།
 - 6 གཤིན་མ་ བེ། བཞིན་ ལྟ།
 - 7 མཁན་ རྟེན། མོང་དུ་ལེཾ་སྒྲུར་ལྟར་བཏོད་ཡོད།
 - 8 ཏོ་ ལྟ།

མཁན་མའོ། ཁང་གི་ཤེས་རབ་མའི་¹སྤྱང་མོན་གྱི་ཁང་མའོ། སྤྱང་མོན་ཤུ་མོན་ནི་རྩ་
 མའོ། སྤྱིད་མནེ་ཨ་མ་རྩུ་རྩུ་འོ། སྤྱ་མ་དག་ཕྱི་མ་དང་བྲམ་མའི་མན་དག་ལས་སྤྱིར་བ་
 ཅི་ཤུ་མའོ། ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་སུ་མེད་པའི་རང་བཞིན་རྩ་གསུམ་པ²་དེ་
 རྣམས་ཡང་དག་སྤྱིར་བ་ལས་སྤྱི་བའི³་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ནི་ཁྱད་མའོ⁴། དེ་གསུངས་པ།
 དེ་ཡི་བདེ་བ་འདོད་མར་བགད། ཅེས་སོ། སྤྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གཡུང་མའོ།
 རོའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་གར་མའོ། རེག་བྱའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་འབྱུང་མཁན་མའོ།
 སྤྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་གདུམ་མའོ⁵། མིག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་ཀོ་སྤྲགས་མཁན་
 ཅོ། དེས་པའི་དོན་ནི་བླ་ན་མེད་པའི་ཤེས་རབ་མ་སྤྱང་མོ་ལ་སོགས་པ་ནི་ལེན་དང་
 བོར་བགད་ཟིན་ཏོ། བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་དག་པས་གས་པར་བྱའོ་
 ཞེས་པ་ཁྱད་མའོ། སྤྱིང་པ་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྤྱོད་བྱུར་བའི་སྤྱིས་པ་
 རྣམས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རེག་བྱ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་གཡུང་མའོ། སྤྱིད་པ་དང་མུ་
 ངན་ལས་འདས་པ་ལ་མི་གནས་པ་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པ་སྤྱོད་ཆོགས་སྤྱི་མའི་རོ་བོའི་སྤུལ་པ་
 རྣམས་ཀྱིས་དུལ་བྱ་རྣམས་ལ་གར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་གར་མའོ། ཁྱད་བྱའི་ཁྱད་བྱ་ལ་
 སོགས་པ་རྟོགས་པའི་རིམ་པས་ཆེན་པོའི་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པའི་སྤྱིབ་པ་བག་ཆགས་
 དང་བཅས་པའི་བྱི་མ་འབྱུང་པའི་ཕྱིར་སྤྲུས་མཁན་མའོ། ཅན་ལྷོ་ནི་ཤེས་རབ་རྟོགས་
 པའི་རང་གི་རོ་བོ་ངས་པར་རྟོགས་པའོ། ལྷ་ལེན་ནི་སྤྱིང་རྩེ་ཆེན་པོའོ། དེ་དག་ནི་སྤུལ་
 དུ་འབྱུང་དུ་མེད་པའི་ཀོ་འཕང་དུ་འདྲེན་ནོ་ཞེས་པ་གདུམ་མའོ། སྤྱིད་པའི་ཡན་ལག་
 བརྩ་གཉིས་ཀྱི་རྩེས་སུ་སོང་བའི་མ་རིག་པའི་བགས་པ་འབྱེད་པའི་ཕྱིར་ཀོ་སྤྲགས་

- 1 མ་ པ། ལྷ།
2 པ་ པ། ལྷ།
3 ལྷ་པའི་ པ། ལྷ།
4 ལྷ་པའི་ ལྷ། ལྷ་པའི་ ལྷ། ལྷ་པའི་ ལྷ།
5 མ་ པ། ལྷ།
6 ལྷ་ པ། ལྷ། ལྷ་པའི་ ལྷ།
7 ལྷ་ པ། ལྷ།
8 ལྷ་ པ། ལྷ།
9 ལྷ་ པ། ལྷ།

མཁན་མའོ་ཞེས་པ་སྐྱ་ན་མེད་པའི་ཤེས་རབ་པོ། །ཕྱི་དང་ནང་གི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ཤེས་
རབ་མ་འདི་རྣམས་ཁོ་ནའོ། །སྐྱ་ན་མེད་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡོན་ཏན་རྣམས་ཀྱི་རྗེས་སུ་
བྱེད་པའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པར་བྱའོ།

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསུངས་པར་²འགྱུར་བ།

རྣམ་པར་མ་དག་སེམས་སྤངས་ལས། ། ཞེས་སོ།

འདིས་ནི་རྟོགས་པའི་རིམ་པ་ལ། ། ཕྱིའི་ཤེས་རབ་མ་ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དང་།
ནང་གི་ཤེས་རབ་མ་ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དང་། ། སྐྱ་ན་མེད་པའི་ཤེས་རབ་མ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་
མོའོ། །འདི་ཁོ་ནས་དག་པ་མཐར་ཐུག་པ་ལ་ལྷག་པར་གནས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཆོས་ཀྱི་
ཕྱག་རྒྱ་ནི་³ཆོས་ཀྱི་སྐྱ་སྟེ། །དེ་ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་
རོ། །ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དང་སྤྱར་བས་⁴མཆན་དང་དཔེ་བྱད་ཀྱིས་རྣམ་པར་མཛོམས་པའི་
སྐྱ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་རྟོགས་པའི་སྐྱའོ། །མཆན་མ་མེད་པར་སྒྲ་ཆོགས་ཤིང་མཐའ་ལས་
པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པར་སྐྱལ་པ་ནི་གདུལ་བུའི་སྐྱ་པོ་
ལྷལ་ལྷན་རྗེས་སུ་འདྲིན་པའི་དུས་ལས་མི་འདའ་བའི་ཕྱིར་དམ་ཆོག་གི་ཕྱག་རྒྱ་དང་
སྐྱལ་པའི་སྐྱའོ། །ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཁྲབ་པར་བྱེད་པ་པོ་ནི་རང་བཞིན་པའི་སྐྱ་སྟེ་བཞི་
པའོ། །ཡང་ན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་མཆན་དང་དཔེ་བྱད་འབར་བ་ཕྱག་དང་ཞལ་དང་ཕྱག་
མཆན་ལ་སོགས་པ་དང་ལྷན་པའི་ངོ་བོ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་རྟོགས་པའི་སྐྱའོ། །དམ་ཆོག་
གི་ཕྱག་རྒྱས་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་སོ་སོ་རང་གིས་རིག་པར་བྱ་བ་ནི་ཆོས་སྐྱ་སྟེ།
དམ་ཆོག་ནི་ཡང་དག་པར་རྟོགས་པའོ་ཞེས་བྱས་ནས་སོ། །ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དང་
ལོངས་སྤྱོད་རྟོགས་པའི་སྐྱའི་བྱིན་བཏབས་ལས་སྒྲ་ཆོགས་པའི་རྣམ་པ་ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་

1 ན་ལ་ བེ། ལྷ།

2 གསུང་བར་ བེ། ལྷ།

3 ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ནི་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

4 བ་ བེ། ལྷ།

5 པོ་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

6 སོ་ བེ། གིང་དཔར་མའི་ནང་མེད།

ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པའི་གསུང་གི་བདག་ཉིད་དོ། །ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ནི་བྱ་བ་སྦྱབ་
 པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་སྦྱལ་པ་སྣ་ཚོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བྱ་བ་ཕྱན་སྦྱར་ཚོགས་པར་
 བྱེད་པའི་ཕྱིར་སྦྱལ་པའི་སྦྱོར། །བརྒྱེད་པའི་རིམ་པ་ལ་ནི་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཤེས་རབ་མ་ཁོ་
 རས་མངོན་པར་འདོད་པའི་ལྷ་མོའི་གཟུགས་སུ་བསྐྱེད་པ་ནི་ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དོ། །
 རང་འདྲ་བའི་བྱེད་མེད་ནི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཞེས་པའི་མིང་གཞན་ནོ། །ལུས་ལ་
 བསྐྱེད་པའི་དྲི་ཡིག་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་དོ། །དམ་ཚིག་གི་ཕྱག་རྒྱ་ནི་
 ས་པོན་ལ་སོགས་པ་ལས་ཇོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོར་འདྲུས་པའི་ལྷ་སྒྲོ་
 བ་དང་སྤྲད་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེད་པ་ཅན་རྣམས་ཏེ་མཚན་མེད་ཡང་ངོ་། །རང་ཉིད་
 གཙོ་བོའི་ལྷའི་གཟུགས་ཅན་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་ཞེས་གསལ་བར་བྱས་སོ། །ནང་གི་
 ཤེས་རབ་མ་ཁོ་ན་དབང་པོ་དང་ཉོན་མོངས་པ་དང་ཡུལ་གྱི་ངོ་བོར་བརྟེན་པའི་ཆེད་དུ་
 དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །རོ་ཞེས་པ་སྦྱོར། །ཡིད་ཅེས་པ་ཡིད་ཀྱི་ཉི་བར་
 མཚོན་པ་འདིར་ལུས་ཀྱི་དབང་པོའོ། །

སྤང་མོ་གཟུགས་སུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར།

ཞེས་པ་ལ་སོགས་འཆད་པར་འགྱུར་བའི་གསུང་གི་ཕྱིར་མིག་ལ་སོགས་པ་
 རྣམས་ཀྱི་ཉི་བར་མཚོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་རྣམས་ཀྱང་སྤང་
 མོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་ཤེས་པར་བྱོའོ། །གང་གིས་ཞེས་པ་གང་གཟུགས་ཡིན་པ་
 རྟེན་གཏོ་མཉམ་གྱི་རྒྱ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གཏོ་མཉམ་གཟུགས་ཏེ། །འབྲེལ་པའི་ཕྱིར་ཞེ་སྤང་ལ་

-
- 1 རྒྱུད་ བ། ལྷ།
 - 2 ར་ བ། ལྷ།
 - 3 ཕྱག་རྒྱའི་ བ། ལྷ།
 - 4 ལོ་ བ། ལྷ།
 - 5 སམ་ བ། ལྷ།
 - 6 ཀྱིས་ བ། ལྷ།
 - 7 ཀྱི་ བ། ལྷ།
 - 8 དེ་ བ། ལྷ།
 - 9 འབྲེལ་ རྟེན། གོང་དུ་ལེའུ་བརྒྱ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་ལ། གུས་པས་བར་ཆད་མེད་པར་
 བསྐྱེམ་པ་ལས་བྱུང་བའི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ནི་
 གཅིག་ལའོ། །རྣམ་པ་འདི་ལྟ་བུའི་སྐྱེམ་པ་དང་བྲལ་བ་ནི་སྤྲོད་པ་གཞན་ལ་སྟེ་གངས་
 མ་ངེས་པ་ལ་སྐྱེ་བ་མི་ཁོམ་པ་བརྒྱད་ལས་གྲོལ་བ་གོམས་པ་དང་རྗེས་སུ་མཐུན་པ་རྟེན་
 བའོ། །དེས་ན་གོམས་པ་ལས་རྣམ་པར་དག་པའོ། །པར་འོ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་ལ་ནི་བྱ་
 བའི་རང་བཞིན་གྱི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་ལས་དང་ཐབས་ཀྱི་བྱུང་པར་མེད་པ་ལས་
 བསྐྱེལ་བ་གངས་མེད་པ་གསུམ་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་པར་དག་པ་གསུངས་སོ་ཞེས་པ་
 འགལ་བ་མེད་དོ། །འོ་ན་འདིར་བསྐྱེམ་པར་བྱ་བ་ཙུང་བྱང་ཉེ་བར་བཞུན་པ་མེད་
 དེ། རྫོགས་པའི་ངོ་པོ་ཁོ་ནའི་ཐུག་ཀྱང་རྣམས་རྒྱས་པར་སྟོན་པའི་ཕྱིར་དང་རྣལ་འབྱོར་
 པ་རྣམས་ཀྱང་དེའི་སྐྱོ་ནས་དེ་ལྟར་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན་བདེན་ཏེ་དེ་ཁོ་
 ན་ནི་དུ་བསྐྱེམ་པར་བྱ་བ་དང་¹སྐྱེམ་པ་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ཆོས་རྣམས་ཐམས་
 ཅད་གདོད་མ་ནས་ཞི་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྟོན་པ་དངོས་པོ་མེད་པ་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པ་སྟེ་དངོས་པོ་མེད་པ་ལ་སྟེ། དངོས་པོར་སྐྱོ་བཏགས་པ་བཀག་པ་སྐྱེ་བ་མེད་
 པ་དོན་དམ་པའི་བདེན་པ་ལ་སྐྱེམ་པ་ཇི་ལྟར་ཏེ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དང་པོ་
 རྣམ་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །འོ་ན་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ནི་དུ་བསྐྱེམ་བྱུང་ཡོད་དོ་
 ཞེས་²གསུངས་པ། དངོས་མེད་ཅི་འདྲ་ཞེས་པ་སྐྱེ་བ་མེད་པ་མེད་དེ། དོན་དམ་པར་
 རྫོགས་པ་དང་། རྗེས་སུ་མཐུན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ན་ནི་དོན་དམ་པ་དེ་ཁོ་ན་ནི་དུ་
 བརྫོད་དོ། །གང་ཡང་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོ་དེ་ཡང་བསྐྱེམ་
 བྱ་དངོས་མེད་མ་ཡིན་ཏེ། བདེན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །བདེན་པ་གཉིས་གཉིས་སུ་
 དབྱེར་མེད་པར་མཐོང་པ་ཅམ་གྱིས་གྲོལ་བའི་ཕྱིར་བསྐྱེམ་བྱ་དང་³སྐྱེམ་པ་
 པོ་དང་སྐྱེམ་པ་ཞེས་མངོན་པར་ཞེན་པ་བྱུང་འདུག་གི་རིམ་པ་རྫོགས་པ་རྣམས་
 ལ་མེད་དོ་ཞེས་པ་དགོངས་པའོ། །

1 སྐྱེམ་པར་བྱ་བསྐྱེམ་པ་པོ་དང་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།

2 ན་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

3 དང་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

དེ་དཔལ་འདུས་པར་གསུངས་པ།

དངོས་པོ་མེད་ལ་བསྒྲིམ་པ་¹མེད།།

བསྒྲིམ་པ་²བསྒྲིམ་པ་མིན་པ་³ཉིད།།

དེ་ལྟར་དངོས་པོ་དངོས་མེད་པ།།

བསྒྲིམ་པ་དམིགས་པར་མི་འགྱུར་རོ།། ཞེས་སོ།།

དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཉེ་བར་སྤྱད་དེ། ཅི་ལྟར་འགྱུར་ཞེས་བསྒྲིམ་པ་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་
ཉེ་བར་མི་དམིགས་སོ་ཞེས་པ་དགོངས་པའོ། དེ་ཅི་རྒྱལ་པའི་རིམ་པ་ལ་སྒྲིམ་པ་
ཆད་པ་ཁོ་ན་འཕམ་ཞེ་ན་ཆད་པ་མ་ཡིན་མོ། ཁོ་ན་དེ་⁴ཅི་འདྲ་བ་ཡིན་ཞེ་ན། དེ་
གང་འདྲ་བ་ཡིན་པ་ནི་འཆད་པར་འགྱུར་རོ། དེ་ལྟར་དོན་དམ་པར་བསྒྲིམ་པར་བྱ་བ་
ལ་སོགས་པར་མངོན་པར་ཞེན་པ་བསལ་ནས། ཟུགས་ལ་སོགས་པར་མངོན་པར་
གསལ་བར་འདོད་པས་གསུངས་པ། སྤང་མོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། ཅི་ལྟར་དེ་
གང་གི་ཕྱིར་དཀར་མོ་ལ་སོགས་པའི་དབྱེ་བ་ཐ་དད་པ་གཟུགས་དང་ཡང་དག་པར་
ལྡན་པ་དབང་པོ་དང་ཕན་ཚུན་གདགས་བྱ་འདོགས་བྱེད་ཀྱི་དངོས་པོ་ལས་འབྲེལ་པ་
སེམས་མ་དག་པས་མཐོང་གི། སེམས་དག་པས་ནི་མ་ཡིན་དེ། དོན་དམ་པར་⁵
དབང་པོ་དང་ཡུལ་དང་དེའི་ཤེས་པ་རྣམས་རང་བཞིན་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། དེ་
བཞིན་དུ་བྱི་མར་རོ། རྣམ་ཅག་སུམ་ཞེས་པ། ཡིད་དང་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་དང་མི་
སེམས་པའི་བྱེ་བྲག་ལས་སོ། འདི་འདྲའི་སྦྱར་དང་ལྡན་པ་ཡི། ཞེས་⁷ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་
པོའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པའོ། རྣམ་པར་བྱང་བའོ་⁸ཞེས་པ་མནམ་པ་སྟེ་དྲིའོ།།

1 སྒྲིམ་ བཤ། ལྟ།

2 སྒྲིམ་ ལྟ།

3 མིན་ བཤ། ལྟ།

4 དེ་ བཤ། གང་དཔར་མའི་ནང་མེད།

5 པ་ ལྟ།

6 རྣམས་ བཤ། ལྟ།

7 པ་ བཤ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག།

8 རྣམ་པར་བྱའོ་ སྟེ། གོང་དུ་ལེ་ཤ་སྦྱར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

བཏུ་མིན་ཞེས་པ་བཏུ་བྱ་མ་ཡིན་ཁིང་ཤེས་བྱ་མིན་པའོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རྒྱུ་ལ་
 སོགས་པ་རྣམས་ལས་འདོད་ཆགས་དང་ཞེས་སྤང་ལ་སོགས་པ་¹སྦྱེ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །
 མྱང་བའི་གཟུགས་ཀྱི་ཞེས་པ་²མྱང་བའི་གཟུགས་མེད་དེ། ཟུང་དང་རོ་དག་མེད་པའི་
 ཕྱིར་རོ། །ཡིད་ཀྱིས་ཉེ་ཡིད་ཀྱི་ཉེ་བར་མཆོན་པ་ལུས་ཀྱི་དབང་པོས་བདེ་བ་རེག་བྱའི་
 ཡུལ་ལ་སྦྱེ་བ་དང་ཉེ་བར་མཆོན་པ་ལས་སྦྱག་བསྐྱེད་དང་བཏང་སྟོམས་ལོངས་སྦྱོད་
 དེ། དེ་ཡང་ཅི་འདྲ་ཞིག་གོ། །ཡིད་ཀྱི་དབང་པོ་ནི་ཡིད་ཉིད་དོ། །བདེ་བ་དང་ཉེ་བར་
 མཆོན་པ་ལས་སྦྱག་བསྐྱེད་དེ། དག་འ་བ་དང་སྦྱོར་བ་དང་བཏང་སྟོམས་ལོངས་སྦྱོད་པ་
 དེ་ཡང་ཅི་འདྲ་ཞིག་ཅེས་འབྲེལ་ལོ། །འོ་ན་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ལྔ་རྣམས་
 དང་དེའི་ཡུལ་ཅན་དབང་པོ་ལྔ་རྣམས་དང་དེ་དག་གི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམས་ཤེས་
 རབ་ལྡེའི་རང་བཞིན་དུ་རྣམ་པར་གཞག་⁴ཅིང་། ཡུལ་དང་དབང་པོ་དང་ཤེས་པ་
 དུག་པ་རྣམས་མི་བརྗོད་པ་རྗེ་ལྟར་ཞེས་ན། ཡིད་ཀྱི་དབང་པོ་ནི་མིག་ལ་སོགས་པའི་
 དང་པོ་བཞིན་དུ་ལོགས་པ་མེད་ཀྱི་⁵འདས་མ་ཐག་པ་ཁོ་ནའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་རྣམ་
 པར་ཤེས་པའི་ཁྱད་པར་ཕྱི་མ་སྦྱོད་པའི་བདག་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཡིད་ཀྱི་དབང་པོར་
 བརྗོད་ཅིང་དེའི་བྱེ་བྲག་སེམས་དང་⁶སེམས་ལས་བྱུང་བ་རྣམ་པ་⁷དང་དེའི་ཡུལ་དང་
 ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ། །དེ་ལྟར་⁸ཉོག་མེད་དག་གི་ནི་ཡིད་ཀྱི་དབང་པོ་དང་དེའི་
 ཡུལ་དག་སྟེ་དབང་པོའི་ཤེས་པ་ལྡེའི་རང་བཞིན་དག་གོ། །སེམས་བྱུང་རྣམས་ཀྱང་
 སེམས་རྣམས་ལས་གཞན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་གསུངས་པ། སེམས་ལས་སེམས་བྱུང་
 གཞན་མ་ཡིན། ཞེས་སོ། །ཉོག་པ་ཅན་དག་ནི་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རང་

1 པ་ བེ། ལྷ།

2 བྱ་བ་ བེ། ལྷ།

3 སྦྱོང་ ལྷ། གོང་དུ་ལེའུ་བཙུ་གསུམ་བཞོད་ཡོད།

4 བཞག་ བེ། ལྷ།

5 ཀྱིས་ ལྷ།

6 སེམས་དང་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

7 རྣམས་ བེ། ལྷ།

8 ལ་ བེ། ལྷ།

བཞིན་དག་ལོ། །ཡིད་གྱི་རྣམ་ཤེས་ནི། ཆད་¹དང་མཆམས་སྦྱར་འདོད་ཆགས་བྲལ།
 ཉམས²དང་འཆི་འཕྲོ་བ་རྣམས། །ཡིད་གྱི་རྣམ་ཤེས་ཁོ་ནར་འདོད། །ཅེས་པའི་
 རིགས་པ་ལས་³གཙོ་བོ་ཉིད་གྱི་ཕྱིར་ཉེ་བར་ཡོངས་སྦྱོད་པའི⁴ཞེས་པས་ཕན་འདོགས་
 བྱེད་ཉེ་བར་ཡོངས་སྦྱོད⁵བྱ། ཤེས་རབ་གྱི་ངོ་བོར་རྣམ་པར་གཞག⁶པ་མ་ཡིན་ནོ།
 རྒྱ་ན་མེད་པའི་ཤེས་རབ་སྤར་རྣམ་པར་གཞག་པ⁷ཡིད་གྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལ་ཡོད་པ་
 ཁོ་ནའོ། གང་ཡིད་ཅེས་གསུངས་པ་དེ་ནི་འདིར་དངོས་པོའི་གྲོང་ཁྱེར་མ་ལུས་པ་རྣམ་
 པར་དབྱེད་པ་ལ་འདུག་པའི་དོན་དུའོ། །དེ་ལྟར་ནི་རབ་ཏུ་འབྲེལ་པ་འདིས་ཁམས་
 བཙོ་བརྒྱུད་རྣམས་གསུངས་གིང་། དེ་རྣམས་ཁོ་ན་སྦྱུད་⁸པ་ལས་སྦྱེ་མཆེད་བརྒྱ་
 གཉིས་རྣམས་ཉེ་གིན་ཏུ་འདུས་པ་ལ་ཕུང་པོ་རྣམས་སོ། །ཁམས་གསུམ་པ་ཡང་དེ་
 རྣམས་ཁོ་ནའོ།

དེ་ཡང་སེམས་ཙམ་ཁོ་ན་སྟེ་དེ་ཡང་ཀར་གཤེགས་པའི་མདོར་གསུངས་པ།

གྱི་རྒྱལ་བའི་སྤྲས་རྣམས་འདི་ལྟ་སྟེ།
 ཁམས་གསུམ་པ་ནི་སེམས་ཙམ་མོ། ཞེས་སོ།

འཕགས་པ་རྒྱ་སྤྱབ་ཞབས་གྱིས་ཀྱང་བྱང་རྒྱལ་སེམས་འགྲེལ་དུ་གསུངས་པ།

བདག་ཏུ་འདོན་པ་བཞེས་⁹དོན་དུ།
 ཕུང་པོ་ཁམས་སོགས་བཞེས་པ་སྟེ།

1 འཆད་ སྟེ། གོང་དུ་ལེཾ་སྦྱར་ལྟར་བཞེད་ཡོད།

2 ཡང་ངོ་ བོ། ལྟ། དཔལ་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

3 ལ་ བོ། ལྟ།

4 པ་བོའོ། བོ། ལྟ།

5 སྦྱོད་ བོ། ལྟ།

6 བཞག་ བོ། ལྟ།

7 བཞག་པ་ནི་ བོ། ལྟ།

8 རྒྱུད་ བོ། ལྟ།

9 རྒྱུད་ བོ། ལྟ།

དེ་ཡང་སེམས་ཙམ་ནམ་གཞག་པས།
སྐལ¹་པ་ཆེན་པོ་ནམས་ཀྱིས་བཞིག། ཅས་སོ།

སེམས་དེ་ཡང་ཀུན་རྫོབ་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་དུ་གསུངས་པ།
འདི་ནམས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་ཞེས།
བྱབ་པ་ནམས་ཀྱིས་གང་བརྟན་པ།
བྱིས་ནམས་སྐྱག་པ་སྤང་བྱིར་ཏེ།
དེ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མིན། ཞེས་སོ།

ཇི་ལྟར་སེམས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་ཡིན་ཞེ་ན། གསུངས་པ་གཉིས་ནམ་དབྱེད་ལས་
ཞེས་པ་དངོས་སོ་དང་དངོས་སོ་མེད་པའི་རང་གི²་ངོ་བོ་ནམ་པར་བརྟན³་པ་ལས་སོ།
འོ་ན་ནམ་པར་དབྱེད་པ་པོའི་སེམས་དོན་དམ་པར་ཡོད་དོ་ཞེ་ན་གསུངས་པ། ནམ་
དབྱེད་ཅས་པ་སྟེ། ནམ་པར་དབྱེད་དུ་འཇུག་གི་ཞེས་པས་ནམ་དབྱེད་དེ་ནམ་པར་
དབྱེད་པ་པོའི་ནམ་ཤེས་ནི་དེར་ནི་སྟེ། གཉིས་ནམ་དབྱེད་པར་གྱུར་པ⁴་མ་ཡིན་ནོ།

དེ་འཕགས་པ་ཞི་བ་ལྟའི་ཞབས་ཀྱིས་གསུངས་པ།
དབྱེད་བྱ་ནམ་པར་དབྱེད་པ་དང་།
ནམ་དབྱེད⁵་ལ་ནི་རྟེན་ཡོད་མིན།
རྟེན་མེད་ཉིད་བྱིར་མི་སྦྱེ་སྟེ།
དེ་ཡང་མུ་ངན་འདས་པར་བརྗོད། ཅས་སོ།

དེ་བཞིན་དུ།

-
- 1 བསྐལ་ བཅ། སྐ།
 - 2 ཞེས་ བཅ།
 - 3 ཏྲག་ བཅ།
 - 4 པ་ བཅ། སྐ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།
 - 5 ན། ནམ་དབྱེད་ བཅ། སྐ།
 - 6 ལས་ བཅ། སྐ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

གང་ཆེ་དངོས་དང་དངོས་མེད་¹།

ཐོ་ཡི་མདུན་ན་མི་གནས་པར་²།

དེ་ཆེ་ནམ་པ་གཞན་མེད་པས།

དམིགས་པ་མེད་པར་རབ་དུ་ཞིའོ། ཞེས་གསུངས་སོ།

ཀྱལ་པོ་ལ་རིན་པོ་ཆེའི་འཕྲེང་བར་ཡང་གསུངས་པ།

འགྲོ་བའི་ཆོས་ཀྱན་ནམ་ཤེས་ཀྱི།

མེ་ཡི་བྱད་ཤིང་ཉིད་དུ་འདོད།

དེ་ནམས་ཇི་བཞིན་ནམ་དཔྱོད་པའི།

མེ་ཡིས་སྒྲུག་པའི་³ཉེར་ཞིའོ། ཞེས་སོ།

ཇི་ལྟར་གཉིས་ནམ་པར་དཔྱོད་ཅེ་ན་གསུངས་པ། དངོས་པོ་ལ་ཞེས་པ་ལ་
སོགས་པ་སྟེ་དངོས་པོ་མེད་པ་དག་ཡན་རྩུན་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་མེད་དེ་འགལ་བའི་
ཕྱིར་རོ། གཅིག་དུ་ཡོད་དོ་ཞེས་⁴གསུངས་པ། དངོས་པོ་དངོས་མེད་གཉི་ག་སྟོང་།
ཞེས་ཏེ། དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པའི་རང་བཞིན་དག་སྟོང་པ་དག་སྟེ། སེམས་
ནི་གཅིག་དང་པ་གཅིག་མིན་གྱི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ན་རང་བཞིན་མེད་པ་
ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། དེ་ལྟར་ནི་དེ་གཅིག་མ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་ཉིད་ནི་སྟོན་པོ་དང་སེར་
པོའི་འོ་ཉིད་དུ་བྲ་བོར་སྒྲུང་བའི་ཕྱོད་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་། སེར་པོ་ལ་སོགས་པ་
མཐའ་དག་སྟོན་པོའི་ནང་དུ་འདུས་པར་རྟོགས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ།

1 པ་ བཤ། ལྟ།

2 པ་ བཤ། ལྟ།

3 པ་ བཤ། ལྟ།

4 ཞེ་ན་ བཤ། ལྟ།

5 གཅིག་དང་ རྟེན་དཔལ་མའི་ནང་མེད། ཞོང་དུ་ལུ་ཐུར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

སྒྲིན་པོ་ཡང་སྒྲི་མ་དང་བྱི་མ་དང་བར་མ་བྲ་དད་ན་རགས་པར་སྒྲིང་བ་ཉིད་ཀྱིས་
རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་གྱི།

གང་ལ་སྒྲིགས་ཆ་དབྱེ་བ་ཡོད།

དེ་ནི་གཅིག་ཏུ་མི་རུང་ངོ་།

ཞེས་པའི་རིགས་པ་ལས་རྩལ་སྤྲ་རབ་ཅམ་ཉིད་དུ་སྒྲིང་བར་འགྱུར་རོ།
གཅིག་མིན་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སེམས་གཅིག་མིན་ཉིད་ན་རྩལ་སྤྲ་རབ་ཏུ་བྲ་དད་པའི་
ཕྱིར་ན་དེ་ལས་གཞན་པ་ཡང་དག་པར་སྒྲིང་བ་མེད་ན་རྩལ་ཡང་སྤྲ་རབ་སེ་སེར་རང་
རིག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ན་དེ་ཁོ་ན་རྩལ་སྤྲ་རབ་སེ་སེར་སྒྲིང་པར་བལ་བར་འགྱུར་
རོ། གཉིས་ཀ་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། དེ་ལྟ་བུའི་རྣམ་པ་སྒྲིང་བ་མེད་པའི་
ཕྱིར་རོ། །ཐམས་ཅད་ལ་ཁོ་བོ་ཅག་གི་ལྟ་བ་ཆད་མའི་ཕྱིར་རོ། །ཞྀག་པའི་ངོ་བོ་ལྟ་
ཅིག་པའམ་ལོགས་པ་རྗེས་སུ་རྟོགས་པར་བྱ་བ་མངོན་སུམ་དུ་སྒྲིང་བ་ཡང་ཉེ་བར་
དམིགས་པ་མ་ཡིན་ཞིང་རྗེས་སུ་དཔག་པའི་བདག་ཉིད་ཀྱང་སྟེ། དེ་ནི་སྒྲིན་མ་ཅན་
ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །མི་1དམིགས་གིང་ཆད་མ་མེད་པའི་ཞྀག་2པའི་ངོ་བོ་ཉིད་རྗེས་སུ་
རྟོགས་པར་བྱ་བ་ཇི་ལྟར་རྟོག། ཅི་སྟེ་བྲ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་རགས་པའི་རྣམ་པ་རང་རིག་
པའི་ངོ་བོ་སྒྲིང་བ་ནི་བསྟོན་མི་རྒྱས་གིང་དེ་ཅམ་དུ་ཡོད་ལ། དེ་ཡང་ཞྀག་པའི་ངོ་བོ་
ཉིད་རྗེས་སུ་རྟོགས་པར་བྱ་བ་མེད་ན་མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་པས་སོ།3 །དེ་ནི་དེ་ཡོད་པ་
ལས་གཞན་དུ་མི་འབྲད་པས་ཡོངས་སུ་བརྟག་པར་བྱའོ་ཞེན་དེ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། གཉི་
ག་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཁོ་ནས་སྒྲིས་པ་མེད་པ་ཉིད་དུ་ཆེས་གསལ་བར་འབྲད་པ་
ལས་དོན་གྱི་གོ་བར་ཟད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་སྟེ་བ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། འབྲས་བུ་
དང་རྒྱུའི་དངོས་པོ་ལ་ཆད་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲི་མ་དང་བྱི་མ་ཉིད་ཀྱིས་ཆད་མ་
འདུག་པ་ནི་འབྲས་བུ་དང་རྒྱུའི་དངོས་པོ་རྣམ་པར་བཞག་པ་ཡིན་ན་རྣམ་པ་4གཉིས་

1 མ་ བེ། ལྟ།

2 ཞྀགས་ བེ། ལྟ།

3 སེ་ བེ། ལྟ། དཔར་མར་མ་གསལ།

4 པ་ བེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

དང་བུལ་བ་གཉིས་མེད་པར་མྱོང་བ་ནི་སྒྲ་མ་དང་ཕྱི་མར་འདུག་པ་དང་ལྡན་པ་ཡང་
 མེད་ཅིང་དེ་ལས་གཞན་པའི་ཡང་དག་པར་རིག་པ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནེ། ཚད་མ་
 མེད་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེས་བསྒྲུབ་བྱེན་ནོ། །གང་གི་ཆེ་དེ་ལྟར་འབྲས་བུ་དང་རྒྱའི་དངོས་
 པོ་ལ་ཚད་མ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྒྲེ་བ་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པ་དེའི་ཆེ་ག་ལས་རང་ལས་སམ་¹
 གཞན་ལས་སམ། གཉི་ག་ལས་སམ། རྒྱ་མེད་ལས་ཡིན་དེ་ལྟར་སྒྲེ་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་
 སེམས་ནི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་མེད་དེ། འབྲུང་ངོ་ཞེས་པས་ན་དངོས་པོ་སྒྲེ།
 མེད་པ་སྒྲོན་མ་ཅན་གྱི་འབྲུང་བ་ཁོ་ན་ལ་རྣམ་པར་གཞག་²པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་
 ཕྱིར་དེ་ཉམས་པའི་ངོ་བོ་དངོས་པོ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མེད་དོ། །དངོས་པོ་དང་
 དངོས་པོ་མེད་པོའི་³རང་བཞིན་མེད་པའི་ཕྱིར་ཡང་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་མེད་པ་སྒྲེ་དེ་
 རྣམས་ནི་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པའི་ཉེན་ཅན་ཉིད་ཀྱིས་ན་དེ་དག་གི་བྲབ་པ་ཉིད་
 ཀྱི་⁴ཕྱིར་བྲབ་བྱེད་མེད་ན། བྲབ་བྲུ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་རྣམ་པར་དབྱེད་
 པ་འདིས་སྒྲོས་པ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོང་པ་ཉིད་ཉོགས་པར་བྱའོ། །འདི་ཁོ་ན་ཡང་དེ་ཁོ་
 ན་ཉིད་མཐོང་པ་སྒྲེ་གང་ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་⁵དེས་པར་དབྱེད་པ་ལས་ཡང་དག་
 པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུང་བ་བྱུང་པ་ན་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མི་མཐོང་བའོ་ཞེས་པའོ།
 ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་མར་གསུངས་པ། སངས་རྒྱལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་
 ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུན་ཅི་ཞེ་ན། གང་གིས་⁶ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་མཐོང་བའོ། །དེ་བཞིན་དུ་
 རོན་དམ་པ་མཐོང་བ་ཅི་ཞེ་ན། གང་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མི་མཐོང་བའོ་ཞེས་སོ།
 དེས་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་པ་སྒྲོད་ལམ་ཐམས་ཅད་ལ་གནས་པ་རྣམས་ཀྱིས་
 ཀྱང་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་མཐོང་ཡང་མཐོང་བ་མེད་པའོ། །འདི་འདྲ་བ་ཁོ་ན་

1 ས་ པེ། ལྷ།

2 བཞག་ པེ། ལྷ།

3 པའི་ པེ། ལྷ།

4 ཀྱི་ པེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

5 གི་ པེ། ལྷ།

6 གི་ པེ། ལྷ།

མཐོང་བ་མེད་པར་དགོངས་ཀྱི།¹གཉིད་ལོག་པ་དང་མིག་བཙུམས་པ་དག་གི་མིག་
 བཞིན་དུ་གང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་ན་ནི་བག་ཆགས་མ་སྤངས་
 པའི་ཕྱིར་འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྣོམས་པར་འདུག་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ལངས་པ་བཞིན་
 དུ་སྒྲར་ཡང་གཟུགས་ལ་སོགས་པར་མངོན་པར་ཞེན་པའི་རྩ་བ་ཅན་འདོད་ཆགས་ལ་
 སོགས་པ་ནམས་སྒྱེ་བའི་ཕྱིར་ནལ་འཕྱོར་པ་མ་གྲོལ་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ། །ཐོག་མ་
 མེད་པའི་དུས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ལ་སོགས་པར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་
 ཡོངས་སུ་པོར་བ་ཅམ་ལས་སྤྲོང་པ་ཡངས་མ་ཡིན་ཏེ་འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྣོམ་པར་
 འདུག་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཀྱང་སྤངས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །གཟུགས་
 ལ་སོགས་པའི་ཡུལ་ལ་ཐེ་ཆོམ་སྤྲོང་བ་མེད་པར་དེ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤྲོང་བར་
 ཡང་རྣམ་པ་མ་ཡིན་ཏེ། མེ་མ་སྤངས་ན་ཆ་བ་མི་སྤངས་²པ་བཞིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ཐེ་
 ཆོམ་གྱི་ས་པོན་དང་བྲལ་བ་ཁོ་ན་ལས་གཟུགས་ལ་སོགས་པར་མངོན་པར་ཞེན་པ་
 བསལ་³བར་བྱའི་ཆེར་མ་གདོན་པར་བྱ་བ་བཞིན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ངེས་
 པའོ། །དེ་ལྟར་དངོས་པོ་དང་དངོས་པོ་མེད་པ་དང་རང་གི་དངོས་པོ་དང་གཞན་གྱི་
 དངོས་པོ་ལ་སོགས་པར་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་བསལ་⁴བས་ཐམས་ཅད་ལས་ཡིད་བསྐྱེས་ཏེ་
 ཅུང་ཟད་ཀྱང་མི་བསམ་མོ། །དེ་དེ་ལྟར་མི་སེམས་པ་ལས་སྤོན་ནམ་པར་སྤྱོད་པའི་
 དུས་ཁོ་ནར་ཁྲ་མ་བསྟེན་བཀྱར་བའི་ནལ་འཕྱོར་བའི་གང་ཁྲ་མའི་བྲིན་ལས་རྟོགས་པ་
 ཁོ་ནའི་བཙུག་ལྟན་འདས་མ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་སྒྱེ་སྒྲེ་ཆད་མ་དང་གཞལ་
 བྱ་དང་འབྲས་བྱའི་ཆ་དང་ཡང་དག་པར་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ན་རང་གསལ་བའི་རང་
 བཞིན་སྒྲོས་བ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་སྒྲོས་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་འཁོར་བའི་རང་བཞིན་
 ཀྱིས་⁶སྐྱུག་བསྐྱུལ་གྱི་ཆོགས་དང་བྲལ་བ་ལས་མཆོག་དུ་དགའ་བའི་རང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་

1 ཀྱིས་ བཤ། ལྟ།

2 སྤངས་ བཤ། ལྟ།

3 གསལ་ བཤ། ལྟ།

4 གསལ་ བཤ། ལྟ།

5 ན་ བཤ། ལྟ།

6 ཀྱི་ བཤ། ལྟ།

མཐོང་བ་མེད་པའི་ཚུལ་གྱིས་མངོན་དུ་ཉོགས་ཏེ། དེའི་མཐུ་ལས་ཀྱི་མ་མ་ལ་གཉི་
 མུག་གི་རྩས་པ། གང་གིས་སེམས་ཅན་འདི་རྣམས་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཡང་
 བདག་ཉིད་མཉོགས་ཏེ། འདི་རྣམས་ཇི་ལྟར་ཉོགས་པར་བྱ། ཞེས་རྣམ་པར་བསམས་
 ཏེ། དེའི་བདག་ཉིད་ཁོ་ནར་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་ལ་དམིགས་ཏེ། དམིགས་པ་མེད་པའི་
 རོ་བོའི་སྣང་རྗེ་ཆེན་པོ་སྒྲུའོ། །དེའི་བདག་ཅན་ཁོ་ནའི་རྗེ་གསུམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་རོ་
 བོ་བདག་དང་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་སྣང་རྗེ་ཆེན་པོའི་བདག་ཉིད་ནི།
 བཅོམ་ལྷན་འདས་མ་ཤེས་རབ་མ་མིང་གཞན་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་མོ་དང་དེའི་བདག་ཉིད་
 ཀྱི་ཕྱིར་དབྱེར་མེད་པའི་རང་བཞིན་དུ་བལྟའོ། །དེའི་ཆེ་སྣང་པ་ཉིད་དང་སྣང་རྗེ་དག་
 དེའི་བདག་ཉིད་དེ། དེ་ཡང་རྣམ་པར་མི་ཉོག་པའི་རྣལ་འབྱོར་རོ།

དེ་ཁོ་ན་།

སོ་སོར་སྤྱད་དང་དེ་བཞིན་དུ།

བསམ་གཏན་སྟོག་སྟོམ་འཛིན་པ་དང་།

རྗེས་སུ་བྱན་དང་ཉིང་འཛིན་ཏེ།

རྣལ་འབྱོར་ཡན་ལག་དུག་དུ་འདོད།

ཅེས་འདུས་པ་ཕྱི་མར་གསུངས་པའི་ཡན་ལག་དུག་གི་རྣལ་འབྱོར་རོ། །དེ་
 ལྟར་ནི་གཞོན་ཅུ་མའི་བྲ་པོ་པ་¹་མཐོང་བ་²་བཞིན་དུ་དབང་པོ་རྣམས་སྟོང་པ་ཉིད་
 དང་རོ་གཅིག་པས་རང་གི་ཡུལ་ལས་འཛིན་པ་ནི་³་སོ་སོར་སྤྱད་པའོ། །དེ་ལས་
 བསམ་གཏན་ཏེ། དེ་ཡང་ཉོག་པ་དངོས་པོ་ངེས་པར་ཉོག་པ་དང་། དཔྱོད་པ་བཞིན་
 དུ་དབང་པོ་རྣམས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པས་རང་གི་ཡུལ་ལས་འཛིན་པ་ནི་⁴།

1 ཅ་ པ། ལྷ། དཔར་མར་ལྷག།

2 བ་ པ། ལྷ། དཔར་མར་མེད།

3 ཅི་ པ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

4 བཞིན་དུ་དབང་པོ་རྣམས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པས་
 རང་གི་ཡུལ་ལས་འཛིན་པ་ནི། པ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་མེད།

དངོས་པོ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་¹ཉིད་དུ་རྣམ་པར་དཔྱད་པ་དང་། དེ་ལྟར་དཔྱད་པ་ལས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་འདུག་པ་ལ་མངོན་དུ་སྟོགས་པས་གང་ཡིན་པ་བདེ་བ་ཉིད་དེ་དགའ་བ་དང་དེ་ལས་ལུས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་པ་ལ་ལ་སོགས་པ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་དང་དེ་ལྟར་གོམས་པ་ལས་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་གཅིག་པ་མཐར་ཐུག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་བདག་ཉིད་སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་ཅེས་པ་རྣམ་པ་ལྟོ། །དེ་ནས་རྒྱང་མ་དང་རོ་མ་དག་འགགས་པའི་ཀྱན་འདར་²མའི་ལམ་ཁོ་ནར་འདུག་པ་དང་གནས་པ་དང་འབྱུང་བའི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་སྟོག་གི་རྒྱང་འདུག་པ་ནི་སྟོག་སྟོམ་པའོ། །དེ་ནས་ཀྱན་འདར་³མ་ལས་སྤྱར་མ་བྱུང་བར་བྱང་ཆུབ་⁴ཀྱི་ཐིག་ལེ་ལ་སེམས་ཀྱི་བཞོན་⁵པ་སྟོག་རྒྱང་འདུག་པ་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རོ་གཅིག་པ་ནི་འཛིན་པ་སྟེ། དེའི་ཆེ་ཡང་གདུམ་མོ་ལས་ངེས་པར་བྱུང་བ་ཆེར་འབར་ཞིང་རི་བོང་ཅན་ཡང་དེས་ཆེར་གདུངས་པས་ཤིན་དུ་ཆེས་འཇག་གོ། །དེའི་ཆེ་དྲོ་རྩོམ་བྱའི་ནང་ཆུད་པའི་མཉམས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་རིམ་གྱིས་རྒྱ་མཐུན་པ་ལ་སོགས་པའི་བདེ་བས་རྫོགས་པ་དྲི་མ་མེད་པ་ཉིད་ཇི་སྟོན་པར་འགྱུར་རོ། དེ་ནས་འཛིན་པ་ལས་སེམས་རབ་དུ་ཞགས་པ་ན་མཆོང་མ་སོ་སོར་སྤང་བ་སྟོན་མ་ཅན་རྫོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་མཐོང་བ་གཟུགས་བརྟན་གྱི་རྣམ་པ་ཅན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པ་དེ་ལས་འོད་ཟེར་དུ་མ་འཕྲོ་ཞིང་། དེ་ལས་ཁམས་གསུམ་པ་སྟོ་བ་ཞེས་པ་དྲན་པའོ། །དེ་ནས་དེ་ཁོ་ན་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་རྣལ་འབྱོར་མི་⁶འགྱུར་བའི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་རྒྱང་འདུག་གི་བདག་ཉིད་ལེ་ཤེས་ཀྱི་སྟུང་དྲོ་རྩོམ་པ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ནི་ཉིང་ངེ་འཛིན་ནི་ཞེས་པའོ། །དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པ་གང་གི་ཆེ་སྟོས་པ་མེད་པའི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཡིན་པ་དེའི་ཆེ་བསྟོན་ནམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་དང་ལེ་ཤེས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་

1 ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ བེ། ལྷ། དཔར་མར་མ་གསལ།

2 དར་ བེ། ལྷ།

3 དར་ བེ། ལྷ།

4 སེམས་ བེ། ལྷ། དཔར་མའི་ནང་ལྷག་ཡོད།

5 གཞོན་ བེ། ལྷ།

6 འགྱུར་ ལྷ། གོང་དུ་ལེ་ཏུ་སྤྱར་སྟེ་འགྱུར་ཡོད།

དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་མཐའ་དག་གི་བདག་ཉིད་དང་ཕ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་མཐའ་དག་གི་
རང་བཞིན་དུ་མགོན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་¹རྣམ་པར་གཞག་²གོ།

དེ་གསུངས་པ།

འདི་དེ་རྣལ་འབྱོར་དམ་པ་སྟེ།
ཀུན་དུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་སྤངས།
གང་ལ་རྣལ་འབྱོར་པ་གནས་པ།
ཀུན་མཁྱེན་བཙུག་ལྷན་དངོས་སུ་འགྱུར།
འདི་དེ་དེ་ཉིད་དམ་པ་སྟེ།
ཤེས་རབ་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཞི།
འདི་ཉིད་གཉིས་མེད་ཡི་ཤེས་ཏེ།
འདི་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་མཆོག་གོ། ཞེས་སོ།

འཕགས་པ་རྒྱ་རྒྱུབ་ཞབས་ཀྱིས་ཀྱང་གསུངས་པ།

མི་གང་སྤྲད་ཅིག་གཅིག་ཙམ་ཡང་།³
བྱང་ཆུབ་སེམས་ནི་རབ་བསྐྱོམ་⁴པ།
དེ་ཡི་བསོད་ནམས་ལྷུང་པོ་ནི།
འདི་ཙམ་ཞེས་པ་བགྱང་མི་རུས།
ཉོན་མོངས་མེད་པའི་རིན་ཆེན་སེམས།
འདི་ནི་ཚོར་མཆོག་གཅིག་བྱར་བཞིན།

1 ཀྱི་ བཤུ་ ལྷ།
2 བཞག་ བཤུ་ ལྷ། ཅོ།
3 དང་ བཤུ་ ལྷ།
4 བསྐྱོམས་ བཤུ་ ལྷ།
5 ཡིས་ བཤུ་ ལྷ།

ཉོན་མོངས་བདུད་སྐགས་ཚུལ་རྒྱུ་གྱི།

གཞིམ་དུ་མེད་ཅིང་དཔྱག་དུ་མེད། ཅེས་སོ།

འདི་ཐམས་ཅད་ལ་དགོངས་ཏེ་གསུངས་པ། འདི་དག་སེམས་ཀྱི་དག་པ་
 ཉིད། ཁྱེད་པ་སྟེ། འདི་རྣམས་ནི་འདི་ལོ།¹ དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རོ་བོ་རྩོ་
 རྩོ་འཛིན་པའི་ས་ནི་འདི་ཁོ་ན་སྐྱབ་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་པ་རོ་བོ་རྩོ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་ལས་
 འདི་བྱད་པར་རྩོ། ཁོ་ན་འདི་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རོ་བོ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་²
 འདིའི་བྱད་པར་ཅི་ཡིན་ཞེ་ན། བྱད་པར་ཡོད་དེ་དེའི་རོ་བོ་ཉིད་དུ་བསྐྱབ་པ་ཁོ་ན་ལོ།
 རྩོ་རྩོར་དངོས་པོར་ན་སྟོང་པ་ཉིད་དང་རྩོ་གཅིག་པའི་སྟོང་བས་དང་མི་རིགས་པ་ལ་
 སྐགས་པ་རྣམས་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་རྟོགས་པ་རྣམས་ཀྱང་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་མ་བསྐྱབས་
 པའི་ཕྱིར་དང་། པ་རོ་བོ་རྩོ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་ལ་སྐྱབ་པའི་ཕྱིར་བྱད་པར་ཆེན་པོ་སྟོགས་
 པ་བཞིན་ནོ། ཁོ་ན་བསམ་གཏན་དང་པོ་ཐོབ་པ་རྣམས་ཀྱང་འཁོར་ལོས་³སྐྱར་བ་
 རྣམས་བཞིན་དུ་བདེ་བ⁴ཉི་པར་སྟོན་ན། བདག་མེད་པ་གཉི་ག་རྟོགས་པས་ཅི་བྱ།
 དེ་རྩོར་ནི་དགའ་བ་ལྷག་པ་ཁོ་ན་ལས་དང་པོས་ནི་རབ་དུ་དགའ་བར་བརྟེན་དོ་ཞེ་ན་
 བདེན་ཏེ། འདི་རྣམས་ཅིག་སྐྱེས་པའི་བདེ་བ་ནི་མ་ཡིན་ཞིང་། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་བདེ་བ་
 ཆེན་པོ་མ་ཡིན་ལ། ལས་དང་པོ་པའི་གནས་སྐབས་སུ་ཐབས་སུ་གྱུར་པ་ཡང་མ་ཡིན་
 ཏེ། ཁབ་ཀྱི་བྱག་པ་ནི་བྱ་གཞིས་པ་རྣམས་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ཉམས་སུ་མྱོང་བ་མ་
 ཡིན་པས་སོ། ཁོ་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོ་བོ་རྩོ་ཕྱིན་པར་གང་སྒྲ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་
 རྟོགས་པའི་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་བདེ་བའི་ཞེས་གསུངས་པ་མ་ཡིན་ནམ་ཞེ་ན། འདི་ནི་
 གསུངས་མོད། འདིའི་ཐབས་བསྟན་པ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། ཐབས་སུ་གྱུར་པ་རྣམས་ཅིག་

1 འདོད་ བཤ། རྩོ།

2 འདི་ བཤ། རྩོ། པར་མའི་ནང་རྟོག་ཡོད།

3 མོ་ བཤ། རྩོ།

4 བདེན་པ་ རྩོ།

5 དེ་ བཤ། རྩོ།

6 ཉིད་དུ་ བཤ། རྩོ། དཔར་མའི་ནང་རྟོག་ཡོད།

འབྲས་བུར་གསུངས་སོ། །ཁམས་གསུམ་པ་སྒྲིམ་པ་ནི་སྤྱིར་པ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱིར་རྗེ་ལ་
 སོགས་པ་ནམས་ཀྱང་གྲོལ་བའི་རྒྱུ་ལོ་ཞེས་པ་དགོངས་པ་ལོ། ཉེ་བར་སྤྱད་པ་སྟེ། ཡང་
 དག་དག་པ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལོ། །དངོས་པོ་གསུམ་ཞེས་པ་ཡུལ་དང་དབང་པོ་
 རྣམས་པར་ཤེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ།།

དེ་ལྟར་གོམས་པ་ལྟར་ལེན་པས།།

ཇི་ལྟར་ཆོགས་པའི་བཟའ་བ་འདུས།།

ཞེས་པ་བྱ་བ་གསུངས་པ། གང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་བཤང་བ་དང་གཅི་བ་
 ལ་སོགས་པ་བདུད་ཅི་དང་སྒྲོན་མ་ལྟ་ལ་རང་བཞིན་གྱི་བདུད་ཅིར་བརྟག་གོ། འབའ་
 ཞེག་ཏུ་མ་ཟད་ཀྱི་དེའི་དགའ་ཅིང་ལ་སོགས་པ་ཡང་རོ། །ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡང་ཕྱག་
 རྒྱ་ཆེན་པོའི་རོ་བོར་བརྟ་བར་བྱ་སྟེ། འདི་འདྲི་སྒྲིམ་དང་ལྟན་པ་ནི་འགྲུབ་པོ། ཇི་
 ལྟར་ཞེས་གསུངས་པ། ལྟ་ཞེས་སྤང་མོ་ལ་སོགས་པ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་སོ།།
 དཔལ་དང་ཕྱག་རྒྱ་ཆེ་སྟེར་བྱེད། ཅེས་པ་རང་དང་གཞན་གྱི་དོན་སྤྱན་སུམ་ཆོགས་
 པའི་མཆོན་ཉིད་ནི་དཔལ་ཉེ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཁོ་ན་དེ་སྟེར་ཉེ། མཆོད་པ་རྣམས་
 ལ་ལོ། དེའི་ཕྱིར་གསུངས་པ། མཆོད་པར་བྱ་ཞེས་སོ། ཇི་ལྟར་ཞེ་ན་གསུངས་པ་
 འདོད་པར་བྱའོ། །འོ་ན་འདི་རྣམས་མཆོད་པ་མཆོག་ནི་འདོད་པ་བྱེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། དེ་
 ཡང་སྒྲོན་མེན་མོ་ཞེ་ན་སྒྲོན་མེན་ཉེ་གང་གི་ཕྱིར་མི་གོས་པས་སོ། །འོ་ན་འདོད་པ་བྱེད་
 པ་ཁོ་ན་གོས་པའི་ཞེ་ན་མ་ཡིན་ཉེ། གང་གི་ཕྱིར་ཕྱག་དོག་ལ་སོགས་པ་རྣམས་དང་
 ལྟན་པ་ནི་གོས་པར་བརྟེན་ན། རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ལ་ཕྱག་དོག་ལ་སོགས་པའི་ཉེ་པ་དེ་
 རྣམས་ཀྱིས་འདི་ལ་གཞི་དཔལ་ཡིན་ནོ། །འོ་ན་ཇི་ལྟར་འདི་འདྲ་བའི་མཆོད་པ་ནི་
 ཆེས་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་དང་། རྗེས་སུ་འབྲེལ་པ་ཅན་ཡིན། རྒྱ་བཏགས་པའི་བྱེད་པར་

-
- 1 ཀྱིས་ བེ། ལྟ།
 2 ཞེས་ བེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མེད།
 3 ཞེ་ན་ བེ། ལྟ།
 4 དེ་ བེ། ལྟ། དཔར་མའི་ནང་མེད།
 5 ཕྱི་ བེ། ལྟ།

ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་ན། སྒྲོ་བཏགས་པ་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་དང་
 དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་འོ། ། དེ་ལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་²ངོ་བོའི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲོ་
 བཏགས་པ་ནི་མ་ལ་སོགས་པར་སྒྲོ་བཏགས་པ་བཞིན་དུ་བརྒྱུད་ནས་བྱང་ཆུབ་སྦྱུབ་
 པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་ཉེས་པ་མེད་དོ། ། འོ་ན་འགའ་ཞིག་གི་ཉམས་སུ་སྤྱོད་བཡང་
 བཀག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འགལ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན་མ་ཡིན་ཏེ། ལས་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་
 ཏེ། ཀུན་ནས་བསྐྱང་བར་བྱ་བ་དང་། ཀུན་ནས་སྦྱང་བ་པོའི་དབྱེ་བས་སོ། ། དེ་ལ་
 ལུས་དང་རག་གི་ལས་ཐམས་ཅད་ཀུན་ནས་བསྐྱང་བར་བྱ་བ་སྟེ། ཡིད་ཀྱིས་ནི་ཀུན་
 རས་སྦྱང་བ་པོ་འོ། ། དེ་ཡང་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། མ་ཆགས་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་དང་།
 དེ་ལས་ཅིག་ཤོས་སོ། ། དེ་ལ་ཆགས་པ་ལ་སོགས་པས་ཀུན་ནས་བསྐྱང་བའི་ལུས་དང་
 རག་གི་ལས་ཐམས་ཅད་མི་དགེ་བ་སྟེ་དེ་ཡང་བཀག་པའོ། ། མ་ཆགས་པ་ལ་སོགས་
 པས་ཀུན་ནས་བསྐྱང་བ་ཐམས་ཅད་ནི་དགེ་བ་ཁོ་ནའོ། ། དུག་ཀྱི་ཆེན་པོ་གཉིས་སུ་མེད་
 པའི་རྣལ་འབྱོར་དང་ལྡན་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་མཐའ་དག་མ་ཆགས་པ་ལ་སོགས་
 པའི་བདག་ཉིད་འགྲོ་བ་ལ་སྤང་བར་བྱེད་དོ། ། དེས་ན་འདི་སྟོན་ལམ་ཐམས་ཅད་དང་
 ལྡན་ཡང་མི་དགེ་བ་མི་དམིགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དགེ་བའི་བདག་ཉིད་ཁོ་ནའོ་
 ཞེས་གསུངས་པ། རྣལ་འབྱོར་པ་དེ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་ཕུག་
 རྒྱུ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ནོ། ། དེའི་ཕྱིར་འཁོར་བའི་ཉེས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མི་གོས་སོ། །
 དེའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་གཉིས་སུ་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་
 བསྐྱེད་པ་ཁོ་ན་རྩིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་ལེགས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པའོ། །

དེ་འཕགས་པ་རྒྱ་སྦྱུབ་ཞབས་ཀྱིས་གསུངས་པ།

འདི་ནི་ཐེག་པ་ཆེ་མཆོག་སྟེ།

འདི་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་མཆོག་གོ།

1 ཐོད་ བ།

2 ཀྱིས་ བ། ར།

མཉམ་པར་གཞག་¹ རྣམས་འབད་བ་ཡིས།
 བྱང་ཚུབ་སེམས་ནི་བསྐྱེད་པར་གྱིས།
 འཁོར་བ་རང་གཞན་² རོན་སྐྱབ་ལ།
 བྱང་ཚུབ་སེམས་ལས་མ་གཏོགས་པའི།
 ཐབས་གཞན་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ནི།
 སྔོན་ཆད་གཟིགས་པ་ནམ་ཡང་མེད། ཅས་སོ།
 འདི་དེ་རྣལ་འབྱོར་མཆོག་དེའི་ཕྱིར།
 དེ་བཞིན་གསེགས་རྣམས་ཀྱིས་ཕྱག་འཁོར།
 དེ་ལས་བྱུང་བའི་རྣལ་འབྱོར་ནི།
 མཐའ་ཡས་པ་རྣམས་རབ་དུ་བསྐྱགས།
 དེ་ཁོ་ན་ལས་ཏིང་ངེ་འཛིན།
 མཐའ་ཡས་པ་ལས་ཡང་དག་འབྱུང་།
 ཕྱག་རྒྱ་དཀྱིལ་འཁོར་སྐྱགས་རྣམས་ནི།
 རྣལ་འབྱོར་དེ་ལས་རྣམ་དག་ཉིད།
 ཞི་བ་རྒྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་ལས།
 སྐྱགས་ལས་སྦྱེས་པ་གཞན་གང་ཡང་།
 ཇ་རྟའི་³ བུ་མོའི་བྱེ་མའི་གངས།
 ཇི་སྟེད་དངོས་གྲུབ་ཕྱ་རྣམས་དང་།
 ཕྱག་རྒྱའི་དངོས་གྲུབ་གཞན་ཉིད་རྣམས།
 ཇི་སྟེད་ས་ལ་རྣམ་གངས་པ།

1 བཞག་ བེ། ལ།

2 བཞིན་ བེ། ལ།

3 རྟའི་ བེ། ལ།

རྣལ་འབྱོར་འདི་ལས་སྦྱེས་པ་རུ།
 ཐུགས་ཀྱི་དོ་རྗེས་གསུངས་པ་ཡིན།
 གང་ཡང་ངེས་འབྱེད་ཆ་མཐུན་པ།
 རྣམ་པ་བཞི་དང་ས་བརྒྱ་དང་།
 འབྲས་བུ་ལ་གནས་དེ་ཐམས་ཅད།
 རྣལ་འབྱོར་འདི་ལས་ཡང་དག་སྦྱེས།
 བྱུང་དང་གང་ཡང་འབྱུང་འགྱུར་བ།
 འབྱུང་བཞིན་པ་ཡི་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ།
 འཛིག་ཏེན་དབང་སོགས་སེམས་དཔའ་ཆེ།
 དེ་རྣམས་ཀྱང་འདི་ཁོ་ནར་གནས།
 འདས་དང་མ་ཐོན་སངས་རྒྱས་དང་།
 ད་ལྟར་བྱུང་བར་འདོད་གང་དང་།
 བསེ་རུ་ཉན་ཐོས་དགེ་འདུན་ཏེ།
 དེ་རྣམས་ཀྱང་ནི་འདི་ལས་བྱུང་།
 རྣལ་འབྱོར་སྦྱོད་དང་བྱ་བ་ཡིས་།
 ད་ལྟེ་བས་ཇི་སྟེད་སྤྲུལ་པ་འབྱུང་།
 དེ་སྟེད་ཐམས་ཅད་རྣལ་འབྱོར་ནི།
 འདི་ཁོ་ན་ལས་ངེས་པར་འབྱུང་།
 ཀྱན་དུ་བརྟགས་པའི་ངོ་བོ་ནི།
 བག་ཆགས་སྟོབས་ལས་བྱུང་རྣམས་དང་།

ཇི་མིད་བརྟན་¹་དང་གཡོ་བའི་དངོས།

དེ་མྱོད་དེ་ལ་བརྟན་པའོ། ཞེས་སོ།

འདོད་པ་ལྷ་རྣམས་མེད་ན་སྟོང་པ་ཉིད་ནི་རོ་བོ་བྱོ་བ་མེད་པ་ཁོ་ནར་འགྱུར་རོ་
 ཞེས་གསུངས་པ། ཇི་མིད་ཅེས་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་²། ཇི་མིད་དུ་ཡུལ་གྱི་བརྩུང་རྣམས་
 གྱིས་³་བྱང་ཚུབ་ཀྱི་མུ་གུ་སྟོང་བར་མི་བྱེད་པ་དེ་མིད་དུ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་དཔག་
 བསམ་གྱི་ཤིང་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། ཚུ་བར་པ་དང་བུལ་བའི་མུ་གུ་ལས་ཤིང་
 ཡུན་སྲུལ་ཚོགས་པ་བཞིན་ནོ།

དེ་ས་ར་ད་ཞབས་གྱིས་གསུངས་པ།

སེམས་ཀྱི་མུ་གུ་ཤིན་ཏུ་རྒྱུང་བ་ནི།

ཡུལ་⁴་བརྩུད་དག་པས་གལ་ཏེ་མི་བརྟན་⁵་ན།

ནམ་མཁའ་བྲབ་པའི་འབྲས་བུ་སྦྱིན་པ་ཡིས།

དཔག་བསམ་ཤིང་ཉིད་ཇི་ལྟར་ཐོབ་པར་འགྱུར། ཞེས་སོ།

འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་ལེའུ་བརྩ་གསུམ་པའོ། །

*

1 བརྟན་ རྟེན། བོང་དུ་ལེཾ་ལྷུར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

2 རྟེན་ བེ། ལྷ།

3 གྱི་ བེ། ལྷ།

4 ཡུལ་ རྟེན། ཡུང་ བེ། ལྷ། བོང་དུ་ལེཾ་ལྷུར་ལྟར་བཞོད་ཡོད།

5 འབྲན་ བེ། ལྷ།

སྐྱུགས་ཀྱི་བཟུངས་པ་དང་ཤེས་རབ་མ་ལ་གསོལ་བ་གདབ་པ་དང་ རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྦྱང་གཞིའི་ལེའུ།

མངོན་པར་འདོད་པའི་སྒྲ་ན་མེད་པའི་དོན་བསྟན་པས་རབ་ཏུ་དང་བ་¹ལུལ་དུ་
 བྱང་བ་སྐྱེས་པས་ཇི་ལྟར་སྒྲོང་པ་དེ་²སྒྲོན་པའི་ཆེད་དུ་གསུངས་པ། དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པའོ།³ །བདེ་བ་ཆེན་པོས་རྣམ་པར་བརྩེ་བའི་ཕྱིར་སྟོན་པའོ། །སྐྱེད་བྱེད་མ་ནི་ལམ་
 གྱིང་པའོ། །དཔལ་མོ་ནི་རྟོགས་པ་དང་། སྤངས་པ་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པ་འབྲས་བུའི་
 རོ་པའོ། །རིགས་མེད་པ་རྣམས་ཆེར་སྐྱུག་པའི་གནས་ནིད་ཀྱི་ཕྱིར་འཇིགས་པའོ། །
 གྲགས་ཆེན་མ་ནི་རྣམ་པར་ཐོས་པའི་གྲགས་ཅན་ནོ། །བྱམས་པའི་རང་བཞིན་ནིད་ཀྱི་
 ཕྱིར་མཉེས་གཤེན་⁴པའོ། །དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པ་མཐའ་ཡས་པའི་
 རྩལ་ལྷུང་གིས་རྣམ་པར་འབྲུལ་པའི་ཕྱིར་སྟོན་པའོ། །སྦྱང་རྩེ་ཆེན་པོ་དང་ཤེས་རབ་
 ཆེན་པོ་དག་ལས་ཐ་མེ་དང་⁴པ་ནིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་སྟེ་འདི་དག་གིས་རང་དོན་
 ཕུན་སུམ་ཆོགས་པའོ། །དོན་ཆེན་འབྲས་བུ་སྒྲོན་མཛད་མ། །དོན་ཆེན་ནི་དོ་རྩེ་འཛིན་
 པ་ནིད་དོ། །དེ་ཁོ་ན་ལ་མ་གོམས་པའི་འབྲས་བུ་མ་པ་སྟེ། དེ་གདུལ་བུ་རྣམས་ལ་
 སྒྲོན་ནི་ཞེས་པ་གཞན་དོན་ཕུན་སུམ་ཆོགས་པས་བསྟོད་པར་བྱེད་དོ། །བསྟན་པའི་
 ཡུལ་གྱི་སྒྲོན་ནས་བསྟོད་དེ། སངས་རྒྱས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །སངས་རྒྱས་རྣམས་
 ཀྱིས་ནི་རྣམ་པར་སྤང་མཛད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །གང་རྣམས་ཀྱིས་⁶ཞེས་པ་
 དངོས་གྲུབ་གང་ཞིག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་སྟོད་ཡུལ་མ་ཡིན་པའོ། །
 ལྟ་མོ་ཞེས་པ་སྟོན་པའོ། །གསུང་གཅིག་གིས་ཞེས་པ་ཐོག་མར་གོ་དཀའ་བ་བརྗོད་
 རས་ཆོག་གཞན་གྱིས་གསལ་བར་བྱས་པ་ནི་མ་ཡིན་པའོ། །ཆེན་པོའི་སྟོད་ནི་ཆེན་པོ་

1 པ་ སྤང་ཐང་དཔར་མའི་ནང་མེད།
 2 དེ་ བཤ། སྟེ། དཔར་མའི་ནང་མེད།
 3 བེན་ བཤ། སྟེ།
 4 དད་མེ་ བཤ། དད་མ་ཡིན་ སྟེ།
 5 སྒྲོན་ སྟེ། མོང་དུ་ལེགས་སྐྱུར་ལྟར་བཀོད་ཡོད།
 6 ཀྱི་ སྟེ།

འཇིག་རྟེན་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དངོས་གྲུབ་རྣམས་ཀྱི་སྡོད་དོ། །
 ཀུན་ཞེས་པ་རྣལ་འབྱོར་མ་ཉི་ཤུ་ཅུ་བཞིའི་ངོ་བོའོ། །གང་རྣམས་ཀྱི་གང་དངོས་གྲུབ་
 དེའོ། །གསུངས་པ་ནི་སྒྲ་ཆོས་སྡེ་མས་སོ། །འདི་ནི་ཞེས་པ་འདིའི་འོ། །སངས་རྒྱས་
 ཡོན་ཏན་རྣམས་ནི་སྟོབས་དང་། མི་འཇིགས་པ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཏེ། དེ་རྣམས་
 གྲུང་བདག་ལ་བཟོད་མཛོད་ཅིག་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་དེ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱ་དང་འབྲས་བུའི་
 བདག་ཉིད་ནི་རྒྱལ་བ་མཆོག་རྣམས་ཀྱི་གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་སྦས་པའོ། །ཤིན་ཏུ་རྟོག་
 དཀའི་དོན་ཤིན་ཏུ་སྦས་པའི་སྡོད་ཡུལ་ཅན་གྱི་རྒྱུད་འདིར་བདག་གིས་གསལ་བར་
 བྲས་པའོ། །དེའི་ཕྱིར་བདག་གི་སྟོན་པ་དེ་རྣམས་ཁོ་ནས་འདི་བསྟན་པའོ་ཞེས་
 དགོངས་པའོ། །བདག་ལ་ཡང་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་བསྟན་པའི་གནོད་པ་སྟོང་བཏགས་པ་
 ལས་མི་བཟོད་པ་བྱ་བ་མིན་ཞེས་གསུངས་པ། རྒྱལ་བ་མཆོག་རྣམས་བཟོད་མཛོད་
 ཅིག། ཅས་རྣམ་དབྱེ་²བསྐྱར་པའོ། །རྒྱུད་ཐམས་ཅད་གསུངས་ནས། དབང་བསྐྱར་
 རྣམས་ཁོ་ན་འདི་ལ་དབང་དུ་བྱའོ་ཞེས་བསྟན་པའི་ཆེད་དུ་དབང་བསྐྱར་གསུངས་པ།
 དེ་ནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །གསོལ་བ་གདབ་སྟེ་གསང་བ་དང་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་
 ཀྱི་དབང་བསྐྱར་གྱི་དོན་དུའོ། །ལྷ་མོ་ཆེན་མོ་ལའོ། །བཅད་ཅེས་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་སོ། །
 གཡོགས་ཞེས་སྟོག་པ་ལ་ནི་བྱབ་པར་བྱེད་པ་སྟེ་བདག་ལའོ། །དེའི་ཞེས་པ་མི་དེའི་
 འོ། ། ཅས་འདི་ལྟར་ཤེས་རབ་མ་མགུ་བར་བྱ་བ་ལ་འབད་ཅེ་³ན་གསུངས་པ།

སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནི་མཆོད་།

རྒྱ་དང་འབྲས་བུའི་གནས་སྐབས་⁴དག་ཏུ་ལས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་རྣལ་འབྱོར་ཁོ་
 རས་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་བོ་ཞེས་པ་མན་ངག་གོ། །དི་ལྟར་ན་འདི་ལྟར་ཡིན་
 ཞེས་གསུངས་པ། འདི་ཁོ་ན་ལ་སྟེ་ཤེས་རབ་མ་ལ་སངས་རྒྱས་ལ་སོགས་པ་རྣམས་

1 དེ་རྣམས་ བེ། སྒྲ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

2 བ་ བེ། སྒྲ། དཔར་མའི་ནང་ལྟག་ཡོད།

3 ཅས་ བེ། སྒྲ།

4 སྐབས་ བེ། གིང་དཔར་མའི་ནང་མ་གསལ།

བཞུགས་ཏེ། དེ་རྣམས་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་རྣམས་ཡིན་ཞིང་། དེའི་ཉེན་ཡང་
ཤེས་རབ་མ་སྟེ། དེ་ལས་ཆོག་ཇི་ལྟ་བུར་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་དབང་བསྐྱར་ཐྲང་བར་
བྱུང་། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་གི་ངོ་བོ་གསལ་བར་བྱེད་དེ། དབང་
པོ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་དབང་པོས་ཉེ་བར་མཆོན་པ་ལས་ཡུལ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ངོ་། །
བདག་ཅེས་པ་བདག་གི་སེམས་ཏེ། སེམས་ནི་བདག་ཅེས་བརྟགས་པའོ་ཞེས་པའི་
གསུངས་ལས་སོ། །ཡང་ན་བདག་ཏུ་གདགས་པའི་ཡུལ་ཉེ་བར་ལེན་པའི་ཕུང་པོ་ལྟ་
རྣམས་བདག་འདི་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པ་སྟེ། གང་ཏུ་ཉེ་བར་མི་དམིགས་པ་
དེ་མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་རྟོགས་པའོ། །མཆོག་དགའ་ནི་འདིར་ལྟན་ཅིག་སྦྱེས་པའི་
དགའ་བ་འཁོར་དང་མིང་གཞན་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཏེ། དབང་པོ་ལ་སོགས་པར་སྦྱོ་
བརྟགས་པ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་ངོ་། །

དེ་བརྟག་པ་གཉིས་པའི་རྒྱུད་ཏུ་གསུངས་པ།

མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ཐོབ་ན་ནི།

སྒྲ་ཆོགས་སྤངས་པའི་སྐད་ཅིག་ལ། ཞེས་སོ། །

འཆར་བའི་རིམ་པ་ཁོ་ནས་འདིའི་ཡང་དག་འཐོབ་རྟོགས་པར་བྱུང་། །དེའང་
ལེའུ་དང་པོར་དབྱེད་ཟིན་ཏོ། །མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ཁོ་ན་ལ་རྒྱ་ཉིད་ཀྱིས་ཕྱག་འཆལ་
ཏེ། དེ་ལ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པའོ། །གང་ཞིག་ཤར་པས་ནི་ལྟན་ཅིག་སྦྱེས་པ་གང་ཤར་
བས་སོ། །འབྲས་བུ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱག་འཆལ་ཏེ། གང་ཡང་གོམས་པ་ལས་ངེས་པར་བྱེད་
པའི་ཆ་ལ་ཕན་པ་ལ་སོགས་པ་རྟོགས་པའི་རིམ་གྱིས་མངོན་དགའ་སྟེ། ཀུན་ནས་
མངོན་པར་ཤེས་པ་དང་། རྟོགས་དང་མི་འཛིགས་པ་ལ་སོགས་པ་ཕུལ་དུ་བྱུང་བའི་
ཡོན་ཏན་རིན་ཆེན་རྣམས་ཡང་དག་པར་འཕྱོར་པ་ནི། རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཉོན་
མོངས་པའི་རྟོག་པ་མ་ལུས་པ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་མངོན་པ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་མཆོག་
ཏུ་དབྱེས་པར་གནས་པའི་སྦྱ་སྦྱ་བཞི་པ་རྟོ་རྟོ་འཆང་མཁས་པ་ཡང་དག་པར་རྟོགས་

པའི་སངས་ཀྱིས་རྒྱུ་ལྷན་པ་ལ། དེའི་བདག་ཉིད་དུ་རྒྱུ་པར་རྟོག་པའི་གཡེང་
 བ་མ་ལུས་པ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་སྤྲོས་ཏེ། ཆོག་དང་ཐོའི་སྤྱད་ཡུལ་ཅི་ཡང་མ་ཡིན་
 པའོ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདི་རྟོགས་ནས། ལྷ་ཆོགས་སྡེ་མ་ལ་སོགས་པ་²རྒྱུ་མས་མི་སྤྱོད་
 བར་གྱུར་ནས་གནས་པར་འཆད་པར་འགྱུར་རོ། །གཅིག་པུ་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་
 མཆོག་དུ་དགའ་བ་སྟེ། སྤྱི་བ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བག་ཆགས་སྒྲག་མའི་གཉིད་དང་བུལ་
 བའི་ཕྱིར་སང་པ་སྟེ། དེ་ལ་ཕྱག་འཆའ་ལོ། །དེ་རྒྱུ་ཆོགས་སུ་བཅད་པ་འདིས་ཤེས་
 རབ་ལེ་ཤེས་དེ་ཉིད་ཁྱད་པར་བའི་རོ་པོར་ཆུའི་རྒྱབས་ཀྱི་རོ་པོ་བཞིན་དུ་བྱུང་བ་ནི་
 དབང་བཞི་པ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་འདི་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་ནི་རྩེ་འཛིན་པ་
 ནི་རྒྱུད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱོད་གཞིའོ་ཞེས་པའོ། །འཛིགས་པ་མེད་པའི་གཞུང་འགྲེལ་དུ་
 ལེའུ་བརྒྱ་བཞི་པ་རྫོགས་སོ། །

དེ་རྒྱུ་དཔལ་དཔལ་པོའི་ལམ་ནི་རྒྱུ་པར་བཀྲལ་ལས་དགེ་བ་ཆེར་བྱུང་བས།
 འཁོར་བའི་འཁྲུལ་མང་³བཅད་ནས་འགྲོ་འདི་དེ་ཡི་⁴དཀྱིལ་འཁོར་དུ་ནི་འདུ་བར་ཤོག།
 བདག་ནི་ཐུབ་པ་འདི་ཡི་མཐའ་ཡས་སྤྱོད་ལྷན་རིང་རྒྱུ་པར་འཛིན་བྱེད་ཅིང་།
 སྤྱོད་ཆགས་སོ་སོ་ལ་གཞིལ་ཆེ་བའི་བདེ་བ་སྤྱོད་པ་འཛིགས་པ་འཛིན་གྱུར་ཅིག།

རྒྱུ་གཞིན་ཆུལ་གྱིས་མཁས་པ་ནི།

འཛིགས་པ་མེད་པས་གནད་རེ་ག་ཆོག།

དགའ་བ་སྤྱོད་གི་རྒྱལ་སྤྱིད་ལོ།

ནི་ཤུ་རྩ་ལ་འདི་བྱས་སོ།

སྤྱིད་གསུམ་རྒྱུ་པར་ཕྱན་ཆོགས་ས་གཞི་མ་ཉམས་སྤྱོད་ཅན་གྱིས།

འགྲོ་ལ་རྒྱུང་མེན་ཕན་བྱའི་ཆེད་དུ་བསགས་པ་ཡི།

1 ལས་ ལྷ།

2 རྟོགས་ བ།

3 མང་ ལྷར་ཐང་དཔར་མར་མེད།

4 ཡིས་ བ། ལྷ།

མ་ག་རྒྱ¹་བདག་སྤྱོད་པོ་དཔལ་ལྷན་གཞོན་སྤྱོད་སྤྱོད་གི་མཐུ།
བརྟན་པ་ཡོངས་འགྱུར་ཆེད་དུ་དེས་དོན་གཉེར་ལས་འདི་གཞུང་བྱས།

དགའ་བའི་བདེ་སྤྱོད་གཉིས་མེད་དམ་པའི་བརྟན་ཀྱི་
རོལ་པས²་འཕྲུལ་པའི་ས་གཞི་དོན་མེད་བརྟན་མོ་ནི།
ཅེན་པ་ཤེས་རབ་དཔལ་འདིས་ཐུབ³་པའི་ཆོགས་ཀྱིས་
བཞོན་པ་སྤྱིགས་པའི་ཐེམ་སྤྱོད་སྤྱོད་བ་གང་གི་གནས།

མ་བྱས་བྱས་དོན་དོན་གཉེར་ཡང་དག་ཉོག་པའི་
སྤྱོད་པས་ཅན་དུ་ནི་རྒྱལ་མཛད་གྱུར་ཅིག་དེ་ཡི⁴་ཡང་།
ཁོ་པོས་བཀྲལ་བསམ་མཉམ་མེད་དགེ་བ་བདུད་ཅིས་
གང་བ་དོན་དུ་གཉེར་བྱའི་ཆོམ་པ་འབྱུང་གྱུར་ཅིག།

ཆོགས་བཅད་བརྒྱ་ཕྱག་བརྒྱ་དུག་ནི།
ཀྱང་བཅས་འདི་ནི་སྤྱོད་པའི་ཆད།
མཁས་པ་ནམས་ཀྱི⁶་རྒྱལ་ཆེད་འདི་ནི།
ཆད་བཞིན་སྤྱོད་ལ་དངོས་པོ་ཉིད།

ཅེས་པ་དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐོད་པའི་རྒྱུད་ཆེན་པོའི་འགྲེལ་པ་མི་འཛིགས་པའི་
གཞུང་འགྲེལ་གནས་བརྟན་མཁས་པ་ཨ་རྒྱ་ཡུ་ཀར་གུམ་མཛད་པ་རྣམས་སོ། །

*

1 རྒྱ་ རྒྱེ། མོང་དུ་ལེགས་སྤྱོད་རྒྱར་བཞོན་ཡོད།

2 པ་ལས་ བཤ། ལྷ།

3 ཐུག་ བཤ། ལྷ།

4 ཡིས་ བཤ། ལྷ།

5 བརྟན་པས་ བཤ། ལྷ།

6 ཀྱིས་ བཤ། ལྷ།

ISBN: 978-81-87127-89-5



9 788187 127895